समर्पण

श्रीयुक्त दुर्गाप्रसाद खेतान

एम. ए, बी. एल., कलकत्ता

प्रिय मित्रवर,

तुम्हारा इस पुस्तक पर अत्यन्त प्रेम है—

और मेरा तुम्हारा प्रेम का सम्बन्ध है।

अतएव अपने और तुम्हारे

प्रेम की यह वस्तु

तुम्हें प्रेमचिह्नस्वरूप

सप्रेम समर्पित है।

तुम्हारा प्रेमी,

महावीरप्रसाद पोद्दार

इति सर्वशिरोमणि विषयानुक्रमणिका समाप्त ।



अथ सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार

तत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनामआनन्दमंगलसंवादप्रारंभः ।

॥ श्लोकाः ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिगम्यम् ॥ एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिभूतं जन्मातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ ॥ १ ॥ सर्वालिप्तं सर्वरूपं निर्गुणं गुणसंयुतम् ॥ शब्दरूपं निर्विकारं सद्गुरुं प्रणाम्यहम् ॥ २ ॥ सगुणं सद्गुरो रूपं निर्गुणत्वेन व्यापकम् ॥ अलक्षमुभयातीतं नामातीतं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुः साक्षान्महेश्वरः ॥ गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥ अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

मंगल कहतेहैं कि सद्गुरुके चरणारविन्दकी अपार महिमा है । शेषशारदापैभी नहीं कहीजाती । कैसे हैं चरणारविन्द जिनके दर्शन करतेही दोनों ताप रज तम दूर होतेहैं । और प्रेम भक्तिके उपजानेवाले जनके मनको रंजन आनन्दके देनेवालेहैं । ऐसे सगुण चरणारविन्दकों मैं निशिवासर प्रणाम कर्ताहूं । हे स्वामिन् ! मैं अज्ञ-

कामीकी यह बिनती है कि मेरे बोधके निमित्त सर्वशिरो मणि सिद्धान्त कहिये जासों मैं संसारसैं निवृत्त होके आपके संग आपके धामकों जाऊं॥प्रश्न ॥ कैसें यह सब सृष्टि मनुष्यसाहित उत्पन्न होतीहै १, कैसैं याका विनाश होताहै २, और मैं कौनहूं ३, कहांसैं आयाहूं ४, और कौन कर्तव्य मोकों करना योग्य है। जाकारिके मैं परमेश्वरकों प्राप्त होऊं ५, इन पांच प्रश्नोंका उत्तर कृपाकारिके कहिये और आपका मेरा संवाद जगत्मैं. सज्जनजन श्रवण करैंगे उनका वडा कल्याण होवैगा ॥

अनाम उवाच ॥ हे प्रिय ! सबका उत्तर देताहूं और सरल वचनोंमें कहताहूं जाकों कम पढे मनुष्य भी अच्छीतरह समझ लैंगे परन्तु सज्जनोंके संगसेहीं तात्पर्य पावैंगेमैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर देताहूं सो सुनों । प्रथम तो तुम अपनेमैं आप सावधान होके अपनी सुरत-दृष्टिकों इधर उधर मत डुलावो मेरे वचनोंपर चित्त लावो जासो सब तात्पर्य समझमैं आवैं सुरत मन. एक कारिके दृष्टिकों डाटके श्रवणोंके द्वारा श्रुति मेरे शब्दोंपै सावधान होके लगादो ऐसे संजम करिके नहीं सुनोंगे तो तात्पर्य नहीं पावोगे॥प्रथमप्रश्नका उत्तर देताहूं ॥ हेप्रिय! सृष्टिकी उत्पत्ति कईप्रकारकीहै।ऋषि मुनि आचार्य अवतार पैगंवरोंनैं कहीहैं॥ सो अपने २ ठिकानोंपर सब सत्यहैं मै तुमकों दोप्रकारकी कहताहूं ॥ एक तो मनुष्यशरीरकी उत्पत्ति,दूसरी जब योगी

जीवात्माकों परमात्मामैं लय करता है। फिर उत्थान होके प्रगट होता है॥अब मनुष्यशरीरकी उत्पत्तिका कथन सुनों— स्त्रीके उदरमैं नाभिके नीचै सीप होतीहै सबके एक होती है किसी २ के, दो होतीहैं॥रतिके समय अकस्मात् खुलतीहै तामैं साडे पांच रत्ती रजवीर्य समाताहै जो पुरुषका तीन रत्ती वीर्य होवै। और स्त्रीका ढाई रत्ती होवै तो पुरुष होवैगा। और स्त्रीका तीनरत्ती, पुरुषका ढाईरत्ती होवै तो स्त्री होवैगी और दोनूनका बराबर होवै तो नपुंसक होवैगा। उस वीर्यकी बूँदमैं अवाच्यसत्ता जो आकाशवत् सर्वव्यापकहै उसकें प्रभावसैं। जैसा बीर्यहै वैसा समय पाके सब अंग बनजाते हैं उदरमैं माताकी नाभिसैं लगाहुवा नाल इसकी नाभिसैं पालन पोषण बढन होताहै॥ और नौ दश मासमैं महल तैयार होजाताहै उसमें उस समय नैंतो अन्तःकरणहै नैं प्राणका आवागमन है।सब द्वारबन्ध हैं। पूरा कुम्भक है। फिर माताके नाभिस्थानसैं नाल छूटजाताहै।तब प्रसूतिका वायुकी प्रेरणासैं बाहिर आताहै रस्तेका संकट और बाहरी पवन लगनेसैं उसका कुम्भकपवन नासिकामैं जोर देताहै। जब छींक आके बाहिर प्रगट होताहै। तब नेत्र मुख गुदा आदि नऊं द्वार खुलजाते हैं। और बोधरूप श्रुतिसैं अतिसूक्ष्म मन प्रगट होके रुदन करताहै। फिर श्रुतीनमें लीन होके सुषुप्तिकी निद्रामैं सोजाताहै पश्चात् अभि

वायुके प्रभावसैं मुखमैं दूध पीनेकी शक्ति प्रगट होजाती है। अब आगेकी क्या कहूं ज्यों ज्यों वृक्ष बढताहै। त्यों त्यों उसके तत्त्वगुणनके प्रभाव बढतेहैं। और फैलावको प्राप्त होताहै। जब लवा बच्चा नींदसैं जागता है। तव नेत्र खोलके देखता है। उस समय उसकी श्रुति और निगाह ठैरीहुई होती है। उसके नेत्र बहुतकाल ठैरे रहतेहैं पलक नहीं मारते। और श्रुति जब ठैरीहुई बिगड़ जातीहै तब सब शरीर हाथ पांव बहुत हलाताहै। और रोने भी लग जाताहै। जब माता उसको लाडके बचन सुनातीहै तब शब्द कानोंके द्वारा सुनके ठैर जाताहै पीछै मनके प्रभावसैं माताकी त्वचाका स्पर्श दूधके स्वादका बोध होजाता है जबतक ग्रीवाकों नहीं झेलता तबतक लवा बच्चा कहलाताहै।वो लयमें ज्यादा रहताहै एक वर्षतक महापरमहंस संज्ञाहै। पश्चात् पांचवर्षतक परमहंस संज्ञा है। सातवर्षतक हंससंज्ञाहै। अज्ञानदशामैं है। बाद बच्चासंज्ञा यानें बडे विकारोंसैं बचा हुवाहै। पीछै किशोरसंज्ञा है। याने क्रीडाकरता है शोर करिके दशवर्षतक है पांचसैं पंद्रहवर्षतक ताड़नाके योग्य है पश्चात् सोलहवर्षसैं लेके बाईस पचीस वर्षतक ब्रह्मचर्यमैं रहना, सो उत्तम ब्रह्मचर्य है। अठारह वीसका मध्यम सोलह सत्रहका कनिष्ठ है और जो पहिलैंहीं कुसंग पाके बिगड़ जावै सो रोगी निर्बल बुद्धिहीन

अवगुणका धाम होजाता है माता पिताका इस उमरकी रक्षा करना योग्य है ॥

प्रश्न ॥ हे स्वामिन् ! पूर्व आपनें कह्या कि गर्भमें नतो अन्तःकरण है, न प्राणका आवागमन है और ऐसाभी सुनाहै कि गर्भमें स्तुतिकारिके इकरार करता है, सो इसका तात्पर्य कृपाकारिकेकहो ॥

उत्तर ॥ हे प्रिय ! जिस गर्भमें ये काम कर्ता है, वो गर्भ औरहै जब कि जिज्ञासु बाह्यवृत्तिनका संजम करिके अभ्यन्तर नाभिमें स्थिर होताहै वहांका ये कथन है इस गर्भका नहीं ॥

अब दूसरी परमसन्तयोगीकी उत्थानदशासैं उत्पत्ति होती है सो कहताहूं, श्रवण करो हेप्यारो ! योगीकी उत्थानदशासैं शरीररूप ब्रह्माण्डमें सब सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै इसी हेतुसैं गीतामें मैंनें संसाररूप बृक्षका ऊर्ध्वमूल कह्या है जब कि परमसन्त योगी अपना जीवात्माकों योगमार्गकरिके परमात्मामें लय करते हैं, उस समय महाशून्य परमसुषुप्ति अबाच्य अनाममें लवलीन होजातेहैं परमसमाधि अवस्थामें स्थित हैं उत्थानकी आदिमें स्वयम् श्रुती उत्पन्न होके ऐसा बोध होताहे कि मैं एकहूं ये पुरुषसंज्ञा है । बहुत होजाऊं ये प्रकृतिसंज्ञा है पश्चात् पुरुषनें पराशब्द प्रकृतिका संग पाया ताका प्रभावसैं महत्तत्त्व आकाश

उपजा यानें आकाशबोध हुवा इसको महत्तत्त्व कहते हैं आकाशसैं पश्यन्ती शब्द अतिसूक्ष्मशरीर स्पर्शसैं वायु उत्पन्न भया कहा वायु मालूम हुआ, बायुसैं वोही पुरुष मध्यमा शब्दका रूपको प्राप्त भया। वासैं तेज उत्पन्न हुवा तेजकी प्रकृति पाके वोही पुरुष मुखके द्वारा रसकों प्राप्त भया। उससैं जल उत्पन्न हुवा। जलका संयोग पाके बरुण-द्वारा गंधकी प्रकृतिसैं पृथ्वी उत्पन्न हुई और पुरुषसैं प्रकृति अहंभावकों प्राप्त होके त्रिधा होतभई। सत, रज, तम पश्चात् आकाश तत्त्वसैं श्रवण ज्ञानेंद्रिय और वाक्य कर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। और वायुतत्त्वसैं त्वचा ज्ञानेंद्रिय हस्तकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। अग्नितत्त्वसैं नेत्रज्ञानेंद्रिय और पादकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। जलतत्त्वसैं जिह्वा रसलेनेंवाली ज्ञानेंद्रिय और मूत्रत्याग शिश्नकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। या शिश्नेंद्रियमें कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय दो हैं जैसैं जिह्वा रस भी लेती है और बाणी भी बोलती है ऐसैंहीं शिश्नेंद्रिय है जब मूत्र और वीर्य त्यागती है तब तो कर्मेंद्रिय है। और वायुतत्त्वका अत्यंत स्पर्श याके द्वारा त्वचाज्ञानेंद्रियकाभी है। जिह्वा आकाशकी कर्मेंद्रि और जलकी ज्ञानेंद्रि है॥ और शिश्न जलकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय है। और पृथ्वीतत्त्वसैं नासिका ज्ञानेंद्रिय वायुतत्त्वके संजोगसैं हुई यामें भी दो इन्द्री हैं। पृथ्वीतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय और वायुतत्त्वकी

कर्मेंद्रि क्योंकि वायुका आवागमन यामैं रहता है और गुदा पृथ्वीकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रि है। क्योंकि अपान वायु गमनकरती है। ऐसें ये तत्वनसैं प्रकृतिका संयोग पाके ज्ञानेंद्रिय और कर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। और एक २ इन्द्रिमैं तीन २ भेद होते हैं। जैसे श्रवणेंद्रिमैं श्रोता श्रवण शब्द। नेत्रमैं द्रष्टा दृष्टि दृश्य। ऐसैंहीं सर्वेंद्रियन मैं जानो श्रवणकाशब्द बिषयहै, त्वचाका स्पर्श, नेत्रोंका रूप, रसनाका रस, नासिका का गंध, वाणीका भाषण, हस्तोंका रक्षाकरना, लैनां दैना पांवनका गमन शिश्नका मूत्र वीर्यत्याग भोगविलास गुदाका मलत्याग अपानवायुका छोडना ये सब विषय इन्द्रियोंके हैं और सब तत्त्व आपसमैं मिलेहुए गुण रखतेहैं। आकाशका शब्दगुण, वायुका शब्दस्पर्श, अग्निका शब्दस्पर्श रूप, जलका शब्दस्पर्शरूप रस, पृथ्वीका शब्दस्पर्शरूप रस गंध गुण हैं॥

अथ आकाशतत्त्वकी महिमावर्णनम्।

आकाशतत्त्व केवल श्रुतीकरिके अनुभवमात्र है। निरूप निराकार लघुदीर्घतासैं रहित सबका मूल सबतत्त्वनकी उत्पत्ति विनाशका कारण। सब सृष्टिके बाहिर भीतर आप निरूपाधिहै सबका लयस्थान अजर अमर

उपजा यानें आकाशबोध हुवा इसको महत्तत्त्व कहते हैं आकाशसैं पश्यन्ती शब्द अतिसूक्ष्मशरीर स्पर्शसैं वायु उत्पन्न भया कहा वायु मालूम हुआ, वायुसैं वोही पुरुष मध्यमा शब्दका रूपको प्राप्त भया। वासैं तेज उत्पन्न हुवा तेजकी प्रकृति पाके वोही पुरुष मुखके द्वारा रसकों प्राप्त भया। उससैं जल उत्पन्न हुवा। जलका संयोग पाके बरुण-द्वारा गंधकी प्रकृतिसैं पृथ्वी उत्पन्न हुई और पुरुषसैं प्रकृति अहंभावकों प्राप्त होके त्रिधा होतभई । सत, रज, तम पश्चात् आकाश तत्त्वसैं श्रवण ज्ञानेंद्रिय और वाक्य कर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। और वायुतत्त्वसैं त्वचा ज्ञानेंद्रिय हस्तकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। अग्नितत्वसैं नेत्रज्ञानेंद्रिय और पादकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। जलतत्त्वसैं जिह्वा रसलेनैंवाली ज्ञानेंद्रिय और मूत्रत्याग शिश्नकर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई । या शिश्नेंद्रियमें कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय दो हैं जैसैं जिह्वा रस भी लेती है और बाणी भी बोलती है ऐसैंहीं शिश्नेंद्रिय है जब मूत्र और वीर्य त्यागती है तव तो कर्मेंद्रिय है। और वायुतत्त्वका अत्यंत स्पर्श याके द्वारा त्वचाज्ञानेंद्रियकाभी है । जिह्वा आकाशकी कर्मेंद्रि और जलकी ज्ञानेंद्रि है ॥ और शिश्न जलकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय है। और पृथ्वीतत्त्वसैं नासिका ज्ञानेंद्रिय वायुतत्त्वके संजोगसैं हुई यामें भी दो इन्द्री हैं । पृथ्वीतत्त्वकी ज्ञानेंद्रिय और वायुतत्त्वकी

कर्मेंद्रि क्योंकि वायुका आवागमन यामैं रहता है और गुदा पृथ्वीकी कर्मेंद्रि और वायुतत्त्वकी ज्ञानेंद्रि है। क्योंकि अपान वायु गमनकरती है। ऐसें ये तत्वनसैं प्रकृतिका संयोग पाके ज्ञानेंद्रिय और कर्मेंद्रिय उत्पन्न हुई। और एक २ इन्द्रिमैं तीन २ भेद होते हैं। जैसे श्रवणेंद्रिमैं श्रोता श्रवण शब्द। नेत्रमैं द्रष्टा दृष्टि दृश्य। ऐसैंहीं सर्वेंद्रियन मैं जानो।श्रवणकाशब्द विषयहै, त्वचाका स्पर्श, नेत्रोंका रूप, रसनाका रस, नासिका का गंध, वाणीका भाषण, हस्तोंका रक्षाकरना, लैनां दैना पांवनका गमन शिश्नका मूत्र वीर्यत्याग भोगविलास गुदाका मलत्याग अपानवायुका छोडना ये सब विषय इन्द्रियोंके हैं और सब तत्त्व आपसमैं मिलेहुए गुण रखतेहैं। आकाशका शब्दगुण, वायुका शब्दस्पर्श, अग्निका शब्दस्पर्श रूप, जलका शब्दस्पर्शरूप रस, पृथ्वीका शब्दस्पर्शरूप रस गंध गुण हैं॥

अथ आकाशतत्त्वकी महिमावर्णनम्।

आकाशतत्त्व केवल श्रुतीकारिके अनुभवमात्र है। निरूप निराकार लघुदीर्घतासैं रहित सबका मूल सबतत्त्वनकी उत्पत्ति विनाशका कारण। सब सृष्टिके बाहिर भीतर आप निरूपाधिहै सबका लयस्थान अजर अमर

सबके बिगडने सुधरनेसैं रहित जाके भीतर सब रचना होतीहैं और विनाश होताहै। आप सबसैं भिन्न और मिलाहुवा है। या आकाशकी उपमा उस सत्तास्वरूपको दीजातीहै। परन्तु वो आकाशकों भी उत्पन्न करनेवाला है और आकाशसैं भी झीना अवाच्य अनाम है॥

अथ पवनतत्त्वकी महिमावर्णनम्।

पवनतत्त्व भी आकाशज है कहा आकाशसे उत्पन्न है। आकाशके भीतर गमन करनेवाला तेज जल पृथ्वीको धारण करताहै। और जल अग्नि याकी प्रेरणासै दौडते हैं। चैतन्यरूप सब मैं व्यापक रोम २ मैं फिरनेवाला दीर्घतासे चार द्वारनमैं गमन करता है। दोनूं नासिकाके द्वार नाभिचक्रसैं टक्कर खाके सदा जारी रहताहै। और मुख गुदाके द्वार होके भी बहता है। महापराक्रमका धारक है। और मुनियोंके द्वारा पहिले मैंनें सांख्य शास्त्रमें पवनके दशनाम कहेहैं। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, कृकल, कूर्म, नाग देवदत्त, धनञ्जय, हृदयस्थानमैं नासिकाके द्वार भीतर आवै जब प्राणरूप है अपान वो है जो नासिका और गुदासैं बाहिर जावै तीसरा समान वायु नाभिस्थानके कमलमैं है, उदान कंठमैं है व्यान सबशरीरमैं व्यापक है कृकल क्षुधा लगाताहै कूर्म पलक उघाड़ता है नाग वायुसैं डकार आतीहै देवदत्तसैं जँभाई आतीहै दशवां धनञ्जय जो मृतकशरीरकों फुलाता है॥

अथ तेजतत्त्वकी महिमावर्णन।

तेजतत्त्व वायुसैं उत्पन्नहै, जासैं वायुजतेज, चैतन्यरूप सूर्यचन्द्रमा, तारेनका प्रकाश करनेवाला, पालक बिनाशरूप सबका भस्म करनेवाला, सर्वकार्यकी सिद्धि करनेवाला, महातेजस्वी पराक्रमी है, रोम २ प्रकाशकी जीवनरूप, नाभि-मुखनेत्रोंमैं बिशेष रहनेवाला, जठराग्निरूप, अन्नजलका पाचन करनेवाला, चार तरहका अन्न है। चाटन यानें चाटकरिके जो खायाजाय, चूंसना जो चूंसकर भोजन कियाजाय, चिंगदन जो चिगदकर खायाजाय, पीवन जो पीके भोजन कियाजाय, ये चारतरहके भोजनकों तेज पाचन करनेंवालाहै और ब्राह्मणोंका अग्नि सर्वकार्य सिद्ध कर्ता है। ब्राह्मण अपनी यज्ञाग्निको कदाचित् न भुजने देवैं सो ब्राह्मण कौन? जो बडा उत्तम कर्म करैं, बडा उत्तम कर्म प्राणायाम है। सो प्राणायामकी सिद्धि नित्य यज्ञाग्निसैंही होती है। सो वा नित्ययज्ञाग्निकों नैं भुजनैं देवैं। सो नित्ययज्ञाग्नि कौन है? जठराग्नि है, नाभि यज्ञबेदी है, नित्य भोजन करना सोही आहुती हैं। याका भुजना यही है कि अयुक्त भोजन करनेसैं मन्द होजाती है सो जुक्तभोजन करैं, जासैं जगीहुई रहै। जब वो बडा उत्तमकर्म प्राणायाम सिद्ध होता है यांही कर्मकी सिद्धीसैं परमेश्वरकी प्राप्ति होती है जीव-

त्वतासैं रहित होके ब्रह्मभावको प्राप्त होजातेहैं याप्रकार ब्राह्मण सबसैं बडे हैं ॥

अथ जलतत्त्वकी महिमावर्णन ।

जलतत्त्व जीवनरूप पालक सृष्टिका उपजानेवाला, रसरूप अमृतकी खान पुष्टकरनेवाला, आनन्दस्वरूप, शान्ति स्वभाव, रोम २ मैं व्यापक, उदरनिवासी छः स्थानोंमैं बिशेषकरिके द्रवता है । दोनूं नेत्रोंमैं, दोनूं नासिकाके द्वारोंमैं, पांचवां मुखका द्वार आनेजानेका स्थान है। और छठा शिश्न है । सब शरीरमैं व्यापक, रोम २ मैं द्रवता है । जलसैंही सब सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै और या बिनाश होजातीहै ॥

अथ पृथ्वीतत्त्वकी महिमा वर्णन ।

ये पृथ्वीतत्त्व सबसैं दीर्घरूप यानें भारी है । सबका बीज धारण करनेवाली, सब तत्त्वनकी धारक चार सृष्टिके यंत्र जाकरिके प्रकाशित हैं ॥

प्रश्न—हे स्वामिन् ! चार सृष्टि कौनसी हैं ?

उत्तर—हे प्यारा ! चार ये हैं । जरायुज, उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज; जरायुज वो है, जो जेर करिके उत्पन्न होतीहै । पृथ्वी तत्त्वकी बिशेषता है । जामैं उद्भिज्ज वो है, जो जलतत्त्वकी बिशेषतासैं उगती है । स्वेदज वो है जो अग्नितत्त्वकी उष्णता पाके पृथ्वीके पसीनेसैं उत्पन्न होतीहै । अण्डज

वो है जामैं वायुतत्त्वकी विशेषताहै अण्डासैं पैदा होतीहै. पृथ्वी इन च्यारूं सृष्टीनकों धारण करतीहै और अण्डजके जीव जलमैं भी पैदा होतेहैं। परन्तु जल पृथ्वीपरही है ॥

प्रश्न—हे सर्वबोधक! जल आकाशसैं भी तो बर्षताहै ॥

उत्तर—हां प्यारा! बर्षताहै परन्तु आकाशमैं जब जल बनजाताहै तब पृथ्वीपेही आजाताहै?॥

प्रश्न—महाराज! आकाशमैं जल कैसै बनताहै ॥

उत्तर—हे प्यारा! अग्नि सूर्यके प्रभावसैं पृथ्वीसैं जों जल है उससें बफारे उठतेहैं, जैसैं हांडीकी भाफ ऐसैं ये अत्यन्त बडी हांडी पृथ्वी है। इसकी भाफ ये बद्दल हैं उनका जल बनजाताहै तब नीचे गिरपडताहै। हे प्यारा! ये तो तत्त्वनमैंसैं तत्त्व प्रगट होतेहैं, जब तुम अपने निजस्थानकों भक्ति योगकरिके जावोगे तब तुमकों सब हाल मालूम होजावैगा. और सबस्थान पृथ्वीतत्त्वसैंही बनतेहैं। अनन्त प्रकारकी शक्तिनकरिके अनन्तप्रकारके छोटे बडे शरीर स्थावर जंगम सब पृथ्वीतत्त्वसैंहीं प्रगट होतेहैं। पृथ्वीतत्त्वमैं बहुत गरवाई हैं याने भारापनहै। पृथ्वीसैं हलका जल है। जलसैं हलका अग्नि है, अग्निसैं हलका पवनहै सो पृथ्वी जलाग्नि ये तो दृश्यरूप हैं, पवन अदृश्यहै, शरीरके स्पर्शसैं मालूम होताहे और पांचवाँ आकाश अरूप निराकारहै, याकी महिमा पूर्व कहआयेहैं। और पृथ्वी दीर्घताकरिके

स्थूलहै और आकाश निराकारहै। इन दोनूं पाटनके वीच मैं तीन तत्त्व पवन जलाग्नि सर्व कार्य करतेहैं। जलतत्त्व सैं कफ,पवनसैं वायु, अग्निसैं पित्त उत्पन्न होतेहैं। जो नाडी मैं बिचार किये जातेहैं, सो पहिलैं तुमकों मनुष्य शरीर की उत्पत्ति कही। दूसरी महायोगीकी जो समाधिदशासैं उत्थानकों प्राप्त होताहै तिनकों बिचारो॥

मंगल उवाच।

हे सर्वलोकनिवासी! मैं आपसैं विनती करिके पूछता हूं कि, ये जो आपनें उत्पत्ति कही सो तो मैंनें भलीप्रकार श्रवण करी, परन्तु आपनें ये जो अक्षगोचर ब्रह्माण्ड दीखताहै इसकी उत्पत्ति नहीं कही। पृथ्वी, पहाड, सूर्य, चंद्रमा, तारा और अनन्तप्रकारकी सृष्टि स्थावर जंगम ये कैसैं उत्पन्न भयेहैं, सो कृपाकरिके कहो॥

अनाम उवाच।

हे सखे! इसका भी हाल संक्षेपतासैं कहताहूं सो सुनों। ये जो तुमकों चराचर चार खानिकी सृष्टि दीखती है, सो तो अनादि माया है, नैंतो हुई नैं होवै। दोनों बचनोंसैं रहित है। सो पहिलैही मैंनें बेद पुराण शास्त्रोंमैं माया अनिर्बचनीय कहीहै और श्रावकधर्मके शास्त्रोंमैं भी ऐसाही बर्णन किया है, और गीतामैं कह्या है॥

श्लोक–नरूपमस्येहतथोपलभ्यते नांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा॥
अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्वा॥ इति।

सो ये माया ब्रह्म दोनूं अनादि हैं । माया ब्रह्म दो नाम जिज्ञासूकों समझानेके निमित्त कहेहैं, वास्तव सत्ता-स्वरूपही सबकुछ होके अनन्तप्रकृतिरूप धारण करिके प्रगट होरहीहै। जैसे वटका बीज विस्तार होकर दीखता है, सो बीजसैं बाहिर कुछ नहीं है, बीजही सर्वरूपहैं। सो ये सब सृष्टि अक्षगोचर कीहै, ऐसी सदैवसैं है, इसका आदि अन्त नहीं। प्रबाहकरिके नित्यहै; चार खानिके पुराने शरीर नष्ट होते हैं, नये होतेजातेहैं ॥

प्रश्न–हे महाराज! हमनें ऐसैं सुनाहै कि, महाप्रलय करिके जलमैं शेषशय्यापर नारायण शयन करतेहैं। उनकी नाभिकमलसैं ब्रह्मा चतुर्मुख प्रगट हुवा, वासैं चार वेद और सब सृष्टि उपजी। और ऐसैं भी सुनाहै कि, इस ब्रह्माण्डका अण्डासरीखा आकार होकर, बहुतकालतक जलमैं रह्या, पीछे सबकुछ वामैंसैं उत्पन्न हुवा । जो सब सृष्टि दीखनेंमैं आतीहै, सो ये भी तो आपनें पुराणनमैं कथन कियाहै सो कैसैंहैं कृपाकरिके कहो ॥

उत्तर–हे प्रिय! इसकाभी कथन सुनों। मैं जो महायोगी परमसन्त होके जो कुछ कथन करताहूं उसमैं जो गूढ

आशय हैं वा महाकाव्यकों मैं हीं जानताहूं । और कोईकों उसके तत्त्व जाननेंकी सामर्थ्य नहीं । क्योंकि, योगी मुनि चारूंबाणी परा, पश्यन्ती, मध्यमा, बैखरीसैं परे जो मैं हूं, सो मोमैं लय होके मेरेही स्वरूप होके कथन करतेहैं, और मेरे निराकारस्वरूपकी महिमा आकारकरिके बर्णन करतेहैं । उसकों कोई बाह्यविद्या बेदशास्त्रपढनेवाले मेरे तत्त्वकों नहीं जानसक्ते । जबतक मेरी प्रेमभक्ति उनके हृदयमैं नैं उपजै और महायोगी सन्त मेरा सगुणस्वरूप हैं । उनकी सेवा प्रेमभक्तिके साथ नैं करैं, और उनका योगमार्गका बताया उपदेश भक्तिके साथ अभ्यास नैं करैं । तबतक पण्डित जो बाक्यबिलासमैं चतुर हैं परन्तु मेरी काब्यका तत्त्व नहीं जानसक्ते, उनकों बाह्य विद्याका घमण्ड होजाताहै; ताके बिकारसैं अंध होजातेहैं । मेरी भक्तिसैं हीन मोकों नहीं प्राप्त होते । मोकों भक्ति प्यारी है, परन्तु जो योगाभ्यासके साथ होवै तो मोकों वाही जन्ममैं प्राप्त होजातेहैं । और मेरी महाकाब्यकों मैंहीं जानताहूं । या अनन्य भक्तियोगकरिके जो मोमैं लय होतेहैं वे जानते हैं उनसैं कुछ छिपा नहीं रहता । सब गुप्तता प्रगट होजातीहै, येही तो मेरे नित्य अवतारहैं । पहिले हुये और अब हैं और होतेही चलेजायँगे । उनहींके द्वारा जैसा मैं समय काल देखताहूं वैसाही अनेक बैखरीकी न्यारी २ बोलीनमैं

रोचक भयानक यथार्थशब्दनकरिके कर्म, उपासना, ज्ञान, तीन भेदसैं कहताहूं सो सब वेदरूपहैं।कर्मउपासनामैं पृथक्ता होतीहै, ज्ञानसिद्धान्त सबका एकहै. हे प्यारा! तुमसैं मैंनैं पूर्व सृष्टिकी उत्पत्ति दोप्रकारकी कही। उनहींके अन्तरभूत ये तुम्हारे प्रश्न हैं। तुमनैं कह्या कि ब्रह्मासैं सब सृष्टिकी उत्पत्ति सुनीहै, इसका ब्याख्यान सुनों। जब महापुरुष परमयोगी मोमैं सब अंगनसहित योगाभ्यास करिके लय होतहैं वे महासुषुप्तिकों प्राप्त होके अवाच्यपदकों पहुँचतेहैं, इसहीका नाम महाप्रलयहै। फिर उत्थान जो जाग्रत् दशा है ताकों प्राप्त होके सब अंगनसहित शरीरको धारण करते हैं,तब प्रकाश तुरीय स्वरूपहैं और मोमैं जो समाधि दशामैं शान्ति पाईथी, वोही शान्ति योगीकी उत्थानदशा मैं हो जातीहै, उस शान्तिका नाम जल है। और तुम जो ये जल समझोगे तो विना रचना जल कहांसैं आया? और जलसैं पहिले मालूम हुवा कि–अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी बहुतसी रचना होगईथी सो ये तुम्हारी अल्पबुद्धिकी समझ है, शान्तिका नाम जलहै, वो शान्ति जो ऊपर कहिआयेहैं और शेषनाम जो कुछ बाकी रहै ताकाहै। अर्थात् शान्तिमैं शान्तिरूपही श्वास सोई शेषहै। तापै शान्तिरूप जलमैं योगी महाविष्णुरूप होके सोताहै अर्थात् आपमैं आप लय रहताहै। बाकी नाभिस्थानसैं ऐसा

बोध होताहै किमैं एकहूं ऐसा स्वयंभू पुरुष ब्रह्मा प्रगट होता है बहुत होजाऊं यासैं चतुर्धा बाणीरूप होके वेद जो अपना भेद प्रजानिमित्त सुखरूप कर्म उपासना ज्ञान कहिके बाणी सैं सबसृष्टिका हाल गुप्त प्रगटतासैं महाकाव्यमैं कहताहै सोही बचनरूप रचना, ब्रह्मासैं सब सृष्टि उत्पन्न हुईहैं। और दूसरा जो तुमनैं प्रश्न किया कि, अण्डा बहुतकाल जलमैं रह्या। उसमैंसैं सब सृष्टिकी उत्पत्ति भई उसकाभी तात्पर्य सुनों। पहले जो तुमसैं मैंनैं उत्पत्ति मनुष्यशरीरकी कही वाहीका आशय इस अण्डा सृष्टिमैंहै, जब रजो वीर्यकी गांठ बँधी वोही बहुतकालतक गोलाकार होके माताके उदरस्थान जलभागमैं तेजसैं पककर शरीरके सब स्थान बने और सब रचना क्रमसैं उत्पन्न भई। येही मनुष्य शरीररूप छोटा ब्रह्माण्ड अण्डाकार जलमैं पककर तासैं सब सृष्टिकी उत्पत्ति भईहै। सो हे प्यारा! पहिली पक्षका ज्यादा भेद खोलना उचित नहीं है। इसासैंनमैं सब समझलो और सब हाल मेरे मिलनैंसैं मालूम होवैंगे, कुछ इशारा तुम्हैं रुचि उपजानेकों कहदिया है॥

प्रश्न—हे कृपासिन्धो! आपके निजस्वरूपमैं भक्तियोग करिके लय होनेसैं तो सब हाल मालूम होवैंगे, परन्तु ये आपका सगुणस्वरूपसैं जो वचनप्रकाश होतेहैं उनसैं मेरे हृदयमैं बडा बोध होताहै और मोकों श्रवण करनेमैं अमृत

पनिकासा आनन्द आताहै । सो हे सर्वज्ञ! जैसैं बाहिर ब्रह्माण्डमैं आपनैं च्यारखांनि सृष्टिकी कही वे मनुष्यतनमैं कैसैं उपजैं हैं? क्योंकि ये भी तो छोटा ब्रह्माण्ड है सो कृपाकरिके कहो ॥

उत्तरः—हे सुबुद्धे! येभी मैं कहताहूं सो सुनो। बाहिर ब्रह्माण्डमैं तो स्थूलसंज्ञा करिके सृष्टि प्रगट होतीहै और मनुष्यशरीरसैं सूक्ष्मरूपसैं प्रगट होतीहै इसका ऐसाही नियम है। सो जरायुज सृष्टि सूक्ष्मशरीरसैं ऐसैं प्रगट होतीहै कि, अनेक कामना बुद्धिमैं कामदेवके प्रभावसैं गर्भित होके संकल्प बिकल्पके साथ बहुतकालमैं, कोई अल्पकालमैं सिद्ध होतीहैं सोई जरायुजहै। और जे तामसकरिके बृत्तियाँ क्रोधकी उष्णतासैं जलदीही अनेकतरहकी उत्पत्ति होतीहैं, वो स्वेदजहैं। और जे रजोगुणका संग पाके वृतियाँ मोहरूप जलसैं अनन्तप्रकार करिके जडसंज्ञा अज्ञानताकों लीयें कोई ठैरके कोई उद्वेगतासैं प्रगट होतीहैं सो उदभिज्जहैं । और जे रज तम लोभ वायुके संजोगसैं बृत्तियाँ पैदा होतीहैं और बहुतकाल सेवन होताहै जिनका,वो अण्डजहैं। ये सब शरीरसंयुक्त मन बुद्धिकी बृत्तियाँहैं, इन्द्रियोंके भोग अर्थ सुखदुःखकरिके अनेकप्रकारकी उत्पत्ति होतीहैं ॥

अथ तीनोंगुणनका निर्णय वर्णन ।

हे प्यारा! महतत्त्वसैं त्रिधा अहंकार होके तीन गुण उपजते हैं । रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण । रजोगुण नाम उसका है, जासैं सब इन्द्रियादि वृत्तिनका फैलाव होता है । अनेक तरहके खान, पान, वस्त्र, मकान, सवारी, अनेकतरहकी चतुराई, चिंता, मान, बडाई, छल, झूंठ, कपट, लोभ, मोह कामादि अनन्त बन्धन सब याहीसैं उपजते हैं। और तमोगुण नाम उसका है, जो स्थूलादि सबकों धारण करताहै । ईर्षा, द्वेष, कलह, क्लेश, हिंसा, दुर्वचन, ऐंठ, अकड, मत्सरता, लडना, रोना, दाँतपीसना, रूसना, आलस्य, दीर्घसूत्री, अनेकतरहकी खोटी वृत्तियाँ, अज्ञानादि सब दुःख याहीसैं उत्पन्न होते हैं। सतोगुण नाम उसका, है जाकरिके सुमति, सन्तोष, शीलता, समता, कोमलता, मधुर बचन, बुद्धि, बिबेक, विचार, विद्या, ज्ञानध्यान, प्रकाशमय, सुखरूप, अनेक शुद्धबृत्तियाँ । यासैं उत्पन्न होती हैं। और सतोगुणसैं देवता उत्पन्न होते हैं । रजोगुणसैं दैत्य मनुष्य । तमोगुणसैं प्रेत पिशाच नाग पशु पक्षी आदि उत्पन्न होते हैं । रजतमसैं असुर दानव होते हैं । ये, मनुष्यशरीके भीतरकी वृत्तिनके नामहैं । बाहिरभी येही बरततीहैं और सब तत्त्व परस्पर ऐसे मिलेहैं किं, एकसैं एक भिन्न नहीं । सूक्ष्मदीर्घतासैं ओतप्रोत होरहेहैं, ऐसैंही गुणइन्द्रियाँ अन्तः-

करण सब आपसमें मिलेहुये हैं। क्योंकि सबका धारक वो सत्तास्वरूपहे जैसें बीजही सब अंगनसहित वृक्ष हो रह्या है। सूक्ष्मता स्थूलता सब वहीमें हैं, परन्तु अंगनके नाम जुदे २ हैं। और रसरूप सबमें व्यापक हैं। मूलसैं लेके शिखातक भराहुवा है। हेप्यारा!जो मैंनें सूक्ष्मशरीरकी उत्पत्ति वेद पुराणमें कहीहैं तुम उनकों बाह्यदृष्टिकारिके स्थूल समझ रहेहो,इन सबका हाल तुमकों खोलाजावे तो कथनका क्या प्रमाण रहै। जब तुम सद्गुरुसगुणस्वरूप जो मौजूद हैं,उनकी भक्ति तनमनधनसें करोगे, उनकी कृपासैं प्रेमका पराक्रम लेके योगाभ्यास करोगे, तब सिद्धताके समय सब हाल मालूम होजावेंगे।नगुरेनकों मैं नहीं प्राप्त होताहूं। नगुरेनका सब साधन श्रमरूपहे, कर्मनका फल उनकों मिलजावेगा, लोकमैं बडाई हो जावैगी। परन्तु पूरा सच्चागुरूके बिनामिलैं तत्त्वको नहीं प्राप्त होते हैं, यानें मोकों नहीं पातेहैं। हे प्यारा! जैसैं बीज उदय होताहै जब वामैंसैं दो अंकुर ऊपर नीचेकों चलतेहैं, ऐसैंही नरदेहीके बीजमैंसैं मध्यभाग जासैं नाभि बनेंगी वामैंसैं दो अंकुर अधऊर्द्धकों चलतेहैं, नीचेके अंकुरसैं स्वाधिष्ठान और मूल ये दो कमल बनते हैं। ऊपरके अंकुरसैं हृदय कंठ भ्रुव सहस्त्रदल ये च्यार कमल बनतेहैं। इनके मध्यमैं मुख नासिका नेत्र कर्णादि सब

रन्ध्र बनजातेहैं । अधोअंकूरसें जंघा पिंडली पांवका तलवा जाकों पाताल कहतेहैं ये सब बनतेहैं । गुणइन्द्रियाँ अन्तःकरण ये याकी शाखाहैं, शब्दादि बिषय भोगबासना याके पत्रहैं, मलिनबासनावाले देहके भोग सुख दुःख विषयानन्दमैं फसतेहैं, उत्तमबासनावाले आत्मानन्दमैं रमण करतेहैं । और सहस्त्रदलके परे ब्रह्मरन्ध्रके पार सिद्धावस्थारूप या वृक्षके पुष्प खिलेहैं, तिनमैं तत्त्वज्ञानरूपी सुगन्ध महक रहीहै । सत्यलोकमैं सत्यपुरुषकी प्राप्ति सोई या वृक्षका फल है । हे प्यारा! वृक्षका फल योगी अष्टांगयोग सिद्धभयें भोक्ताहै । और यह फल बाह्य यज्ञ दान तप क्रिया शास्त्रोक्त बिचारज्ञानसैं नहीं प्राप्त होताहै। जो परमेश्वरका अनन्यभक्त होय और ब्रह्मचर्याश्रमसैंही अष्टांगयोगका अभ्यास गृहस्थाश्रम बानप्रस्थाश्रममैं करताहुवा समाधिसिद्ध संन्यासकों पाय सगुणनिर्गुणसैं परे निजकों प्राप्त होताहै सो कैसाहै ? आश्चर्यवत् अवाच्य अनामहै । जब महापुरुष महायोगी समाधिके समय अपनें वास्तवस्वरूपसैं उत्थानदशाकों प्राप्त होतेहैं तब अपना बिराट् विश्वरूप शरीरकों धारण करतेहैं और प्रकाशपर ठेरके अपना सबकुछ खेल आपमैं देखतेहैं । और आपनें आपसैं आपकेवास्ते सबकुछ उत्पन्न कियाहै ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपण योगशास्त्रे अनाम मंगलसम्वादे उभयउत्पत्तिवर्णनो नाम प्रथमप्रकाशः ॥ १ ॥

मंगल उवाच।

हे घणनामी! आपनें सृष्टिकी उत्पत्तिका कथन भलीप्रकार कह्या। अब दूसरा प्रश्न जो मैंनें कियाहै कि यह सब सृष्टि कैसैं नाश होतीहै, सो कृपाकारिके कहो।

अनाम उवाच।

हे सुबुद्धे! इसकाभी कथन कर्ताहूं; सावधान होके श्रवण करो। ये सृष्टि दोप्रकारकारिके नाश होतीहै। एक तो स्थूलशरीरकारिके, दूसरी सूक्ष्मशरीरकारिके जो स्थूल शरीर कारि नाश होतीहै सो सुनो। ये जीवात्माका मनुष्यशरीर प्रारब्धकर्मकारिके उत्पन्न हुवाहै और जब इसका अन्त काल आजाताहै। वा समय अनेक निमित्त कारिके इसके प्राण गमन करतेहैं। प्राणनिकसनेंके समय इसकों इसकी एक२ पल बहुत बडे कालकी बराबर मालूम होतीहैं, वा समय याके कियेकर्म चित्तमैं सब उदय होतेहैं। पहिलैं ये तन्दुरस्तीमैं अहंकारकारिके काम क्रोध लोभ मोहकी बृत्तिनके बेगसैं बहुत कर्मोंके संग डोलताथा, वो डोलना इसका कालकी पीडासैं नष्ट होजाताहै और थकके शैया तथा जमीनमैं लोटजाताहै, उसवक्त याके हृदयमैं लोभकी बहुतसी कल्पना उदय होतीहैं। जो धनसम्बन्धी लैनदैन धरोवर की थी उनमैं याका चित्त फँसताहै और बडा कष्ट पाता है, आप अपना

मरण समझके स्त्री पुत्र बान्धवनसैं अपनें चित्तका हाल कहताहै और जो बहुतकालसैं जिनकर्मोंकी सेवना करता था उनकी कल्पना चित्तमैं उदय होतीहैं। जिनकर्मोंकी ये वासना थी कि ये अब सिद्ध होजावैंगे। वा समय उनकी वासनानमैं चित्त फँसताहै । और अपनें बाग, बगीचा, मकान, महल, कोठी, कमरा और सवारी, ऊंट, हाथी, घोडा, जिनोंसैं ज्यादा प्रीति थी, अपनी सब संपदा जेवर माल खजाना और प्यारे मित्रोंको याद करि करिके उनका भीतरहीभीतर सोच करताहै । और कामक्रीडा करिके जो सन्तान हुईथी,पुत्र पुत्री और स्त्री आदि जिनोंमैं ज्यादा मोहथा, उन सबनकों देखके और अपना वियोग समझके रोताहै। और यमदूतनकी मार सहताहै । वा समय याकों बहुत घबराट होताहै। उसवक्तके कष्टका हाल बचनसैं कहा नहीं जाता, उसीकों मालूम होताहै जासैं बीतताहै। और बहुत तडफडाताहै उठ २ के भागताहै। कफ वात पित्त कोपभावकों प्राप्त होजातेहैं। और अनेक चेष्टा करताहै वा समय वाकों एक २ पल बहुत बडे कालकीसी मालूम होती हैं और भीतर वासनारूपी बृत्तिया बडेबेगसैं अनेकतरहकी श्वास२ मैं उदय होतीहैं। वा समय इसके सामने जो याके निमित्त पुण्य खैरात करतेहैं। जब उसका अन्तःकरणमैं

जो सर्व कर्मकरनेवाला अहंकारहै सो उन पुण्यकर्मोंको देख-
कर शान्ति पाताहै। ऐसा समझके कि ये मेरे निमित्त पुण्य
कियेजाते हैं और कष्टमें आरामभी होजाताहै। क्योंकि मेरा
अंश जो अहंकार है सो प्रसन्न होताहै। अच्छे बुरे कर्मनका
फल इसलोकमें और परलोकमें पाताहै। यह लोकपरलोक
कहा यह लोक तो स्थूलशरीरकरिके परलोक सूक्ष्मशरीरक-
रिके प्राप्त होता है। जो मनुष्य पहिलेसेंही शुभकर्म कर्ता
है उसकों अंतसमय वृत्तिनके उद्वेगकी कमपीडा होतीहै।
क्योंकि वाकी वृत्ति वैराग्यवान् होतीहै, वो अंतकालमें
सुगमतासें गमन करताहै। और जे छोटी ऊमरसेंही प्रेमभ-
क्तिके साथ श्रेष्ठकर्म कर्तेहैं, वे वडी धीरजतासें उत्तम अंतः
करणके साथ उत्तमलोकोंमें जातेहैं। और जे ऊमरभर भोग
विलासके निमित्त खोटेकर्म कर्तेहैं वे नर्कगामी होतेहैं। उनका
हाल मैंनें व्यासरूपहो गरुडपुराणमें कथन कियाहै। खोटेपुरुष
नर्केमेंतो मेरी प्रीति है नेंडरहैं। शिश्नोदरके गुलाम आठ
पहर धनभोगनकी तृष्णामें झूठ कपट छल छिद्रके साथ कर्म
कर्तेहैं। अहंकारी बहुत गालवजानेंवाले, सूधेसच्चोंके बैरी,
निर्दई, धर्मपुण्यकों वाहियात वृथा समझनेवाले हैं। और
उनसें कोई सज्जन कहे कि आप धनवानहैं सब कुछ लाय-
क राजाहैं। ईश्वरके नामपै कुछ खैरात कियाकरो तो उन
अज्ञानीकों ये पवित्र कहना अच्छा नहीं लगताहै। और कहते
हैं कि क्या हम ईश्वरकों रिश्वत देके अपना काम बनावें,

ऐसी उन अज्ञानीनकी तुच्छ समझहै । क्योंकि उन्हों नैं कोई श्रेष्ठजनोंका संग नहीं किया। नैं मेरे कहे शास्त्र ग्रंथ सुणे न देखे उनकी अल्प बुद्धि है । देखो परमेश्वरकों मनुष्योंसैं लेनेकी क्या इच्छाहै । जो रिश्वत देवेंगे सब कुछ तो परमैश्वरनैंही दियाहै। परमेश्वरके दियेहुये पदार्थ परमेश्वरकी प्रसन्नताके अर्थ जो आर्तजनोंकों देनां योग्यहै उसकों मन्दबुद्धि रिश्वत बतातेहैं । देखो ईश्वरनैं इनका महल एकबूंद रजवीर्यकी गांठ जठराग्निमैं पकाके पेटमैंप्रति पालन किया,बाहिर दूध पिलाया, दंत उगाके अन्नखवाया और सबतरहसैं पालन किया।बाहिरके सब विषय भोग दिये फिर परमेश्वरकों ये क्यादेवैंगे । परन्तु उसकी आज्ञा ऋषि मुनि योगी पैगम्बरोंकी जबानीसैं कह्याहै कि तुम परमेश्वर की दीहुई वस्तु परमेश्वरके अर्पण करो। तो तुम्हारा कल्याण होवैगा। प्रथमतो उसकों प्रसन्नकरनेंके अर्थ उसके नामपै धन खैरात करो । पीछै तनदेके मन देवो तो उसकों पावोगे। उसमैं लय होके उसीका रूप होजावोगे। और जो हुक्म नहीं मानोंगे तो हुक्मअदूलीकी सजा पावोगे। जो तैंने उसके नामपै धन खरच नहीं किया तो तन मन प्राण कैसैं देवैगा । देखो सबकेवास्ते अपनी आमदसैं दशांश देनेका हुक्म है । बाहिर दशांश धनका भीतर दशांश मनका देनाहै । क्योंकि दशों इन्द्रियनका अंश मन है सो मन देनां ये भीतरका दशांशहै ।

सो सब धर्मी मजहबी उसके नामपर खैरात करतेहैं और धनवान् और राजा होके जो कृपण होताहै वो अपजसका पात्र कीर्तिहीनहै परन्तु वो अच्छा संग पाके श्रेष्ठ होजाताहै। उत्तम संगसे उसके क्रियमाण कर्म अच्छे होजाते हैं। हेप्यारा! बहुतसे मन्दबुद्धि सत्संगहीन सूमताकों धारण करिके अनेक तर्करूप बचन कहके धर्मकी हानि करतेहैं। वे मूर्ख बहुतसी आफतनमें फसते हैं और रोगी होके क्लेश पातेहैं। वे आज्ञा भंगकरनेवाले सजाके लायक होतेहैं। मेरा अंश जो उनमें अहंकार है वाकी मारफत मैं सजा देताहूं ॥ यानें वे अपनी चालमें आप ठगाजातेहैं। सो हेप्यारा! अखीर जो अन्तकाल है वासमय वाकों भाईमित्रादि हेला देदेके अपनेकों पिछनवातेहैं और वाकों बुलाना चाहते हैं। परन्तु वे वासमय वाकों दुःख देतेहैं और कईबात पूछतेहैं। परन्तु वो बोलनहींसक्ता। बाणी उसकी मनमैं जा मिली मन प्राणमैं मिलगया। प्राण वैश्वानर जो साक्षीस्वरूपहै तामैं लयहोगया। जो याकी सुषुप्तिअवस्थामैं रहताहै। ऐसैं या शरीरस्थूलकां नाशहुवा। और अनेक निमित्त करिके अनेक रीतिसैं नाश होताहै। कोई ज्यादा कष्ट पाताहै, कोई कम पाताहै। ये प्रारब्ध क्रियमाण कर्मनके संयोगहैं। बिनासमय नष्टहोनां सो अकालमृत्यु कहलाती है। सोभी कई-प्रकारसैं होतीहै ॥

मंगल उवाच ।

हेस्वामिन्! ये जीव पुनर्जन्म लेतेहैं कि नहीं। वेदपुराण तो जीवोंके अन्तसमयकी बासनानुसार और शुभाशुभ कर्मानुसार जन्म बतातेहैं । और श्रावकमतवालेभी ऐसैंही कहतेहैं ॥ परंतु यदि अंतमतानुसारही जन्महै तो स्वर्ग-नरकमैं कौन जातेहैं। क्योंकि जीवका तो बासनानुसार जन्म होगया । और यहुदी अंग्रेज मुसलमानोंके पैगम्बरोंनैं जन्म नहीं बताये।ऐसा बयान करतेहैं कि कयामतके वक्त सबका इन्साफ होवैगा। सो इनमैं कौनका कहनां सत्यहै। जापै निश्चय कियाजाय सो मेरे बोधके निमित्त कृपाकारिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हेप्यारा! इन सबनका कहना सत्यहै। जिनका जीवात्मा परमात्मामैं लयहुवाहै वे परमेश्वरके स्वरूपहैं उनका सबही कहनां सत्यहै ॥

प्रश्न—हेस्वामिन् ! अलग २ भेदनकारिके क्यों कह्या ।

उत्तर—हेप्यारा! मेरी मौजहै मोकों ऐसाही अच्छालगा। कि अलग २ भेदनसैं मेरी उपासनां करैं। जो मोकों एकही मजहब करना होता तो एकहोता। फिर कौंन दूसरा करसक्ताहै। और आगेकों जैसा मुनासिब समझोंगा ऐसाही बदलतारहूंगा। जैसैं मेरी रचीहुई अनन्त सृष्टिहै। ऐसंही

बहुतसी उपासनाहैं, परन्तु सबका एकही सिद्धान्तहै। मैं जो पवित्रलोगोंमैं होके कथन कर्ताहूं, वे पवित्र क्योंकहलातेहैं। वे प्रेमभक्तिकरिके योगाभ्यासके मार्ग अपना जीवात्मा मोमैं लयकरतेहैं। वे मेरेही स्वरूप होजाते हैं। उन्होंनैं जो पहिलैं कह्या और अब कहतेहैं। और आगेकों कहेंगे उनके कहनेंमैं हमेशा तीन तात्पर्य होतेहैं। अर्थात् कर्म, उपासना, ज्ञान, सो कर्मउपासनामैं तो भिन्नता होतीहै, ज्ञानसिद्धान्त सबका एकहै॥

प्रश्न—हेदीनबन्धो! हम कौनसाधर्म मजहबका निश्चय करैं॥

उत्तर—हेप्रिय! जिससैं तुम्हारा जन्म हुवाहै उसीप निश्चय करो। और जैसा आचार्योंनैं कह्याहै। उसीपै दृढ़विश्वास राखो। परमेश्वर जो सर्वशक्तिवान्हैं वो तुम्हारी सहाय करैगा। परन्तु हरेकजगह मनकी चंचलतासैं जो शैतान कहलाताहै उसकी बहकावटसैं उछलते मत डोलो दृढकरिके तो अपनां जन्म धर्म पैही बनारहना श्रेष्ठहै। सर्वबातकी सिद्धि परमेश्वर ह्वांई करैगा। दृढविश्वासीकी वो सहाय कर्ताहै। मनमुखीकी सुनाई कमहोतीहै। और निजमन जाकों नूरी कहतेहैं वो विश्वाससैं जैसा निश्चय करैगा वैसाही परमेश्वर कर्ताहै बन्धमोक्षका कारण मनहै, सो जैसा जाआचार्य नबीयोंनैं कह्याहै उसकों दृढतासैं जो

धारण करतेहैं उनका परमेश्वर वैसाही न्याय कर्ताहै। मूसाई-शा महम्मदके मजहबीयोंकी रूहनकों बहुतकालतक जमी-नके पडदेमैं रक्खीजायँगी। पीछे अखीरमैं जिलाके न्याय कियाजायगा। और शुभाशुभ कर्मनके भोग अनेक योनि योंमैं भोगैंगे। और ब्रह्मा ऋषि मुनि अवतारोंनैं जो कह्या-है। उनके धारक संचित क्रियमाणकर्मनके संग अनन्त योनियोंम भ्रमण करैंगे। और हेप्यारा! अन्तकी बासना-न्यायके समय प्रधान समझीजातीहै न्यायका जैसा मुना सिब समझताहै ऐसा फल देके जन्मांतर देताहै। मृत्यु तीनरीतसैं होतीहैं। समयपाके अकाल योगाभ्यासकरिके जीवतैंहीं मरके अमर होनां। और जन्मभी तीनरीतसैंहैं। केई बासनाके अनुसार कोई भलेबुरेकर्मनका फल भुगताके केई प्रारब्धकर्मके भोग बाकीरहजायँ वा कारिके होतेहैं। हेप्यारा! परमेश्वरके एकपल सहस्रबर्षकी होतीहै। और सहस्रवर्ष एकपलके होतेहैं। अनन्त कानूंनहैं। सब कहनेंमैं नहीं आते। ये गम्भीर आशयहैं। जे अनन्य भक्तियोग करैंगे और मैं उनकों दिव्यदृष्टि देऊंगा इतनें ये समझमैं नहीं आते। जैसैं बच्चा शृंगाररस नहीं समझसके समय-पाके प्राप्तीसैं प्रत्यक्ष होताहै। सो हेप्यारा! परमेश्वर सर्व-शक्तिमांन है, सबका प्रेरक सबकुछ करसक्ताहै। वाको कोई बात भारी नहींहैं॥

दृष्टान्त—जैसें कोई बादशाहके बहुतसी पलटनहैं और उनके अलग २ कप्तान हैं और कवायिद उडदीका अलग २ कानून हैं । परन्तु वे सब पलटन बादशाहकी हैं। जो जापलटनमैं भरती होगया वो उसीकों श्रेष्ठ मानताहै । और कानूनमैं दृढताभी ऐसीही रक्खीहै और जो अपनी २ पलटनमैं कानूनके साथ काम करैंगे सो तरक्की पावैंगे । ऐसेहीं अनेक उपासना हैं । जे निजधर्मकों निष्कपट दयासंयुक्त विश्वासके साथ संयमसैं सेवैंगे उनपै मैं कृपाकरिके सच्चा सद्गुरु यानें कामिल मुरशिद होके मिलोंगा । और वे प्रेमके साथ तनमनधनसैं सेवा करैंगे । जब उनकों संसार यानें दोजखसैं काढके सारवचन उपदेश देके निजमार्ग जो अपक्ष है ताय बतला ऊंगा । जाका अभ्यास साथ गुरुभक्तिके करैंगे जब मोकों प्राप्त होवैंगे। तब सब गुप्त प्रगट भेदोंसैं वाकिफ होजा- वैंगे उनसैं कोई बात छिपी नैं रहैगी । और जबतक तेरे भीतर परमेश्वर प्रगट नैं होवे । वासैं पहिलैं सब बातनका न्याय मतकरै ॥ यावत् वे सच्चे पूरे सद्गुरु नैं मिलैं तावत् जो तेरा धर्म जन्मका है उसकों सत्यताके साथ बिश्वाससैं धार- णकर फुकरा यानें सन्तसाधूनकी सेवा कियाकर । हंसदे खा चाहै तो पक्षीचुगा। यासेवासैं हंसभी आमिलैंगे और हेप्यारा!जैसैं जन्ममरण होतेहैं उनका कथन सुण मनुष्योंके कल्याणके अर्थ बचनों मैं बहुतसे आवरण रक्खे जाते हैं

इनके जन्म ऐसैं होते हैं। जैसैं मनुष्यकी सुषुप्ति अवस्था म तीनूं गुणनकी बृत्ति लय होजातीहैं। फिर जाग्रतमैं जैसी जाकीहैं वैसीही उदय होतीहैं। ये जो ब्रह्माण्ड अप्रमाण अनन्तहै, सो परमेश्वरकी अपार महिमाहै यामैं भी अनादिप्रकृति अन्तःकारण होके सृष्टि उपजावतीहै। और च्यारखांनिके स्थूलशरीर धारण करतीहै सो जैसी बृत्तिनमैंसूं ये जीव प्रारब्धके संस्कारसैं उपजतेहैं और प्रारब्धके सिवाय क्रियमाण कर्म करतेहैं वे सब मिलके अन्त समय जिन २ बृत्तिनका इनकों संग रहताहै, उनका संग पाके ब्रह्माण्डकी बृत्तिनसैं लय होजाते हैं। फिर उनहीं संस्कारोंकों लेके च्यारूं खानोंमैं जन्म लेतेहैं।जो या वडा ब्रह्माण्डकी बृत्तियां हैं सो तो अनन्तजीवोंके संचयरूप कर्म हैं बामैंसैं जावृत्तिका संस्कार लेके जीव आके जन्म लेतेहैं, वे प्रारब्धकर्म कहलाते हैं। जो प्रारब्धकर्म करिके शरीर पायाहै वाके साथ संगकुसंग पाके प्रारब्धसैं ज्यादा कर्म करतेहैं वे कर्म इनके क्रियमाण कहलातेहें॥सो इन जीवोंके जन्ममरण वडा ब्रह्माण्डमैं संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण तीनों कर्मनके संजोगसैं होतेही रहतेहैं ॥ जन्मैंहैं और मैंरेंहैं। जैसैं मनुष्योंकी स्वप्नावस्थामैं सूक्ष्मशरीरसैं अनन्त कल्पनारूपी सृष्टि उपजैहै ऐसैंही बाहिर वडा ब्रह्माण्डमैं स्थूलकरिके च्यारखांनिके द्वारा उपजतीहै और इस

मनुष्यजन्ममैं हालमैं भी जीतैंजी बिनाबोध चौरा-
सी भोगतेहैं । क्योंकि चौरासी लक्ष योनिनकी
इनके अन्तःकरणसैं वृत्तियां उठतीहैं । जब ये
श्रेष्ठसंग पाके अपने मनकी पहिचान करैंगे और
अपने समान सबके सुखदुःख समझकर दयासमताको
धारणकरैंगे तब इनकी मनुष्यसंज्ञा होवैगी । जबतक
मनको मनसैं परखनेका बोध नहीं होता तितनै पशुरूप
हैं । सो मनुष्य थोडेहैं और सब महापशुहैं । और चौरासी
लक्ष योनियेंहैं । चारतत्त्व, पृथ्वी, आप, तेज, वायु और
दशइन्द्रियां, चारअन्तःकरण, तीनगुण, ये इक्कीस हुये ।
और जरायुज, उद्भिज्ज, स्वेदज, अंडज, इन चारूं सृष्टिनकी
इक्कीस२ लक्षयोनिहैं सोई चौरासीहैं । येतेरे बोधके निमित्त
चौरासी कहीहैं, कुछ योनियोंका शुम्मार नहीं, अनन्त
योनिहै । हेप्यारा!कर्मनकी बडी गहनगति है,पिछलेजन्मोंमें
जो कर्म किये हैं सो तो अब हालमैं भोगतेहैं और अब
करैंगे जो आगै भोगैंगे । और बहुतसे कर्मनका फल अब
हालमैंहीं भोगतेहैं । ये मनुष्यशरीर सबसैं श्रेष्ठ । सब कर्म
शुभाशुभका क्षेत्र नरकस्वर्ग मोक्ष और परमेश्वरकी प्राप्ती
सबका दैनेंवाला है । याके साथ जैसा जीव कर्म कर्ते हैं
उन्हींके फलोंसैं ऊंच नीच लोकोंमैं जातेहैं । और जन्मा-
न्तर पातेहैं जो मनुष्य जन्मपाके अनेकजन्मोंसैं श्रेष्ठकर्म

कर्ता चलाआवै फिर अन्तका जन्म जामैं मोक्ष होनैंवाली है श्रेष्ठकुलमैं मनुष्य जन्मपाके बाल्यावस्थासैंहीं प्रेमभक्तिके साथ च्यारूं आश्रमोंकों धारण कर्ताहुवा सद्गुरुकी सेवा करिके योगमार्गहोके सब वृत्तिनसैं परे जो मैंहूं सो मोसैं मिलके मेरी अवाच्यमहिमाकों प्राप्त होजाताहै। ऐसाधाममैं चलाजाय जाकों धाम भी बचन नहीं कहसक्ता। अकह अनाममैं लय होजाताहै। जाकी महिमा वेद नेति नेति कहतेहैं। हेप्रिय! और दृष्टान्तसुणो। एक किस्मके अतिसूक्ष्म देहधारी जीव वर्षाऋतुमैं श्वेतबर्णके होतेहैं। लीख जो जूंस पैदा होतीहै ऐसा है छोटा अंग जाका सो च्यारपांऊंसैं चलताहै। और मुखकी फूंक दैंनेंसैं उसीजगे चिपटजाताहै तो देखनां चाहिये कि अतिछोटा शरीरके भीतर उसके आकाशमैं अन्तःकरणकी वृत्तियां वाके शरीरकी रक्षा करतीहैं। तो बिचारो कि अन्तःकरणकी वृत्तियां कितनी सूक्ष्मतासैं काम करती हैं। तुम्हारे स्थूलकों देखतें वाका अतिछोटा शरीर है परन्तु जो अन्तःकरण तुम्हारे शरीरमैं काम कर्ताहै। वैसाही उसमैं काम देताहै और रक्षा कर्ताहै। याहीप्रकार वडाब्रह्माण्ड और तुम्हारा शरीर छोटा ब्रह्माण्डसैं जानों वडाब्रह्माण्डका अन्तःकरणकी वृत्तियोंमैं तुम्हारा स्थूलसैं अन्तःकरण खिंचकर कारणरूप मैं नाश होके अर्थात् लय होके, जास्थानकी वृत्ति अन्तमैं रहतीहै, वोही महदब्रह्माण्डकी वृत्तिनमैं

जामिलतीहै। फिर त्रिविधकर्मनकी वासना शुभाशुभमैं जन्मपातेहैं। ये सूक्ष्मज्ञानहै, तुम्हारी समझमैं कम आवैगा। जब मोकों प्राप्त होवोगे तब जैसैं हैं वैसा जानोंगे। ये जो मनुष्यका शरीरहै सो छोटा ब्रह्माण्डहै। याहीकों योगीराज ऋषिमुनियोंनैं देखके सबकुछ बर्णन कियाहै। और बडा-ब्रह्माण्डकों देखनेंकी किसीकी सामर्थ्य नहींहै। जो कुछ छोटामैंहै सोई बडामैंहै। ये बडाब्रह्माण्ड अप्रमाण अनन्तहै ताकों बहुतसे गोलाकार कहतेहैं, तो क्या वे यासैं अलग होके कहीं आकाशमैंसैं पृथ्वी देखीहै। क्या इनकी आंखनकी इतनीबडी निगाह होगई जासैं सब पृथ्वीका अन्त नजर आया। ये तो फक्त पांच सात टापूनमैं डोलेहैं और दुरबीनके जरियेसैं रेखागणित बीजगणितकी बिद्यासैं पृथ्वीका अनुमान करिके गोलाकार बतातेहैं। येतो मनुष्यकी समझसैं बाहिर बातहै। पृथ्वी अनन्तहै, जल भी तो पृथ्वीपरही है। ये पृथ्वी कहीं कैसी कहीं कैसी कहीं ऐसी है कि जहां मनुष्यका कदाचित् जानां नहीं होसक्ता ये महद्ब्रह्माण्ड आदि अन्तसैं रहितहै। पहलैं गीतामैं कहिआयेहैं ॥

श्लोक–प्रथमप्रकाशमैं है। ये मनुष्य बाह्यबिद्यावांनोंनैं पृथ्वीका गोलाकारका नमूनां बनाके सूर्यकी चालके अंशकायम करिके बच्चेनकों मदरसेमैं पढातेहैं यानैं गोलाकारका नकशा समझातेहैं और कहतेहैं कि पृथ्वी फिरती है सो

कहना इनका मिथ्याहै ये तो अचलाहै मनुष्यकी बुद्धिसैं अगम्यहै। हे प्यारा! ये मनुष्य बाह्यविद्या पढकर अभिमांनी होजाताहै।और आपकों बडा बुद्धिमान् समझके मेरे बचनोंपै तर्क करते हैं। ये मन्दमति कामधनके गुलाम हैं। इनकों मेरे बचनोंका तत्त्वप्रकाश नहींहोता। जब ये मेरे प्रेमके साथ भक्त होवैंगे और दीन कोमलचित्त निरअहंकार होवैंगे। और मेरा स्वरूप सन्त योगीनका सत्संगसेवा करैंगे अपनीं बाह्यचतुराई छोडके उनका बचन सुणके बिचारैंगे उनका उपदेशसैं योगमार्गका अभ्यास करैंगे। जब मेरी कृपासैं निजबोध पावैंगे तब तत्त्वज्ञानकों प्राप्त होवैंगे। हे प्यारा! विद्या अविद्या दोहैं। बिद्यानाम उसकाहै जाकरिके बहुतसे कर्मनके फन्देनसैं सुलझके अपनें स्वरूपमैं स्थित होवे और अविद्या वोहै जासैं अहंकार उपजै और बहुतसे कर्मनके फन्देनमैं फँसै और अभ्यन्तर ब्रह्मबिद्या योगकी सिद्धतासैं प्राप्त होतीहै॥

प्रश्न—हे महाप्रभो! पैगम्बर नबियोंनैं जन्म नहीं बताये ऐसा बयान कर्तेहैं कि कयामतके वक्त जैसैं बर्षाकालसैं जमीनके बीज इकदम उपजतेहैं ऐसैंही जमीनके पडदेमैंसैं सब रूह इन्साफ देनेंकों खडीहोजावैंगी। और कांन, आंख, मुख, हस्त, पांव, सबही अंग पुकारके अपनें २ भले बुरे कर्मनका बयान करैंगे। सो इनके कहनेका तात्पर्य भी तो कृपाकरिके कहो॥

उत्तर—हे प्यारा ! मूसायीशा महम्मदके वचनोंकाभी येही तात्पर्य है। कि मैं जो आकाशरूप पुरुषहूं च्यारतत्त्व अन्तःकरणसहित प्रकृतिरूपी पृथ्वीहूं सो या पृथ्वीके पड-देमैं अनेक जे वृत्तिया त्रिधारूपी रूह रहतीहैं सो कया मत जो शरीरका अन्तहै, उसवक्त इनके जिगमैं वीजोंकी तरह भलेवुरे कर्मनकी कल्पना खडी होजातीहैं और अन्तःकरणकी मारफत सव हाल मालूम होताहे। उस वक्त इन्साफ जो इन्होंनैं शुभाशुभ कर्मकियेहैं। रूहकों जिलाके यानें जन्मान्तर देके उलवी सिफली दरजोंमैं यानैं दोजख वहिश्तमैं अच्छेवुरेकर्मनका फल देताहूं। सो सवका एकसिद्धान्तहै अल्पवुद्धियोंकों फरक मालूम होताहै मैं वुद्धि बखशोंगा जाकरिके सवहाल जानैंगा।

मंगल उवाच।

हे सर्ववोधक! मुकुन्दस्वरूप आपनें स्थूलशरीरकी सृष्टिका नाश तो कह्या सो तो श्रवणकिया अव दूसरी प्रलय सूक्ष्मशरीरकी जो सृष्टिनाश होतीहै सो कृपाकरिके कहो।

अनाम उवाच।

हे सुवुद्धे! अव दूसरी सुणो। हे अनघ! जव महायोगी वाल्यावस्थासैंहीं मेरी आज्ञा पालन कर्ताहुवा शुभकर्म कर्ता है और सद्गुरुका संग पाके उनकी कृपासैं मेरा योगमार्गका अभ्यास कर्ताहै तव अशुभकर्मनकों तो शुभकर्मनसैं नाश कर्ताहै और संसारके भोगरूपी वृत्तिनकों मेरी प्रेमभक्तिका

जोर जो वैराग्यहै वासैं नाशकर्ताहै । आसनसैं शरीरका संजम कर्ताहै । और प्राणायमका साधनसैं पाचतत्त्वनकी प्रकृतिनकों पांचोंतत्त्वोंमैं मिलाताहै । सो एक २ तत्त्वकी पांच २ प्रकृतिहैं सो श्रवणकरो । पृथ्वीतत्त्वकी पांच प्रकृतियेंहैं।अस्थि पृथ्वीरूप पृथ्वीहै,त्वचा जलरूप पृथ्वीहै,मांस अग्निरूप पृथ्वीहै, नाडी बायुरूप पृथ्वीहै, रोम आकाशरूप पृथ्वी है, ये स्थूलरूपहैं। अब जलतत्त्वकी सुनों। मेद पृथ्वीरूप जलहै, मूत्र जलरूप जलहै, रक्त अग्निरूप जलहै, कफ बायुरूप जलहै, बीर्य आकाशरूप जलहै येभी स्थूलरूपहैं। अग्नितत्त्वकी सुनों । क्षुधा पृथ्वीरूपाग्निहै, प्यास जलरूपाग्निहै, आलस्य अग्निरूपाग्निहै, संगम बायुरूपाग्निहै, निद्रा आकाशरूपाग्निहै, ये स्थूल सूक्ष्म संबन्धीहैं। बायुतत्त्व कीसुनों। सिमटनां पृथ्वीरूप बायुहै, डोलनां जलरूप बायुहै, फैलनां अग्निरूप बायुहै, भागना बायुरूप बायुहै कपना आकाशरूप बायुहै, ये स्थूलसूक्ष्म संबन्धी हैं । आकाशतत्त्वकी सुनों । भय पृथ्वीरूप आकाशहै, मोह जलरूप आकाश है, क्रोध अग्निरूप आकाशहै, काम बायुरूप आकाशहै, लोभ आकाशरूप आकाशहै, ये सूक्ष्मसंबन्धीहैं। सब प्रकृति परस्पर मिलीहुई पच्चीसहैं सो योगी प्राणायामके बलसैं सबकों लय कर्ताहै योगधारणके समय योगी दशोंइन्द्रियोंकी बृत्तिनकों सूक्ष्मशरीरमें लयकर्ताहै और अन्तःकरण तीनों गुणसहित साक्षी जो तुरीयास्वरूपहै तामैं लयकर्ता

है। और सद्गुरुकी भक्तिसैं योगका बल जो प्राणायामहै ताके प्रभावसैं तत्त्वनकों तत्त्वनमैं लयकर्ताहै। पृथ्वीकों जलमैं, जलकों अग्निमैं, अग्निकों वायुमैं, वायुकों आकाशमैं, आर सबवृत्तियोंके अहंकारकों महत्तत्त्व जो अपराप्रकृतिहै तामैं, लयकर्ताहै अपराकों पराप्रकृतिमैं और पराप्रकृति जाकों श्रुतीकहतेहैं वो पुरुष जो सत्तास्वरूपहै तामैं लयहो जातीहै। पश्चात् वहांसैं परे जो परात्पर वो अवाच्य अकह अनाम है ऐसे सब वृत्तिनका योगी नाश करिके अर्थात् लयकरिके समाधिमैं स्थित होता है सो सूक्ष्मशरीरकी सृष्टिका नाशहै।

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाम—मंगलसम्वादे उभयप्रकारसृष्टिनाशजन्मान्त व्याख्यानवर्णनं नाम द्वितीयप्रकाशः॥ २ ॥

मंगल उवाच ।

हे दीनवन्धो! हमनैं ऐसैं सुनांहै कि कलियुगमैं समाधि संन्यास यज्ञ नहीं होसक्तेहैं सो इनका तात्पर्य कृपाकरिके कहो।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! येकहना सत्यहै। देखो कलियुग नाम कपटका है जिन मनुष्योंकी मलीन रज तम वृत्तियांहैं उनके सब व्योहार दम्भ कपट क्रोध निर्दयतासैं भरेहुएहैं ऐसी

दशामैं ये उत्तम कर्म कैसैं होसक्तेहैं। जिन मनुष्योंके रज तमशुद्ध प्रधान जिनके सतोगुणहै उनके सब कर्म, छल ईर्षा द्वेषसैं रहित दया धर्म सन्तोष कोमलता सत्यताकों लीयेहैं। उनसैं ये उग्रकर्म होसक्तेहैं? देखो अब हालमैं बहुतसे महात्मा योग समाधि सिद्धके प्रगट हुएहैं। कबीर, नानक, दादू, गरीबदास, रज्जब, राधास्वामी, आदिजानों। हेप्यारा! शुद्ध सतोगुणका नाम सतयुगहै जिनके सतोगुणी ब्योहारहैं वे सतयुगके बासीहैं और सतोगुणकों लीये शुद्ध रजोगुणका नाम द्वापरहै। जे सतोगुणके साथ शुद्ध रजोगण बर्ततेहैं, वे द्वापरके बासीहैं। सतोगुणकों लीयें शुद्ध रजतम जामैं सो त्रेतायुगहै। जेसतोगुण बाणीकरिके शुद्ध रजतमके कर्म कर्तेहैं वे त्रेतायुगके बासीहैं। सत्वगुणहीन रज तम मलीन जामैं सो कलियुगीहैं। जे झूँठ, कपट, ईर्षा, द्वेषके साथ दयाहीन क्रोधी निठुर सूंम अज्ञानी अतिकामी लोभ मोहके बसीभूत सबकर्म मलीनहैं जिनके वे कलियुगी कहलातेहैं। भला अच्छे उत्तमकर्म मलिनसंज्ञामैं कैसैं होसक्तेहैं। पहिलैं कह्यागया सो ठीकहै। हे प्यारा! तुम तो सतोगुणी पुरुषहो तुमसैं ये शुद्धकर्म होसकैंगे खोटी वृत्तिवालोंकों मनाहैं जैसैं किसांन अपनां शुद्धखेतकरिके समयपै बीज बोताहै वो ईश्वरकी कृपासैं फलदायक होताहै। सतयुगमैं रहनेवाले सर्वसंकल्पसैं संन्यास होके योग मार्गमैं ध्यानसमाधिके

कर्म कर्तेहैं। द्वापरके रहनेवाले मलिन संकल्पसैं रहित शुभ इच्छा जो मेरे मिलनेकी भक्तिके साथ मेरा जो सद्गुणस्वरूप सद्गुरुका ध्यानकरनां योगाभ्यास करनां और सब शुभआचरण रखनां ये द्वापरके कर्महैं त्रेतामैं श्रेष्ठजनोंकों पूजनां भोजनवस्त्रसैं सेवाकरना प्राचीन श्रेष्ठपुरुषनकी तसवीर या मूर्तिकी पूजा करना उत्तमजनोंकों और अपनें कुटम्ब मित्र पाडोसी आदिकों पुत्रकन्याके विवाहमें उत्सव जात्रानमैं विधिपूर्वक मानसहित भोजन कराना ये बाहिरके यज्ञ करनां संजमसैं रहनां, ब्रह्मचर्यसहित सत्य बोलनां, ये त्रेताके कर्महैं, और कलियुगमैं ये ऊपरकेहहुए कर्म शुद्धतासैं नहीं बनसक्ते बिवाह नुक्ता कर्तेहैं परन्तु दम्भ अभिमांन कठोरताके साथ कर्तेहैं सो निष्फलहैं। उनका यहीफल होताहै कि, उनकों कारिके दम्भताकेसाथकहते डोलैं और अभिमांनी होजातेहैं। हेप्यारा! कलियुगमैं सुमरन कीर्तन श्रद्धासहित दान देनेंसैं शुद्ध होतेहैं। और तीनों युगनमैं मानसी पाप लगताहै। क्योंकि उनमें शुद्धमनसैं सब साधन होतेहैं और कलियुगमैं मानसी पुण्य तो लगताहै। पाप नहीं लगता सो कलियुगका न्याय बडा हलका रक्खाहै ॥

प्रश्न ॥ हे स्वामिन्! ऊपर जो आपनें कथन किया उनमैं वाहिरके यज्ञ वतलाये भींतरके यज्ञ कोंनसेह। सो कृपाकरिके कहो।

उत्तर॥ हे प्यारा! भींतरके यज्ञ भींतरही होतेहैं। नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, छागमेध, और बहुतसे भेदनकरिके वेदनमैं कहेहैं।

अथ छागमेधयज्ञवर्णनम्।

ये अज्ञानदशामैं कामी क्रोधी लोभी जो अहंकारहै सब कर्मनके संगमैं कर्ताहै। सोई पशुरूप बकराहै। उसकों क्षत्री जो योगधारण कर्ताहैं सो योगी ज्ञानखड्गसैं तुरीया ज्योतिरूप शक्तिके बलदान चढाताहै। अर्थात् उस अहंकारकों लय कर्ताहै। और सब द्वारसुष्मणारूपी सुपारीसैं बन्ध करिके ब्रह्माग्नि कहा प्राणायामकी अग्निमैं हवन कर्ताहै। ये बाह्यकर्मी पढेहुए मनुष्य मेरी श्रुतीनके तत्वार्थकों तो समझते नहीं और वा बचनकी छांयां बांधके बाहिर जो बकरा जीवहै उसके नऊ द्वार सुपारीनसैं बन्ध करिके हवन करतेहैं। हे प्यारा! बडे अनर्थकी वातहै कि पशुजीवके हवन करनेंसैं ईश्वर प्रजापति इन्द्रदेवादि प्रसन्न होवैं। वेतो जब प्रसन्न होवैंगे तब तेरा पशुरूप अहंकारकों ब्रह्माग्निमैं हवन करैगा। तू आपेकों तो बचाताहै। दूसरेकी ज्यान लेताहै। बिचारके देखो। जो पशुके शरीरका रस बाहिरकी अग्निकी मारफत प्रजापति आदि सबकों पहुंचैहै तो तुमभी पशुके आमिषका रस जठराग्निकीमारफत अपने शरीररूप ब्रह्माण्डका

प्रजापति जीवात्माहै ताकों क्यों नैं पहुंचावो जैसैं क्षत्री आदि बहुतसे मनुष्य गृहस्थाश्रममैं कर्तेहैं। अब क्या कहैं तुम्हारा भी दोष नहीं। वे श्रुतियोंके वचनहीं ऐसेहैं कि अर्थ कुछ औरहै, और भाव कुछ औरहै। सो योगियोंके बचन योगीही जानतेहैं। ये बाहिरके यज्ञ नकलीहैं। अल्पहिंसाविशेषपुण्य होनेसैं उनकी कामना सिद्ध होजाती हैं। जो विश्वासकरिके कर्तेहैं क्योंकि शुभाशुभ कर्मनका फल मिलताहै।

अथ अश्वमेधयज्ञवर्णनम्।

शुक्लयजुर्वेदस्य वाजसनेयिसंहिता ॥ महीधरकृतवेद दीपाख्यभाष्यसहिता। जीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्य्येण संस्कृता प्रकाशिता च द्वाविंशोऽध्यायः।

मन्त्रेण।

तेजोऽसिशुक्रमुमृतमायुष्या ॥ आयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुःप्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यामाददे ॥ १ ॥ इमामगृभ्णन्रशुना मृतस्य पूर्वआयुषिविदथेषुकुव्या ॥ सानोअस्मिन्सुतआबभूव ऋतस्य सामन्सुरमारपन्ती ॥ २ ॥ अभिधाअसिभुवनमासियुन्तासि

धृत्तौ ॥ सत्वमुग्निर्वैश्वानुरथ्ंसप्रंथसंगच्छस्वा होकृतः ॥३॥ स्वगात्वादेवेभ्यंःप्रजापतयेब्रह्म न्नश्वंभन्त्स्यामिदेवेभ्यंःप्रजापतयेतेनंराध्या सम्॥तंबधानदेवेभ्यंःप्रजापतयेतेनंराध्नुहि॥४॥ प्रजापतयेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिइन्द्राग्निभ्यांत्वाजुष्टं प्रोक्षामि॥वायवेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्योजुष्टंप्रोक्षामिसर्वेभ्यस्त्वादेवेभ्योजुष्टंप्रो क्षामियोअर्वन्तंजिघांथ्ंसतितमभ्यमीतिवरु णःपुरोमर्तःपुरःश्वा ॥५॥ * स्वयंवाजिस्तन्वं कल्पयस्वस्वयंयजस्वस्वयंजुषस्व ॥ महिमा तेऽन्येनुनसंनशे॥१५॥ नवाउंएतान्म्रियसेनारि ष्यसिदेवाँ २ ॥ इदेषिपथिभिःसुगेभिः । यत्रा संतेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रंत्वादेवःसंवितादंधा तु ॥ १६ ॥ अग्निःपशुरासीत्तेनायजन्तसएतं लोकमंजयद्यस्मिन्नग्निःसतेलोकोभविष्यतितं जेष्यसिपिबैताअपःवायुःपशुरासीत्तेनायजन्त

---

* पन्द्रहसैं सतरहतक तेईसवीं अध्यायके मन्त्रहैं । और २१ मंत्रसैं लेके ३१ तक अश्लील अनुचितशब्दहैं याने लिखने पढनेके योग्य नहींहैं ॥

सएतंलोकमंजयद्यस्मिन्वायुःसतेलोकोभवि
ष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपःसूर्यःपुशुरासीत्तेना
यजन्तुसएतंलोकमंजयद्यस्मिन्सूर्यःसतेलो
कोभंविष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपः ॥ १७ ॥

इति ॥

हेप्यारा! शुक्लयजुर्वेदमैं अश्वमेधयज्ञका वर्णन कियाहै कि जिस अश्वका हवन होवैगा वो कैसाहै संपूर्णका आश्रय सबका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनेवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै ऐसा अश्वको वैश्वानर विश्वेभ्यःसर्वेभ्यः हितकारी। अग्नि सर्वत्र अधऊर्द्धमैं फैलनेवालीमैं हवन कियाजायगा । पहिलैं श्वानकों मारके वैतचटाईके ऊपर अश्व और श्वानकों रखके जलमैं स्नान कराके तापीछे अश्वको रशनासैं बांधके हवन करै। हेप्यारा! पहिले कैसे श्वानकों मारै ये जो ईर्ष्या द्वेष रखनेवाला अहंकारहै ताकौं मार। बैतचटाई जो फलरहित कर्म ताके ऊपर उभयकों रखके। शान्तिरूप जलमैं स्नान कराके तिरावै। और रशना जो भींतर हलकमैं इस जीभकी जडके ऊपर छोटी जीभ औरहै। वासैं नासिकाके पवनकों रोकके यानैं अश्वको बांधके हवन करै। ऐसा अश्व कौनहै। जो सबका आधार आश्रय सबका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनेवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै। हेप्यारा! ऐसा

धुत्तीं॥सत्वमग्निंवैश्वानरथ्ंसप्रथसंगच्छस्वा
होकृतः ॥३॥ स्वगात्वादेवेभ्यःप्रजापतयेब्रह्म
न्नश्वंभन्त्स्यामिदेवेभ्यःप्रजापतयेतेनराध्या
सम्॥तंबधानदेवेभ्यःप्रजापतयेतेनराध्नुहि॥४॥
प्रजापतयेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिइन्द्राग्निभ्यांत्वाजुष्टं
प्रोक्षामि॥वायवेत्वाजुष्टंप्रोक्षामिविश्वेभ्यस्त्वा
देवेभ्योजुष्टंप्रोक्षामिसर्वेभ्यस्त्वादेवेभ्योजुष्टंप्रो
क्षामियोअर्वन्तंजिघांथ्ंसतितमभ्यमीतिवरु
णःपुरोमर्तःपुरःश्वा ॥५॥ * स्वयंवाजिस्तन्वं
कल्पयस्वस्वयंयजस्वस्वयंजुषस्व ॥ महिमा
तेऽन्येननसंनशे॥१५॥ नवाउएतन्म्रियसेनारि
ष्यसिदेवाँ २॥ इदेषिपथिभिःसुगेभिः। यत्रा
संतेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रत्वादेवःसवितादधा
तु॥ १६ ॥ अग्निःपशुरासीत्तेनायजन्तसएतं
लोकमजयद्यस्मिन्नग्निःसतेलोकोभविष्यतितं
जेष्यसिपिबैताअपःवायुःपशुरासीत्तेनायजन्त

* पन्द्रहसे सतरहतक तेईसवीं अध्यायके मन्त्रहैं। और २१ मंत्रसे लेके ३१ तक अश्लील अनुचितशब्दहैं याते लिखने पढनेके योग्य नहींहै॥

सएतंलोकमंजयद्यस्मिन्वायुःसतेलोकोभवि
ष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपःसूर्यःपशुरासीत्तेना
यजन्तुसएतंलोकमंजयद्यास्मिन्सूर्यःसतेलो
कोभविष्यतितंजेष्यसिपिबैताअपः ॥ १७ ॥

इति ॥

हेप्यारा! शुक्लयजुर्वेदमैं अश्वमेधयज्ञका बर्णन कियाहै कि जिस अश्वका हवन होवैगा वो कैसाहै संपूर्णका आश्रय सबका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनेवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै ऐसा अश्वको वैश्वानर विश्वेभ्यःसर्वेभ्यः हितकारी। अग्नि सर्वत्र अधऊर्द्धमैं फैलनेवालीमैं हवन कियाजायगा। पहिलैं श्वानकों मारके बैतचटाईके ऊपर अश्व और श्वानकों रखके जलमैं स्नान कराके तापीछे अश्वको रशनासैं बांधके हवन करै। हेप्यारा! पहिलै कैसे श्वानकों मारै ये जो ईर्ष्या द्वेष रखनेवाला अहंकारहै ताकौं मार। बैतचटाई जो फलराहित कर्म ताके ऊपर उभयकों रखके। शान्तिरूप जलमैं स्नान कराके तिरावै। और रशना जो भींतर हलकमैं इस जीभकी जडके ऊपर छोटी जीभ औरहै। वासैं नासिकाके पवनकों रोकके यानैं अश्वको बांधके हवन करै। ऐसा अश्व कौनहै। जो सबका आधार आश्रय सबका निग्रहकर्ता जगत्का धारणकरनैंवाला पवन प्रजापतिकासा पराक्रम रखताहै। हेप्यारा! ऐसा

अश्व ये बाह्यमन प्राणरूपहैं । अनेक बासनानके संग डोलताहै ।-सो योगी महानृपति याकों सर्बत्र फेरके । पृथ्वी जो शरीर ताकी दिग्बिजय करिके । पश्चात् आचार्य जो सद्गुरु याजकहैं सो श्रेष्ठबृत्तिनके संग प्राणायाम मूसलसैं मारके ब्रह्माग्नि सर्बत्र फैलनेवाली तामैं हवन करतेहैं । सो अश्वमेध यज्ञहै ॥

अथ गोमेधयज्ञबर्णनम् ।

हेप्यारा ! गो जो इन्द्रियांहैं सो उसही अश्वमेधके अन्तर्भूत विश्वबिजई जो नृपति योगीहै सो तिनकों ब्रह्माग्निमैं हवन कर्ताहै । सोई गोमेधयज्ञ है ॥

अथ नरमेधयज्ञवर्णनम् ।

नररूप महायोगी सर्वलोकाविजई आप जो जीवात्मारूप है सो परमात्मा परब्रह्ममैं धारणा ध्यान समाधिसैं लीन होजाताहै । जहां एकोऽहं कलनाहू नहीं रहती वो नरमेधयज्ञ है । और सब यज्ञ इनही यज्ञनकी सिद्धताके अर्थ । वेदनमैं अनेकभेदन करिके कहेहैं सो सब यज्ञनका बेत्ता महायोगी होताहै । और हेप्यारा ! तीनदण्ड मनुष्यनकों हैं ॥ उनकों करेबिना मनुष्योंके अन्तःकरण शुद्ध नहीं होते ।

प्रश्न–हेस्वामिन् ॥ तीन दंड मनुष्यनकों कोंनसे हैं ! सो कृपाकरिके कहो ।

उत्तर—हेप्यारा! एक तो पितृदण्ड,दूसरा देवदण्ड तीसरा ऋषिदण्ड, सो पितृदण्ड तो पुत्रहोनेंसैं दूर होताहै। क्योंकि कुलका धर्म धारणकरनेंवाला होगया। जलदान, अन्नदान, पितृनके नामपर करैगा।

प्रश्न—हे महाराज! बहुतसे मनुष्य कहतेहैं कि, क्या पितृश्राद्धमैं जीमनेंको आतेहैं कि तर्पणका पानीपीते हैं।

उत्तर—हेप्यारा! आचार्योंनैं पितृनसैं विशेषप्रीति करानेंके अर्थ उपदेश दियाहै। देखो मृतक पितृनके नामपै भी अन्न जल दान देनेकी आज्ञाहै तो विचारो कि जो मौजूदहैं उनकी कितनी बडी सेवा करनीं चाहिये। पितृनके नाम पर उत्सव करनां श्रेष्ठजनोंकों और कुटम्बकों जिमांनां सो उत्तमकर्म है। कर्मनका फल तो सब प्राणीमात्रकों मिलताहै, कर्मनकी बडी गहनगति है। सो पुत्रवान् पुरुष अन्तःकरणमैं सन्तुष्ट होजाताहै। हे प्यारा! संतुष्ट वो होवैगा जाकों भक्तियोगकी इच्छा होतीहै और देवदण्ड बाहिरके यज्ञनसैं दूर होताहै॥ तीसरा ऋषिदण्ड जब निबर्त होताहै तब वेदशास्त्र महात्मा योगीजनोंकी बाणियोंके ग्रंथनकों श्रवण कर्ताहै। अथवा बांचताहै जब दूर होजाताहै। इस धर्मरूप दण्डके करनेसैं याकी पशुसंज्ञा मिटजातीहै। क्योंकि शास्त्रोंके द्वारा याकों शुभाशुभ कर्मोंकी मालूम होजातीहै। इन तीनों आज्ञानकों जे

श्लोक—सर्वातीतपदालंबीपुर्णेन्दुशिशिराशयः ।
यस्तिष्ठतिसदायोगीसएवपरमेश्वरः ॥

इति ।

सो महापुरुषोंका तात्पर्यसिद्धान्त सबका एक है। बोली अनेंकहैं ऐसा सन्देह नैं करना कि, अमुक महात्मा-नैं संस्कृत या अरबी या फारसी तथा अंग्रेजीमैं कथन क्यों नैं किया। जो वे महात्माहैं तो सब बोलीनमैं कहनां चाहियेथा सो बात नहींहै। मनुष्यशरीरका ऐसा नियम नियत अनादिकालसैं है कि जा बोलीमैं उसका अभ्यास है उसीमैं बोलैगा बिना अभ्यास दूसरी बोली नहीं बो-लसक्ता। और बोली देश २ की अनेक प्रकारकी हैं। मैं जो सन्तयोगी महात्मा नबी पैगम्बर होके अवतार लेताहूं उन-के दो भेद हैं॥ कारक और अवधूत कारक वे कहलातेहैं जे प्रजाका बन्दोबस्तके निमित्त कथन करते हैं और अव-धूत वे हैं जिनका कहना प्रजानिमित्त कम है जिज्ञासूंनके वास्ते मेरे मिलनेकी सैंन कहते हैं जे कारकहैं उनकी तीन प्रकृति होतीहैं कोईमैं तो रजोगुण ज्यादा होताहै उनके कथनमैं बहुत फैलाव होताहै कोईमैं तमोगुण ज्यादा है उनके कथनमैं तामस होताहै खंडनज्यादाकर्तेहैं कोईमैं सात्त्विकगुण बिशेष है उनका सतोगुणी उपदेश ज्यादा होताहै और कोई २ गुणातीत अवधूत हैं चाहैं जो कहतेहै उनकी बाणी बडे अधिकारवालेके निमित्तहातीहैं और वे

छोटे अधिकारोंका खंडन कर्तेहैं सो योगीकी महिमा योगीही जानते हैं इनकी अपार महिमाहै और ऐसा नहीं समझनां कि जानैं ज्यादा कथनकिया वो बडाहै कह २ के सब थक जातेहैं कहनां बाकीही रहजाताहै । मेरी अपारमहिमाहै बचनसैं नहीं कहीजाती वेद पुराण आदि बहुत कहकेभी पीछै अन्तमैं ऐसैं कहतेहैं नेति नेति मेरी महिमा सद्गुरुका भक्त होवैगा उसकों मालूम होवैगी नगुराकों कुछ प्राप्त नहीं होता नगुराका मेरे दरबारमैं दखल नहींहै सगुरा वोहै जो मेरी कही हुई आज्ञानकों धारण कर्ताहै वाके सब व्योहार कपटरहित कोमलता दयासंयुक्त होतेहैं । सब प्राणीनसे निर्वैर भक्तियोगका साधनेवाला है परन्तु जब मैं सद्गुरु होकर मिलोंगा ताकों मैं कृपाकरिके बुद्धियोग देऊंगा वाकरिके मेरी गुप्तप्रगटमहिमाको जानैंगा और दिव्यदृष्टि देऊंगा जाकरिके मेरेरूपनसैं वाकिफ होवैगा। सो हेप्यारा सद्गुरु मिलना भी मुशकिल है जिसके घटमैं अनन्यभक्ति होवैगी वाकों मिलैंगे पाखंडी गुरु तो संसारमैं बहुतसे हैं वे मान बडाई धन पूजनेकी वाञ्छारखतेहैं और बहुतसे अपनीं महिमाकेवास्ते चेलाकर्ते हैं और देखादेखी बहुत मनुष्य उनके शिष्य होके कंठीतिलक उनकेनामकी चपडास धारण कर्तेहैं और वे गुरु गुसाई अनेक बाहिरकी जालसाजी झूंठी भक्ति दीखा २ के स्वादिष्ट प्रसादका लालच दे

देके भेटलेते हैं और वे आप नगुरेहैं नैं किसी महापुरुषनकी सेवा करते हैं नैं साचीभक्ति कर्तेहैं नैं योगमार्गका साधन-कर्तेहैं नालायक शंठ मूर्ख ज्ञानसैं हीन हैं रस खाखाके शरीर पुष्ट करिके दोच्यार बातैं बनाके सिद्धाई जतातेहैं। उनकों तू निश्चयकरिके असुरसमझ वे संसारकों धोका देतेहैं और ऐसेही उनके शिष्य धनाभिमानी दक्षहोतेहैं। और कई साधु होके अपनी महिमा के वास्ते चेला कर्तेहैं बहुतसे आके मुडजातेहैं जे पेटार्थी रोगी आलसी हैं कपट छलसैं भरेहुये ऊपरसैं स्वांग दिखाके उसी गुरूकी अजोग झूंठी लोगोंके सामनैं बडाई कर्तेहैं सो ऐसे वे गुरुभी नगुरे और उनकेचेले महानगुरे. इनकी सोहबतसैं मूर्षलोग धोका खाजातेहैं और संसारीमनुष्य तो ऐसे पाखंडी गुरुके गुलामहीं होजातेहैं क्योंकि उनके अन्तःकरणमैं अनेक बासना होतीहैं उनकी सिद्धताके वास्ते उन कपटीयोंकों सेवते हैं ऐसैंहीं उनका झूंठा कारखाना बनाहीं रहताहै पीछै वे अपनी चालमैं आप ठगाजातेहैं, नष्ट होतेहैं, अपने कर्मनका फल पातेहैं उनकों मैं खोटीयोनिनकी बृत्तियां देताहूं वे मेरे बैरी धर्मकी हांनिकरनेवाले भलोंके घातकहैं उनके मेरी भक्तिका लवलेश नहीं है क्योंकि जहां मेरी भक्तिहै वहां शुभगुण बासकर्तेहैं दया धर्म कोमलता समता कहा समांन देखनां सन्तोप निर्वैरता निराहंकारता प्रसन्नता ज्ञानविज्ञान तृसात्मा दीनता सूधे

सरल गरीब होकर रहतेहैं और भोजन वस्त्र शरीरकी जरूरतके माफिक बर्तते हैं निष्कपट निर्पक्ष सववासनांनसैं रहित सद्गुरुके सेवक योग मार्गके साधनेवालेहैं उनसैं मैं सदा प्रसन्नहूं वे मेरे और मैं उनका और सब मनुष्य अपनें कीये कर्मनको फल पावैंगे।

मंगल उवाच।

हे सर्वदर्शी मैंनें जो आपसैं तीसरा प्रश्न किया कि मैं कौनहूं सो कृपाकरिके कहो।

अनाम उवाच।

हेप्रिय ! तू वोही है जो कुछहै तो मैं और मोमैं कुछ फरक नहीं स्थानका भेदहै तू अपनें धुरस्थानसैं दूर होके सृष्टिकी उत्पत्तिके साथ मेरा अंश जीवरूप है अर्थात् जो सबकों जिवावै सो चैतन्य श्रुति रूपहै। शरीरके संग इन्द्रियां अन्तःकरण गुणरूप होके अनेककर्म शुभाशुभके संग सुखदुःख भोग भोक्ताहुवा बाहिर ब्रह्माण्डमैं अनेक प्रपंचके ब्योहार करिके शरीरकी अवस्थाके संग फैलके अपनें निजस्वरूपकों भूलगया और चौरासीका भागी होगया ये तेरा जीवरूपहै अब तू मेरा संग पाके च्यारूं आश्रमोंकों साधताहुवा योगमार्गहोके मोमैं समाया सो मेराही स्वरूपहै जैसैं पाला गलके पानी होगया ये समाधिदशा है पीछे उत्थान होके तुरीय ज्ञानस्वरूपहै।

प्रश्न ॥ हेस्वामिन् । मैं जीवकरिके एकहूं या अनेकहूं ।

उत्तर ॥ हे प्यारा!एकभीहै अनेकभी है कारणरूपकरिके तो एकहै और वृत्तियां शरीरकरिके अनेकहैं । सो सब तेरेही स्वरूप हैं । जैसें जलतत्व सब बनस्पतीका जीवनरूप है । परन्तु रसरूपकरिके अनेकहैं । जैसें पृथ्वीतत्व एकहै । परन्तु धातुरूप रत्न पहाडरूप देहरूप होके अनेक भासैहै । जैसें तेजरूपएकहै । परन्तु सूर्य चन्द्रमा तारा बडवानल जठराग्नि और बाहिर अग्नि - अनेक मसालानसंयुक्त होके नानारूपसें भासैहै । ऐसैंही एकानेककरिके जानों ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारे तत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसंवादे चतुर्युगे अभ्यन्तरयज्ञव्याख्यानवर्णनं नाम तृतियप्रकाशः ॥ ३ ॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वज्ञ ! विराट्स्वरूप आपका कैसें है सो कृपाकरिके कहो ।

अनाम उवाच ।

हे सखे! विराट् विश्वरूप ये मेरा महद्ब्रह्माण्डहै । जामैं सातलोक नीचे और सातलोक ऊपरहैं । जिनकों चौदहभुवन कहतेहैं । भू लोक नाभिहै, भूवः लोक हृदय है, स्वर्गलोक कंठहै, महर्लोक भ्रुवहै, जनलोक सहस्रदल

कमलहै, तपलोक दशमा द्वार ब्रह्मरन्ध्रहै, सत्यलोक शिरके बीचोंबीच हैं, सप्तधातुरूप पृथ्वीहै, आस्थि पहाडहैं, नाडी नदी हैं, चंद्र सूर्य नेत्रहैं, शिशुमारचक्र श्वासहै । जाकरिके कालका बेग दिनरात सूर्य चन्द्रमा तारेसाहित भ्रमण करतेहैं । गुणनकी वृत्तियां हैं सो तारे हैं। दिशा कानहैं, पूर्वदिशा मुखहै, पश्चिमदिशा पीठहै, दक्षिण दिशा स्थूलदेहहै, उत्तर दिशा उर्द्धआकाश है, उदर समुद्रहै, श्वास पवनहै । जाका बेग सब दिशानमैंहै । हस्त इन्द्ररूपहोके पृथ्वीकी रक्षा कर्ताहै । जठरा बडवानल है। सूर्य पवनके तेजसैं जलके बफारेहैं सो मेघमाला केश मेरी शोभा है,बनस्पती रोमावली है। च्यारखान करिके प्रवाहरूप शिश्नहै, आसुरीदेवी सम्पद अन्तःकरणहै, नाभिके नीचै तललोकहै, गुदाका प्रथमपेच बितलहै, दूसरा सुतलहै, तीसरा महातलहै, जांघ रसातलहै, पिंडली तलातलहै, पांवनका तलवा पाताल है, या बिराट बिश्वरूपकी अपारमहिमाहै वचनसैं कहीनहीं जाती। नैं जाका आदिहै नैंअन्तहै जब तू मेरा छोटा ब्रह्माण्डमें ज्यो मनुष्यशरीरहै याकों देखैगा तब सबहाल मालूम होजावैगा। जो कुछ बडामैंहै सोई छोटा मैंहै । इस मनुष्यशरीरमैं कृष्णनैं अपनें कईजनोंको विराट्रूप दिखायाहै ॥

अथ नौ खण्ड बर्णन ।

गुदा, शिश्न, मुख, नासिकाके दोद्वार, नेत्रनके दो, श्रोत्रनके दोद्वार, ये नऊं द्वारहैं सो नौखंड हैं । दशवां खंड ब्रह्मरन्ध्रहै जामैं ब्रह्मसृष्टि रहतीहै ॥

अथ त्रिलोकी बर्णन ।

त्रिलोकी नाम तीनलोकनका है । गुदासैं नीचे तमोगुण कारिके नागलोकहै, गुदासैं ऊपर रजोगुणकारिके नासिकातक मृत्यु लोकहै, भ्रुव सत्त्वकारिके स्वर्गलोकहै । यासैं परे ब्रह्मलोक जाके भींतर अनन्तलोकहैं जिनका कुछ कथन नहीं होसक्ता । कुछ २ महायोगियोंके द्वारा कह्या गयाहै परन्तु अपार महिमाहै बचनसैं कहीनहीं जाती । मैंनैं वेद-व्यासमुनिहोके अठारह पुराण बर्णन करीहैं परन्तु उनकों सुनके जे मेरे विश्वाससैं हीनहैं उनकों भ्रम होजाताहै । जब मैं इसकी प्रेमभक्तिके प्रभावसैं सगुण सद्गुरु होकर मिलोंगा तब मेरी कृपासैं योगाभ्यासकारिके सब कुछ आपेमैं देखैगा । जब सब संशय निवर्त होजावैंगे इतनें मेरे बचनोंकों सुनकर सन्देह नैंकरे। क्योंकि जब मेरी कृपासैं दिव्यदृष्टि होवैगी तब सब शब्दोंका तात्पर्य जानैंगा । पहलैं सुनकरि निन्दा नैं करे, निन्दासैं पापका भागी होता है । जामनुष्यकों किसी व्याख्यानका मतलब समझमैं नैं आवै और अनुचितसा मालूम होवै जब वो ऐसैं मनमैं बिचार

करै कि मेरे शुभकर्मनके प्रभावसैं जब ईश्वर मनकी आंख उघाडैंगे तब सब गुप्तवात प्रगट होजावैंगी । अभी तो मेरी विषयनके संग अशुभकर्मौंकरिके मलिन बुद्धिहै जासों शब्द समझमैं नहीं आते । हेप्यारा ! जबतक तुममैं वो प्रगट नैं होवै वासैं पहिलैं सब बचनोंका न्याय मतकरो । और जे बाह्यविद्याका अभिमान करिके मेरे कहेहुये बचनोंकी निन्दा करते हैं वे महामूर्ख हैं । शुभकर्म और मेरी भक्तिसैं हीन झूंठे गालबजानेंवाले हैं । हेप्यारा ! मेरा भक्त चाहै जैसी ऊंच नीच जातिमैं हो मोको भक्त प्यारा हैं । और जो भोलेभावसैं मेरेनिमित्त कर्मकर्ताहै वो मोकों ज्यादाप्यारा है । जैसैं छोटे बालककी रक्षा ज्यादा कीजातीहै और प्यार बहुत कर्तेहैं ऐसैं जानों ।

प्रश्न–हेमहाप्रभो ! सातद्वीप कौनसेहैं ?

उत्तर–हेप्यारा ! ऊपर जो मैंने बर्णन किया उनहींके अन्तरभूत सातद्वीपहैं । ये मेरी वचनरूपी रचना तेरे उत्साहकेवास्ते और प्रेमबिश्वासके बढानेकेलिये अनेक प्रकारकरिके कहीहैं ॥

अब सातद्वीपका वर्णन ।

द्वीपकहिये प्रकाशरूप । ये मेरा मस्तक महाकाशहै, यासैं ज्योतिरूपहोके मैं प्रकाश कर्ताहूं, वो अगम्य ज्योति-है उसकी झलक सबलोकनमैं और सातों द्वीपोंमैं प्रकाश

कररहीहै। प्रथम द्वीप मूलद्वार है, दूसरा शिश्न है, तीसरा द्वीप नाभिहै, चौथा हृदयहै, पाचवां कंठहै, छठां भृकुटीनके मध्यहै, सातवाँ भ्रुवके ऊपरहै।एक वडाद्वीप भ्रुवके पीछे है। जाकों ब्रह्मरंध्र भृकुटी गुफालोकभी कहते हैं वाके ऊपर सत्यलोकहै,जहां हंसनके वहुतसे द्वीपहैं।उनके ऊपर अगम्य अगोचर अलख अपार द्वीपहै, जहां परमहंस महायोगी परमसन्त रहतेहैं। आगे अकह अवाच्य अनामहै। हे प्यारा! पाहिलैं तुम शुभकर्म करोगे जव शुद्ध अन्तःकरण होवैगा। तापीछे मेरी भक्ति सद्गुरुकी सेवाके साथ उनकी कृपाके वलसैं योगमार्गका अभ्यास करोगे तव मनुष्यशरीर छोटा ब्रह्माण्डमैं सवकुछ देखोगे, यामैं सन्देह नहीं। सातद्वीपोंका योगी महाभूप राज्यकर्ताहै, किसी द्वीपमैं मलिनवृत्तियांरूप असुरपशु उदय होवैं तिनकी शिकार खेलताहै। मनरूप घोडेपै सवार होके विमलवोध वल्लमकों हातमैं लियें मेरुदण्डकी बन्दूककों धारण करिके कुम्भकका कारतूस रखके सुरतिकी शिस्तसैं कामरूप सूकरकों और क्रोधरूप सिंहको भयरूप भगेंडेको मारके पृथ्वी शुद्ध कर्ताहै। तिनकी शिकारका आमिष खाताहै॥

प्रश्न—हे सर्वप्रकाशी! च्यारवेद कैसैंहैं, च्यारबर्ण कैसैंहैं, च्यारआश्रम कौनसेहैं, च्यारअवस्था कौंनसीहैं, च्यारमुक्ति कैसैंहैं, इन पांचप्रश्नोंका बर्णन मोकों कृपाकरिके कहो। आपके बचन अमृतवत् लगतेहैं सुनि २ के ज्यादा रुचि होतीहै॥

उत्तर–हे सुरुचे ! सबका वर्णन कर्ताहूं सावधान होके श्रवण करो ॥

अथ च्यारवेदबर्णन ।

हे प्यारा ! सरस्वती महापुरुष ब्रह्माकी आज्ञा लेके दक्षिणदेशमैं लघुरीतिसे च्यार ब्याकरण और कोश च्यारूं वेदोंके रचके दक्षिणीबोलीकी ध्वनि लेके वेदोंको प्रगट करतीभई । पश्चात् दक्षिणी मनुष्योंकी मारफत वेदोंका प्रचार पृथ्वीपर हुवा । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद, ये च्यार वेद च्यारूं तत्वहैं । महायोगीका निज-मन जो स्वयंभू ब्रह्माहै । च्यार अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, ये ब्रह्माके च्यारमुख हैं । मन नाम उसका है जो सबका मनन करै, संकल्परूपहै । बुद्धि नाम उसका है । जो सबका निश्चय करै । चित्त नाम उसका है । जो भूलीवस्तुको प्रगट करै । अहंकार नाम उसका है । जो सबकों धारण करै । ये च्यारूं एकरूपहैं । प्रथम ऋग्वेद जामैं क्रमसैं प्रथम अधिकारका वर्णनहै । दूसरा यजुर्वेद दूसरे अधिकारका जामैं वर्णनहै । कर्म शुद्धहोनेसे बृत्तियां शुद्ध होतीहैं, जाकारिके जुडाहीरहै अपने स्वरूपमैं । तीसरा सामवेद जामैं तीसरे अधिकारका वर्णन शब्द योगमार्ग कह्या, प्रेमके प्रभावसैं अनन्तशब्दोंमैं लय होताहै । चौथा अथर्वणहै । जामैं चौथेअधिकारका वर्णनहै । समाधि

अपार ज्ञान योगीके महारहस्य का वर्णनहै । और हे प्यारा ! पांचवां सुसम्वेदहै । अनुभवकरिके गम्यहै कागजपै लिखा नहीं जाता । च्यारूवेदनकी सिद्धताके पीछे सुसम्वेद प्रकाश कर्ताहै । सो कहन सुणनसैं भिन्नहै, पवित्रात्माही जानताहै, वचनसे कहनहींसक्ता अनुभवगम्यहै।

अब च्यारवर्ण कहतेहैं।

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, पांचवां अंत्यजवर्ण है। अंत्यजवर्णके मनुष्य इन्द्रियोंके भोगनकी लोलताकरिके अशुद्ध महामलिनकर्म करनेवालेहैं । वे अंत्यज कहलातेहैं । उन अंत्यजोंमैं कोई २ श्रेष्ठ संग पाके शुभकर्म कर्त्ताहै और श्रेष्ठजनोंकी तनमनधनसैं निष्कपट होके सेवा कर्ताहै, वो शूद्र कहलाताहै। क्योंकि जानैं सेवाका अधिकार पायाहै ताते सर्वबातकी सिद्धि होवैगी। वासेवाके प्रभावसैं अनेक शुभकर्म अनेक शुभवृत्तिनका ज्ञानरूप धन होजाताहै । उस धनसैं श्रेष्ठपुरुषोंके संग बचनबिलासरूप ब्योपार करनेलगा। उसब्योपारसैं शुद्धवृत्तियां रूप धन बहुत होगया सो वैश्यहै। पीछे शुभगुण शुभवृत्तियां रूपधनकों काम क्रोध लोभ मोह की जो खोटी वृत्तियां तस्करहैं सो हृदयरूप घरमें धसके धन लेजातेहैं । अर्थात् शुभवृत्तिन का नाश कर्तेहैं । उन तस्करोंकी रखवाली करनेलगा । श्रेष्ठभावना जो शस्त्र याने शील क्षमा सन्तोष दया विवेक

विचार ये शस्त्र बांधके ध्यानरूप धनुषकों धारणकर अपनी श्रेष्ठ रहस्यरूपी धनकी रक्षा कर्ताहै ॥ और हृदयभूमिके खोटीबृत्तिरूप वैरीनको जीतके भक्तियोगाभ्यासके बलसैं सबभूमिपर निष्कंटक राज्य कर्ताहै । सो क्षत्रीहै । पीछे निर्भय निर्वैर होके रज, तम, सतकी सब बृत्तियां अपने आपमैं प्राणायाम जो उत्तम कर्महै ताकरिके ब्रह्माग्निमैं हवन कर्ताहै। पश्चात् शून्य शान्तसमाधिमैं स्थित होताहै। फिर उत्थानहोके समदृष्टिकरिके चराचरकों ब्रह्ममय देखताहै सो ब्राह्मणहै ॥

प्रश्न—हेमहाप्रभो! ये तो आपनें च्यारवर्ण भीतरके बताये। बाहिरके कैसैंहैं सो कृपाकरिके कहो।

उत्तर—हेप्यारा! बाहिरभी इनहींकी छायारूप हैं बाहिर धर्मकों प्रबृत्त कियाहै। जैसें एक दानी होताहै तो दानका लेनेंवालाभी होताहै। सो ब्राह्मणोंकों ईश्वरका बचनसोंपागया और इनकों आज्ञाहै कि श्रेष्ठधर्मोंकों धारण करो परमेश्वरकी जो आज्ञा वेदशास्त्रनमैंहैं उनका प्रचार कर्तेरहो शुभकर्मोंमैं सबकों प्रबृत्त करो। ईश्वरकों शम, दम, तप, शौच, शान्ति, धारण करिके भजो। आर्जवता धारणकरो यानें कोमलबचनसैं सबका आदर करो। ज्ञान बिज्ञान आस्तिकतासैं परमेश्वरका सेवन करो और जो तुमकों गायत्रीमन्त्र करिके उपदेशहै सो सुनो। तत् कहिये वो सबितुर्

कहिये सबकों पैदाकरनेवाला श्रेष्ठतेज । देव कहिये क्रीडा-करनेंवाला । उसका हम ध्यान धरतेहैं जो सबका प्रेरकहै सो हे ब्राह्मणहो, तुम चित्तबृत्ति प्राणनिरोध कारिके ऐसे परमपुरुषका ध्यान धरो। और क्षत्री वैश्य शूद्र तुम्हारी सेवा करैंगे और क्षत्री प्रजाका पालन करैं और शिकारके आमि-षका भक्षण करैं। क्योंकि या कर्मके करे बिना इन्होंमैं शूर-बीरता नहीं रहती । उत्तम कर्मोंके धारणकरनेवाले ब्राह्म-णोंकी सेवा करैं। वैश्य वणिज खेती गऊ और श्रेष्ठपुरुषोंकी सेवा करैं। शूद्र खेती करैं । तीनोंबर्णोंकी गऊंनकी सेवा करैं। ऐसैं ये धर्म बांधेगयेहैं । एक पूज्य और पूजनेंवाला सब धर्म मजहबोंमैं ईश्वरनैं प्रबन्ध कियाहै॥ और संन्यासी अभ्यागत साधु सन्त सबके पूज्यहैं इनसैं सबका कल्याण होताहै ॥

अथ च्यार आश्रम बर्णन ।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ, संन्यस्त, ये मेरा पूराणा प्राचीन सनातनका मार्ग वेदनमैं ब्रह्मानैं कह्याहै ये मैंनैं बडी उत्तम रहस्य बांधीहै, किसीबातका जामैं बिघ्न नहींहै । सूधीसडकका मार्गहै । जांमैं सब भोगनकों भोक्ताहुवा मोक्षों प्राप्त होताहै ॥

प्रथम ब्रह्मचर्याश्रमहै ताय सुनो।

बाल्यावस्थामैं अपनी कुलबिद्या सीखै और जिसके श्रेष्ठ संस्कारहैं वाके हरिकी भक्तिका जबहीसैं अंकूर उदय होजाताहै धनउपार्जनके निमित्त वक्तकी विद्याकाभी अभ्यास करै और ब्रह्मचर्य राखै कहा स्त्रीसैं बचा रहै। कनिष्ठ ब्रह्मचर्य सोलह सत्रहवर्षका, मध्यम अठारहबीसका, उत्तम बाईसपच्चीसकाहै। ज्यादा ब्रह्मचर्य रखनेसैं नपुंसक होजाताहै। स्त्रीकाब्रह्मचर्य १३ तथा १५ या १७ बर्षकाहै। सो हेप्यारा! ब्रह्मचर्यही सबधर्मनका मूलहै। बिना ब्रह्मचर्य पकैं पहिलैं बिबाह करना सो बडा अनर्थहै॥

अब दूसरा गृहस्थाश्रम सुनों।

ब्रह्मचर्यके पश्चात् बिबाह करै। गृहस्थाश्रम सेवन करै, अपनी एक स्त्रीसैंहीं संगम करै। जब वो रजस्वला होय ताके च्यार दिन पीछे एक २ दो दो दिनके अनन्तरसैं च्यारदिनतक बीर्यदान दे। पश्चात् ब्रह्मचर्य राखै। शुद्धतासैं धन कुमाके लावै अजुक्त धनका लालची नैं होवै। जासैं बिघ्न उठैं। झूंठ कपट और दुःख देके लियाजाय सो अजुक्त धन है। वासैं बचारहै और आपत्तिकालमैं जैसैं बनैं तैसैं कुटम्बका पालन करै। आपत्तिके पीछे उत्तम आचरण राखै। अपना धर्मको नैं छोडै। बडेजनोंकी सेवा कर्ता रहै। माता पिताको सदा प्रसन्न राखै। अपनैं कुट-

स्त्रीलोगोंसैं और सबसैं मिलाहुवा रहै। दूसरेका अपराध क्षमा करे। कृतघ्नी नैं होवै। सबके साथ नेकी करे। दुर्वचन कदाचित्किसीकों नैं कहै। सबका आदर सत्कार अधिकारके माफिक राखै। अपने उद्यमके कर्म करिके गुरुका संग करै। सबप्रकारसैं सेवा भक्तिके साथ गुरूकों प्रसन्न राखै। परमेश्वरके मार्गका साधन कर्ता रहै। सर्वकर्म ईश्वरके मिलनेंके निमित्त करै। फलवांछा नहीं राखै। जामैं परमेश्वरके कर्म नहीं होसकैं ऐसा घनापसारा कर्मोंका नैं बधावै। यथालाभ सन्तोषमैं रहै। आमद देखके खरच करै कुछ आपत्तिकालकेवास्ते बचाके राखै। संसारके कर्म और योगाभ्यास परमेश्वरकेकर्म उभयकर्म नित्यप्रति करै। याका नाम कर्मयोगहै। ऐसैं करते २ पैंतालीस या पचास बर्षतक ग्रहस्थाश्रम सेवै॥

अथ बानप्रस्थाश्रमवर्णन।

हेप्यारा! तापीछै शनैः २ वानप्रस्थाश्रमकों अभ्यन्तर धारण करै अर्थात् ग्रहस्थाश्रममैंहीं रहके समैं छुटकारेका देखता रहै। विषयभोग लोभ मोह क्रोधसैं अपनी बुद्धिकों समेटै और ध्यानयोगमैं ज्यादा तत्पर होवै भीतर सबसैं बैराग्यको धारण करै, याकानाम कर्मसंन्यास योगहै ओर कोई वक्त मन नैं रूके किसी भोगके अर्थ विघ्न उठावै तो उसको भोग भुगाके पुनः संजमध्यानके आन-

न्दमैं लगावै सत्संग सद्गुरुकी सेवा कर्ता रहै। उनकी आज्ञा लेके सबकुछ करै ऐसैंहीं मनसैं संजमरूपी लडाई कर्ता रहै, परमेश्वरके मार्गको विशेष करिके सेवै सो बानप्रस्थ अवस्थाहै। जब गृहस्थाश्रममैंहीं बानप्रस्थ अवस्था पकजावै और सब कर्मनसैं अरुचि होजावै, जैसें भोजन करिके तृप्त होजाताहै तब पदार्थोंकी उच्छिष्ट छोडदेताहै और उनसें अरुचि होजाती है। ऐसे जानों और धारण ध्यानमें श्रुती ज्यादा लय हो जावै। और बार २ उपरामका उद्वेग होवै ताकों रोक २ के पकावै। ये बानप्रस्थाश्रम योगाभ्यासीका है। और इसकों भी बानप्रस्थ कहतेहैं॥ जे स्त्रीसहित बनमैं रहैं। जो स्त्री कुटुम्बमैंही रहना चाहै तो आपही निर्विघ्न स्थानमें एकान्त रहै। आसन नासाग्रके ध्यानसैं मनका संजम करै। जप तप प्राणायामका अभ्यास कर्ता रहै। और जे समयपाके विद्यावान पण्डित होकेभी बानप्रस्थ संन्यास आश्रमोंके धर्मनकों धारण नहीं कर्ते और कुटुम्ब के मोहमैं फसके द्रव्य बधानेकी तृष्णामें अपनी सब आयु खोतेहैं वे महामूर्ख निजधर्मसैं हीन विशेषदण्डके भागी होतेहैं। हे प्यारा! सनातन नाम परमेश्वरका है। जिन धर्मोंके धारण करनेंसैं उसकी प्राप्ती होवै वेही सनातनधर्महैं। शुभकर्मोंसैं और उपासनासैं अन्तःकरणकी शुद्धी होतीहै। जब अष्टांगयोगके अभ्यासके लायक होता

है । ब्रह्मचर्य गृहस्थाश्रममैं शुभकर्मों और उपासनासैं अन्तः-करणकी शुद्धी करे । तापीछे जाकी उपासना कर्ताहै ताकों प्रत्यक्षमैं पाके थानें सद्गुरुकों प्राप्त होके भक्ति सहित अष्टांगयोगका अभ्यास करे । वा अभ्यासकों साधताहुवा वानप्रस्थाश्रममैं होके समाधिसिद्ध संन्यासकों प्राप्त होवे । अर्थात् सनातन जो परमेश्वरहैं तामैं लीन होवे । इसीका नाम सनातनधर्म है । ये आश्रमोंका सनातनधर्म सब वर्णोंनैं छोडदिया । इसी हेतुसैं सनातनके धर्मनकी नष्टता बहुतसी होगई । और ये धर्म औरोंनैं छोडदिये सो तो खैर । परन्तु ब्राह्मणोंकों तो छोडना वाजबी नहीं था । जो ये इन धर्मोंमैं बणेरहते तो औरभी वर्ण सुधरे रहते । अब हालमैं सनातनधर्म प्रतिमापूजनही मुख्य रक्खाहे । पण्डितलोग इसीका उपदेश व्याख्यान देते फिरैंहैं । और जिन धर्मोंमैं मोक्ष और परमेश्वरकी प्राप्ति होतीहै उन धर्मकर्मनका जिकरभी नहीं कर्तें मूर्तिपूजन तो फकत उपासनाके निमित्त है । जिसकी उपासना कीजातीहै उसमैं भावना वधानेके वास्ते उनके नामकी प्रतिमा या तसबीर सामने रखलेतेहैं । कल्याण तो जब होवैगा जिनके नामकी तसबीर है उनकों प्रत्यक्ष मैं पावैगा । वे सगुणस्वरूप नरहरि सच्चे पूरे सद्गुरुहैं । उनहीके सब उत्तम नाम हैं । शिव शक्ति राम कृष्ण ऋषि मुनि आदिजानो ॥ इति ॥

अथ संन्यासआश्रमवर्णन।

अनाम उवाच।

हे प्यारा मित्र! वानप्रस्थके पश्चात् साठवर्षसैं पहलैं या साठतक संन्यास कहा सबका त्याग करै। ये वर्तमानकालकी आयु देखके आश्रमोंकी आयुका विभाग कियाहै ऐसा लिखाहै 'शतायुर्वैपुरुषः' इति श्रुतेः। परन्तु अब हालमैं सौ वर्षकी आयुका कोई २ पुरुष होताहै। क्योंकि ब्रह्मचर्य पकता नहीं॥ कनिष्ठ ब्रह्मचर्यमैंही बिगडजातेहैं। मध्यम तकभी नहीं पहुँचते। हे प्यारा! संन्यास तीनप्रकारकाहै। बाह्य कर्मोंका संन्यास। शास्त्रोंका ज्ञान बिचारकरिके संन्यास। योगाभ्यास करिके संन्यास। बिषयादिक कर्म त्यागके शरीरके कार्यकर्मकरना। संयमसैं सात्विकीवृत्तिसैं रहना सो बाह्यकर्मोंका संन्यासहै। ऐसे संन्यासी स्वर्गमें देवताहोके भोगनकों भोगके मृत्युलोकमैं मनुष्यजन्म पातेहैं। और जे षट्शास्त्रोंके विचारज्ञानसैं अपने आपेमैं स्थिर होतेहैं वो शास्त्रोंके बिचारज्ञानकरिके संन्यासहै। ऐसे संन्यासी महर्लोकतक जातेहैं पीछे श्रेष्ठकुलमैं जन्म लेके योगाभ्यास करतेहैं। और जे ब्रह्मचर्यआश्रमसैंही योगाभ्यासके साथ गृहस्थाश्रम वानप्रस्थ आश्रममैं होके सद्गुरुकी कृपासैं आसन प्राणायाम धारणा ध्यानके बलसैं जीवात्माकों परमात्मामैं लयकरिके समाधि अवा-

च्यपदकों प्राप्त होतेहैं सो योगसिद्धकरिके संन्यासहै । ऐसे संन्यासी जन्ममरणसैं रहित होके सायुज्यमुक्तिकों प्राप्त होतेहैं । ऐसे महापुरुष चाहै गृहस्थके स्थानमैं रहो । चाहै एकान्तमैं रहो । परन्तु एकान्तमैं निर्विघ्नता ज्यादा रहतीहै । संगमैं कुछ संगदोष लगताहै । परन्तु जायोगीका योग सिद्ध होगयां । परिपक्व अवस्था होगई । वो सब स्थानोंमैं निर्विघ्न है । चाहै जहांरहो वाकी मौज है । वो तो योगी योगसिद्धके आनन्दमैं आपेमैं आप रमण कर्ताहै । ब्रह्मानन्दमैं मग्न सिद्धसमाधिका सुख बिलस्ताहै । उस महायोगीकी महामहिमा है और वाके रहस्यकी कि-सीको मालूम नहीं होसक्ती कृपाकरिके जाकों जनादैं वो जानैं । योगमायामैं गुप्त रहतेहैं । वे परमेश्वरके सगुण स्वरूप अवतार हैं ॥ सर्वसामर्थ्यहैं । सबसिद्धी जिनके हाजर खडी रहतीहैं । परन्तु वे निरइच्छा निर्वाणहैं । करा-मालको करसैं नहीं गहते हैं । सिद्धीनकों सूंघते भी नहीं । ऋद्धीनसैं रूठे रहते हैं । निर्विकल्प अचिन्तसमाधिमैं लय रहते हैं ॥ संसारमैं ज्ञानस्वरूपहोके सोलहबर्षकी अवस्था के भीतर २ रहते हैं । उनके प्रकाशमय बचन हैं । ये जो मैंनैं च्यारआश्रमोंका मार्ग वर्णन किया सो अतिउत्तम है और मार्गोंमें विघ्न होते हैं । देखो बेलके साथ फल पकता है । बिनाबेल कच्चा निरस रहजाताहै । बिनासमय जे त्यागी होते हैं वे नष्टाश्रमीहैं । ऐसे त्यागी उभयस्थानों

सैं भ्रष्टहोते हैं । अर्थात् नैं संसारके रहे । नैं परमेश्वरके हुये । और उनका चित्त चंचल रहता है । भ्रमकानाश नहीं होता । पाखंडी होजाते हैं । और जो कोई शुद्धभाव विश्वास कारिके होवै तोभी कईजन्मोंमैं उद्धार होता है, अन्तका जन्म पाके । इसही मार्गमैं होके यानें च्यारूं आश्रमोकों शुद्धतासैं साधताहुवा परमेश्वरकों प्राप्त होता है । अन्तका जन्म वही है जामैं मोक्ष होनेवाली है । क्योंकि च्यारूं आश्रम शुद्धहुये विना परमेश्वरकों प्राप्त नहीं होते । एक दो आश्रम साधते हैं । वे जन्मान्तरही पाते हैं । अन्तमैं याहीमार्गहोके परमेश्वरकों प्राप्तहोवैंगे । योगाभ्यासकी सिद्धता इनहींमैं होवैहै । औरमार्गोंमैं विघ्नोंसैं विगड जाते हैं । क्योंकि काम क्रोध लोभ मोह महाप्रबल हैं । सबकों गिरादेतेहैं । ब्रह्मा, महादेव, इन्द्र, नारद, चंद्रमा, श्रृंगीऋषि आदि बहुत ठगाये हैं । और च्यारआश्रमोंका मार्गमैं काम क्रोध आदि सब योगीकों गृहस्थाश्रममें योगके साधनके समय बल देते हैं. क्योंकि ये पूजते रहते हैं । योगी इनकों प्रसन्न कारिके योगमार्गमैं बल लेताहै । मेरे मिलनेका येही च्यारआश्रमोंका मार्ग है । उनके च्यारूंहीं शुद्धतासैं होवैंगे । जे मोकों प्राप्त होते हैं । हे प्यारा ! बहुतसे मनुष्योंके आश्रमों मैं विक्षेप होजाता है । और गृहस्थकी रजोगुणके व्यौहारकों सँभालनेवाली सन्तानभी नहीं होती है । ऐसे पुरुषनके पिछले संस्कार श्रेष्ठ

नहीं हैं। वे अब हालमैं पुरुषार्थकरिके जैसा बनसकै ऐसा परमेश्वरके निमित्त कर्म, उपासना, दान, ज्ञान, ध्यान और सत्संग कर्तेही रहैं। और वे शान्तिसन्तोषकों लियें पवित्रताकों प्राप्त होते हैं। हे प्यारा! कोईरीतिसैंही मनुष्योंकों शान्ति सन्तोष होनाचाहिये। वेही जीवनमुक्तहैं॥

अथ च्यारअवस्थावर्णन।

हे सखे! च्यारअवस्था ये हैं। जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया। जाग्रत् अवस्था वो कहलाती है जो दशोंइन्द्रियां संजुक्त देहकेसाथ नेत्रहृदयमैं मनबुद्धिबैठके सब प्रपंचके कर्म कर्ते हैं और स्वप्नावस्था वो है जामैं अहंकारकों आलस्यके संगसैं मूर्छा होजाती है जाकों निद्रा कहतेहैं। वहां बुद्धिरहित ज्ञानेंद्रिय अन्तःकरणसंयुक्त जाग्रत्की छायाके और कुछ अचंबेकेभी कर्म लिंगशरीरसैं जो नौतत्वका कहलाता है वासैं कर्ता है। बिचरता तो सबस्थानोंमैं हैं परन्तु कंठहृदयमैं ज्यादास्थिति रहती है। तीसरी सुषुप्ति अवस्था वो है जामैं घोरनिद्राआली है सूक्ष्मशरीर नौतत्व का कारणशरीरमैं लय होजाताहै बेखबर अचिन्त्यदशाहै। जब जाग्रत् अवस्थामैं आता है तब उसका जो साक्षी था वो कहता है कि आज मैं ऐसा सोया जहां कुछ मालूम नैं रह्या ये जीवात्माकी समाधि है॥

अथ चौथीतुरीयावस्था सुनो।

जिसका हाल कहनेंमैं नहींआता । कुछ हाल ऋषि मुनि महापुरुषोंनैं कह्याहै सोतो योगीकी जाग्रतावस्थामैं ज्ञान विचार तुरीयाहै वाका हाल कह्या है। और जो योगसिद्ध तुरीया है सो तो योगाभ्यास करिके अनुभवगम्य है बचनसैं कही नहींजाती । वो सबीज समाधि है और परमयोगीकी सिद्धाअवस्था जो है सो तुरीयासैं भी परैहै तुरीयातीत निर्बीज अतितीव्रतर समाधि है॥ इति॥

प्रश्न–हे महाप्रभो! बन्धमुक्त किसका नाम है।

उत्तर–हे अनघ! आत्मा अपना आपही शत्रु है। आपही मित्र है। जब ये अस्थूल सूक्ष्मशरीरके संग अजुक्त लोलुपताकरिके इन्द्रियोंके विषय भोगनकेसाथ प्रपंचके कर्मोंकी बासनानके फन्देनमैं फँसके चोरासीका भागी होताहै याहीका नाम बंधनहै और जो याके पूर्वसंस्कार श्रेष्ठ होवैं ताके प्रभावसैं परमेश्वरके मिलनेंका प्रेम उपजै तब युक्त ब्यौहारोंके साथ चित्तकी बृत्तिनकों नासाग्रध्यानसैं अजपाके साधनसैं निरोध कर्ता है और योगाभ्याससैं श्वासकों जीतके सर्वातीतपदमैं लय होता है। याका नाम मुक्ति है सो मुक्तिके च्यारस्थान हैं॥

अथ च्यारमुक्तिवर्णन।

हे प्यारा! चारमुक्ति ये हैं। सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य। प्रथम सालोक्यमुक्ति है। जा जननें श्रेष्ठ

कर्म करिके शुद्धवृत्तिनसैं नवधाभक्तिकरी कहा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, सेवन, अर्चन, बन्दन, दास्य, सखापन, आत्मसमर्पण, ये नव हैं । इनके प्रभावसैं परमेश्वरके लोक् मैं वास होता है अर्थात् मलिन रजतमसैं रहित सतोगुण मैं रहते हैं । जिनके कंठमैं कंठी शीलवचनरूपी तुलसीकी है यानैं तुल्य है शीलता जामैं सब ऊंच नीच वृत्तिनवालोंसैं क्रोधरहित हैं सोई तुलसीकी कंठी है । जिनकी ग्रीवामैं तत्त्वरूप श्रीधारणतिलक अर्थात् श्री जो हरिकी प्रेमाभक्ति है सो दोनूं भ्रुकुटीनके मध्यमैं श्रुतीरूप होकर विराजरही है । सो तिलक हैं जिनके और जटाकहा हैं । मनके संकल्पसैं फैलीहुई जो वृत्तियांहैं तिनकों संजमसैं समेटके बांधीहैं जिनोंनैं । सोई हैं जटा जिनके । ऐसे जे बैष्णवहैं । सो विष्णुके लोकमें रहतेहैं । सोई सालोक्यमुक्तिहै । ये आभ्यन्तर वैष्णवनका कथनहै ।

अथ सामीप्यमुक्तिवर्णन ।

दूसरी सामीप्यमुक्तिहै । परमेश्वरके सगुणस्वरूप जो नरहरि सद्गुरु हैं । उनके प्रेमी गुरुभक्त सदा समीप रहतेहैं । नित्य सुधर्मासभाका सत्संग । वचनविनोदके आनन्दका अमृत पीतेहैं । योगाभ्यास करतेहैं । सो सामीप्यमुक्ति है ॥

अथ सारूप्यमुक्तिवर्णन ।

तीसरी सारूप्यमुक्ति है । जे नर हरिका सत्संग पाके पराभक्तिके प्रभावसैं योगाभ्यास जो परमेश्वर निर्गुण स्वरूपका मार्गहै तामैं मन बुद्धि प्राणसहित लयहोजातेहैं । यानें योगसिद्धतुरीयस्वरूप होजातेहैं। वाकानाम सारूप्यमुक्तिहै। उन सारूप्यमुक्तिवालोंके च्यारभुजा होती हैं अर्थात् सूक्ष्म शरीरके पवित्रअन्तःकरणरूपी मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये च्यार भुजाहैं । च्यारूंभुजानमैं च्यारआयुधयेहैं । शुद्ध अहंकाररूपी भुजामैं उत्तमज्ञानरूपी गदा ले उग्र दिव्यबचनोंसैं खोटीबृत्तिनवाले असुरोंका संहार कर्तेहैं । और दूसरी उत्तम निजमनरूपी भुजामैं पद्मधारणकर राखेहैं कहा अभ्यन्तर षट्कमलनकों मनसैं मनन कर्ते रहतेहैं । उनकों सदा खिलेहुये प्रफुल्लित रखतेहैं ॥ तीसरी निर्मलचित्तरूपी भुजामैं चक्रधारण कररक्खाहै जिनोंनैं अर्थात् तेजवान प्रकाशमय ज्ञानरूप भ्रमणकारिके सबलोकनकी रक्षा कर्ताहै । सो सुदर्शनकहिये निजदर्शन करनेवाला बोधरूपकों धारण कर रक्खाहै जिनोंनैं । चौथी अविकारबुद्धिरूपी भुजामैं शंख धारण कररक्खाहै अर्थात् सुबुद्धिकों सबसैं उपरामकारिके अनहदशब्दोंमैं जो प्रथम घोर शंखध्वनि है तामैं लयरहतीहै । वोही शंख बुद्धिरूपी भुजामैं धारण कररक्खा जिननैं। जब पृथ्वीपै अशुद्धबृत्तिन-

का नाश कर्तेहैं तब उस शंखध्वनिसैं कर्तेहैं। जिनोंनैं च्यारूं-भुजा आयुधसहित धारण कररावीहैं वे सारूप्यमुक्तिहैं ॥

अथ सायुज्यमुक्तिवर्णन ।

ये ऊपर कहीहुई योगीकों तीनों मुक्ति प्रकाश होजातीहैं इनके पश्चात् चौथीमुक्ति सायुज्य प्राप्त होतीहै । जब महायोगेश्वर शून्यसमाधिके निजानन्दमैं मग्न होके परम शून्यका ध्यान धरतेहैं वो सत्यलोकसैं कईलोक परेहै ताकों परमशून्य तुरीयातीत कहतेहैं । जब महायोगी वाका ध्यान धरतेहैं वे अपना निज वैकुण्ठमैं सिद्धासन लगा शब्दरूपतुरंगपै असवार होके सब प्राणनका संजमकर आठवा जो केवल कुम्भकद्वारा महाकाशहोके परमशान्त निर्वाणकों प्राप्त होतेहैं । जिनकी महिमा ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहींकहसकैं जहां एकोहं कलनाहू नहीं रहती वे अकह, अपार, अगम्य अनाममैं लय होजातेहैं । उसकों सायुज्यमुक्ति कहतेहैं॥

मंगल उवाच ।

हे घणनामिन्! अब चौथेप्रश्नकी जो मैंने प्रार्थना कीथी कि मैं कहांसैं आयाहूं सो कृपाकरिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हे सुरुचे! उसकाभी कथन सुनों । तू मेरे कारणस्वरूपमें सैं प्रारब्धकर्मके संजोग पाके ब्रह्माण्डकी सात्विकीवृत्तिसैं उत्पन्न होकर आयाहै, तैंनें जो बाल्यावस्थामैं भोलीभावनासैं

मेरी प्रसन्नताके अर्थ अनेक शुभाचरण किये। वे मैं सब जानताहूं। तैंनें ब्राह्मणके घर जन्मपा सातवांवर्षमें प्रेतनके डरसैं हनूमानजीकी मूर्तिकों बहुत ढोकदेके कहताथा कि, महाराज! भूतप्रेतनसैं हमारी सहाय करो और नाम जपताथा। पीछे आठवैंवर्षमैं गौडकां-करेकी एक मूर्ति मेरेनामकी बनाके पूजताथा। दरजीनके पाससैं कपडेनकीलीरलाके पोशाक ब-दलताथा। लोटाकटीरी बजा॥ बराबरके बच्चोंके संग आरती उतार प्रणाम करिके मग्न होताथा। ये तेरे खेलथे और दशवां वर्षमैं कथा सुणके बडा प्रसन्न होताथा और कथामैं श्रवण किया कि महादेवकी कृपासैं परमेश्व-रकी भक्ति मिलतीहै। तब तैंनें महादेवका सेवन किया और ग्रीष्मकालमैं जलसेवा करताथा। महादेवकी प्रसन्न-ताके अर्थ चौदहवाँवर्षमैं महिमनस्तोत्रके ग्यारहपाठ नित्य करिके परमेश्वरका नाम गुप्ततासैं जपताथा। भक्त-नकी और सन्तनकी महिमा सुणके बहुत प्रसन्न होताथा। एकदिन एक साधू गरीबीहालमैं तोकों मिले, उनकी तैंनें सेवाकी और पूछा कि, आप कहासैं आयेहो? वानैं कह्या मथुरा वृंदावनसैं। फिर तैंनें कह्या महाराज उत्तमभूमिकों छोडके ह्यां कैसैं आये? वानैं कह्या या अलवरके पहाडमैं हमारे गुरू रहतेहैं। उनकी झांकीकरनेंकों आयेहैं। जब तैंनें कह्या महाराज! हमकोंभी उनकी झांकी होवै तब

उसनैं कह्या तू आधीरातपै मदारघाटीकी ऊंची शिखरपै जावै तो होवै। फिर तैंनें कह्या महाराज आधीरातपै जानेंकी जुरत नहीं। ऐसी कृपाकरो जासों जुरत होवै। तब उसनैं कह्या तू रोजीनां प्रातःकाल उठतैंहीं या पर्वतके दर्शन कियाकर और प्रणाम करिके अर्ज कियाकर तोकों झांकी होजावैगी। तब तैंनें सत्यविश्वाससैं ऐसाही नेम धारण किया और बाजे २ दिन रोरोके एकान्तमैं प्रार्थना करताथा। इस अरसेमैं एक ब्राह्मणसैं तैंनें स्वरोदा साधनेका उपदेशलिया। जब तेरी ऊमर सोलहवर्षकी थी और तू इस भेदकों पाके बहुत प्रसन्न हुआ। अजपाका जाप जपता और पहाडका गुप्तनेम रख स्वरोदाका स्वर देखताथा। स्वरोदामैं ऐसीप्रीति होगई कि, स्वप्नमैंभी स्वरोदा देखता और पूरेसन्तनके मिलनेका बडा प्रेमथा। समयपाके सगुणस्वरूप धारण करिके वाहीपहाडमैं जाका तेरे नेमथा। मदारघाटीके नींचे छतरीमैं मिला, मिलतैंही मेरा शब्द श्रवण कर तेरा हृदयकमल प्रसन्न होके खिलगया। मेरी महिमा तेरे हृदयमैं भरगई और बहुत बडा आनन्द तुझको आया सो तू सब जानताहीहै।जबहीसैं तेरा मेरा एकतन होताही चलागया।जब तेरी बीसवर्षकी ऊंमरथी तब मेरा संग पाके तुझकों बडाबेगसैं उपराम हुवा। उसकों मैंनें शिक्षा देदेके रोका। और च्यारूं आश्रमोंका

साधनेका उपदेश दिया । अब तेरे सबकारज सिद्धभये । च्यारूं आश्रमोंकों साधताहुवा । योगमार्गहोके मोकों प्राप्तभया ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारे तत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसंवादे पांचप्रश्नव्याख्यानवर्णनो नाम चतुर्थप्रकाशः ॥ ४ ॥

मंगल उवाच ।

हेसर्वशक्तिवान्! पांचवां जो मैंनैं प्रश्नकिया कि मोकों कौनकर्तव्य करना योग्यहै सो कृपाकरिके कहो ॥

अनाम उवाच ।

हेसुबुद्धे ! जो तोकों कर्तव्यकरना योग्यहै सो सुण। हेप्यारा ! तेरा जाधर्ममैं जन्म हुवाहै वाही मार्गमैं मोकों खोजैगा और पहिले तेरे बहुतसे गुरु होवैंगे। कोई शिक्षा-गुरु, कोई विद्यागुरु, कोई कंठीमंत्रगुरु, ऐसैं तेरीवासनाके प्रभावसैं बहुतसे गुरु होवैंगे। उनके संगसैं जब तोकों मेरे मिलनेकी प्रेमभक्ति बढजावैगी तब सब गुरूनसों पीछे मेरा जो सगुण अवतार सन्तस्वरूपहैं चाहे गृहस्थमैं हो चाहे वैराग्यमैं हो उनसौं मिलैगा । वे निर्मल निर्पेक्ष होकर रह-तेहैं और शरीरयात्रा मात्र ग्रहण कर्ते हैं । ज्यादा रजोगुण नहीं वढाते। नैं त्यागका अभिमान रखतेहैं। नैं रागकरिके किसी व्योहारमैं फँसतेहैं।सबसों समरूप रहतेहैं। वडे छोटे कारिके नहीं देखते । अचाह निर्वैर निशंक सबजगतसैं

उदास शान्त निर्मल ज्ञानविज्ञानसहित अजबहै रहस्य जिनका और प्रकाशवान जिनके सहजके शब्दहैं। योगसमाधिमैं सिद्ध सबका सारतत्त्वके जाननेहारे। सबसिद्धि जिनके हाजर खडी रहतीहैं। आप निर्भय अचिंत्य निर्बासना ब्रह्मानन्दमैं मग्न दीनगरीबीकों लियें। सबकों सुखदैंनेहारे भलोंके मित्र ओरोंकों मानदैंनेहारे आप निराभिमानी आनन्दमंगलस्वरूप होकर रहतेहैं। अपारहै महिमा जिनकी वेही कृपाकरिके दिव्यदृष्टि देवैंगे। जब उनकों जानैंगा और वे अधिकारीशिष्यकों देखके वडे प्रसन्न होतेहैं। उनकी सेवासैं सबकुछ प्राप्त होताहै। वे सद्गुरु नरहरिस्वरूपहैं। ऐसे सद्गुरु बिना मिलैं। मैं कदाचित् नहीं मिलोंगा। क्योंकि, वे मेरे सगुणस्वरूपहैं उनकी कृपासैं मेरा निर्गुण स्वरूप पाके दोनोंसैं परे परात्पर अवाच्य अनामकों प्राप्त होतेहैं और गुरुनसों तोकों लोकपरलोकके सुख मिलजावैंगे। परन्तु मेरी प्राप्ति तो पूरे सच्चेगुरु नरहरिसैंहीं होवैगी और येभी तुझकों याद रहै कि जाकों मेरेमिलनेंका ज्यादा प्रेमहै और स्त्री पुत्र धन धाम मान बडाईमैं प्रीति कैमहै। सब संसारसैं अरुचि जो मेरेही खोजबूझके विरहमैं लगाहै। सो मुझसद्गुरुको प्राप्त होताहै और मन्द अधिकारी प्रथम तो मेरेपास आवैं नहीं और जो आवैं तो उनका मन चंचल अनेकबासनानसैं मलिनहै सो ठैरते नहीं उनके चित्तकों उच्चाटन होजाताहै और जो

कोई ठेरह तो बडा अधिकारी होजावे। अब मैं तुझको वोबर्णन कर्ताहूं। जो कि मैंनें श्रेष्ठकर्म धारण करिके सगुणस्वरूप सद्गुरुसैं मिलके जिनमार्गोंमैं होके गयाहूं और योगाभ्याससैं अपनी आत्माकों परमात्मामैं लय-करिके सबकुछ समाधिदशामैं देखाहै। फिर उत्थानद-शामैं वाहीका रूप होके अपनी मौजमैं तेरेनिमित्त कह-ताहूं सो सुण। परन्तु मेरे वचन तेरे जब निश्चय होवैंगे तब तू मेरीसहायतासैं योगाभ्यास करिके देखैगा और मैं तेरे भींतर श्रुतीरूप होकर लारे चलूंगा इतनैं तू मेरेवचनोंका भेद नहीं जानसक्ता। जादिनां तू मेरे सन-मुख होवेगा तबहीसैं तेरे कारज सिद्ध होवैंगे। नौ अधि-कारकरिके मेरे मिलनेंकी सीडीहैं। उनका वर्णन कर्ताहूं सो सुणो। प्रथमसीढीसैंहीं मेरे मिलापसैं वाकिफ होताहै। आठके बाद नोवींमैं मोमैं मिलजाताहै। प्रथमअधिकारकी सीढी प्रतिमांपूजन, तमोगुणसैं अज्ञानदशामैंहै। दूसरे अधिकारकी सीढी मानसीपूजन, शुभाशुभ कर्म बिचार रजोगुणसैंहै। तीसरे अधिकारकी सीढी बृत्तिया शुद्धरखनी सात्त्विक गुणसैं है। चौथे अधिकारकी सीढी नित्यानित्यका विचार, अध्यात्मविद्याका मननकरना, सद्गुरुके मिलनेका प्रेम रखनां येहै। पांचवें अधिकारकी सीढी सद्गुरुकों पाके तनमनधनसैं प्रीतिकरनां, आज्ञानुकूल रहनां और यह

मनमैं डर रखनां कि, मुझसैं कोई ऐसाकर्म नैं होवै कि, मोकूं ये अपात्र समझैं। जो ए कृपा नैं करैंगे तो मेरा कल्याण न होवैगा। छठे अधिकारकी सीढी जो सद्गुरु मार्ग बतावैं उसका अभ्यास करना। अभ्यासके जोरसैं और उनकी कृपासैं दिव्यदृष्टिका पानां। सातवें अधिकारकी सीढी विशेष अभ्याससैं योगमार्गमैं प्रेमके जोरसैं लयता वढ-जावै और बडे २ कष्टनकों सहन करै तनमन प्राणका हवन करे। आठवें अधिकारकी सीढी षट् चक्रनकी वायुका जीतनां। सब कुछ जानके जीवात्मा जाग्रतावस्थामैं सुषुप्तिसा होना, पश्चात् गुणातीत तुरीयस्वरूपहो ईश्वरता-सिद्धीनका प्रकाश होना, शून्यसमाधिमैं लय होनांहै। नवैं अधिकारकी सीढी अगम्य शून्य महाशून्य परमाकाशमै अकह अवाच्य अनाम होनां। ये सब तुझकों समझानेंके वास्ते नौ अधिकार या नौ सीढी या नौ भूमिका चाहै जोंनसा नाम रखलो। ये नऊं परस्पर मिलीहुईहैं। एकसैं एक भिन्न नहीं हैं। जैसैं वृक्षके मूलसैं सब उसके फैलावके अंग मिलरहेहैं और न्यारे २ भी हैं ऐसैं जानों॥

अब प्रथमअधिकारकी सीढीका वर्णन।

हेआज्ञापालक! प्रथम सबमनुष्योंकी बुद्धिकी बाल्याव-स्था होतीहै अर्थात् अल्पबुद्धि होतीहै। उस बुद्धिसैं आका-

र रूप जड संज्ञापर बिश्वास लातेहैं। जैसै बालकके पिताके घरमें असली हाथी घोडा गऊ पक्षी आदि होतेहैं। परन्तु जब बालक मट्टीके खिलौनें देखताहै तब उनको बडे चावसें माँगके लेताहै और उनसैं बडीप्रीतिसैं खेलाकर्ताहै। ऐसैंहीं सबमनुष्य अल्पबुद्धिके प्रभावसैं जडसंज्ञाआकारौंपै बिश्वास लातेहैं। कोई जंत्र तावीज गंडा पातडी बनांके गलेमैं पहिरतेहैं। या चौतरे समाधि चरणचोकी पावडी आले गुम्मज भोमियां पचबीर सैयद मानके सेवतेहैं। या किसी देवता अवतारकी मूर्ति बनाके या भींतमैं माडके पूजतेहैं। तसवीरकी झांकी कर्तेहैं। तथा अग्नि जल गिरि बृक्ष चंद्र सूर्यादिका बिश्वास लाके या देखादेखी सेवा कर्तेहैं और बहुतसे पुस्तकका पूजन कर्तेहैं। सो हेप्यारा! अनेकभेद करिके जडसंज्ञाके आकारोंपैही बिश्वास लाते हैं परन्तु उन। बिश्वासोंमैं इन्होंकी कामना अलग २ होतीहैं। जो कामना सत्यबिश्वासके प्रेमसैं होतीहै वो फलदायक होजातीहै। क्योंकि जाभावनासैं जे बिश्वास लाके सेवतेहैं ताहीकों वो सर्वशक्तिवांन पूर्ण करदेताहै। पर कोई२ मेरेनामकी प्रतिमां बनांकर भोलेभावसैं मेरी प्रसन्नताके अर्थ सेवन कर्तेहैं। वे सब पूजनेंवालोंमैं श्रेष्ठ हैं। क्योंकि, जिनके हृदयमैं मेरे मिलनेंकी भावनांहै वो बडा कल्याणकी करनेंवालीहै। देखो या प्रथमअधिकारकी

सीढीके सेवनेकेअर्थ आचार्योंनैं दयाकरिके मनुष्योंके कल्याणके अर्थ कैसा उपदेश किया है सो श्रवण करो। जे मनुष्य रजोगुणी संपत्तिवान् राजाआदिहैं। जिनकी भोग बिलासनमैं लोलुपता ज्यादाहै उनकेवास्ते उपदेश दिया कि तुम इष्टदेवका पूजन कियाकरो। तुम्हारे सर्वमनोरथ सिद्ध होवैंगे। अच्छा उत्तम स्थानकों सजके, चित्राम झाड़ गिलास लगाके इष्टमूर्तिका शृंगारकरि सिंहासनपै बैठा के तुम स्नानकरिके अष्टगंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य मेवा फल सब सामग्रीसहित पूजन कियाकरो। सो उन भोगबिलासी पुरुषनकी आचार्योंनैं भोगनमैंहीं परमेश्वरकी भावनां बधाई। उन महान्पुरुषोंनैं यह बिचार किया कि, इन भोगबिलासी मनुष्योंका भोगनसैं अलग होके परमेश्वरमैं मन नहीं लगैगा सो इन्होंकी भोगनके साथ मैंही परमेश्वरकी भक्ति बढावो जासैं इन्होंका कल्याण होवै नहींतो ये इन्द्रियोंके भोगनमैंहीं पशुवत् क्रीडा करिके नाश होजावैंगे, तो इन्होंको मनुष्यशरीर पायेका क्या फलमिला? जामैं परमेश्वरकी प्राप्ति होतीहै। स्त्री पुत्र इन्द्रियोंके भोग तो सबदेहनमैंहैं। मनुष्यदेह पाके परमेश्वरकों नहीं खोजा तो सब पशुसमान हैं देखो उन भोगबिलासी पुरुषनकों भोजनके समय सब भोग मौजूदहैं। श्रवणोंकों अच्छे २ छन्दनके मधुरवाणीसैं ध्यान

प्रार्थनाके श्लोक श्रेष्ठजनोंके द्वारा अथवा अपनें मुखके द्वारा और गवैयेनकेद्वारा आत्मिक भक्तिपक्षके पदोंकी मधुर ध्वनि श्रवणइन्द्रियके विषय मौजूदहैं । अक्षगोचर मूर्ति-केध्यानमैं लयहोनां सो स्पर्श के विषय मौजूदहैं । क्योंकि, जामैं प्रीति होतीहै वामैं मन लीन होजाताहै सोई स्पर्शहै। नेत्रोंको अच्छे मकांन, झाड़, गिलास, मूर्तिका शृंगार, भूष-णवस्त्रादि विषय मौजूदहैं । रसनाकों नैवेद्य पकवांन मेवा' फलादि खानेके पदार्थ मौजूदहैं । क्योंकि, इनहींके खानेंमें प्रसादीकेभावसैं आवैंगे। और अष्टगंध,पुष्प, धूप, चंदनादि आपभी लेपन कर्तेहैं । सो नासिकाके विषय मौजूदहैं। जब ये राजसी मनुष्य सबसामग्रीनके साथ परमेश्वरका पूजन करैंगे। पीछे कुछ मन्त्रका जाप जपैंगे। तो त्र पढैंगे, तो इन्होंका घंटा दोघंटा काल परमेश्वरके निमित्त लगैगा। जो ये राजसीमनुष्य पूजन नहींकर्ते तो सबकाल इनोंका हांसी ठट्टे बेप्रयोजनकी अयुक्तबात करनेंमें जाता। तथा इन्द्रियोंके विषयोंमैं अहर्निशि खोते। तो इनका कल्याण नैं होता । ऐसैं भोगीजनोंकों तारनेंकेवास्ते आचार्योंनें उपदेशकियाहै। और बिचारो कि, जब राजसीमनुष्य अपनें सजेहुये महलमैं जावै। तब उनके मनमैं भोगबासना उदय होतीहैं। और जब वाहीमहलमैं कोई मकांन मन्दिरके नामसैं प्रतिमां इष्टदेवकी सहितहो वहां जानेंसैं उन

राजसीयोंके मनकी भावनां बदलजातीहै। मूर्ति देखके परमेश्वरकी याद आतीहै । प्रणामकर भेटचढाके बैठजातेहैं। और परमेश्वरके गुणानुवाद श्रवण कर्तेहैं । तो बिचारो कि, कितनेंबडे कल्याणकी बातहै । हेप्यारा! ये प्रथमाधिकारकी भूमिकामैं बहुत बडे कल्याणके गुण भरेहैं । और बिचारो कि, मूर्तिके प्रभावसैं कामनान्की सिद्धीके अर्थ कूवा, बाग, तिवारा,छतरी बनांतेहैं।उनस्थांनोंमैं तीनोंऋतुनकी तापसैं मनुष्य और बहुतसे जीव बचजातेहैं । तो देखो कितनी बडी दयाका कर्महुवा। और जो उन मकांनोंमैं साधुसन्तआके निवास करैं । तो घरबैठैंही कैसी जंगम गंगा आजातीहै । जिनके संगसैं परमकल्याण मनुष्योंका होताहै । और प्रथमाधिकारकी सीढी उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ तीनों मनुष्योंको सुखदाईहै । उत्तमोंकों तो ऐसैंहै कि, साधुसन्त महात्मा मन्दिर देवस्थानमैं जावैंगे। तो उनकों भोजन, जल, बैठनेंकों मकांन सबतरहका आंराम मिलैगा । और आचार्योंका औरभी मतलबहै कि, श्रेष्ठपुरुषनकों निर्विघ्नसैं आराम रहनेंकी जुक्ति बनांईहै । जे च्यारूं आश्रमोंकों साधनेवालेहैं तिनकों गृहस्थाश्रममैं आराम दियाहै । कि, सुन्दरमकांन परमेश्वरके नामका मन्दिर और भोजन वस्त्रका सुख जासैं वे अचिन्त्य होके भक्तिभावसन्तोषकों धारण करिके शुद्धवृत्तिनसैं या प्रथमाधिकारकी सीढीके आश्रय अष्टांगयोग जो मेरे मिलनेका मार्गहै

ताका साधन भलीप्रकार करैंगे। पीछे परिपकहोके मौजमैं वाहै जहांरहैं। जे श्रेष्ठ उत्तमजन हरिगुरु भक्त योगसाधनें-वालेहैं। जिनकी भोगनमैं विशेष प्रीति नहींहै। गृहस्थाश्रममैं रहके कार्यनिमित्त रजोगुण वर्ततेहैं। च्यारूं आश्रमोंको साधनेवाले मेरे मिलनेकी चाह रखतेहैं। ऐसे पुरुषनकों जे जन मन्दिर बनाके और उसमैं जीवका काढके देतेहैं वे धनवांन राजसी धन्यहैं। क्योंकि,उनके द्रव्यसैं परमेश्वरकी और उत्तमपुरुषोंकी सेवा होतीहै। परन्तु अब वो धर्म इनमन्दिरोंमैं नहीं रह्या। कोई २ जगे तो कुछ भखे मनुष्यों की सेवा होतीहै। परन्तु महन्त गुसाई अज्ञानदशामैं इन्द्रियोंके भोगनकी लोलुपतामैं निजस्वार्थी हैं। ठाकुरजीका प्रसाद किसी साधु सन्त अभ्यागतोंको भोजन नहीं कराते। अपनें सेवक शिष्योंकोंहीं जिमातेहैं। अपनी इन्द्रियोंको लडातेहैं। और सेवकशिष्योंकों अनेक तरहके व्यंजन स्वादिष्ठ बनाके प्रसाद करके देतेहैं। और उनकों चटोकडे करतेहैं। बाह्यभक्ति दिखातेहैं। भीतर धनकी चाह रहतीहै। वे धनके दासहैं मेरेदास नहीं। और धनकी लालसा सब बुरायोंकी जडहैं। ये धन स्त्रीपुत्रनके गुलाम मानबडाईकी चाहमैं फसेहै। धनवानोंकों धनकेअर्थ चेले कर्तेहैं। देखादेखी जक्षनके किंकर और जक्षचेले होतेहैं। बहुतसे मनुष्य इन कों धनवानोंके गुरु समझके और प्रसादके लालचसैं शिष्य होतेहैं। गुसाँई जक्षोंके गुरु जक्षोंके दियेहुये धनसैं बडे धना-

ढ्य महाजक्ष होगयेहैं । धनाभिमानी मदोन्मत्त किसी मनुष्यकों मनुष्य नहीं समझते। और बाजे २ नाचनेवालों कासा शृंगार कर्तेहैं और अनेकतरहके रसनके भोजनों सैं शरीर पुष्ट करिके भोगविलासनमैं बडे आसक्तहैं। छिपेहुये अनुचितकर्म व्यभिचारादिभी कर्तेहैं। मलिनहैं आचरण जिनके । पाखंडकी मेरी भक्ति दुनिया रिझानेके वास्ते नोकरोंके हात बडे डिम्भसैं करवातेहैं । बार २ ठाकुरजीकों बन्ध कर्तेहैं और खोलतेहैं। पाणी बडे पाखंडकी अछनाईसैं लातेहैं । परन्तु इनकी अछनाईका घमण्ड मक्खी जानबर नाश करतीहै । इनकी क्या दशाकहों ? मन्दिरोंको धनठगनेकी नेकी दूकांन बनालीहै। नैं मेरी सांचींभक्तिहे। नैं कोई श्रेष्ठजनोंका सत्कारहे। नैं भूखेपरदेशीनकों भोजनहे । मन्दिरके नोंकरोंके हात गली २ बजारमैं प्रसाद बिकताहै । अच्छे चतुर पुरुष इनका सबहाल जानतेहैं । ज्यादा इनका कंथनकरन। उचित नहीं। क्योंकि, बहुतसे लोग जिनके मन्दसंस्कारहैं। वे ये कहैंगे कि, ये निन्दा कर्तेहैं। परन्तु ये निन्दा नहीं, जथार्थहे।प्रत्यक्षमैं क्या प्रमाणहे। निन्दानाम उसका है कि, अच्छेकों बुराकहनां और प्रशंसा नाम उसकाहै कि, झूंठी बडाई करनी। जैसैं नकटेकों बडी नाकवाला बताया जैसाहै वैसा कहनां सो यथार्थ कहलाता है। हेप्यारा !

जे राजसीलोग कुपात्रनकों मन्दिरसेवाका दान देतेहैं उनकों कुछ फलनहीं मिलता। केवल जगतमैं कुछ बडाई होजातीहै। जैसैं कालरमैं बोनैंसैं बीजकी हानी होती है ऐसे जानों। और धनवांनहोके जे कृपणहोतेहैं उनकाभी प्रथमाधिकारकी सीढीसैं कल्याण हुवाहै सो सुणों। लोभी जो जन है उसकों उपदेश दिया कि, तू जब स्नान करले तापीछै लोटा माँझके जल महादेवजीके चढा दियाकर शिव तेरे सबमनोरथ सिद्ध करैंगे। धनपुत्र आरोग्यता देवैंगे। महादेव भोलेनाथ दयालुहैं। ये सुणके कृपणनैं सोचा कि, खरचतो कोडीकाभी नहीं बताया। ये तो काम करलूंगा। कईदिनके पीछै वासैं कह्या कि, चन्दनकी फास लाके वाकों घिसकेभी चढादिया करो। और तुमभी मस्तकके लेपन करलियाकरो। तब पैसेकी चोभी लाया। तापीछै कह्या कि, सारे २ चावलभी महादेवके चढावो। जासैं महादेव जलदी प्रसन्न होवैं। ऐसैंहीं शनै २ पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि पूजाकी सबसामग्री होगई और लोग बडाईभी करनेलगे तब तो दृढता होगई। फेर जपकरनैंलगा। स्तोत्र पढनैंलगा। उत्सव-जात्रानमैं पुण्य धर्मभी करनैंलगा। तब तो कृपणता जातीरही श्रेष्ठ वृत्ती होगई। और परमेश्वरके गुणानुवादकी कथा भी श्रवण करनेलगा और बिश्वाससैं कर्मकिये। जासैं उनका फलभी मिला। ऐसैं महापुरुषोंनैं कृपणमनुष्योंका मार्ग शुद्ध किया। और प्रथमअधिकारकी सीढीकों

च्यारसंप्रदायके आचार्योंनें अपनी पद्धतियोंमैं दोतरहका पूजन वर्णनकियाहै । सनिर्माल्य और अनिर्माल्य ।सो ये बाहिरका पूजन तो सनिर्माल्यहै । यापूजनमैं भगवानके सबपदार्थ भोगेबिलसे चढतेहैं । देखो ! पूष्पनकों मक्खी भौंरादि भोगजातेहैं । और चन्द्र, सूर्य, पवन भोगलेतेहैं । ऐसैंही सबसामग्री जानों सब भोगेहुये चढतेहैं । दूसरी अनिर्माल्य मानसीपूजनहै। और जे जन या प्रथमाधिकारकी सीढीकों भक्तिभावसैं सेवैंगे और जिनके हृदयमैं मेरे मिलनेंका प्रेम होवैगा वे सबअधिकारोंपै चढतेही चलेजावैंगे। और जो मेरी सेवासैं मैं सिद्धि देताहूं उनमैं फसजावैंगे । वे नहीं चढ सकैंगे। परन्तु जाके मेरी लगनहै वो बडेअधिकारके गुरूनकों हेरताही चलाजावैगा। और उनकी सहायतासैं याके सबकार्य सिद्ध होतेजावैंगे । और जिनके मन्दसंस्कारहैं क्रियमाणकर्मका पुरुषार्थ प्रबलनहींहै वे नहीं चढसकैंगे।जिनके क्रियमाण कर्म प्रबलहैं वे।सब अधिकारोंपै चढतेजावैंगे ॥

प्रश्नः—हेभक्तवत्सल दीनबन्धो! आपने कह्याकि, जिनके क्रियमाणकर्म प्रबल हैं । वे ऊंचेअधिकारोंपै चढतेजावैंगे । सो वे क्रियमाणकर्म कौनसेहैं ? सो कृपाकरिके कहो

उत्तरः—हेधर्मधारक! जीवात्माके संग तीनकर्म होतेहैं संचित,प्रारब्ध, क्रियमाण।संचित उसका नामहै जे जी

ज्ञात्मानें अनेकजन्मोंमैं अच्छे बुरे कर्मकिये हैं। वे सब इकठे रहतेहैं। जामैं और प्रारब्ध उसका नामहै कि, उस संचित कर्मरूप खजानेंमैंसैं जिसकर्मका उदयकाल आयाहै उसकेसंग जन्मपातेहैं। और जैसी प्रारब्ध होतीहै वैसाही उनका स्वभाव होताहै। और संग कुसंग पाके स्वभाव सैं ज्यादा न्यूनाधिक कर्म होतेहैं । वे क्रियमाणकर्म कहलातेहैं। ये क्रियमाणकर्म नई कुमाईहै। संचितकर्म खजानेकी भरनेंवालीहै। और प्रारब्धकर्महै सो संचितखजाने मैंसैं खर्च होताहै। सो हे प्यारा! संचितसबकर्मनका खजानां है और क्रियमाण इसका पुरुषार्थहै । यासैं सबकुछ करसक्ताहै। या प्रथमाधिकारकी सीढीपै बहुतमनुष्य चलतेहैं। उनमैं कोई २ के शुद्धाचण-होतेहैं। वे ऊपरके अधिकारोंपैभी चढतेहैं। और जिनके मेरे मिलनेका प्रेम नहींहै वे पोटार्थी धनकेदास या प्रथमाधिकारमैंहीं सब उमर खोतेहैं। और कोई २ इनमैं कुमार्गीभी होजातेहैं। वे अपने कियेका फल पातेहैं॥

प्रश्नः—हेमहाप्रभो! आपने प्रथमाधिकारवालोंको तमोगुणी कैसें कह्या।

उत्तरः—हेप्यारा! इनभक्तोंका स्वभाव तमोगुणीहीं होता है। किसीका कम किसीका ज्यादा। वास्तव इनमैं तमोगुणहीं रहताहै। गीतामैंभी मैंनें कृष्णरूप होके ऐसाही वर्णन

कियाहै । कि तमोगुणीजन मेरे नामकी प्रतिमां बनाके मोकों प्रतिमारूपही मानतेहैं । ये नहीं सोचते कि, जिसपरमेश्वरनैं हमारा मनुष्यशरीर बिचक्षणचैतन्य बनायाहै वो हमसैं अतिचैतन्यसर्वशक्तिवांन् होवैगा । वाकों हम प्रतिमां बनाकर पूजते हैं । इस निर्बुद्धिभक्तिसैं उसकी तुच्छ महिमां होती है । क्योंकि, पूज्यतो जडसंज्ञारूप और पूजनेवाला चैतन्यरूप । परन्तु तुच्छबुद्धिके मनुष्योंनैं पेटका रोजगार समझके और कोई २ अपनां परमेश्वरमैं भावभक्ति बढानेंकेवास्ते प्रतिमां बनाकर पूजतेहैं । और इनकों बहुत जलदी क्रोध आजाताहै । इसहेतुसैं तमोगुणी कह्या । और जे मोकों पृथक् २ करिके मानतेह वे रजोगुणीहैं । और जे सब चराचरमैं मोंकों एकही मानतेहैं वे सात्विक ज्ञानीभक्तहैं ॥

प्रश्नः—हेगर्वगंजन ! हेसनातन !! बहुतसे महापुरुषोंनैं अपनी बाणीबचनोंमैं या प्रथमाधिकारकी सीढी प्रतिमांपूजनकी निन्दा करीहै । सो क्यों करीहै । याका व्याख्यान कृपाकरिके बर्णन करो ॥

उत्तरः—हेसत्संगीश्रद्धावान् ! निन्दा नहीं करीहै । उन्होंनैं तो उपदेशके अर्थ याकों न्यून दिखाके चितायाहै । ऊंचे अधिकारपै चढानेंकेवास्ते । क्योंकि, या प्रथमसीढीपहा सबनरनारीनकी भरती होजातीहै । सो इन्होंमैं जाके

उत्तमसंस्कारहैं। वाके बचनकी ताडनां देके ऊंचे अधिकारपै लेजातहैं । सो ये तो उनकी दयाहै। परन्तु जे इसप्रथमसीढीपैही दुनिया, दिखानेंकों दम्भतासैं प्रतिमा पूजनलीला कर्तेहैं और उनके मेरा प्रेम और हृदयमेंडर नहींहै। और वे बडे अधिकारीजनोंकों पाखंडी समझके अनुचितबचन कहतेहैं। कि तुम नास्तिकहो येनहीं सोचते कि,जे भक्तिके प्रभावसैं योगमार्गका साधन करिके बडे अधिकारपै पहुँचेहैंवे अपने आपेसैं और सर्वत्रमैं परमेश्वरकों देखतेहैं। वे नास्तिक कैसैं हैं? वे तो पूरे आस्तिकहैं।उनकी आस्तिकता परमेश्वरमैं पूरी होगई कि, वा बिना कुछ खाली नहीं समझते। सब चराचरकों वाहीका रूप समझतेहैं।सो हेप्यारा! नास्तिक तो ये हैं कि,जाकरिके पाचौंतत्त्व चंद्र सूर्यादि सबसृष्टि प्रकाश कररहीहै। ऐसा वो परमचैतन्यकों पाषाण या धातुकी मूर्ति बनाके उसीके परमेश्वर मानतेहैं तो ये वाकी अवज्ञा कर्तेहैं । और निन्दाभी कर्तेहैं। परन्तु इनका दोष नहीं। क्योंकि, इनकों वाकी महिमाका प्रकाश नहीं, इनकी बुद्धिकी बाल्यावस्थाहै। बालक चाहे जैसैं खेलै वाका खेल सब खेलरूपहीहैं। परन्तु इन खेलनमैंभी जैसैं मैंनें खेलनेंकी आज्ञा दीहै वैसी भावना नहीं रखते, ये इनका कसूर है। और आपेकों बडे भक्त समझके अभिमानी होतेहैं। ऐसे अज्ञानी अभिमानियोंके मान

भंगकरनेके अर्थ और उत्तमसंस्कारीनकों चितानेके अर्थ महापुरुषोंनैं वचन कहेहैं। उनके जो कोई वचन मानतेहैं उनके बडे उत्तम भाग्यहैं। सो वे महापुरुष तो ऐसैं दयाकरिके बचन कहतेहैं कि, जैसैं किसीका पुत्र वर्णमालिका और पत्रमालिका पढकर फूलताहै। तव उसका पिता कहताहै कि, तू अभीतक कुछ नहीं पढाहै। जानैं सबशास्त्र पढलिये तू उसकी होड नहीं करसक्ता। तू बहुतसी जमाअत चढता चलाजावैगा। जब कुछ पढनेंका आनन्द आवैगा। अभी तो सौमणमैं पूणींभी नहीं कती। सो हेप्यारा! जैसैं पिता पुत्रकों चिताताहै और उसकों आगेकों चढाया चाहाताहै। महापुरुषोंका बचन कहना ऐसैं जानों। परन्तु हेप्यारा! जिनकी कोई अधिकारपै नेष्टा नहींहै और कुमार्गीहैं। ऐसे मनुष्य महापुरुषोंके कुछशब्द चितावनीके याद करिके प्रथमअधिकार प्रतिमांपूजनकी निन्दा कर्तेहैं और आप परमेश्वरके निमित्त कुछभी कर्म नहीं कर्ते। ऐसे पुरुष कहींकेभी नहीं होते। नैं उनके अपने कुलका धर्महै। नैं किसी औरका धारण कर्तेहैं। वे बेमजहबी मनमुखी आजाद बेधर्मीहैं। सबकी निन्दाही करनां सीखेहैं। स्त्री, पुत्र, धनके गुलाम बेठिकानेंहैं। जैसैं धोबीका कुत्ता नैं घरका न घाटका। भोग बिलासोंकी चहामैं अन्ध होरहेहैं। हेप्यारा! किसी धर्म मजहबकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। सब धर्ममजहबोंका

सार परमेश्वरकी प्राप्तिहै । जो परमेश्वरकों पातेहैं सो वाहीके रूप होजातेहैं । वेही अवतार नबी कहलातेहैं सो उभयप्रकारके होतेहैं । कारक और अवधूतकारक तो वे कहलाते हैं । जो धर्म मजहबबांधके सबकों चलातेहैं और अवधूत वो हैं । जो अपनी मौजमैं रहतेहैं और सब धर्मो मजहबीनको चितातेहैं । उनका कहना धर्मीशरैलोगोंकों बरामालूम होताहे । परन्तु उत्तमाधिकारीका भला होताहै और वो उनसैं मिलके उनहींकारूप होजाताहे । हेप्यारा! जो मनुष्य प्रथमाधिकारकी सीढी प्रतिमांपूजन सच्चेभक्ति भावसैं कर्तेहैं उनकी दरिद्रता जातीरहतीहै । और जे संपतवांन होके सेवतेहैं उनकी परमेश्वरमैं प्रीति बढतीहे। हेप्यारा! परमेश्वरके उभयस्वरूपहे । आकार निराकार । आकार तो सब बिश्व और मनुष्यरूप होके सद्गुरुस्वरूपहैं । और निराकार वा आकारमैंहीं चैतन्यअन्तःकरण होके व्यापकहे । सद्गुरुका शरीर आकारस्वरूप होकर परमेश्वर नरहरिस्वरूप है । तामैं चैतन्य अन्तःकरण श्रुतिरूप होके निराकारहे । और सद्गुरु दोनूं स्वरूपनसौ परै, अर्थात् निर्गुण सगुणसैं परे योग समाधिकरिके अपनें वास्तव स्वरूपमैं लयहोतेहैं । यानें निजरूपसैं लीनहोजाते हैं । हे प्यारा! पहलैं परमेश्वरकी उपासना आकाररूपही की होतीहै । पीछे निकारकीहे । जैसैं मनुष्य मनुष्यकी उभयप्रकार

चाकरी कर्ताहै। तनसैं और मनसैं, तनसैं तनकी और मनबुद्धिसैं निराकार चैतन्यकी। जैसैं मनुष्यका अंग चाहै जो नसा पकडले ग्रीवा, हात, पाँव, अंगुली, कमर आदि कोईसाही अंग पकडनेसैं वो पकडाजाताहै। ऐसैंही विश्वास करिके जिया आकारकी घ्यावना कर्ते हैं पाणी,पाहाड, वृक्ष, अग्नि, सूर्य,चंद्रमा,तसबीर मूर्तिकी उपासनाकी घ्यावनासैं परमेश्वर आकाररूप ग्रहण होगया।मूर्तिबनाके उपासनाकर नेकी ये आवश्यकताहै कि, जितनैं वे सच्चे योगसमाधिवाले पूरे सद्गुरु नैं मिलैं तितनैं उनके नामकी मूर्तिकी उपासनाक रनी योग्यहै। उनके मिलनेंके पश्चात् इस जडसंज्ञाकरकी भावना छोडके उस चैतन्याकार स्वरूपकी सेवा और आज्ञा धारण करना योग्यहै। यावत् वे नैं मिलैं तावत् उनके नामकी मूर्तिकों पूजै। क्योंकि, उनके नामकी मूर्तिकों प्रेम विश्वासकरिके पूजनेंसैं वे मिलजातेहैं। कोई साहीनामकी मूर्ति पूजो। क्योंकि, सबनाम उन्हीके हैं और वे वापै वडे प्रसन्न होतेहैं। जैसैं कोई चक्रबर्तीराजा परोक्ष दूरदेशान्तर मैं रहे और कोई मनुष्य उसका चाहानेंवाला उसकी तसबीरका पुष्प, रूप, दीप, चंदनादि सामग्रीसैं पूजन करै तो राजा उस्की भक्ति सुनके राजी होताहै। और जो कोई तसबीरकी अविनय करै तो नाराज होताहै।और वो तसबीरकी भक्तिकरनेवाला राजाकों प्रत्यक्षमैं पाके पीछे वाकी तसबीरसैं प्रीति उठजातीहै। ऐसैंही जब सगुणचैतन्य

सद्गुरु मिलजावैंगे तब और उपासनानमैं प्रीति नहीं रहेगी। उन सगुणसैं मिलके निर्गुणस्वरूपका प्राप्त होवैगा । योगसमाधिकरिके सगुणनिर्गुणसैं परे अवाच्य अनाममैं लयहोवैंगा । सो पहिले आकारकी भावना करनेंसैं अन्तःकरण शुद्धहोके स्थिर होताहै।क्योंकि,ये मनुष्यभी तो आकाररूप शरीरहै और आकारनसैंही प्रीति कर्ताहै । स्त्री, पुत्र, बन्धु, मित्र, गऊ, घोडा, हाकिम, राजादिसैं प्यार कर्ताहै । और अन्तःकरणमैं इनहीं आकाररूपोंकी कल्पनाहोके झांई जाग्रत् स्वप्नावस्थामैं पडतीहै । तबतक आकारहीकी उपासनाहै । जब भक्तिज्ञानवैराग्यसैं निर्विकल्पचित्त हो जावैगा तब निराकारकी होवैगी । वो अनन्यभक्तियोग कारिके ग्राह्यहै ॥

प्रश्न ॥ हेजगजीवन ! घणनामी या शरीरसैं कर्म मैं कर्ताहूं । तथा परमेश्वर कर्ता है याका निर्णय कृपा करिके कहो ॥

उत्तर ॥ हेसुबुद्धे ! जगत्मैं कर्महीं प्रधानहैं,नींचसैं उच्च, उच्चसैं नीच कर्मोंसैंही होतेहैं।सब शुभाशुभ कर्मोंका फल मेरा कारण स्वरूपसैं सब पातेहैं । इनकों मालूम नहीं होता। सब कुछ मैंही कर्ताहूं । जे मोसैं डरतेहैं, मेरी आज्ञानकों पालन कर्ते हैं उनकी मैं तीव्रबुद्धि करदेताहूं।जाकरिके उनका सबतरह कल्याण होताहै और जे मेरी आज्ञानकों भंगकर्ते

हैं मोसैं डरते नहीं । अधर्म, अन्याय, दगाबाजी, जालसाजी सबकेसाथ करतेहैं, उनके हृदयमैंसैं बुद्धिका प्रकाश नाश करदेताहूं। जासैं वे अनेक क्लेशोंमैं फसते हैं। सुबुद्धि कुबुद्धि का देनेवाला मैंहूं जैसे जाके कर्महैं वैसीही बुद्धि वाके हृदयमैं प्रकाश करतीहै । भोग और मोक्षकी देनेंवाली बुद्धिहै सो मेरे आधीनहै। मैं सबका प्रेरकप्रकाशवानहूं। सब कुछ मेरे अंशसैं होताहै और मेरेही अंशके प्रभावसैं मनुष्योंके अन्तःकरणमैं अहंकार उदय होताहै वाहंकार सैं उनकी रक्षा करताहूं। सो बहुतसे कर्म तो वाहंकारसैंही सिद्ध होतेहैं। जैसैं क्षुधालगे जब भोजनकी इच्छा होतीहै तब मनुष्य यों कहै कि, परमेश्वर पेटभरैगा। सो ऐसा कहनां याकी अज्ञानताहै । ये कर्म तो याहीके अहंकारसैं सिद्ध होतेहैं। जब ये आटा, अग्नि, जल लाके पकावैगा पीछे ठंढाकरिके हस्तसैं टूकतोडके मुखमैं देवैगा। चिगदके जीवके टलकेसे भीतर करदेगा। इतने तो शरीरके अहंकारका कर्म हैं । तापीछे याके अहंकारका कर्म नहीं । परमेश्वरके प्रभाव सैं रसपाचन होके रक्त, मांस, मेद, मज्जा, त्वचा, अस्थि, वीर्यादि सप्तधातु बनकर शरीर पुष्टहोताहै । वे सब कर्म परमेश्वरकी तरफसैं हैं। उनमैं इसके अहंकारका कुछ दखल नहीं है। सो हेप्यारा! बहुतसे कर्म तो इसके अहंकारकी मारफत होतेहैं और सब परमेश्वरसैं होतेहैं । परन्तु सब परमे

श्वरसैंहीं सिद्ध होते हैं शरीरके भीतर जो अहंकार मनबु-
द्धि चित्त उदय हुयेहैं सोभी तो परमेश्वरके प्रभावसैं हैं।
मैं सबकाकर्त्ता और अकर्त्ताभी हूं। कुछ नहीं कर्त्ताहूं स्वंय
मेरेप्रभावसैंहीं सबकुछ होरह्याहै। जैसैं सूर्यकों कुछ इच्छा
नहीं हैं कि, मोकारीके प्रकाश होवै, परन्तु वाका प्रभावही
ऐसाहै कि, सर्वत्र प्रकाशफैलजाताहै। जैसैं चूम्बककी कुछ
इच्छानहींहै कि,लोहामो कारीके नाँचे,परन्तु उसके प्रभावसैं
नाचताहीहै ऐसैं कर्ता अकर्ता दोनों जानों॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे
अनाममंगलसम्वादे प्रथमाधिकारकी भूमिकावर्णनो
नाम पञ्चमप्रकाशः॥ ५॥

अब दूसराधिकारकी सीढीका कथन सुन। अनाम
उवाच। हे सुरुचे! सब नरनारी बहुत भेंषधारी या प्रथमाधि
कारकी भूमिकाके खेलमैंहीं सब ऊंमर खोतेहैं और मन्द-
रोंके मनुष्य ठाकुरजीका प्रसादके रस खाखाके आलसी
होजातेहैं। प्रसादका माहात्म्य ऐसा लिखाहै कि, प्रसादके
खानेंसैं दिव्यदृष्टि होजातीहै। सो ये तो नित्य खातेहैं और
दिव्यदृष्टि नहीं होती।चर्मदृष्टिही बनी रहतीहै। हेप्यारा!जा
प्रसादका माहात्म्य लिखाहै वो प्रसाद औरहै। शब्दके
च्यार स्थानहैं परा, पश्यंति,मध्यमा,बैखरी, सो बैखरीनाम
उसकाहै जे मुखसैं शब्द बोलेजातेहैं। मध्यमा उस्कों कहते

हैं जो भींतर मनन कीयाजाताहै।पश्यन्ति नाम उस्काहै जो स्वयंसिद्ध झीनापनसैं फुरनां होतीहै और परानाम उस्का है । जाके प्रभावसैं फुर्नां होतीहै सो वो परात्पर जो पराशब्दहै तामैं योगीकी श्रुतिनैं प्रवेश किया । वाका बोध रूप जो शब्द सो प्रसादहै।जे महात्मा योगी परमसन्तनके बचन मनुष्योंके कल्याणके अर्थ वेद, शास्त्र, पुराण, बाणी ग्रंथ कृपाकरिके कहे हैं वेही प्रसाद हैं। इनकों जे श्रवणरूप मुखकेद्वारा अन्तःकरणमैं ग्रहण कर्ते हैं और आज्ञानुसार साधन कर्ते हैं उनकी दिव्यदृष्टि होतीहै । हेप्यारा ! जब मनुष्य मेरे मिलनेके अर्थ बाहिरका पूजन कर्ता है । और कथा कीर्तन श्रवण कर्ता है और मेरे मिलनेका मार्ग खोजताही रहताहै।जब वो आगै दूसरे अधिकारकी सीढीपै चढना चहाताहै तब वाकों मेरी कृपासैं उसही अधिकारके गुरु मिलजातेहैं । जो ये पहिले बाहिर पूजन करताथा सो उनके उपदेशसैं भींतरमानसी करनेंलगा।जैसैं मन्दिर भगवानके बाहिरहैं वैसेही भींतर अन्तःकरणमैं मन बुद्धिकरिके बनांवै।जैसैं स्वप्नावस्थामैं बिनांरचनां सबरचनां दीखतीहै। तैसैंहीं मनबुद्धिकरिके मन्दिर इष्टदेवका बनावै । सुवर्णका मणिमांणिकोंसैं जडाहुवा, चित्रबिचित्ररंगोंसहित, और अपने इष्टदेवकों जामैं अपनां प्रेम होवैं । शक्ति, महादेव अथवा रामचंद्रसीता, तथा राधाकृष्णकों सिंहासनपै बै-

ढांके आप सखीभावमैं बहुतसी सखीनके संग मौजूद रहै और उबटना अतर सहित भगवान्कों गंगाजलसैं स्नान करावै। अंगोछा देके धोवती पीताम्बरी था श्वेतपहिराके पीछे शय्या सिंहासनपै काच कंगा करावै। चन्दन, केसर आदि लेपन करै और वस्त्र अपनें प्रेमके अनुकूल पहिरावै। हरे,लाल, गुलाबी, सोसनी, सुपेद, पीला, पंचरंगी पहिराके आभूषण पहिरावै। शिरपै मुकुट ताज पगडी फैंटा बांधके निरखै।कबहूँ अनेक तरहके पुष्पोंके श्रृंगार करै।पीछै आरती उतारके प्रणाम करै। पश्चात् मेवा,मिश्री, मक्खन अनेक तरहके पकवान निवेदनकरै।कंचनकी झारी गिलाससैं जलपान कुल्ला कराके ताम्बूल देवै। पीछे पंखा लेके पवनकरै।चरण सेवा करै। ऐसैं मानसी पूजन रात्रीकी चौथीपहरमैं उठके शरीरके सबकर्म शौचादि करिके नेमसैं नित्यप्रति करतोही रहै। और गृहस्थाश्रमका सब ब्योहार शुद्धतासैं वर्तै। ये मानसी पूजन अनिर्माल्यहै। यामैं भगवानके जितनी वस्तु अर्पण कीजाती हैं सो सब मनकी भावनासैं हैं। किसीकी भोगी बिलसी नहींहैं। बाहिरकी पूजन सनिर्माल्य है। यासैं भगवानके सब वस्तु भोगीबिलसी चढती हैं। जैसैं पुष्प चढाते हैं उनकों पवन, सूर्य, चन्द्रमादि देवतांननैं भोगलियेहैं। और मक्खी भौंरादि जीवोंनैं भोग लियेहैं। ऐसैंही सबवस्तु जानों। जे जन या मानसीपूजन

करतेहैं तिनके मनकी वहुतसी चपलता जातीरहतीहै। और उनका मन परमेश्वरके प्रेममैं मग्न रहताहै॥

अथ तृतीयाधिकारकी सीढी बर्णन ।

हेप्यारा! या मानसी पूजनकरनैवालोंकों अपने मनकी बृत्तियोंके देखनेका बोध होजाता है। जब रजोगुण तमो गुणकी बृत्तिनकों देखके उदास होता है, सतोगुणकी देख के प्रसन्न होता है। तव परमेश्वरसैं प्रार्थना करता है कि, हे स्वामिन् मेरी बृत्तियां जे मलिन उदय होतीहैं इनसैं मैं कैसैं शुद्ध होऊंगा। जब गणनसैं गुण बर्तताहै तब मलि नबृत्तियोंका त्यागकरिके उत्तमोंकों ग्रहण करता है याही का नाम जागना है। क्योंकि, रज तमकी मलिनबृत्तियां जो रात्रि है तामैं सतोगुणरूप बिचारज्ञान जो बोध है सोई जागना है। और जे वाहिरकी रात्रि मैं जागनेंका साधन कर्तेहैं और दिनमैं सोतेहैं वे दम्भी अल्पबुद्धि हैं। और ग्रंथोंके श्रवणमननसैं सज्जनोंके संगसैं गुरुभक्तिके प्रभावसैं याका हृदयमैं बैराग्यउदय होजाता है। तव रजतमकी मलिनता वहुतसी नष्ट होजातीहै। सतोगुण बढजाता है॥

अथ चतुर्थाधिकारकी सीढी बर्णन।

हेप्यारा! जब याकी सतोगुणबृत्तियां बढजातीहैं तव याकों अध्यात्मबिद्याके शास्त्र प्रियलगते हैं। जिनकों

सांख्य वेदान्त योगशास्त्र कहते हैं और महापुरुषोंके कहेहुये ग्रंथ जे भाषावाणीमें हैं उनकों श्रवण कारिके वांचके बडा मग्न होता है । ये अध्यात्मविद्या देखनेंसें नित्यानित्यका बिचार होजाता है । जब शास्त्रोंकेद्वारा योगमार्गकी महिमां सुणकर योगमार्गमें चलनेंका भाव उदय होजाता है। तब योगसमाधि सिद्ध महापुरुषोंसें मिलनेंका बिरह उपजता है। जब जहा तहां महात्मानके दर्शन करता रहता है सो याकों पहिलें बहुतसे पाखंडी गुरु मिलते हैं परन्तु ये तो संयमीपुरुष गुरुमुखी है और मेरे मिलनेंका याकों प्रेम है जाकारिके उन पाखंडी गुरुनकी बृत्तियोंकों ये परखलेता है और उनसें याकी अरुचि होजाती है। क्योंकि, याकी बुद्धि मेरी भक्तिकारिके पवित्र है और ये मनमें बडा सोच कर्ता है कि,जो महापुरुष योगसिद्ध हैं उनके मैं कब दर्शन पाऊंगा। उनके मिलनेकी चिन्तामें अहरनिशि रहता है सो चौथेअधिकारकी सीढी है ॥

अथ पांचवेंअधिकारकी सीढी बर्णन ।

हेप्यारा ! जब वाके हृदयमें मेरे सन्तस्वरूपके मिलनेका बहुत बिरह उठता है तब मैं कृपाकारिके नरहरिस्वरूपसें मिलताहूं। जास्वरूपकों परमसन्त सद्गुरु कहतेहैं तब ये दर्शनकारिके बहुत प्रसन्न होताहै। जिनकी अजबरहस्य सबजगत्सें न्यारी सबसें अधिक गुणातीत

अवस्थामैं स्थिर हैं। प्रकाशरूप जिनकी सहजकी बाणी सहजस्वभाव रजतमसैं रहित शुद्ध सतोगुणस्वरूप हैं। जिनके बचन सबशास्त्रोंके सार भ्रमके दूरकरनेंहारे दीन गरीबी दुर्बलतामैं रहनेंवाले उनकी कृपाकटाक्षसैं याके हृदयमैं उनकी महिमां भरजातीहै। और निश्चय होजाताहै कि, अब मेरे सर्बकार्य सिद्ध होवैंगे। जब ये बडे प्रेमसैं उनके चरणारबिन्दका ध्यान धरताहै और तनमनधनसैं परमप्रीति करिकेसेवा कर्ता है और वे सैनबैनसैं जैसी आज्ञा देतैहैं सो धारण कर्ता है। हेप्यारा! या जीवात्माके बहुतजन्मोंके शुभकर्मोंके फलोंसैं सगुणस्वरूप सद्गुरुकी झाकी होतीहै। जब ये उनका संग पाताहै याका नाम असलसत्संग है। उनके बचनबिलाससैं याके हृदयमैं बडे गुप्तज्ञानकी खानि उदय होतीहै और याकों वे ऐसे प्यारे लगते हैं कि,जगत्मैं कोईभी प्यारा नहीं।परन्तु उत्तम संस्कारीकी प्रीति बढैगी अल्प और मलिन संस्कारीकों मिलभी जावैंगे तोभी प्रीति नहीं करैगा।सो ये पांचवें अधिकारकी सीढी परमकल्याण करनेवाली है।

मंगल उवाच।

हेमनहरन! आपनैं पूर्वकथन किया कि, या जिज्ञासूकों पहिलैं बहुतसे पाखंडी गुरु मिलते हैं सो वे कैसेहैं उनके कुछ लक्षण कहो॥

अनाम उवाच

हेसावधान धीर्यवान् ! जगत्मैं उभयेकाहय दोप्रका रकी सवरहस्यवस्तु होतीहैं। एक असली, दूसरी नकली। और सृष्टिभी दोप्रकारकी है। आसुरी, दैवी। जब धर्मका उदय हूवा चाहताहै तब पहिलै धर्मत्याग आताहै। जैसैं रामचंद्रसैं पहिलैं रावण, कृष्णसैं कंस प्रगटभये ऐसैं ही जे झूंठे योगी सामाधि बनरहेहैं तिनके लक्षण सुनों। ये जो भेषधारी अनेकप्रकारके बनरहे हैं। साधु, संन्यासी, बैरागी, जोगी, जगंम, गुसांई, परमहंस, उदासी, निरमले, गिरी, पुरी, भार्थी, सरस्वती, जती, महोंबन्धे, दिगम्बरी, फकीरादि अनेक भेषधारी अनेक नामधरश्के झुंडनके झुंड फिरतेहैं सो इनका क्या बैराग्य है। किसीके तो सब घरके मरजाते हैं, किसीकी स्त्री मरजाती है, किसीका विवाह नहीं होता, कोई शोगसैं, केई दरिद्रताकेमारे, कोईकों कुमाके नहीं खायाजाता। आलसी, केई सैलानी, बैरागीनके वहकाये उनके साथ होलेतेहैं। केई घरकेनसैं लडाईकरके निकलजातेहैं। केई चटोकडे, केई खूंनी, केई चोर, केई रोगी पेटार्थी, ऐसैं अनेकप्रकारकरिके किशोर या तरुणावस्थामैं घर छोड देतेहैं। और कोई साही भेषकों धारण करलेतेहैं। ऐसे मनमुखी मनकी चंचलतासैं बहुतसे फिरतेहैं।कोई दो तीन केई इकट्ठे इनकी क्या कथा कहूं।कुम्भके मेलेमैं इनका हाल देखो।हेप्यारा।इस नकली समूहमैं

कोई२ सच्चे असलीभीहैं । वे गरीबीहालमैं निर्पक्ष छिपे हुये रहतेहैं । जो शरीर करिके देखोगे तो असली नकली एक सेहीहैं । जैसैं श्वेतकंकर और कपूर, परन्तु कंकर२ ही रहता है कपूर निराकार होके शून्यमैं समाताहै और झूंठे मोतीमैं बाहिरकी दमक ज्यादा होतीहै इसहेतुसैं जगत् उनका बहुत आदर करताहै । सच्चेमैं भींतरकी है उनकों कोई उत्तम संस्कारीही जानताहै । ऐसैं साधु असाधुका भेदहै जो जानैं सोई जानैं । और इनमैं कोई २ सात्विक पुरुषभी हैं और पाखंडी बहुतहैं । वे पुजनेके निमित्त अनेक पाखंड दिखातेहैं ॥

अथ मुद्रावाले जोगीनका व्याख्यानवर्णन ।

हेप्यारा ! जे मदिरा मांस खानेवाले मनुष्यहैं वे जोगी-नके भेषमैं शामिल होतेहैं । सो कैसे जोगी हैं बहुतसे जटा राखके खाक रमाते हैं । सुलफा गांजेका ऐब सीखके औरों कों सिखातेहैं । और वैराग्यकों धारण करिके मांस खाते हैं, ये बडा अनुचित कर्म कर्ते हैं । और कानाचिराके का ठकाचकी मुद्रा पहिरतेहैं । महादेवका स्वरूप बनांतेहैं । परन्तु इनकों ये मालूम नहीं कि, महादेवयोगी कौनसी मुद्रा पहिरतेहैं । मुद्रानाम योगबृत्तियोंकाहै । योगी अपनी योगबृत्तियोंमैं शरीररूप ब्रह्माण्डमें रमताहै सो कर्णमुद्रा नाम कानोंमैं योगयुक्तिसैं अनहदशब्दकी घोरध्वनि होती

है। उसमैं योगी अपनी श्रुतीकों लगा जगत्सैं उदास होके सिमटजाताहै । उसकों उनमनीमुद्रा कहतेहैं । कबू योगी योगयुक्तिसैं भूमिकी सैल करताहै । वाको भूचरी मुद्रा कहतेहैं। कबहूं योगी महापुरुष अपनें नेत्रोंकों मींचके भीतरसैं भ्रुवके बीचमैं जोडके चित्तकों लयकरताहै ताकों चांचरी मुद्रा कहतेहैं । कभी योगी गगन जो खम् ब्रह्म है तामैं विचरताहै वाकों खेचरीमुद्रा कहते हैं। कबहूं योगी महात्मा योगाभ्याससैं अगममैं गमकरता है वाकों अगोचरी मुद्रा कहते हैं। योगी परमसन्तोंकी अनन्तमुद्रा हैं। तिनमैं ये पांच मुख्य हैं। ऐसी मुद्रा महापुरुष योगी धारण कर्ते हैं। ये असली मुद्रा हैं। कोई बिरले महापुरुष शिवस्वरूप धारण कर्ते हैं । और जे कानोंकी त्वचाकों चीरके कई महिना बृथा क्लेशका नरक भोगके काचकाठ की मुद्रा नाम धरके पहिरते हैं सो नकली हैं । और महा देवस्वरूप योगीके जटा कहां है सो सुनों। ये जो रोम २ मैं फैलीहुई प्राणवायु है ताकों प्राणायामके अभ्याससैं सुषुम्णा मार्गहोके ऊर्द्धको ब्रह्मरंध्रके पार सबबायुंकों समेटके शिरमैं धारण कर्ता है ताका नाम जटा हैं। और अहन्ता ममताकों धारण करनेंवाला जो अहंकाररूप बकरा है ताकों महायोगी ज्ञानखड्गसैं मारके प्रकाशरूप जो तुरीया ज्योतिहै जाकों ये जोगी धारा कहते हैं वा महाशक्तिके बलिदांन चढाता है। बलि जो अहंकार है ताका चढाना

क्या प्रकाशपै ठहराना उसी बलिदांन का योगी मांस खाता है अर्थात् या साधनसैं शरीरका मांस सूखजाता है सोई मांसका खानां है। और तुरीया स्वरूपका जो आनन्द है ताका बोधमैं महापुरुषयोगी मग्न रहता है वोही मदिरा पान है। और महापुरुष योगी धूनीं अधरअखाडे तपलोकमैं तपता है। धू कहते हैं स्थिरकों, नी कहते हैं निरन्तरकों, निरंतर स्थिर रहना सोई धूनीं है याधूनीमैं रज तमकी मलिनकल्पना सोई काठ ब्रह्माग्निमैं होमाजाता है। ताकी बिभूति शान्त आनन्दरूपी सूक्ष्मअंगमैं लिपटीरहती है। और ये जो नकली पंचधूनीं तपते हैं जोगी बैरागी बाहिरकी अग्निसैं शरीरकी त्वचा जलाते हैं या कर्म करनेंसैं ज्यादा अपराधी होते हैं। और वा अपराधसैं इनका तामसी स्वभाव होजाताहै। लकडी छांणेनमैं वेप्रयोजन बहुतसे जीवनका नाश होता है। और चतुर्मासमैं तो महापापके भागी होजाते हैं। ऐसी धूनीं तपनेंसैं ज्यादा कलंकी होते हैं और पाखंड झूंठ अहंकारके बलसैं अनेक कामनांकरिके या शरीरकों दुःख देतेहैं तामैं जीवात्मा परमेश्वरका अंश दुःखपाता है।सो ये असुररूप कर्म कर्ते हैं।मैंनें ऐसे पुरुषों के विचार करनेंके अर्थ गीतामैं कथन किया है ॥

श्लोक—अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ॥ दंभाहंकार संयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ कर्षयन्तः शरीरस्थं

भूतग्राममचेतसः ॥ मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुर निश्चयान् ॥" इति ।

हेप्यारा! ये दंभी अनेक घोरतपकरिके जीवात्माकों दुःख देते हैं। केई तो जाडेनमैं जलमैं पडते हैं। केई ऊपरकों पांव बांधके लटकते हैं। केई हस्त ऊपरकों रखके सूकाते हैं। केई वृक्षके नींचे सबऋतुनमैं बैठेरहते हैं। केई खडेरहते हैं। उनके पांव स्थंबसे भारीहोजाते हैं। केई कीलनपर सोते हैंकेई मौनीवनके दूधाधारी होते हैं। बहुतसे रात्रीमैं जागते हैं और दिनमैं सोते हैं । चांद्रायणआदि उपबास करिके भूखेमरते हैं, दिगम्बर रहते हैं। केई महामलीन मलमूत्र खाते हैं। ऐसे अनेककर्म करिके जीवात्माकों दुःखदेतेहैं। सो असुर दंभी अहंकारी आत्मघाती हैं। हेप्यारा ! ये मेरे नामका झूंठा स्वांग बनांके मायाके रस भोगाचाहते हैं सो ये अपनें कर्मोंसैं आप नरक भोक्ते हैं। जैसैं मुंडचिरे मूंड चीरके बनियोंसैं पैसे लेते हैं। ऐसैं ये शरीरकों दुःख देके जगत्सैं भोगचाहते हैं। अनेकतरहके रस खाते हैं और धमकाके हुकूमत जताते हैं और बहुतसे अज्ञानी इनकी सेवा करते हैं सो तो सेवाका फल पाते हैं॥

प्रश्न ॥ हे घणनामीसनातन ! ये तप तो आपनें नकली पाखंडीनकें बतलाये। असली सब तपनमें मुख्य तप कोंनसेहैं सो कृपाकरिके कहो ॥

उत्तर ॥ हेअनघ श्रद्धावान्‌! तप अनेक प्रकारके हैं। स्थूल सूक्ष्म शरीरकरिके होते हैं। वे तप योगमार्गकी सिद्धतामैं आते हैं। और पूरे योगीकी ऐसी रहस्य होती है कि, नैं तो वो किसीसैं डरता है नैं डराता है। हर्ष, शोक, भय, उद्वेगसैं रहित समदृष्टि होताहै। गीतामैंभी ऐसाही कह्या है।

श्लोक ॥ "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः॥
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥"

और स्थूलसूक्ष्म संबन्धी तपकरनेकेयोग्य मैनैं कृष्ण स्वरूप होके गीतामैं कहे हैं सो श्रवण करो। मन, वचन, काय, तपकरनेके योग्य हैं॥

अथ कायकतपवर्णनम्।

श्लोक ॥ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्॥
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

अर्थ—देव कहिये उत्तमवृत्तियांवाले और द्विज कहिये श्रेष्ठसंस्कारी और गुरु कहिये बडे, प्राज्ञ कहिये भक्त, पण्डित शास्त्रपुराणोंके वेत्ता इनका पूजन करना शौच कहा। शरीर, वस्त्र, स्थांन पवित्र रखनां आर्जवता कहा। नरमाई को मलतासैं सबका आदर करनां। ब्रह्मचर्यमैं रहनां अर्थात् अपनी स्त्रीकों रजोधर्मके च्यारदिन के पश्चात् कुछ दिनोंका अन्तर देदे के तीन च्यार दिनतक वीर्यदान देनां। पीछै पीछै

ब्रह्मचर्यमैं रहनां और शरीरसे जानबूझके कोई जीवधा-
रीनकों नैं सताना ये शारीरिक तप है ।

अथ बचनतप ।

श्लोक ॥ अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ॥
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥

अर्थ—अनुद्वेग कहिये जलदीसैं बचन न बोलनां, मन्दगत धीर्यतासैं बोलना और सत्यबचन कहनां, सत्यभी होवै और प्रियभी लगै ऐसा बोलना, प्रियभी होवै और हितकारी होवै अर्थात् कल्याणका करनेवाला होवै और स्वाध्याय कहिये आत्मज्ञानका बचन कहना, तथा वेदशास्त्रमहात्मानके कहेहुये ग्रंथोंकों पढना, सो बचनोंके तप हैं ।

अथ मानसतपवर्णनम् ।

श्लोक ॥ मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ॥
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानस उच्यते ॥

अर्थ—मन सदा प्रसन्न रखनां, सौम्य कहा सूधा सरल स्वभाव रखना, डरावनां नैं होवै । और मौन कहिये हरिसंबन्धी कथन करनां, वृथा ज्यादा नैं बोलनां, और अन्तःकरण इंद्रियोंका निग्रह करनां, कहा सिमटेहुये रखनां और अपने मनके स्वभावकों सदा शुद्ध रखनां, ये मानसतप हैं । ऐसे तपनसैं सब क्लेश दूर होतेहैं । आपकों

और परकों सुखदायक हैं । और इन तपनसैं मेरी पराभक्ति प्राप्त होतीहै । और जे ये पाखंडी तप कर्तें हैं उनसैं दुःख उपजतेहैं । और दुःख पानांही इनका फलहै ॥

मंगल उवाच ।

हे अच्युत! बहुतसे जोगी बैरागी ब्रह्मचारी भेषधारी योगक्रियाके षट्कर्म साधते हैं । केई तो कपडेकी लीर बीस तीस हातकी प्रातःकाल मुखमैं निगलके बाहिर निकालते हैं । फिर धोधोके खातेहैं, याकों धोतीकर्म कहते हैं । और सूतकी डोरके मोम लगाके नाकमैं चढाके मुखमैं निकालते हैं, याको नेतीकर्म कहते हैं । केई कीकरकी या और वृक्षकी नरमसी डाली लाके वाका वोड चिगदके मुखमैं होके कंठके भींतर चलाते हैं । केई सूतकी हाथभरकी बनालेते हैं, वाकों दांतनकर्म कहते हैं । केई पोलेबांसकी पगेली गुदाके द्वारमैं रखके जलकों अपानबायुसैं खैंचना साधते हैं, वाकों वस्तीकर्म कहते हैं । केई रांगकी या शीशाकी सलाई बनाके शिश्नके छेदमैं चलाते हैं, वाकों गजकर्म कहते हैं । केई बहुतसा पानी पीके निकालते हैं, वाकों उदरशुद्धिकर्म कहते हैं । केई खडे होके गोडानपै दोनूं हस्त रखके कटि मोड २ के उदरके नलोंको हलाते हैं, वाकों नलाबिलोवन कर्म कहते हैं । और कहते हैं कि, इन कर्मोंके करेविना योगसिद्ध नहीं होता । शरीरके कफ, बात, पित्त इनहीं कर्मोंसैं शुद्ध होते

हैं। और कोई खेचरीमुद्रा सिद्धकरनेके अर्थ जीभके नीचै जो त्वचा है ताकों काटते हैं और कहते हैं कि, या त्वचाके काटनेसैं जिह्वा लंभी होजाती है। जब नासिका के द्वारकों उलटके रोकलेती है तब समाधि लगती है। केई जीभके मोडनेके अर्थ जीभके नीचै साबत सुपारी रखते हैं और जीभके बधानेके अर्थ उसकों अंगुलीनसैं पकडके खींच २ के साधन करते हैं। बाद झाडीके गरम जलसैं बहुतसा कुल्ला करते हैं।सो हेस्वामिन्! इन कर्मोंका कथन हटप्रदीपिकाग्रंथ और शिवसंहितामैं लिखे हैं और इनकी देखादेख चरणदासजीके ग्रंथमैंभी किसीनैं कथन करदिया है और लिखा है कि, इन क्रियानसैं योगी आकाशमैं उडते हैं। आसन अधर होजाता है। एकठोर बैठे सबजगत्का हाल मालूम होजाता है। अदृश्य होजाता है सो इन सबनका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो॥

अनाम उवाच।

हेप्यारा! योगमैं तो अनन्तसिद्धि हैं। योगीकों सबसिद्धि आन प्राप्त होती हैं। परन्तु महायोगी किसीसिद्धिकी कांक्षा नहींकरता।निर्वासना होके परमेश्वरमैं लय रहताहै। ये जो हटप्रदीपका ग्रंथ और झूंठा शिवका नाम लेके शिवसंहिता नाम धरके जे ग्रंथ हैं सो किसी संस्कृतपढने वालोंनैं बनाके अपनी न्यारी दूकान रची है। राजसीलोगों

के गुरु बणनेंकेवास्ते अयोग्य दंभी ग्रंथ रचलिये हैं। हेप्यारा! ये दंभी ग्रंथ कैसेंहैं। ऐसेंहैं कि, ऊपर कहीहुई क्रिया किसी प्राचीनग्रंथोंमें नहीं वर्णन करी और हालके महापुरुषोंनेंभी अपनें ग्रथोंमैं वर्णन नहींकरी। कबीर, नानक, दादू, रज्जब, गरीबदास, राधास्वामी आदिलेके किसीनैं इनका कथन नहीं किया और बिचारकेभी देखो कि, इन कर्मोंके करनेसैं जे कफ बात पित्त नाश होते हैं तो बिना इनकें शरीर कैसें आरोग्य रहेगा। देखो धोतीकर्म करनेसैं लाल निकलती है। वासैं उदरकी तरीका नाश होताहे। जो यों कहो कि कफ जो ज्यादा बढजाताहै सो निकलताहै। सो तो कहनां ठीक नहीं। कफ तो अन्नजलके खानेंपीनेंसैं पैदा होता है। क्या ये कर्मकारिके औ जूं अन्नजल ग्रहण नहीं करोगे। तुम अन्न जल इतनां क्यों नहीं खाते जाकों जठराग्नि अच्छीतरह पचादे और बिकार नैं बढै। अजो ग्यकफ तो अजीर्णसैं पैदा होता है, जे ज्यादा खाते हैं। हेप्यारा! जो जन जुक्तिकारिके खातापिताहै वाके कफ पित्तके बिकार कदाचित् नहीं बढेंगे, सो क्यों तो अयोग्य भोजन करना और क्यों रोजीनां कफनिकालनां, ये तो बिल्कुल मूढता है, ऐसैंहीं नेतीकर्मको जानों। क्या नासिका मलसैं रोजीनां बंध होजाती है। जाकों डोरीसैं खुलासा करता है। जो यों कहैं कि, नेत्रोंके रोगनाश होते हैं सो तो इन

का कहनां झूंठा है। वही अजोगभोजन करनेंसैं सबबिकार वढते हैं और नासिकामैं त्वचा अतिकोमल है जो वामैं रग्गा लगजावै तो नयारोग पैदा होजावे। और बस्तीकर्म करिके कहते हैं, कि, गुदाका मल साफ करते हैं, सोभी दंभी कहनां हैं। हेप्यारा ! गुदामैं तीन कुण्डलनीं होती हैं सो दोनूंका तो मल गिरजाता है। तीसरीमैं कच्चामल सदा बनारहता है, वासैंही शरीरमैं बल है। कदाचित् वो गिरजाय तो शरीर निर्बल होजायगा। अच्छीतरह रसपाचन होजाय तो मल दोनूं कुण्डलनींयोंका साफ होजाताहै। कुछ बांस चलाके पानी चढानेंकी जरूरत नहीं। और शिश्नमैं जो गज चलाते हैं क्या वो रुकजाती है अथवा छेदचौडा करते हैं। और कहते हैं कि, शिश्नके द्वारा तेल ऊपर चाढालेते हैं सो इसमें क्या सिद्धाई है थोडीदेरके बाद निकलआवैगा जैसैं मूत्रके त्यागनेंके समय वाई बायु सैं रोकलेते हैं। तो क्या औजूं नहीं गिरैगा। ये झूंठे पाखंडी झूंठेकर्म करिके झूंठेसिद्ध बनते हैं। हेप्यारा! परमेश्वरनें मनुष्यशरीररूप अपनें मिलनेंका मन्दिर ऐसा बनाया है कि, जिसमैं कोई द्वार सुधारनेकी आवश्यक्ता नहीं। पवन, अग्नि सबकार्य कररहे हैं। योगी भी इनहींके युक्त संजमसैं सबकार्य सिद्ध कर्ताहै। युक्ताहारसैं कफ पित्त अजोग नहीं बढनें देता और नासिक

गुदादि सबद्वार जठराग्निके शुद्धरखनेसैं और प्राणायामसैं सहजहीं शुद्धरहते हैं। थे जो पाखंडी सूगले मलीन कर्म कर्ते हैं सो पूजनेंकेवास्ते कर्ते हैं। हमेशांहीं मलथूकमैं मलिन रहते हैं। हेप्यारा! जे मेरी भक्तिसैं हीनहोके सिद्धिनकी इच्छा कर्ते हैं वे मनुष्य ऐसेही मलिनकर्मोंमैं फसते हैं और जन्मभर रोगी रहतेहैं। जीवतैंहीं नरक भोक्ते हैं। और जे जीभकी नीचेकी त्वचा काटकरि कहते हैं कि, जीभकों उलटाके नासिकाके द्वार रोकके खेचरी मुद्रा सिद्ध करैंगे। वे पाखंडी कई मनुष्योंकों दुःख देते हैं। जाकी जिह्वाकी त्वचा काटते हैं वासैं बहुत दिनोंतक भोजन नहीं कियाजाता। श्वासके बलसैं दूध लपटा पीता है। जीभके हलनेंसैं बडी पीडा होती है। हेप्यारा! जीभकी जड के ऊपर भीतरकों हलकमैं एक छोटीजीभ और है वो प्राणायामके अभ्याससैं ऊपर लगजाती है। नासिकाके द्वारोंकों रोकलेती है। वो अबभी पवनको रोकती है। और टलकेसे भोजन को भीतर करती है। इस जीभकी त्वचा काटनेंसैं कुछ प्रयोजन नहीं। थे जीभ तो मुखदांतनके बीचमैंही रहती है। और बहुतसे मनुष्य कानों के बंधकरनेके अर्थ रेशमी कपडेकी ठींटी लगाते हैं। और बहुतसे लकडीकी बनाके दुनियादिखानेंकों कानोंमैं लटकाते हैं कि, लोग ये जानेंगे ये योगी हैं। अनहदका बाजा सुनते हैं। हेप्यारा!

अनहद ठींटी लगानेंसैं नहीं सुनाजावैगा। ये तो कानोंके बंधकरनेंसैं गन्नांटा मालूम होताहै । जे योगी महापुरुष अनहद सुनते हैं वो तो प्राणायामके बलसैं सुणाजायगा। जाकी न्यारी २ ध्वनि स्थान २ पर अलग २ होती हैं वो बजताही रहता है कुछ अंगुली ठींटी लगानेकी जरूरत नहीं। ठींटी अंगुली लगाके जो सुनते हैं वे नकली हैं। पहिलैं नकली सुनतैं २ सद्गुरुकी कृपासैं असलीभी सुणनें लगजावैगा ॥

अथ मनमुखीनके कथनका व्याख्यान वर्णन।

हेप्यारा! कोई २ इन दंभी मनमुखीनमैंसैं बाह्यविद्याका बोधसैं तथा महात्मानकी बांणी शब्द यादकरिके आपभी कथन करते हैं। कुछ मनमुखीपनासैं दुनियांदिखानेंकेवास्ते साधनभी कर्ते हैं और कहके सुनातेहैं कि, ये प्राणायामादि हमनैं सब साध राखे हैं और हमनैं ऐसैं किया हमनैं ऐसैं किया झूंठी गलफटाकियां करते हैं और उनके बनायेहुये कथनमैं बडी गलती हैं । शिरकाकथन पावमैं लगाते हैं और पांवका पीठमैं। क्योंकि वे अजान हैं गुरुमुखी होके देखातो है नहीं बाह्यविद्याके जोरसैं अथवा सुणसीखके कहते हैं सो उत्तमविचारवांन् मनुष्य उनके कथनकों परखलेते हैं और उनकी यही पिछान है कि, मलिन आचरण उनके बनेंहीं रहते हैं। क्योंकि मनमुखी

हैं और हेप्यारा! जे बैराग्य कों धारण करके जगत्की वस्तु ज्यादा इकट्ठी कर्ते हैं वे बडे श्वपच हैं । जैसें जा श्वपचके ज्यादा उच्छिष्ट आवै वो श्वपचनमें बडा-श्वपच कहलाता है । ऐसैंहीं या श्वपचके भी जानों । जगत्की दीहुई वस्त इकट्ठी करता है सोई उच्छिष्ट है । सो येभी बडेश्वपच हैं । बैराग्यमें तो शरीरकी जरूरतके माफिक ग्रहण करनां योग्य है क्योंकि, बैराग्यमैं तो त्यागकी महिमा है, धनसंपतकी नहीं । देखो पाहिलैं बहुतसे राजा राज्य छोड २ के चलेगये परन्तु जिनकी कामना संसारके सुखनसैं तृप्त नहीं हुई है और सहजस्वभावही सन्तोष नहीं आया है ऐसे मनुष्य बैराग्य लेके भी संसारके सुखनमैंही फसते हैं। क्योंकि, इंद्रियोंके सुखनसैं जब बैराग्य आवैगा तब सद्गुरुकी कृपासैं अतेंद्रिय आत्मानन्दकी प्राप्ति होवेगी ऐसे पुरुष बहुत कम हैं। हेप्यारा ! जबतक सच्चा सद्गुरु नैंमिलैं तबतक नकलीनके आधीन रहता है । जाकों मेरे मिलनेंका ज्यादा प्रेम होवैगा वाकों पूरे सच्चेगुरुभी मिलजाते हैं तब वाके सबकारज सिद्धहोते हैं ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसंवादे पाखंडीनके ब्याख्यान पांचवांधिकार वर्णनोनाम षष्ठप्रकाशः ॥ ६ ॥ ❀ ॥

मंगल उवाच ।

हे मनहरन ! अब कृपाकरिकें छठेअधिकारकी सीढीका वर्णन करो ॥

अनाम उवाच ।

हे श्रद्धावान् ! पहिलैं मैनैं अष्टांगयोग कथन कियाथा । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान; समाधि अब तेरे निमित्त नवअधिकारकी सीढी वर्णन करी हैं अब छठे अधिकारका कथन सुणों । पांचवाधिकारी वर्तमान सच्चे सद्गुरुका संग पाके अतिमुदित होके उनसैं प्रश्नकर्ता है कि, हे कृपानिधे ! मेरे ऊपर कृपाकरिके परमेश्वरके मिलनेका मार्ग बतावो । जब याकों वे उत्तमाधिकारी समझके सैंनबैनसैं योगमार्गका अभ्यास बतातेहैं। प्रथम तो आहार जु क्तकरिके खावै यु क्तकहा जो ज्यादा खावै तो अजीर्ण होके पेटमैं भारापण होजावै।कमखाय तो निर्बल होजावै । सो इतना भोजन करै जो अच्छीतरह पाचन होजावै। सात्त्वकीभोजन करै।भोजन च्यारप्रकारका होताहै। तामसी, राजसी,सात्त्वकी,गुणातीत जो लूखासूका उच्छिष्ट बासा और हिंसक मांसमदिरासहित होवै सो तामसी भोजन है और खट्टा तीक्ष्ण यानें चरपरा ज्यादा होवै और षट्रसनके व्यंजन बहुतसे होवै सो राजसीभोजन है और जो मधुर सचिक्कण होवै सो सात्वकीभोजन है और जो अनाश्रुत विनां इच्छा प्राप्त होवै जाकों महापुरुष

जठराग्निकों शान्ति करनेके अर्थ खाते हैं कुछ स्वाद नहीं परखते सो गुणातीतभोजन है।और भोजन ऐसा बिचारके करै जो प्रकृतिकों अनुकूल होय जामैं शरीर आरोग्य रहै क्योंकि, शरीरकी आरोग्यतासैंहीं यालोक परलोक के सबकर्म सिद्धहोते हैं सो जिज्ञासू तो सात्वकीभोजन करै और जुक्त करिकेही जागै सोवै नैं ज्यादा जागै नैं सोवै और प्रातःकाल उठके शौचजाके मृत्तिकाजलसैं शुद्ध होके दन्तधावन करै। तापीछे स्नानकी इच्छाहोय तो करै नहींतो धोवती बदलले पश्चात् सिद्धासन जाकों मूलबंध कहते हैं और पद्मासनभी कहतेहैं वा आसनकों लगावै अर्थात् बायें पांवकी येडी गुदापर लगावै पीछे दांयेंपांवकी एडीसैं लिंगको दाबैं, तलवाकों बांयेपांवकी जंघा और पिंडलीके बीचमैं राखै अथवा बांयेंपवांकी येडीसैं मूलबंध करिके दांयेंपांवकों ताकेऊपर फेरके दोनूं गोडा ऊपरनीचै करिके बांईबगलके नितम्बके नींचै कोई वस्त्र धरके बैठे, याकानाम गोमुखी मूलबंध है। तापीछे बांयेंहातसैं दांयांहातका दंड अंगुलीनसैं पकडले और दायें हातकों बांयें हातके ऊपर होके बांयें हाथके दंडके नींचे दबादे।मेरुदंड ग्रीवा सूधी करिके शरीरकौं ढीला छोडदे और नासिकाके अग्रभागसैं दोनोंनेत्र जोडनेका अभ्यास करै या अभ्यास करनेंसैं मनका निग्रह होताहै। तापीछे नासिका ज्योतिरूप दीखतीहै वाके अग्रपै श्रुती जमावै ॥

प्रश्न—हे सर्वदर्शी ! पद्मासनतो वाकों कहतेहैं जो दोनूं पांवनकों दोनूं जंघानके ऊपर करिके बैठै और पीठपी छाकों दोनूं हात मोडके पांवनके गुंठा पकडतेहैं ॥

उत्तर—हे सुबुद्धे ! ये तो कृष्टासनहै या आसनसैं नीचेके दोनूं द्वार बंध नहीं होते वृथा देहकों कष्ट देना है । बिनां नींचेके द्वार बंधहुयें अपानबायु प्राणायामके समय ऊपरकों नहीं चढैगी । योगसिद्ध मूलबंधसैंही होता है और मनमुखीयोंनैं अनेक आसन बनाराखे हैं । कपाली मयूर ऊर्द्ध्वपदीआदि दुनियां रिझानें-कों नटाविद्या साधराखी है । हेप्यारा ! नासाग्रका ध्यान धरै और चंद्रमाका इडास्वर है सूर्यका पिंगला है और जब ये बदलते हैं तब कुछ श्वास दोनूं मिलके चलते हैं। बाजे २ मनुष्य इनहीकों सुष्मणा कहते हैं इनकी चालमैं पाचोंतत्वनका विचार करै। पृथ्वीतत्वका स्वर बारहअंगुल के वेगसैं चलता है । जलका दश, अग्निका आठ, वायु-का छः, आकाशका च्यार, जे संयमसैं रहते हैं उनका ये हाल हैं । असंयमीनके ज्यादा चलते हैं और स्वरोदामैं इनकी फलस्तुति लिखी है वे रोचक बचन हैं और हे प्या-रा ! संयमके साथ सहजस्वभाव बैठे रहनेंसैं एकपल मैं छः श्वास आते जाते हैं । अहरनिशिके २१६०० होते हैं और वेही श्वास ज्यादा ऊंचे बोलनेंसैं दूनें, रस्ते चलनेंसैं तिगुनें, कुछ बोझ लेजानेसैं छः गुणे और मैथुन करनेंसैं दशगुणे,

अधिक चलते है । सो इनकर्मोंकों यथायोग्यवर्तैं । ज्यादा बरतनेंसैं आयु कम होती हैं । ब्रह्मचर्य और प्राणायामसैं बढती है सो नासाग्रका ध्यान धरै । ये जो प्राण आते जाते हैं इनकोंभी बैठैं लेटैं देखा करै । ये सुरतकारिके श्वासकी सुमरनी है।इसका नाम अजपा है यामैं सोहे ओं का कुछ चिन्तवन नहीं और जो आलंबबिना मन नैंठैरसकै तो अक्षरसहित अजपाकों जपै अर्थात् भींतर जब श्वास् आवै तब तो सो अक्षरका चिन्तवन करै और बाहिरजावैं जब हं अक्षरका चिन्तवन करै सोहं २ होताही रहताहै । सुरतका पहरा राखै याकोंभी अजपा कहते हैं। और बैठैं या लेटैं कानोंकों अंगुलीसैं बंधकारिके मस्तकका गन्नाटा सुरतीसैं सुणैं। ऐसे २ साधनोंसैं मनका संयम करै और दंभीपाखंडी मनुष्योंनें कईवजेंके साधन बनां राखे हैं केई तो छायांपुरुष देखते हैं। सो ये तो स्थूलकी छाया देखते हैं। छायांपुरुषतो सूक्ष्मशरीरका नाम है क्योंकि, सूक्ष्मशरीरजो है सो कारणशरीरकी छायांहै सो श्रुतिकारिके सूक्ष्म शरीरकों देखनां चाहिये कि सूक्ष्मशरीर जो अन्तःकरण है तामैं कोंनसे गुण वर्तरहैं ये अल्पबुद्धि स्थूल शरीरकी छायां देखतेंहं और केई भींतपर कालाचिन्ह कारिके निगाह डाटते हैं । केई दर्पणमैं निगाहसैं निगाह जोडतेहैं। केई दीपककी लोहकों देखतेंहैं । केई सूर्यकी तरफ झांकते हैं । केई सिद्ध बणनेंकेवास्ते दूसरेकों अंधेरेमैं लेजाके वाके

नेत्रोंको अंगुलीसैं दावके नेत्रनके तेजकी झलक दीखातेहैं । हेप्यारा ! ऐसे साधन करनेसैं दृष्टिकी हांन होती है । ये क्रिया कहीं प्राचीनग्रंथोंमैं नहींलिखी और नासाग्रका देखना तो गीता भागवत योगशास्त्रमैं और कवीर दादू गरीबदास आदि महापुरुषोंनैं अपनें ग्रंथनमैं कह्या है ! हेप्यारा । अब प्राणायामका कथन सुनो। पहलैं गुदाका मल साफ अच्छीतरह होजाय कुछ अपान वायुकी उदरमैं गंडवड नैंहोय । तब पूर्व जो आसन कह्या ताकों लगावै।ग्रीष्म वर्षाकालमैं सीतल स्थान जहां समधरा होवै अर्थात् ऊंची नींची भूमि नैंहोवै जहां हवा लगती रहै वहां अचिन्त निर्विघ्न होके एकान्तमैं बैठै। पहिलैं भींतर सद्गुरुका ध्यान धरै पीछै इडापिंगला दोनूं स्वरोंमैंसैं। चाहै जोंनसा स्वर हो ताकों खैंचके धीरजतासैं धारण करै, इसका नाम पूरक है । प्रसन्नतासैं जितनींदेर रहसकै तितनींदेर रोकै याकानाम कुम्भक है । पीछै सहजमैं शनै २ बहुत धीरैं २ श्वास छोंडै, याकानाम रेचक है। ऐसैं प्राणायामका अभ्यास करै। जवतक चित्त प्रसन्न रहै तवतक करै । उभयकाल साधन करै प्रातःकाल और सायंकाल। जो एककालकी श्रद्धाहोयतो एकही कालकरै । सायंकाल जव करै तव अन्नपाचन होजाय और मलविकार कुछ उदरमैं नैंहोय तव हवाकी जगै बैठै, क्योंकि प्राणायामसैं शरीरमैं गरमी वहुत व्यापैहै सो निवारण होतीरहै । हेप्यारा !

सब वेदशास्त्रपुराणनमैं कर्म उपासना ज्ञानके धर्म बर्णन किये हैं । वे सब प्राणायामकी सिद्धिकेअर्थहैं और सब कर्मोंकी आदिमैं प्राणायाम पहिलैं करनेंकी आज्ञाहै परन्तु ये अतिउत्तम कर्म कईजन्मोंमैं सिद्ध होताहै एकमैं नही ॥

प्रश्न—हेमहायोगेश्वर ! बहुतसे मनुष्य जमीनमैं पहाड मैं भी तो गुफा बनाके साधनकरि समाधि लगाते हैं ।

उत्तर—हांप्यारा दंभीमनुष्य पूजनकेवास्ते बनाते हैं और अपनें साधकोंसैं बचनरूपी डोंडी पिटाके कहते हैं कि हम एकमाहकी समाधि लगावैंगे जब समाधिलगानेंवाला तो कहीं छिपाहुवा रहता है और गुफाका द्वार साधक बंध करदेते हैं। एक दोदिन अवधमैं रहैं जब साधक वाकों भींतर गुफामैं बैठादेते हैं पीछैं वो जगतमैं पूजता है। और कोई २ यवन फकीरभी फोकट रचके कहते हैं कि, हमभी इस गुफामैं चालीसरोजका चिल्ला खैंचैंगे यानें चालीसदिनतक हब्सदम करिके समाधि-लगावैंगे वेभी पूर्व कहीहुई जालसाजी करते हैं और हिन्दूनसौंहीं नागरी किताब पढके वाका मतलब उन्हीसैं सीखके उन हींके गुरु पीर बनजाते हैं आप कुछ नहीं साधते औरोंको पोथीनकी वातोंसैं बहकाते हैं। फकत दुनियां दिखानेकों नांकमैं रुईका फोस रखके स्वरोदाके सिद्ध बनते हैं सो ये यवन झूंठ जालसाजीमैं बडे चतुर हैं और ये

हिंदू विचारे कामनांनकेमारे अपनां धर्म छोडके इनके चरण दाबते हैं,सेवा करते हैं और ये यवन फकीर अपनें मजहवकों नहीं छोडते। होसकै तो अपनें मज़हबमैं करलेते हैं॥

अथ दंभीनके प्राणायामका वर्णन।

अनाम उवाच।

हेप्यारा! बहुतसे दंभीमनुष्य क्या कहते हैं कि, मैं एकघंटेतक प्राण रोकताहूं। कोई कहै मैं एकपहर रोकताहूं। जब उनसैं कोई कहे हमैं रोकके दिखावो तब वो उसकों एकान्त लाके आसनपै, अकडके उसके सामनें बैठके कहता है कि, देख मैं प्राण चढाताहूं। जब वो स्वर खैंचके बहुत आहिस्ताके साथ निकालदेता है और स्वस्थ होके पेट हलनें नहीं देता। वहुत सूक्ष्मतासैं हृदयके जोरसैं नासिकामैं मन्दगतसैं श्वास लियाकर्ताहै और घंटा आधघंटा वैठा रहता है। पीछै वो परीक्षाकरनेंवाला वाकी बडाई कर्ताफिरे। तापीछै वो कोईकाल खापीके हात: पडे सो लेके लंबापडै। अपनी दुकान ओर जगै खोलै। हेप्यारा! घंटा दोघंटा पहर दोपहर तो क्या कही जाय असलमैं आदघडीभी कुम्भक रुकजायगा इस अरसेमैंहीं अजायबलीला दीखजावैगी। और ज्यादा क्या कहूं जीवसैं ब्रह्मभावकों प्राप्त होजावेगा। और सबजगतसैं उदा-

सहो एकान्त जाबैठैगा। और जगत्के पदार्थोंसैं अरुचिहोके ब्रह्मानन्दमैं मग्न होजायगा। और बाकी गतिकों वोही जानैं और कोई नहींजानैं या जाकों वो जनादे वो जानैं। विचारके देखो एकमिनटकी मध्यमतासैं तालदे तो ८० ताल होती हैं सो तुम प्राणरोकके देखलो दोतीनमिन्टमैंही कैसा हाल होताहै । छः मिन्टमैं तो हात पांवकी बायु खिचनें लगजाती है और शरीर सिथल होजाता है और बहुत आनन्द उपद्रव खडे होजाते हैं। ये अपनी मौतकी सैल देखनी है। जाके पूर्वसंस्कार श्रेष्ठ होते हैं और सांचे गुरु योगसिद्धका संग होवै और जाके घटमैं परमेश्वर सद्गुरुकी भक्ति होवै तब ये अतिउत्तमकर्म प्राणायाम सिद्ध होता है । याहीमार्ग होके परमेश्वरकी प्राप्ति होती है सो ऐसे पुरुष बहुतही कम होते हैं। वेही तो अवतार हैं। सबसिद्धि जिनके हाजर खडीरहती हैं वे तारनतिरन हैं। और जो पूरे गुरुबिनां या कर्मकों अहंकारके बलसैं हठकरिके करै तो रोगीहोके नाश होजावैगा यामैं सन्देह नहीं। योगसिद्ध ईश्वर सद्गुरुकी भक्तिसैं होता है केवल हठके अभ्याससैं नहीं होता। सो योग दोप्रकारका है। मन्द और तीव्र सो अपनें प्रेमके अनुकूल है, परन्तु सिद्धसमय पाकेही होताहै । हे प्यारा ! संसारके कर्मभी यथायोग्य कर्तारहै। ऐसा कर्म करै जामैं फुरसत रहै और प्राणायामकाभी अभ्यास कर्ता रहै। देखो श्रीकृष्ण जब

देहसहित मौजूदथे तब अर्जुन और उद्धवकों योगाभ्यास का उपदेश दिया कि, याऽभ्यासकरिके मेरा निजस्वरूप जो सगुणनिर्गुणसैं परेहै ताकों प्राप्तहोवोगे। या बिचारकरिके अभ्यासकरनाही कारण रह्या। जो श्रीकृष्णसरीखे गुरुभी मिलजावैं तोभी अभ्याससैंही अपना कल्याण होताहै। जब सद्गुरुकी कृपासैं अभ्यास करे और बिचार करे कि, संसार तो सत्यशरीरकी जाग्रतावस्थासैं दीखता है। स्वप्नमैं झांई है और सुषुप्तिमैं कुछ नहीं और स्थूल शरीर इन्द्रियोंकी चेतनांसैं सत्य दीखै है। जो इंद्रियां नहीं तो शरीरभी नहीं और इद्रियां मनसैं चैतन्यहैं। जा इन्द्रियपै मन नहीं वोही शून्य है। मन प्राणसैं चैतन्य है। शुद्ध प्राणके बिगडनैंसैं मनकों मूर्छा होजाती है और मनप्राण एकरूप हैं। और प्राणजीवात्मा करिके चैतन्य है। और जीवात्मा परमात्मा जो सत्तास्वरूप है ताकरिके चैतन्यहै। परमात्मा आकाशवत्सर्वव्यापक है सो प्राणायामसैं पावैगा। तब प्राणायामका अभ्यास करताहै। और मनइंद्रियोंकी बृत्तियोंको बाहिरसैं रोकताहै। यहांतक कुछ धारणा का अंगकों लियें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार ये पांच अंग योगके सधे। तापीछे अभ्यासके समय प्राणके वेगकों देखता रहै कि, कुम्भकसैं प्राणवायु कोन २ से शरीरके स्थानमैं जोरदेता है और कोन २ सी पीडा कर-

ताहै। कुछ २ कुम्भकको वढाता रहै। ज्यादा हठ नैंकरै। सहजस्वभाव और सद्गुरुकी सैंनवैन विचारता रहै। उनका ध्यान धरता रहै। और अगले महात्मानके ग्रंथोंकों पढता सुनता रहै। उनके शब्दोंसैं बहुतसी कठिनता खुलजाती हैं। क्योंकि, वे वारस्ते गयेहैं और अन्तःकरणमैं सद्गुरुश्रुति-रूपहोके बोधदीयाकर्ते हैं। और बाहिर बचनकी सैंनसैं रक्षाकर्ते हैं। या अभ्यासवाला सद्गुरुका संग नैं छोडे। नित्य-प्रति संग करै, आज्ञानुकूल रहै, अपनी बुद्धिकी चतुराई उनके सामनें नैंकरै, प्रेममैं लगा रहै। ऐसैं साधन करते २ भीतरका हाल मालूंम होनैंलगै और कोई कालमैं अभ्यास-सैं अनहदकी ध्वनि खुलै। शंखनादकीसी आवाज आवै। तव वाकों नादध्वनि सुणके बडां आनन्द होता है और निश्चय आजाता है। दिव्यदृष्टि हो वहुतसी गुप्तवात खुलजाती है। वडा प्रसन्न होता है। वा शंखध्वनिकों एकान्तमैं सुनताही रहता है। कभी २ वो वंध होजाती है सो प्राणायामसैं फिर खुलजाती है। संयमसैं रहै फुरसत पाके अभ्यास कर्ताही रहै। और जगत्मैं अपना योगकर्मकों किसीकों नैं जनावै। वहुतगुप्त राखै। गुरु जानैं या गोविन्दजानैं। ये छठे अधिकारकी सीढी है। यहांतक गृहस्थाश्रममैंही रहता है। हेप्यारा! योग तरुणावस्थामैं सिद्ध नहीं होता है। हां अभ्या-स खूवहोता है। वा अभ्यासके वलसैं अधायुके पश्चात् सिद्धताका समय है॥

अथ सप्तमाधिकारकी सीढी वर्णन ।

हे प्यारा! ईश्वरस्वरूप सद्गुरुकी भक्तिसैं और उनकी कृपासैं और याके प्रेमके प्रभावसैं योगाभ्यासके आनन्दमैं मग्नरहताहै। और जब याके शरीरकी तरुणावस्थाका ढलाव आजाताहै। इन्द्रियोंके भोगनसैं तृप्ति होतीआवै। जब अभ्यासमैं ज्यादा लयता बढजाती है यानें अभ्यास प्रेमसैं बल करिके कर्त्ताहै। कुम्भकके डाटनेंमैं बल होजाताहै । और जो कुछ वाके साधनमैं कष्टहोतेहैं उनकों सहनेंकी याकों सामर्थ्य होजाती है। और सद्गुरु सबहाल पहलैंहीं वचनकी सैंनसैं फरमादेतेहैं। प्राणजीतनेंका याकों बल होजाता है और बहुतसे अचंबेनके दर्शन होतेहैं। और जब कुम्भकमैं श्वास ठैरजाता है तब मूलाधारसैं प्राणका गमन उर्द्धको होनेंलगता है। जब पृथ्वीतत्त्वकी पीडाकों सहताहै। और अन्नमयकोशका बोध होजाता है । तब बडेआश्चर्यनकी सैल देखता है । पीछे कोईकालमैं स्वाधिष्ठानकमलपर आजाता है। वहांकीभी वायुकों जीतके मणिपूरक जो नाभिस्थानका कमल है वहाकी सैल देखता है । और अनेकप्रकारकी ब्योममैं रचनां देखता है। और पाचरंगनके जलके भौंरोंके सदृश भँवर पडतेहैं। श्यामरंग आकाश, वायु हरी, तेज रक्त, जल श्वेत, पृथ्वी पीतवर्ण है। और बहुतसी सिद्धि जहां हाजर होतीहैं ।और अनेकतरहके

कष्टभी सहता है। जलतत्त्वके उद्वेगोंकी जीत होती है। आगे हृदयकमलमें जब योगी गमनकर्ता है तब कुम्भकके प्रभावसें बडे २ अचंबेनके दर्शन होते हैं और अनेक प्रकारके कष्टभी उदय होते हैं ।सद्गुरुकी कृपासें सबकों सहलेता है और अग्नितत्त्वके उद्वेगकों झेलता है। वा समय अन्नमयकोशसैं उठजाता है । वहां अनहदकी ध्वनि, शंखनाद, झालर, घंटादि बहुतसे बाजे बजते हैं। उनमें योगी सुरत लगाके लयरहताहै । पीछैं योगी प्राणायामके बलसैं, सद्गुरुकी कृपासैं कंठकमलमें गमनकर्ता है । वहां पवनतत्त्वका बेग बढजाताहै। जहां जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्तिकी झांई पडतीहैं और अनंतकला उदय होती हैं। और बडा घबराहट अविद्याका जोर होता है। योगी सद्गुरुके शब्दोंके ज्ञानविचारसैं ठेरारहता है। कुम्भकप्राणायामसैं जब योगी मूलद्वारसैं गमन कर्ता है तब ऐसैं चढता है जैसैं बर्षाकालमैं एक लट होती है वो अपनें मुखके अग्रभागसैं दोनूं बगलमैं अरु सामनैं अपनें चढनेका स्थान जाचलेती है जब आगे पांव जमांके पिछला उठाती है। ऐसैंहीं योगी इन अदेखभूमिनमें विश्वाससैं और श्वासके शुमारसैं आगे चढताहै और परमेश्वरके दीदारके इश्कमें आके मरना कबूल कर्त्ता है। और कोईवक्त कष्टोंके सबबसें कायरहोता है । परन्तु फेरूं दृढ होकर चलता है

और जब कोई कष्ट ज्यादा होजावै तब वाकों साधनके संजमसैं निवारण कर्त्ता है। और सद्गुरुके सगुणशरीरका भींतर ध्यान धरता रहता है। और बाहिर नेत्रगोचर झांकी कर्ता है। उनकी सहायतासैं इन अदेख भूमिनमैं गमन कर्ता है। कंठस्थांनमैं बहुतकालतक शुद्ध अपनें आपसैं हुवाकर्ता है। तब प्राणमयकोशकी जय होती है। तापींछे मनबुद्धिकी वृत्तियोंसैं अलग होके आगे चढनेकी इच्छा कर्ता है। और भृकुटनिके मध्यमैं जाके धमक लगती है। ये सातवैं अधिकारकी सीढीका कथन है। या स्थांनतक बानप्रस्थाश्रमम रहता है और योगके दो अंग धारणा ध्यानतक सिद्ध होते हैं॥

प्रश्न॥ हे महाप्रभो!आपनें चक्रनके चढावमैं अनेकप्रकारके अचंबेनके दर्शन और अनेकतरहके बहुतसे कष्ट बताये परन्तु उनका तात्पर्य आपनें खोल २ करि अलग २ नहीं कहे सो कृपाकरिके सबका ब्याख्यान बर्णन करो॥

उत्तर॥ हे प्रिय! उनका खोलना मैंनैं उचित नहीं समझा। पहिलैं मैंनैं बहुत खोलराखेहैं। परन्तु उनकोंभी मैंनैं गुप्ततासैं खोले हैं। वाको मालूम होवेंगा जो या मार्गहोके आवेगा। वेदशास्त्रोंमैं बर्णन किये हैं। पुरांणमैं बेदब्याससमुनिनैं कथानके प्रसंगोंमैं जहां तहां आनन्द और क्लेश बर्णन कियेहैं। ये मुनिबचनका समुद्र हुवाहै। बेदव्यास

नाम इसी हेतुसैं है कि, योगबलसैं वेदोंके सब तत्त्व देखके अपनी अनुभवसैं अठारहपुराण, षट्शास्त्र, स्मृतिआदि सब याकेही कहेहुये हैं। और वेद जो किसी महापुरुषनैं बर्णन कियाहै यामैं क्रमसैं कथन कम है। पहेलीनकीसी रीतपैहै। अर्थात् छिपाहुवा जैसैं एक अणमिल महात्मा हुये हैं। उन्होनैं कह्या है कि-

"चींटी चाली सासरै, नौमन काजल सार।
हाथी लीयो हातमैं, ऊंठ दियो ललकार ॥"

अर्थ-चींटी वो जो छोटापनकों लीयें गरीबीहै वो पति परमेश्वरसैं मिलनें चली। जब नौ मन काजल सारा यानें नौ तत्त्वका जो सूक्ष्म अंग हैं कहा पांचइन्द्रियां ज्ञानकी, च्यार अन्तःकरण मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये नौ अज्ञानतासैं कज्जलवत् होरहे हैं सो श्रुतिनें अपने ज्ञानरूप नेत्रोंमें सारलिये यानैं सावधान होगई और हाथी जो कामदेव है ताकों बिबेकरूप हातमैं लेलिया। ऊंट जो देहाध्यासी अहंकार है ताकों ललकारके हृदयरूपी भूमिसैं ताडदिया। इति॥ ऐसा वेदोंका कथनहै कहता कुछ और है, अर्थ कुछ और है, सो वेदोंकों देखतैं तो वेदव्यासकाही कथन क्रमसहित है और हे प्यारा! पुराणोंमैं मृतकोंकी कथा नहीं हैं, मृतकोंकी कथाके सुणनेंसैं क्या फायदा है? इनमैं तो चिरंजीवोंकी कथा हैं। महायोगेश्वर वेदव्यासनैं शरीर-

रूप ब्रह्माण्डमैं ज्ञानाज्ञानके युद्ध बर्णन कियेहैं और युद्ध-केही प्रसंगोंमैं च्यारों बर्णाश्रमके धर्म राजा प्रजाकों नीत-युद्धके धर्म स्त्रीनके धर्म मरजाद आचरण अनेक रीतसैं अनेकनाम नये धर २ के उपदेश किये हैं। वेदोंमें ऋषियोंके नाम कमहैं और अवतारोंका तो जिकरही नहीं। वेदसैं ज्यादा बाल्मीकमुनिनैं अवतार ऋषिमुनियोंके नाम बर्णन किये हैं और सबसैं ज्यादा अवतारादि ऋषि मुनि अनेकरीतके देवतानके नाम नये २ धर २ के अनेक प्रसंगनमैं वेदव्यासमुनिनैं कथन किया है। देखो महाभारतमैं अनेक प्रसंगनके संग धृतराष्ट्र युधीष्ठिरका युद्ध बर्णन किया है। धृतराष्ट्र कौन है जो शरीररूप देशकों धारण करै अर्थात् देहाध्यासी अहंकार अज्ञान मोहकरिके अंध है, याके सत पुत्र हैं, यानें दशों इन्द्रियोंके दशभोग, सो एक २ भोग-रूप मन दशोंनके संगमैं दशगुणे होगये। या प्रकार सौ भए।इनके ग्यारहक्षोहणी फौज हैं अर्थात् दशइंद्रियां, एक मन, इनकी एक २ क्षोहणी हैं और युधीष्ठिर वो जो सदैव निज धर्मरूप युद्धमैं स्थिर रहै, ये पांच पांचौंतत्त्वनके अंश हैं। इनके सात क्षोहणी फोजहै अर्थात् पवित्र च्यार अन्तः-करण, तीनगुण और दो सत्तास्वरूप श्यामसुन्दर कृष्ण आकाशवत् सब खेलका धारण करनेवाला है, सो निजधर्म योगरूप युद्धमैं श्वासका जीतना सोई जयहै। इसी जयके

हेतु शस्त्र जे श्रेष्ठगुण, अस्त्र जे तत्त्वनका बदलाव, इनसैं योगी श्वासजित विजयकों धारण कर्ताहै। महाभारतकी अपार महिमा है। बेदब्यासनैं तो एकलक्षही प्रगट करीहै, येही महाभारत स्वर्गमैं ग्यारलक्ष है। महर्लोकमैं २५ अरब है। श्वासजित योगीका जो महाभारत युद्ध है ताकी अपार महिमा है बचनसैं कहीं नहीं जाती। हे प्यारा! जेते शास्त्र पुराण हैं ते सब श्रेष्ठ हैं परन्तु हमारे बिचारमैं तो जिज्ञासूका सबरीतसैं कल्याण करनेवाले दोशास्त्र हैं गीता और रामायण, बाल्मीक हो चाहे तुलसीकृत हो, इनमैं धर्म, नीतमर्जाद, भक्ति, ज्ञान, ध्यान, परमेश्वरके मिलनेका योग, सबरीतका उपदेश है। भागवतकाभी सब तत्त्व इनहींके बीचमैं आगया और हे प्यारा! मनुस्मृतिमैं संसारके कानूनका कथनहै। यामैं पढेहुये मनुष्योंनैं बाक्यछल बहुत करदियाहैं। देखो ब्रह्मचर्यकी तीन अवस्था कहीहैं ३६ वर्षका, २५का, ९का, सो तुम बिचारकरो कैसे भ्रमके बचनहैं। जिनमैं निश्चय नहीं होसक्ता ९ वर्षका क्या ब्रह्मचर्यहै। या ऊमरमैं क्या कामदेव उपजता है, सो ब्रह्मचर्य राखैगा और ३६ वर्षका ब्रह्मचर्यमैं अर्धतरुणाई चलीजातीहै। २५का उत्तम है और सन्तानके दश संस्कार कहे हैं। गर्भस्थिति, नालच्छेदन, मुन्डनादि जानों। सो बिचारो कि जब नालच्छेदन कर्म कर्ते हैं वाके पूजनमैं घंटा दोघंटा काल लगजाता है,

इतने बच्चा बाहिर जमीनमैंही पडारहैगा और वाकी माता-भी बैठी रहैगी तो उनके हिम ग्रीष्मऋतुकी वेदनासैं जरूर पीडा होजावैगी और मुंडनसंस्कारके कर्म कहके पीछे दूसरी अध्यायके ३४वें श्लोकमैं क्या लिखताहै। "यद्वेष्टंमङ्गलंकुले" तथा अपने कुलकी रीतके माफिक करो। देखो या स्मृतिमैं तो आदिसैं धर्मके कानून बांधे हैं तो मनुके कहनेंसैं पहलै कुलरीत क्या है। रीतमरजाद तो मनुनेंहीं बांधीहैं, सो ऐसा कहना ठीक नहीं कि, अपने कुलकी रीतके माफिक बच्चेका मुन्डन करलो। ऐसी२बहुतसी गलतीहैं वेअनुचित दुःखदाई है और यशुमसीरूप होके अंजील किताब कही है, जाकों वाईबिलभी कहते हैं। वामैं मेरे मिलनेंके मार्गमैं जे कष्ट होते हैं सो बहुत साफ २ खोलके कहेहैं। च्यारूं मंगलसमाचारोंमैं और पौलसकी-पत्रियोंमैं यूहन्नाके प्रकाशित वाक्यों-मैं मैंनें इन नबीयोंमैं होके वर्णन किये हैं और ज्यादा मिलौनी ऊपरकी कथानकी नहीं करी है। जैसैं वेदव्यास-मुनि और मूसा पैगंबरनैं बहुत बढा २ के कथन किया है। अंजीलमैं तो कममिलौनी करिके कह्या है परन्तु उन वचनों-परभी मेरी छाप है अर्थात् गुप्ततासैं कह्या है। नष्ट होनेवा-लोंकों नहीं मालूम होवैगा सो हे प्यारा! पहिलैं सबहाल कहचुके हैं जब तू मेरे मिलनेका योगमार्गमैं चलैगा तब सब प्रत्यक्ष देखलेगा॥

अथ अष्टमाधिकारकी सीढी वर्णन।

हे प्यारा! इस सातवाँधिकारपै बहुतकाल साधन कर्ता-रहता है और अभ्याससैं शरीर निर्बल होजाता है। क्योंकि, वाकी क्षुधा कम होजाती है तब ओजूं रसनसैं और संयमसैं शरीरकों पुष्ट करिके अभ्यासमैं लगता है और साधन गुप्ततासैं कर्त्ता है। जब याकी तरुनांईका अन्त आजाता है योगाभ्यासके संग संसारकेभी सब दुःखसुख भोगलिये तब भोगोंसैं गिलानीं आजाती है। जैसें धापेहुये पुरुषके सामनैं खानेके पदार्थ पडेरहते हैं और उनसैं अरुचि होजाती है तैंसैं सब भोगनका यानैं गुणदोष देखलिये और भोग भोगलिये और योगमार्गमैं अदेख भूमिनकों देखके याकों परमानन्द आता है और आत्मबिलासका सुख और आत्मिक धनकी प्राप्तिसैं याकों इन्द्रके सुखभी तुच्छ लगते हैं और या मार्गमैं अपनी मौतकों सामनैं रखके आगेकों चलता है। हे प्यारा! जब मैं ऊपरसैं बल देताहूं तब ये लीलागिरसैं आगै चलताहैं। जब याकों अनेकप्रकारकी भूमि मिलती हैं। पहिलैं लोहाकी, तापीछे ताँबाकी, पश्चात् चांदीकी, ताउपरान्त सुवर्णकी, तदन्तर रत्नोंकी और मरकतमणि आदि लेके अनेक मणियोंकी भूमिनमैं महायोगी गमन करता है और याकों एक बहुतपुरांना प्राचीन फूटा दरवाजा मिलता है, वहां बत्तीसहजार महावीर विश्वपा-

ळक शक्तिके सेवक याकों मिलतेहैं। वो शक्ति अतिसुन्दर, कोमलतन, लंबा है, आकार जाका ताके बांवनभैरूं आज्ञामें रहते हैं, वे सब सृष्टिका काम कर्ते हैं, सब वीर और भैरूं शक्तिसहित योगीकों आगे नहीं जानेदेते हैं। तव योगीनें शिवरूपकों धारण करि महापराक्रम करिके वीर और भैरूं शक्तिसहित सबकों भींच देता है। और उनके डोलनें फिरनें का आकाश बंध करदेताहै और महायोगी महाबल करिके आगे चलताहै तव शक्तिका अग्रभाग फटगया और वाकों बहुत पीडा हुई। आगे क्या देखताहै कि, जाशक्तिका अग्र फटाथा वापै एक छोटीशक्तिनैं सवारी कराखीहै, वा छोटीशक्ति योगीका पराक्रम देखके उर्द्धमें जा चिपटी और एक महाप्रबल दोसुखका पुरुषसैं बडा युद्धकिया। वासमय रुधिरनदी बहनेंलगी और फूटे दरवाजेसैं जब योगी पार गया तब चंद्र,सूर्यके लोक देखे, यहांतक आवागमन बणारहताहै। जब चंद्र, सूर्यके लोकोंसैं योगीनें आगे गमनकिया तब आकाशमैंसों चंद्र, सूर्य खिंचके एक होगये, जब बहुत बडा प्रकाश होताहै वाकी कुछ महिमा नहीं कहीजाय और वहां घटा उठतीहैं,बिजलियोंका बडा झमझमाट होताहै और मेघकी गरज बहुत भारी होतीहै। वहांका ठैरनां अतिकठिनहै। महायोगी या स्थांनका बडा आनन्दमैं मग्न होजाताहै। सबसैं रहित होके गुणातीतावस्थाकों प्राप्त होता है। यहां मनोमय कोशकी जय होतीहै। तब महायोगी ज्योति-

रूप तख्तपर बैठताहै जाकों अक्षर तुरीय ओंकार कहतेहैं। वहां अनन्तईश्वरी दिव्यसिद्धि प्रगट होतीहैं । पंचरंगी घटा उठतीहैं। सूर्यमुखी फूल बहुतरंगनके जहां खिलरहे हैं और नांनांप्रकारकी दिब्यसृष्टि जहां प्रकाश कररहीहै। अनेकप्रकारकी अपार दिब्यरचना जहां दीखरहीहै। ये सबीज समाधिहै। तापीछे योगी पातालकी सैल कर्ता है। आगेसैं खंभा पीछैकों होजाताहै। तब लाल अर्श देखताहै। जब योगी पच्छिम होके गमन कर्ता है वहां महाघोर अंधेरेमैं होके बिनाभूमि चलताहै। वासमय योगीकों कालकाज्ञान नहीं रहता । अल्पकाल दीर्घसा मालुम होताहै और दीर्घ अल्पसा मालुम होताहै। कुंभकका कुछ- प्रमाण नहीं रहता शरीरसैं उठजाताहै। सूक्ष्मरूप जो आत्मिकहै ताकी सूक्ष्मरूप होकर सैलकर्ता है वा महाघोर अंधियारेमैंसैं निकलकरि मैदांनमैं पहुंचताहै। वहां मानसरोवरमैं स्नान करिके बहुतसे हंसनकी झांकी कर्ताहै। आगे जाके देखा कि एक दरवाजा महाबज्रके कपाटोंसैं बन्धहै और जहां अनगिनती शूरवीर त्रिशूल लियें खडेहैं,वा दरवाजेके किंवाडोंके तोडनेंमैं योगी बडाभारी युद्ध कर्ता है। वा युद्धसैं पृथ्वी बहुत कांपतीहै और तत्वनका बडा शोरहोताहै। कदै जलका वेग उठताहै। कदै अग्निका। कदै महाप्रचंड पवन चलतीहै। महाप्रलयकासा हाल होताहै। तत्त्व पिगलजातेहैं। योगी मर जीया होजाताहै। तापीछे सतगुरुका ध्यान धरके कोईका-

ल विश्राम लेके आगे गमन कर्ताहै और परमयोगी जब युद्धमें घायल होजाता है तब वाकों जकपडती है। घायलहोनेसैं खुशी मानताहै और बार २ माराजाता है। फिर जिन्दा होजाता है। एकबेर बडाभारी अहंकारसैं धनुष लेके महापराक्रम करिके आकाशकों गमन किया वासमय महायोगीके चरणके बलसैं कूर्म, शेष, कुलमलाये और बडी पीडापाई। सप्तपुरीनमैं घबराट मचगया। परमयोगीनैं महाबलसैं महावज्रके कपाट तोडके आगेजाके झंडा गाडदिया। जब मुरली सहनाय आदि बहुतसे बाजे बजे और अत्यन्त सुगंध आनेंलगी। पिछले सब क्लेश नाशहोगये। आगे कोई क्लेश नहीं रह्या। सब रचनां नई होगई। पुरांनी सब जाती रही। जैसें स्त्रीके सन्तानका प्रसव होताहै तब अतिदारुण दुःख पातीहै परन्तु जब पुत्रजन्म देखकर पिछला सब दुःख भूलजाती है और वासमय आनन्दमैं भरजाती है। ऐसैंहीं योगीके सद्गुरुकी दयासैं निजस्वरूपकी प्राप्ति होती है तब अगले पिछले सब क्लेश नष्ट होजाते हैं और आत्मानन्दमैं आनन्द शान्तस्वरूप होजाता है। तापश्चात् व्योममैं महायोगीनैं सैलकरी। श्रुती मस्तहोके भीतर धसी। अनन्त दीप जहां दिखाईदिये। जहां तेजपुंजकी सबसृष्टि देखी। ये आनन्दमय कोश है और वहां सत्य परमपुरुषका दरबार देखा। श्वेतसिंहासनपर बैठे हैं

और सिंहासनके नीचे अतिउग्रतेजकी च्यार कला देखी। उन कलानके भींतर अनन्त नेत्र थे। एककंलाका रूप धवलकेस दृश था। दूसरीका सिंहकासारूप था। तीसरीका बाजकासा रूप यानें उकाबकासा था। चौथीका मनुष्यकासारूप था और वे कला बडेआनन्दमैं मग्न होके गातीहैं और नृत्यकरतीहैं। सत्यपुरुषकी जहां परमहंसनकी मण्डलियां झांकी करती हैं। महर्षि मुनि जहां असंख्य खडेहैं। अनन्त जहां झीनेंवाजे बजरहेहैं। नूर वर्षरह्याहै। तेजपुंजकी जहां उर्वशी रंभा नृत्य कररहीहै। अनेकप्रकारकी जहां सुगंध आतीहैं। अमीके झिरनें झिररहेहैं,बहुतसी झीनेंस्वरोंसें वीनां बजरहीहैं,अनेक तरहके रत्नोंकी भूमि झलकरहीहैं।श्याम श्वेत पंचरंगी अनेकप्रकारके कमल खिलरहेहैं। श्वेत भौंरेनकी भनकार होरही है। नैं जहां गरमीहै। नैं सरदीहै। सदा बसन्तहै। वहांका सब आनन्द बिलास बचनसैं कह्या नहींजाता जो सद्गुरुकी कृपासैं पहुँचताहै सो जानताहै। जेते संसारमैं उत्तम नामहैं ते सब या स्थानपै पहुंचनेंवालोंके हैं। परमसन्त, महापुरुष,महायोगेश्वर, महापरमहंस, अवतार, परमात्मादि नाम जानों। यहांके आये फेर आवागमनमें नहींजाते।आठवें अधिकारकी सीढीका वर्णनहै। अब यहांसैं आगे क्याकहूं। या सत्य लोकमैं महायोगी परमसन्त आजाताहै सो आगेकों अपनी खुशीसैं चलाजाता है। जो यहांतक पहुंचजायगा सो अवश्य

आगेकी सैल करेगा वासैं आगापीछा कुछभी छिपा नहीं रहता है। ये परमेश्वर सत्यस्वरूपका खास दरबार है याहीका नाम शून्यसमाधि है। यहां राज्ययोगसंन्यास सिद्धभया और अष्टांगयोगके सर्वांग सिद्धभये और गीतामैं योगके कई अंग कहेहैं सांख्ययोग, कर्मयोग, कर्मसंन्यासयोग, संन्यासयोग, आत्मसंयमयोग, भक्तियोगादि ये सब अंग योगकी साधनावस्थामैं आजाते हैं और हेप्यारा! निजयोगका साधन तो गीतामैं छःश्लोकोंमैंही कह्या है। पांच अध्यायका २७ वां श्लोक और अष्टमाध्यायसैं १० श्लोकसैं लेके १४ तक वर्णन किया है॥

अथ नवांधिकारकी सीढी वर्णन।

हे प्यारा! योग अनेकजन्मोंकी सिद्धिसैं सिद्ध होताहै। जे पुरुष भक्तियोगमैं लगेहैं वे जन्मजन्मान्तरमैं मनुष्यशरीरको पातेहैं और जन्म २ मैं अभ्यास करते २ परमपद पातेहैं। र जो मैंनें पांचवें अधिकारसैं लेके आठवेंतक कथन किया है सो अति संक्षेपकरिके तेरे बोधके निमित्त कह्याहै। विस्तारकरिके जो कह्याजाय तो कुछ महिमाका अन्त नहीं चाहे जितना विस्तारसैं कहदो, जितनां कथन करे तितनां थोडा, अपारमहिमाहै। वचनसैं कही नहींजाती। जैसैं कारी ब्याहीसैं पतिके मिलापका हाल पूछे सो ब्याहीहुई वचनसैं कुछ कहतीहै परन्तु मिलनेसैं सब हाल मालूम होताहै।

हे प्यारा! नवें अधिकारपै महायोगी परमसन्त आप सहजही चलाजाताहै जैसें मनुष्य जब सोताहै तब स्वप्नावस्थासैं सुषुप्तिमैं सहजही चलाजाताहै ऐसें जानों। या शून्यसमाधिमैं जब महापुरुषकी लयता बडजातीहै उसहीकों परमशून्य महाशून्य महाकाशकरिके कह्याहै । यहां चंद्रमा पौषकी पूर्णमासीका और जेठका सूर्य दोनूंनका अंग मिलावै ऐसी श्वेतझलक झलकतीहुई भूमिहै ये बिज्ञानमय कोशहै अर्थात् बिगतभयोहै ज्ञान जाको जहा आपाभी बिलायगया, जहांतक आपा रह्या तहांतक श्रुतिनैं बर्णन किया जहा आपा नहीं रह्या वहां पालागलके पानी होगया वो निरअक्षरहै अर्थात् क्षरअक्षर जहां दोनूं नहींहैं वो सबका अन्त अलख, अरूप, सर्वातीत, अगम्य, अपार, अकह, अनाम हैं; ये महायोगेश्वर परमसन्तकी परमसमाधिहै । पश्चात् उत्थानदशामैं महापुरुष योगी कदै अधःकी सैल करताहै । कदै ऊर्द्धकी सातज्योतिनमैं बिचरताहै । प्रथम ज्योति च्यारलक्ष कलानकों लियें कूर्मकी सवारीपै रक्ताम्बर ओढें, सब विश्वकों धारणकरतीहै । दूसरी ज्योति छःलक्ष कलानकों लिये मकरकी सवारीपै पीताम्बर धारण करिके सब सृष्टिकों उपजावतीहै । तीसरी ज्योति अष्टकलानकों धारण करिके गरुडकी सवारीपै श्यामाम्बर ओढें सब विश्वका पालन पोषण कर्तीहै । चौथी ज्योति बारहलक्ष कलानकों लियें सिंहकी सवारीपै श्वेताम्बरकों

धारण करिके सब विश्वकी हानिलाभ बिचार करतीहै । पांचवीं ज्योति सोलहलक्ष कलानकों लियें रुद्रकी सवारीपै नीलाम्बर ओढैं सब विश्वसैं काम लेतीहै । छठी ज्योति सहस्त्रलक्ष कलानकों लियें हंसकी सवारीपै पंचरंग झिलमिले अम्बर ओढैं दो उग्र श्याम श्वेत कलानकों लियें सब विश्वकों देखतीहै । सातवीं ज्योति अनन्त कलानकों लियें अगम्य अत्यन्त ऊंचेपर गोलोकके बीचौंबीच है और हे प्यारा ! परमसन्त महायोगीकी उत्थानसमाधि एक होजाती है वो सहजसमाधि है । देहमैं बिदेहरूप होके बालवत् निरहंकार लीला कर्तेहैं । अपारहै महिमा जिनकी शब्दसैं नहीं कहीजाती ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसंवादे षष्ठाधिकारसैं नवमाधिकारकी सीढी वर्णनो नाम सप्तमप्रकाशः ॥ ७ ॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वप्रकाशी ! आपनें परमगुह्य योगसाधनका वर्णन किया जे इन बचनौंकों मृत्युलोकमैं मनुष्य श्रद्धासैं श्रवण करैंगे पढैंगे उनकों बडा परमबोध होवैगा और सब संशय उनके निवर्त्त होजावैंगे और जे साधन करैंगे वे तुमकों प्राप्त होवैंगे।आपके मुखारविन्दसैं ये कथा सुनके अब कुछ श्रवण-

करनां बाकी नहीं रह्या। हे दीनबन्धो! जो कुछ कहनें श्रवण करनेंका तत्त्व था सो तो आपनें सबकुछ वर्णन किया अब आपसैं प्रजानिमित्त एक प्रार्थना कर्ताहूं कि, संसारमैं जीव आपसमैं बडे क्लेश पारहेहैं क्योंकि अवतार ऋषि मुनि आचार्य और पैगम्बर नबी रसूल जे होगयेहैं उन्होंके शब्दजालमैं लोग फसरके आपसमैं ईर्षा द्वेष बढारक्खाहै और एकका एक धर्म मजहब झूंठा बतातेहैं और अपने धर्म मजहबकों श्रेष्ठ कहतेहैं और आपसमैं कहतेहैं कि, हमारे वेदशास्त्र परमेश्वर खुदाके वचनहैं। तुम्हारे मनुष्योंके हैं और अपने धर्म मजहबकी पक्ष कर्तेहैं दूसरेका अन्याय करिके नाश कर्तेहैं सो मैं इनको देखताहूं कि ये आपसमैं ईर्षाग्निमैं जलरहे हैं। वर्णाश्रमी तो अपनें अहंकारमैं डूबरहेहैं सबकों असुर समझतेहैं और च्यारसम्प्रदायवाले कहतेहैं कि, हम वैष्णव सबसैं बडेहैं और श्रावकधर्मवाले सबकों पापी दयाहीन ठैराते हैं। आपकों दयावान् श्रेष्ठ समझतेहैं और महोम्मदीलोग अपनें गरूरमैं बडे गर्महैं। अपनें आपेकों बहुत बडी शरीयतमैं समझतेहैं और सबकों बेशरै काफर कहतेहैं और ईसाईलोग कुछ ईर्षा कमरखतेहैं परन्तु अपने मज़हबियोंसैं बहुत राजी होतेहैं और मज़हब बधानेंकी कोशिसमैं उलझ रहेहैं और एक, राधास्वामीका मत चलाहै वे मनमैं बडे योगी बनरहेहैं और आर्यसमाजी अपना मत बधानेंमैं बहुत परिश्रम कररहेहैं और नानकपंथी, कबी-

रपंथी, दादूपंथी, गरीबपंथी, गिरी, पुरी, भारथी, जोगी, गुसाँई, हरिनामी, सतनामी,परनामी आदि अनेक मत पंथ बनरहेहैं और ये च्यारमत मज़हबी तो मनुष्योंकों बडेही दुःख देतेहैं। एक तो चक्रान्ती छापनसैं शरीरकों दागते हैं। दूसरे जोगी जे कान चीरते हैं और यहुदी महोम्मदी जे शिश्नकी खाल काटतेहैं। हे स्वामिन्! इन सबनके गुण-दोषोंका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो जासैं श्रेष्ठपुरुष बचनभेदसैं वाकिफ होवैं॥

अनाम उवाच।

हे सुबुद्धे! ये सब धर्म मज़हब मत पंथ परमेश्वरकी तरफसैं हैं और कोई २ असुर शैतानकी तरफसैंभी हैं। सबका मालिक एकहै ये जो बहुतोंनैं बहुत तरहका उपदेश कर्म,उपासना, ज्ञानका कहाहै जासैं अनेक होगये और बचनोंकी ऐसी आँट लगाई है कि, कोई उत्तम संस्कारी या शब्दजालसैं पार होताहै। हे प्यारा! जिसधर्म मज़हबमैं जिनोंका जन्म हुवाहै वे वाहीके धर्म कर्म धारण करैं। उनमैं जे श्रेष्ठ आचरण कहेहैं उनकों धारण करै और मलिन छोडै और बडाई करै तो सद्गुरुकी करै,निन्दा करै तो अपनी करै और किसीकों बुरा नैंकहै। वर्णाश्रमी और च्यारसंप्रदायवालोंमैं आपसमैं बहुतसी फूटहै। केई तो वाममार्गीहैं। केई दक्षमार्गीहैं। कहा केई शिवशक्तिका इष्ट रखतेहैं। केई विष्णुका रखतेहैं और आपसमैं विरोध रखतेहैं। अनेक इष्ट

करलियेहैं जिनकी कुछ गिनती नहीं और बहुतसे मनुष्योंनैं यथायोग्य आचारकों छोडके बडा आचारका डिम्भ बनालियाहै। नैं किसी स्वजातीके हातकी रोटी खातेहैं। नैं पाँनी पीतेहैं। जबतक जागतेहैं तबतक पांनी माटीसैंही खेलाकरतेहैं।मृत्तिका जलके कर्मोंसैंहीं फुरसत नहीं होती। देखो ये शरीर मल मूत्रका बनांहै, इसकों क्या शुद्धकर्तेहैं याकी तो यह शुद्धताहै कि, शौचजाके तीनच्यारबेर मांटीसैं हात धोना, दन्तधावन करिके स्नान करनां, धुयेहुये वस्त्र धारण करनें, साफ पवित्र स्थानमैं निवास करना, शरीरकी तो इतनीही शुद्धीहैं।ज्यादा शुद्ध तोअन्तःकरणकों करनां चाहिये जामैं खोटी बृत्तियोंके बहुतसे विकार भरेहैं।जो अन्तःकरण शुद्ध नैंहुवा तो बाहिरकी अजोग शुद्धता किसकामकीहै। बृथा श्रम उठानांहै सो ये बडी फूटका धर्महै। यामैं एकता कदाचित् नहीं होसक्ती क्योंकि इष्ट भोजन एक नहीं। हे प्यारा! आसुरी दैवी दोप्रकृति हैं सो अन्तःकरणमैं दोनूं उदय होतीहैं तिनके लक्षण वेदपुराणनमैं कहेहैं॥

अथ आसुरीप्रकृति बर्णनम्।

कि दंभी,अहंकारी, क्रोधी, लोलुप,कपटी,अपनें लालचके वास्ते दूसरेकों दुःखदैंना, निर्दई, कठोर, बुरेके पक्षपाती, छलकरनेंवाले, भलोंकेवैरी, अन्यायसैं धनके कमानेंवाले, विरोध ईर्षाके धारण करनेंवाले, जालसाजी, अपनें एक

पैसेके फायदेके वास्ते दूसरेके देशका नुकसान करदेना,झूंठे जालसाजियोंके मित्र और श्रेष्ठकर्मकरैं तो दुनियांके दिखानेंकों करैं । ब्यभिचारी याने परस्त्रीनकों तकतेरहैं, दूसरेकी हांसी ठट्ठा करनेंवाले, बहुत गालबजानेंवाले, बेप्रयोजनके बचन कठोर कहनेवाले,तुच्छ देवतानकों स्वार्थसैं पूजनेंवाले, माता पिताकों दुःख दैनेवाले, धन स्त्रीनके गुलाम, नगुरे, धर्महीन, हिंसाके करनेंवाले, अज्ञानी, अपनें निज मतलबकों बडे चतुर, कृतघ्नी यानें दूसरेनें अपनेसाथ नेकी करी तासैं दुश्मनी करनां वे कृतघ्नी कहलातेहैं । महाअवगुणोंकी खांनि ऐसी जिनकी प्रकृतियांहैं वे चाहे जा वर्णमैंहों असुरहैं ॥

अथ दैवीप्रकृति बर्णन ।

सत्यबक्ता, सरल,सूधे, दयावान्, सन्तोषी, कोमलदृष्टि जिनकी मधुर बचन कहनेंवाले,बिबेकी, श्रद्धावान्, ईश्वरकी भक्तिके धारण करनेवाले, गुरुमुखी, श्रेष्ठकर्म गुप्ततासैं करनेंवाले, बिचक्षण, ब्यभिचाररहित, शुद्धतासैं धनके कुमानेंवाले, परउपकारी, छलहीन, धर्मात्मा, सज्जनोंकेसंगी, साधुसन्तनके सेवक, मातापिताकों सुख दैनेंहारे, भलोंके मित्र, यथायोग्य सब ब्योहार बर्तनेंवाले, श्रेष्ठकर्मोंकों धारण करनेवाले,सबके सुखदाई,जिन पुरुषोंकी ऐसी प्रकृति है वेही दैवी प्रकृतिवालेहैं। हेप्यारा! प्रकृतिनकरिके येही मनुष्य असु-

रहैं और येही देवताहैं। अपनी वृत्तिनकों आप परखतोरहै जाका मन खोटी वृतिनमैं चलाजावे और वो विचारकरिके पिछतावै कि मोसैं कैसा अनुचित कर्म होगया वोभी दैवी प्रकृतिवाला है। उस पिछतावेके बिचारसैं कोईकालमैं श्रेष्ठ होजावेगा और जे ऐब करिके राजी होतेहैं,अकारण बिरोध कर्तेहैं,वे महाअसुरहैं।हेप्यारा!मेरे भक्त तो दोनूं प्रकृतिनमैंहीं होतेहैं चाहे जौनसी प्रकृतिमैं हो, जब मेरे सन्मुख होताहै तबही महाश्रेष्ठ होजाताहै। मेरे सन्मुख होवे जब ऐसैं जानों जैसैं तीब्राग्निमैं चाहे सूखाकाष्ठ होवे चाहे गीला होवै सब भस्म होजाताहै। मेरे सन्मुख होवै जब मैं पापीके पाप नहीं देखता और पुण्यात्माके पुण्य नहीं देखता,मेरा प्रेम देखता हूं और जे मेरे सन्मुख नहीं होतेहैं और बडे सुकृतके कर्नेवालेहैं तो मेरे क्या कामकेहैं वे अपने अच्छेकर्मोंका फल उत्तमलोक पावैंगे और पापी अपने पापके फल भोगैंगे और मैं असुरोंकों नाश कर्ताहूं,देवतानकों सुख देताहूं,परन्तु भक्त मोकों बहुत प्यारेहैं, और दैवीप्रकृतिमैं होवै तो क्या कहनां है और जे वेद शास्त्र पुराणनके जाननेवाले पण्डित भक्तहैं वे मोकों बहुत प्यारेहैं और जो भक्तियोगसैं ज्ञानी होतेहैं वे ज्ञानी मेरेही स्वरूप हैं। सब ज्ञानीनमैं ज्ञानी वे-हैं जिनकी आत्मा योगमार्ग होके मोसैं लयहुईहै। क्योंकि, अष्टांगयोग जो मेरे मिलनेंका मार्गहै यासैं मेरी गुप्त प्रगट महिमा सब प्रत्यक्ष होजातीहै याका नाम परमज्ञानहै।

अथ श्रावकधर्मको धारण करनेंवालोंका व्याख्यान बर्णन।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! श्रावक धर्म उत्तमहै। यामैं निवृत्ति मार्ग प्रयोजन विशेषहै। आचार्यलोगोंनें आरम्भमात्रमैं जीवहिंसा दिखाके मनुष्योंकों उपराम करायाहै परन्तु गुप्तताका बिचारसैं बाहिरका वैराग्यकों बन्ध करदिया यानें जो कोई वैराग्यकों धारण करै सो दिगम्बर रहै और चौडे मैदानमैं परबतके ऊपर या भूमिसैं रहै। तीनों कालोंकी बेदनां सहै। हिम, ग्रीष्म, वर्षासैं मैदानमैं बैठारहै। वृक्षकाभी आसरा नैं लेवै और जामैं हिंसा होय ऐसा भोजन नैं करै सो नैं तो ऐसा होसकै नैं वैराग्यकों धारण करै। क्योंकि, ऐसी कठिन धारणासैं स्थूलशरीर नहीं रहसक्ता सो या बिचारसैं इनके मतमैं कोईभी उपराम नहींलेता, सो ये तो आचार्योंनें अच्छाकिया। अल्पवैराग्यके आड लगादी परन्तु ये दयाधर्मकों धारण नहीं करैं फकत छाणके पानी पीलेतेहैं। सुधारके अन्न खालेतेहैं सो इनकर्मनमैं क्या दयाका पालन किया? जीव तो आरंभमात्र कर्मोंमैं मरतेहैं। चलनेसैं, बुहारीदैनेंसैं, कपडा फटकारनेंसैं, अनेक कर्मोंसैं आरंभमात्रमैं समझलो। जो ये जल छानतेहैं वे जलके जीव तो कपडेका स्पर्श पातेंहीं मरजातेहैं और जलभी जीवरूपहीहै और अन्नभी जीवरूपहीहै

सो जीवकी दो संज्ञा हैं; जड संज्ञा और चैतन्यसंज्ञा। अन्न जडसंज्ञा करिके जीवहै सो देखो समयपाके उसमैंभी चैतन्य जीव उदय होजातेहैं और समय पाके जलमैंभी असंख्य जीव चैतन्य प्रगट होतेहैं सो अन्न,जल,साग,कंद, फल सब जीवरूपहीहैं । एक जड, चैतन्य संज्ञाका फरकहै । सो हे प्यारा ! जीव तो दोनूं शरीरोंकों धारण करताहै । जडसंज्ञाकोंभी और चैतन्यसंज्ञाकोंभी और जडसंज्ञासैं चैतन्य होजाताहै और चैतन्यसंज्ञासैं जडसंज्ञा होजातीहै । सो जीव तो सर्वव्यापक हैं । आकाश और पृथ्वीके बीचमैं निर्जीव कोई वस्तु नहीं सो लिखाहै "जीवोजीवस्यजीवनम्" जड-चैतन्य दोनुं संज्ञा जीवकी हैं सो ये मनुष्यमात्र कदाचित् आहिंसक नहीं होसक्ते । जल छानना, दिनमैं भोजन करना ये तो शरीरकी आरोग्यताके निमित्त क्रिया हैं सो ये लोग इनहीं तुच्छ कर्मोंको करिके अहिंसकताका अभिमान कर्त्ते हैं औरोंकों पापी मानतेहैं और जल छाणके पीना ये क्रिया तो जल निर्मल करनेकी है। इसमें क्या अहिंसकपना है ? जे जमीदारलोग बिनाछाणें पानीं पीलेतेहैं उसमैं कोई २ बिषधारी जीव पीजातेहैं वासैं शरीरमैं बिकार पैदा होजाताहै । ऐसा समझके आचार्योंनें जल छाणनेकी क्रिया बांधीहै सो अच्छा कर्म है। पानी छानके पीना,सुधारके अन्न खाना,यासैं खानेंपीनेंकी ऊपरली पीडा शरीरमैं नहीं होतीहै और क्रियाकोश ग्रंथमैंभी भोजन पानीके मामलेमैं बडा बिचार लिखा

है सो शरीरकी आरोग्यताके वास्ते है और रात्रिमैं भोजन करनेसैं ये नुकसान हैं कि,उतावलमैं चींटी आदि बिषधारी जीवनके खानेंसैं पीडा होजातीहै ऐसा समझके मनांकिया है सो इन्होंनैं पानी छानके पीना,रात्रिमैं भोजन नहीं करनां और होसकै तो मन्दिरमैं हुयाणा येही श्रावकधर्म समझरा-खेहैं। रात्रिमैं भोजन नैं करनां ऐसा धर्म तो बहुतसे जा-नवर साधते हैं । जबसैं पैदा होतेहै तबसैंही दिनमैं खाते पीते हैं,सो जानवरोंका धर्म इनसैं बिशेषहै ।ये तो बालकप-नमैं, रात्रिमैं माका दूध पीते हैं,रोटी खातेहै और जानवरों-के सारी ऊंमर ऐसाही नेमहै कि, दिनमैंहीं खातेपीते हैं। हेप्यारा ! दिनमैं भोजन करना जो कह्याहै सो दिननाम ज्ञानबिचारका है। यह मन दशों इन्द्रियोंके दशमुखनसैं भोगकर्मरूपाहार करताहै सो ज्ञानरूपदिनमैं भोग कर्मरूपा-हार करै, अज्ञानरूपी रात्रिमैं भोगकर्मरूपाहार नैं करै। जो कुछ करै सो ज्ञानबिचारसैं युक्त कर्म करै। यही दिनमैं भोजन करनाहै सो लिखाहै ॥

दोहा॥ चलै निरख भाखै उचित, भखै अदोष निहार ।
लेय निरख डारै निरख, सम कित पंचप्रकार ॥

हेप्यारा ! ये बाह्य कर्मोंसैंही अहिन्सक नहीं होसक्के, ये लोग तुच्छकर्म शरीरकी आरोग्यताके करिके और मनुष्योंको पापी समझतेहैं और अन्तःकरणमैं द्रोह रखते

हैं और अपनें मतका;फकत जानैं पानी छानके पीलिया और दिनमैं भोजन करालिया वाकी बडी पक्ष कर्तेहैं। चाहे वो झूंठ जालसाजीसैं धनसंचय कर्ताहे परन्तु ऐसेकेभी संगी होजातेहैं और ये नैं कोई रस्तेके नजंदिक कूवा खुदाते हैं, नैं धर्मशाला बनांतह, नैं वृक्ष छायांके वास्ते लगातेहैं, जा कर्मकरनेंसैं बहुतसे जीवोंकों आराम मिले सो काम नहीं कर्तें और सब धर्मी मिलके मंदिर बनातेहैं, वामैं ऋषभदेवादि सिद्धोंकी प्रतिमाका सेवन कर्तेहैं और इनका सब धन मन्दिरकी आराशीमैं खरच होताहे और सुकृतमैं नहीं लगाते। जामैं वहुतसे मनुष्यों और जानवरोंको आराम पहुचै सो कर्म नहींकर्ते और ज्यादा नेम धारण कर्ते हैं तो बहुतसे हरे सागपात छोडदेतेहैं और तप इनका यहीहै कि,पांच च्यारदिन भादवाका महिनामैं लंघन कर्ते हैं सोभी वैद्यकशास्त्रके बिचारसैं बर्षाकालमैं लंघन करनेंसैं शरीरकी शुद्धि होजातीहै। कुछ जीवात्माके कल्याणका तप नहीं ऐसैं बहुतसे जीव कई महिनातक नैं खातेहैं, नैं पीतेहैं, विशेष शीतकालमैं ततैयादि जानवर दो तीन महिनोंतक इकठोरे होके छिपे बैठे रहतेहैं सो उनके व्रत इनके व्रतनसैं बहुत अधिक हैं। हे प्यारा ! भूखा मरके अपनी जीवात्माकों दुःख देना इस कर्म करनेंसैं आत्मघातका पाप लगताहै। जब हम और जीवोंकी दया करिके उनके दुःख दूर करतेहैं और सुख देतेहैं तो अपनें जीवोंकों दुःख दैंना ये तो महामूर्खताहै।

श्रावकमतमैं बारह व्रत कहेहैं। सत्यता, अचौर्यता, कोमलता, क्षमा, दया, निर्वैरता, शीलतादि बारह व्रतहैं। हां ये व्रत करनेके योग्य हैं। जिनसैं अपनी आत्माका कल्याण होवै और सब जीवोंकों सुखदाई सो तो कर्ते नहीं और देखादेखी भूखे मरतेहैं और दन्तधावन कुल्लाभी नहीं कर्ते। जिनके मुखमैं दुर्गंध आनैं लगतीहै ऐसे व्रतनका दुःख पानांही फलहै। हेप्यारा! जो आचार्यलोगोंका तात्पर्य था सो इनकी निगाहमैं नहीं आया। उनका ये तात्पर्य था कि, आरंभ मात्रमैं जीवहिंसा दिखाके इनकों सब कर्मोंसैं वैराग्य उँपजाया है असलमैं ये निवृत्तिमार्ग है सो मुनिऋषियोंसैंही सधसक्ताहै। प्रवृत्तिमैं रहके केवल निवृत्तिका मार्ग नहीं सधसक्ता। देखो जो या धर्मकों राजालोग धारण करैं और कहैं कि, हम राज्य कर्तेरहैं तो ये वात नहीं बणसक्ती, राजानकों जे गुनहगारहैं उनकों सजा दैनी होतीहै, किसीका हात काटतेहैं, किसीकों पिटवातेहैं, किसीकों जानसैं मारतेहैं और कहीं राज्यमैं जमीनके झगडेसैं उपद्रव खडा होजावै तो लडाईमैं हजारों पशु, मनुष्य मारेजातेहैं सो क्षत्रीलोंगोंकी इस धर्ममैं गुजर नहीं होती। बिना पशूनकी शिकार खेलैं इनमैं वीरता नहीं रहती इसीहेतुसैं वेदोंमैं किसी महात्माओंनैं प्रवृत्तिकर्म यज्ञनका वर्णन कियाहै, निवृत्तिमार्गमैं ये मना हैं, सो विचारके देखो श्रावकमार्ग अतिश्रेष्ठ निवृत्तिका है।

सर्वारंभ तजके प्राणीमात्रसैं निर्वैर होके शील समता,सन्तोष सत्यता,दया धारण करिके एकान्तमैं निवास करै और अरिहंत सिद्धसैं उपदेशलेवो अरिहन्त सद्गुरुसैं बडा कोई और गुरू नहीं है ॥

प्रश्न ॥ हेसर्वदर्शी! आरिहन्त किसकों कहतेहैं । हेप्यारा! आदिपुराणमैं वर्णन कियाहै कि, मोक्षमार्गके पांच अधिकार हैं । साधु, उपाध्याय, आचार्य,अरिहन्त, सिद्ध. साधु तो वे कहलातेहैं जे अपने स्वरूप खोजनेंके निमित्त गृहस्थाश्रममैं रहके नेम धारण कर्तेहैं। और जे नेमसहित शास्त्रोंके तात्पर्यैंमैं बिचक्षण होतेहैं वे उपाध्याय याने पढानेवाले पण्डित कहलातेहैं । पश्चात् ऊंचे अधिकारीका संग करनां;अपनें अन्तःकरणकी वृत्तियां जो मलिनहैं उनका त्याग करनां; श्रेष्ठवृत्तिनकों धारण करनां; सब प्राणीमात्रसैं निर्वैर रहनां; कोमलदृष्टिसैं सबसैं मधुर बचन बोलना; मन, बचन,काय तीनोंसैं पवित्र रहनां और पर्मार्थके हेतु नींचले अधिकारीनकों उपदेश दैना; क्षमा, दया, शील, संतोषादि शुभकर्मों कों धारण करना; उत्तम पुरुष जो आरिहन्तहैं उनके उपदेश का साधन करना उनकों आचार्य कहतेहैं । या स्थानतक प्रवृत्तिमार्गमैं रहके निवृत्तिका साधन करनां; यहांसैं आगै तरुणावस्थाका अन्तमैं सबका संग छोडके अरिहन्त जो सद्गुरुहैं उनकी शरणागति जाना ये आचार्यका धर्म है । अरिहन्त याका नाम है जे अरि कहियें वैरीनका हतनकरै सो वैरी

कौनहैं जे जीवात्माकों भवसागरमैं डुबातेहैं और आत्मज्ञान सैं विमुख करतेहैं अर्थात् काम, क्रोध,लोभ,मोह,दशों इन्द्रियां च्यार अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकारादिकों हतन करनां सोई आरिहन्त सच्चे सद्गुरु हैं; ऐसे अरिहन्तदेव सब वृत्तिनका संयम करिके, सब कषाय त्यागके आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधिमैं तत्पर होतेहैं सो प्राणायाम ध्यानसैं अनहद खुलजाताहै। सो लिखाहै कि अरिहन्तका जब जन्म होताहै तब आकाशमैं दुन्दुभी बजतेहैं और अरिहन्तकाही नाम चौबीस तीर्थंकरहैं। आदिनाथ जो ऋषिभदेवहैं। उनसैं आदिलेके नेमनांथ,पद्मनांथ, शीतलनांथ,मल्लिनांथ पारसनाथादि २४ नामहैं सो २४ तत्वनकों जीतके अपनें निजस्वरूपमैं लय होतेहैं। निर्बाणपदमैं स्थिरहुये सोई अरिहन्त सगुण अवतार वीतराग परमसन्त सद्गुरु हैं सो दिगम्बर होके तीनों ऋतुनकी तापकों मैदानमैं स्थिर होके सहतेहैं और दिगंबर रहतेहैं। तीनों ऋतुनकी ताप कैसैं सहतेहैं सो सुणों। हे प्यारा! ये आत्मा तीन शरीर करिके प्रकाशितहै; स्थूल, सूक्ष्म,कारण सो स्थूलकों नंगा करना तो नकली दिगंबरता है। स्थूल करिके तो बहुतसे पशू दिगम्बर रहतेहैं। देखो मृग दिगंबर रहके तीनों ऋतुनकी तापकों चौडेमैदानमैं तृण खाके सहतेहैं सो ये दिगम्बरी; तो इनकी मूर्खता और पशूपनाहै। हे प्यारा!अरिहन्तसिद्ध तो सूक्ष्मशरीर करिके दि

म्बर होतेहैं और उनका आत्मिकस्वरूपहै और आत्मिकही साधन है ये शारीरिक बृतियोंमें नहीं रहतेहैं सो उनका जो सूक्ष्मस्वरूप है वासें दिगम्बर होतेहैं यानें शारीरिक जे दशों इन्द्रियोंकी बृत्तिहैं सो पहिलें सूक्ष्मशरीरनें धारण कर राखी ही वेही सूक्ष्म शरीरके वस्त्र थे, उनकों त्यागदिये और मेरुगिरिके शिखरपर मैंदानमें जाबैठे। मेरुगिरि क्या यह जो स्थूल शरीररूप ब्रह्माण्डहै ताका मेरु जो पीठकाऽस्थि गुदासें लेके ग्रीवातक वाके ऊपर यानें प्राणायाम ध्यान के बलसें दशवां द्वार जो ब्रह्मरंध्र है ताके ऊपर जो मैंदान है जामें जाबैठे। और तीनूं ऋतुनकी तापकों सहन करतेहैं। तीनऋतु जो तीनगुण रज,तम,सत,अथवा तीन तत्व वायु· अग्नि, जल, वायु,रजोगुण रूपहै अग्नि तमोगुण रूपहै, जल सतोगुणरूपहै,इनके वेगनको सहतेहैं यानें आकाशवत् होके अपना वास्तवस्वरूप जो सत्यहै तामें धारणा,ध्यान,समाधि करिके स्थितहैं उनहींका नाम अरिहन्त है अरिहंतमें और सिद्धमें कुछ भेद नहींहै । जैसें मनुष्य जाग्रतावस्थासें सुषुप्तिकों प्राप्त होताहै इतना भेदहै। उत्थानदशामें जाग्रत् स्वरूप अरिहन्तहैं।समाधिदशा जो सुषुप्ति तामें सिद्ध हैं । सिद्धशिखर शून्य समाधीमें रहते हैं । मोक्षशिलापे स्थिर हैं और जव ये ज्यादा समाधिमें स्थिर होजातेहैं।जो अगम्य, अपार, सवका अन्त, अकह, अनाममें लय होतेहैं वे परमसिद्धहैं । अव इस पंचमकालमें नाममात्रके

जैनीं बनरहेहैं । ये उत्तम धर्म निवृत्तिका हालमैं वैश्यलोगोंनैं ग्रहण कियाहै । सो इनके तो अन्तःकरण मलीनहैं और बिनां अन्तःकरण शुद्धहुये सब नेम धर्म निष्फलहैं । इनमैं केई तो हलवाईपनां कर्तेहैं । केई कपडेनका ब्योहार कर्तेहैं । केई लैंनदैंन आसामीनका कर्तेहैं । केई साहूकारी कोठी चलातेहैं । ब्योहारी मनुष्योंका मलिन अन्तःकरण होताहै । हे प्यारा ! कदाचित् शुद्ध नहीं होता । क्योंकि अपना मतलब सिद्ध करनेंकों कपट छलके वचन बोलनें पडतेहैं । ये तो धनके गुलाम, भोगवासनांनमैं लोलुपहैं और ये जो भगवान्की मूर्तिकी सेवा कर्ते हैं तो उनके मन्दिरमैं काचके कामकी मीनांकारी, झाड, गिलास, गालीचे, बनांत, पारचेकी बिछायत कर्तेहैं । गोटे किनारीनकी भडक देखातेहैं । महाप्रपंच रजोगुणका स्थान करदेतेहैं ।जे दर्शनकरनेंकों जातेहैं ते काचके चित्राम झाड गिलासादिको देखतेहैं । ठाकुरजीमैं तो मनहीं नहीं लगता । हे प्यारा ! उन मुनिलोगोंकी मूर्तिकेभी अपनी मायाका विकार लगादिया यानें बैराग्यमैं रागप्रवेश करदिया । चाहिये तो ऐसाथा कि जामैं मुनिराज प्रसन्न होवैं सो काम करनां इनकों वाजिब था सो अरिहन्त महाराज तो ज्ञान, बैराग्य, संयम, ध्यानसैं राजी होतेहैं और संसारके पदार्थोंसैं उनकी अरुचिहै सो जासैं उनकी अरुचिहै सोई ये करतेहैं, अपनें

नेत्रोंका बिषय भोगतेहैं और जासैं वे राजी होतेहैं सो नहीं कर्तें और दूसरे धर्मके मनुष्योंकों पापी धर्महीन समझके निरादरतासैं झाकते हैं। ये पंचमकालके जैनी इतनाही जैनधर्म समझतेहैं कि छानके पानी पीलिया, रात्रिमैं भोजन नहीं किया और कुछ मन्दिरकी आराशीमैं खरच करदिया सो जैनधर्मतो अति उत्तम निवृत्तिमार्गहै। सो कोई बिरले उत्तम संस्कारीसैं सधियाताहै और हे प्यारा! बडा अवगुण तो या धर्मके धारण करनेंवालोंमैं ये है कि कोई सच्चामहात्मा योगसिद्धका खोज बूझ नहींकर्तें। नैं किसी साधु सन्तौंसैं मिलतेहैं। नैं सेवा कर्तेहैं। जे या संसारमैं अरिहन्तस्वरूपहैं उनका खोज नहींकर्तें। ये तो जो नंगा नकली दिगंबर रहताहै ताकों पूजतेहैं और वाहीकों साधु महात्मा समझतेहैं और सबनकों पाखंडी मानतेहैं और जो मैंनैं पूर्व अरिहन्तका वर्णन कियाहै उनकों ये नहीं खोजते जो ये खोजें तो वे इनहीं भेषोंमैं मिलजातेहैं। इसही सबबसैं इनके मतमैं कोई आजतक योगसिद्ध महात्मा प्रगट नहीं हुवा और ये मत पुरानाहै। और जिस महात्मानैं वेद प्रगट करिके वेदोंका धर्म चलाया सो वेदोंमैं प्रवृत्ति और निवृत्ति दो मार्ग वर्णन किये। और श्रावक मतका आचार्यने वेदधर्मोंसैं वहुत पीछे चारुवाक प्रगट होके प्राकृत संस्कृतसैं केवल निवृत्तिमार्ग वर्णन कियाहै और प्रवृत्तिमार्ग जो है ताका निषेध कियाहै परन्तु या मतके जे

धारण करनेवाले हुये उन्होंनें आदिकवि वाल्मीक और वेदव्यासके पुरानोंका अर्थ भाव बदल २ के बहुतसे ग्रंथ बनालिये। स्वर्ग और इन्द्र बहुतसे बर्णन किये। बहुत बडा प्रपंचशब्दका जाल रचदिया। जितनें वाल्मीक वेदव्यासके कथनमैं अवतार राजादि बर्णन कियेहैं उनकों जैनमतके कवियोंनें जैनी बनाके वर्णन किये और छोटे बडे कवियोंनें जैनधर्मके बहुत शास्त्र रचलिये उन्होंमैं आत्मज्ञानका और निजस्वरूपकी प्राप्तिका कथन नहींहै। मतमतान्तरकी खैंचातानीके कथन हैं। जे प्राचीन ग्रंथहैं उनमैं तो योगांग मार्गका कथनहै सो इनके मतमैं आजतक कोई योगसिद्ध महापुरुष प्रगट नहींहुवा जो ये सच्चे योगी महात्मानकों खोजैं और उनकी सेवाकरिके अपने स्वरूपकी प्राप्तिके अर्थ उपदेश लेके योगका अभ्यास करैं जब कल्याण होवै। वक्तका सच्चा अरिहन्त बिनामिलैं आत्मज्ञान और निजस्वरूपकी प्राप्ती नहींहोती और बिना आत्मज्ञान सब इनके नेम धर्म भाररूपहैं। हां शुभकर्मनका फल तो मिलजावैगा परन्तु सर्वकार्य सिद्ध जब होवैंगे तब सच्चे सद्गुरु अरिहन्तस्वरूप मिलैंगे और सब दयानसैं मनुष्यकी दया करना सो प्रधानहै और महात्मापुरुषनकी सेवा करना उसका तो क्याकहनाहै। उनके तो सर्वकार्य सिद्ध होवैंगे।

प्रश्न ॥ हे भ्रमनाशक ! व्याकरण बहुतसे हैं इनका क्या भेदहै ? ॥

उत्तर ॥ हेप्यारा ! ये महापुरुषोंकी शब्दरचनाहै, ये ब्रह्माण्ड अनादिहै यामैं पहिलैं जानैं कितने ब्याकरण रचेगयेहैं और राजानके राज्य नष्ट होनेसैं वेभी नष्ट होगयेहैं । राज्यमैं पचास साठ बर्षतक उपद्रव रहनेसैं वर्तमानकी विद्या नष्ट होजातीहैं । क्योंकि उपद्रवसै नैं तो किसीकी स्थिति रहै, नैं बिद्याका प्रचार रहै और उनके धारण करनेवालेभी नष्ट होजातेहैं और पिछली जो छोटी सन्तान बडी होतीहै वो बिनाबोध ग्रंथोंका आदर नहीं देते तब वो बिद्या लोप होजातीहै । पीछे समयपाके राज्यका बन्दोबस्त ठीक होजाताहै । जब महापुरुष प्रगट होतेही रहते हैं वे नये ब्याकरण, कोश, काव्य रचके जगत्के हेतु कर्म उपासना परमेश्वरकी प्राप्तिका योगमार्ग बर्णन करतेहैं । जब बिद्याका औजूं नवीन प्रचार प्रगट होताहै । ऐसैंहीं वेदोंके ब्याकरण कोशादिसैं पहिलैं औरभी ब्याकरण थे, परन्तु वे कुसमय पाके नष्ट होतेरहे प्रगटतामैं वेदोंकाही रहगया, अब हालमैं उनकाभी प्रचार बहुत कम होगया । वेदोंके ब्याकरण कोशादिककों कोई नहीं पढते कोई दो च्यार पढेहैं तो क्या ज्यादा प्रचार नहींरह्या । क्योंकि वेदधर्मोंके बहुतकालपीछैं आदिकवि वाल्मीकमुनि प्रगट भये तब उनोंनैं अपनी काव्य प्रगटकरी यानैं नये संस्कृत वचनरूपी रचनाके अर्थ ब्याकरण, कोश, काव्य, अलंकार, अनुप्रास छन्दनकी चाल बनाके उनमैं जगत्के हेतु मरजादपूर्वक सब धर्म कर्म उपासना परमेश्वरके मिलनेंके मार्ग ज्ञानसिद्धान्तोंके ग्रंथ

प्रगटकिये। वे कुछ वेदधर्मसैं कम नहींहैं। मुनिनैं वेदोंके तत्त्वभी अपनें ग्रंथोंमैं भरदिये और अपनी निज अनुभव बहुतसी कही तब वाल्मीकके ग्रंथोंका प्रचार पृथ्वीपर बहुत फैलगया, वेदोंमैं अवतारनके कथनका तो जिकरभी नहीं और देवता ऋषियोंके नाम कम कथन कियेहैं। वेदोंसे ज्यादा वाल्मीकिनैं अवतार और देवता ऋषियोंके नाम कथन कियेहैं। ताउपरान्त वेदव्यासमुनि प्रगटभये।उन्होंनैं स्मृति शास्त्र पुराणादि बहुतसे ग्रंथ रचे और अपनें ग्रंथोंमैं चौबीस अवतार बहुतसे ऋषि मुनि और अनेक प्रकारके देवतानके नाम वाल्मीकिमुनिसैं बहुत ज्यादा कथनकिया और इनके बनायेहुये ग्रंथोंका पृथ्वीमैं प्रचार बहुत फैलगया। वेदोंकी केवल महिमाही रहगई। कोई २ पढतेहैं तो अपनें स्वार्थके हेतु कुछ अंग मूलमात्रही पढते हैं अर्थ कुछ नहीं जानते। पश्चात् या आर्यदेशमैं यवनोंका राज्य हुवा तब यवनोंके व्याकरण कोशादि किताबोंकी कदर ज्यादा हुई। जो उनकों पढे तिन मनुष्योंका राजाके आदर ज्यादा हुवा, ता उपरान्त अब हालमैं अंग्रेजलोगोंका यादेशमैं राज्य हुवा तबसैं अंग्रेजी व्याकरण कोशादि किताबोंका आदर ज्यादा होताहै और अंग्रेजी पढेहुये मनुष्योंकों बडे २ अधिकार मिलतेहैं। यवनोंके व्याकरणकी किताबोंकी कमकदर होगई और संस्कृत व्याकरणका तो बहुतही कम आदर होगया और या पृथ्वीमैं बहुतसी विलायतहैं, उन्होंमैं महापुरुषोंनैं

भिन्न २ व्याकरणोंसैं अनेक कर्म उपासनां ज्ञानोंका बर्णन कियाहै । हे प्यारा ! पृथ्वीपर अनेक व्याकरण प्रगट होहोके नष्ट होगये और अनेक अब हैं, और आगे महापुरुषोंके द्वारा प्रगट होतेहीरहैंगे ॥

अथ श्वेताम्बरी और ढूडियानका व्याख्यान बर्णन ।

हे प्यारा ! श्रावकमतकी एकशाखा श्वेताम्बरीनाम करके प्रगटहै वे अरिहन्तकी मूर्तिकों फकत जेवर पहिरातेहैं सोभी अनुचित करतेहैं अरिहन्तकी प्रतिमांकों जेवरसैं क्या प्रयोजनहैं त्यागमैं राग नहीं संभव, वे तो संसारसैं उदास रहतेहैं। ये वा मूर्तिकों वस्त्ररहित जेवर पहिराके ओसवाल, पोलवाल, नाम करिके बैश्यलोग सेवा करतेहैं । इनमैंसैंहीं जती नाम धरके बैराग्यमतमैं रहतेहैं, सो इन्होंका कुछ बैराग्य नहीं । बडे जंत्र, मंत्र, झूंठे प्रपंच करतेहैं और त्यागी नाम धराके धनका संचय करतेहैं । सो इनका क्या हाल कहूं ये तो धनके दासहैं और धनकी लालसा सब अैब बुराईयोंकी जडहै । बडे छिपेहुये अनुचितकर्म करतेहैं और जे बैराग्यकों धारण करके धन रखतेहैं उनका कुछभी त्याग बैराग्य नहीं है और हे प्यारा ! श्रावकमतमैंहीं एक ढूडियामत चलाहै सो नाम तो ढूडिया परन्तु कुछ सत्यताकों नहीं ढूडते ऐसे अनुचित कर्म करतेहैं जिनका कुछ प्रमाण नहीं । अल्पाधि-

कारी मनुष्योंकी कहांनी कहके सेवकोंकों कथा सुनातेहैं। श्रावकधर्मके शास्त्र पुराणभी नहीं पढते। मन्दबुद्धि मनुष्योंके कहेहुये वंचन पढतेहैं सुनातेहैं और मुखके कपडा बांधके पुन्छी रखतेहैं, क्योंकि मुखकी हवासैं जीव मरतेहैं तो विचार करनां चाहिये नासिकाकी हवासैं क्या नहीं मरतेहोंगे और जो बोलनेंसैं जीव मरतैहैं तो शरीरके हलने चलनें का क्या ठिकानां है। इनके मतका तात्पर्य देखतैं तो मनुष्योंका जीनां है सोई हत्याका कारणहै, क्योंकि जबतक जीवेंगे तबतक बोलनां डोलनां तो क्या इनके सिवाय सबकाम करनें होतेहैं तो ऐसी भारी हत्यासैं कैसें उद्धार होसक्ताहै इसवास्ते आत्मघात करिके मरनां अच्छाहै, सो एतो ऐसाही करतेहैं परन्तु बहुत काल जीके बहुत भारी हत्या कुमाके कुछ थोडीसी जिन्दगी रहै जब अपनां मरण नज़दीक समझके कोई २ अन्न, जल छोड देताहै तब सूक२ के क्लेश पाके अहंकारके बलसैं प्राण त्यागतेहैं और बहुतसे तरुणावस्थामैं बैराग्य लेके घरसैं निकलजातेहैं और मलीन जल धोवनका, हातनके मैलका, जिसमैं बहुतसी चींटी मक्खी मरजातीहैं वाकों नितारके पीतेहैं, परन्तु रोटी अच्छी उमदा खातेहैं, उनके सेवक अपनें खानेंमैंसैं या कोई पकवांनमैंसैं दे देतेहैं और शीतकालमैं एक वस्त्रसैं कोई मकान ग्रामके भींतरहो वामैं घास बिछाके लुके रहतेहैं, परन्तु एकान्त स्थानमैं नहीं रहते ग्रामके भींतर ही रहतेहैं क्योंकि

धोवनका जल ग्राममैंही मिलताहै और ऊंमरभर स्नान नहीं करते क्योंकि ये मत कमजलभूमि मारवाडमैंसूं प्रगट हुवाहै, कहतेहैं कि ज्यादा पानीं खरच नहीं करनां पाप लगताहै सो विचारकरो कि पानीके खरच करनेंमैं क्या पापहै?पृथ्वीमैंसैंहीं आताहै,पृथ्वीमंहीं गिरताहै,तुम निर्मल होजाते हो,ये नफाहै और एक वस्त्र धारण करतेहैं फिर उसकों धोतेनहीं, पसीनैं शरीरके मैलकी बदबोसैं वो वस्त्र भरजाताहै और नाकका मैल और मुखके खकारकों जमीनमैं नहींडालते, ऐसा बिचार करिके कि, इसमैं जीव पडजायँगे अथवा कोई जीव इसके चेपमैं आके मरजायगा, ऐसा बिचार करिके अपनें ओढनेंके कपडेमैंहीं मललेतेहैं,परन्तु मूतनेंसैं तो जीव मरतेहीहैं यामैं चूकगये और जब ये फरागत जातेहैं तब मलकों लकडीसैं बखेरदेतेहैं परन्तु ये नहीं सोचते कि लकडीके छेड़नेंसैं यामैं जे जीवहैं सो मरजायँगे और ये जो तुमनैं पेट मैंसूं मल बाहर पटकदिया इसमैं बहुतसे जीव पैदा होकर मरजायँगे वा पापके भागी तुम होवोगे और जो तुम अन्न, जल खाते पीते हो वासैं पेटमैं और शरीरमैं वहुतसे जीव पैदा होके मरते हैं वो पाप तुमकों लगेगा, जो तुम अन्न, जल नहीं खावो पीवो तो या पापसैं वचजावोगे और जब इनके शिरपर केश वढजातेहैं तव नोच २ के उपाड. गेरते हैं । हे प्यारा ! ये ऐसा विचार नहींकरते कि, हम या मनु-

ष्यशरीरकों पाके कैसी कुचालमैं लगगये, तमाम ऊमर कष्ट पातेहैं और हत्याही हत्याकरनां भासताहै, आत्मज्ञानका कुछ लाभ नहींहोता और या कष्टके भोगनेंसैं ये तामसी होजातेहैं। वहुत जल्दी इनकों क्रोध आताहै और सेवकोंकों येही उपदेश देतेहैं कि, कहीं कुवा बावडी मत खुदावो, नैं कही धर्मशाला बनावो, नैं कहीं जलकी प्याऊ लगावो, इन कर्मोंसैं वहुतसे जीव मरतेहैं और पुन्छीसैं जमीन झाडके, मुखकों बांधके, नोकार मंत्रका जप करो और बिचारी स्त्रीनकोंभी येही उपदेश देतेहैं, वेभी मुख बांधके नोकार मंत्र जपतीहैं और कोई २ वैराग्य लेलेतीहैं, नोकार मन्त्रका ये तात्पर्यहै कि-यामैं अरिहन्तादि सिद्धोंकों प्रणाम है सो केवल बचनसैं उनके नामकों प्रणाम करनेंसैं अल्प लाभहै, उनकों खोज करिके प्रत्यक्षमैं पाके प्रणाम सेवा करनां योग्यहै जासैं इस जीवका कल्याण होवै और ये विचार नहीं करते कि और जीवनकों सतानेंसैं पाप लगताहै तो अपना जो जीवकों हम अनेक अज्ञानताके कर्मनसैं दुःख देतेहैं इसका कितना बडाभारी पाप होवैगा। स्थूलकों दुःखदैनेंसैं क्या सूक्ष्मशरीर शुद्ध होताहै। हे प्यारा! स्थूलशरीर तो सूक्ष्मशरीरका घरहै। स्थूल जो कर्म करताहै सो तो सूक्ष्मकी प्रेरणासैं करताहै, स्थूल बिचारेनें क्या अपराध किया, जैसा सूक्ष्म कर्म करवाताहै ऐसा करताहै, सो

सूक्ष्मकों सब पापनसैं बचाना चाहिये, यासैं पाप नैं होवैं। स्थूल सैं तो स्थूल चींटीआदि बहुतसे जीव नष्ट होतेहैं ऐसा सृष्टिका नियम नियत अनादिकालसैं है और यह जीव तो चिरंजीवहै ये तो मरताहीनहीं। सृष्टिका प्रवाहही ऐसाहै कि, सृष्टिसैं सृष्टि उपजतीहै, पालन होतीहै और नष्ट होतीहै। यामैं कोनकों पाप लगा, उसकों लगताहै जो इच्छाकरिके किसीकों अहंभावसैं दुःख देतेहैं वे पापके भागी होतेहैं और जे स्वतःसिद्ध जो स्थूलके व्योहारहैं डोलनां, बैठनां, बोलना, खाना, पीना सो तो याके पालनेंके निमित्तहैं उनकों अज्ञानताके हठसैं यथायोग्य नैं करै तो यह जो जीव या शरीरमैं वास करताहै ताका सबसैं बडाभारी पाप लगताहै क्योंकि सबसैं भारी हत्या मनुष्योंके जीवकों दुःखदैंनाहै। इसी हेतुसैं ऐसे पापीकों राजालोग यहांई सजा देतेहैं। हे प्यारा! जीवकी दोसंज्ञाहै जडसंज्ञा और चैतन्यसंज्ञा, जडसंज्ञा जीवोंके दो भेद हैं एक तो बहुत किसमके अन्नादि बीज, दूसरी बीजही जलका संजोग पाके हरे होके बढतेहैं, फूलतेहैं, कुमलातेहैं और बीजोंमैं चैतन्यजीवभी प्रगट होतेहैं और चैतन्यकी दो संज्ञाहै, चैतन्यसैं जडसंज्ञाभी होजातीहैं, जैसै मैंडक, गिजाई, गिडोलाती आदि अनेकजीव चैतन्यसैं जडसंज्ञा होजातेहैं, पीछे समय पाके ओजूं चैतन्य होतेहैं और हे प्यारा! पशू पक्षी आदि सब देहनमैं मनुष्यदेह श्रेष्ठहै। याका जीवकों दुःखदैंनां क्या अपना क्या

बिरानां सो सबसैं अधिक पापहै और याकी रक्षाकरना सो सबदयानमैं प्रधान दयाहै। अहंकार करिके अज्ञानताके हठसैं अजोग कर्म करके दुःखदैनां नहीं चाहिये। ये नरदेह सबसैं श्रेष्ठहै जैसैं स्थूलशरीरमैंसैं कोई केश उपाडले, अथवा अंगुली काटले, तथा हात,पाँव, काटदे सो केश उपाडनेका पाप कमहै,वासैं ज्यादा पाप अंगुली काटनेका है,यासैं ज्यादा हात पाँवनकाहै परन्तु सबसैं ज्यादा पाप नेत्र फोडनेका है, सो जैसैं शरीरमैं नेत्र श्रेष्ठअंगहै ऐसैं सबशरीरोंमैं मनुष्य शरीर श्रेष्ठहै याका जीवकों अज्ञानताका कर्मोंसैं हठ करिके जे खाने पीनें, वस्त्र स्नानादिका दुःख देतेहैं वे ज्यादा पापी हैं। याकों दुःख मतदेवो,स्थूलकों दुःख दैनां ये बडी अज्ञानता है। याके भीतर जो सूक्ष्मशरीरहै ताकों पापनसैं बचावो अर्थात् स्थूल संबन्धी कर्मोंकी लोलुपतासैं बचाके आत्मज्ञानका साधन करो, ये जो सूक्ष्म मन, बुद्धिरूपी शरीरहै यासैं स्थूलके युक्त कर्म करवाके यानें खाना, पीना, शाच, स्नान, पवित्रस्थान, स्वच्छवस्त्रादिसैं पालन पोषण करनां और सब कर्म यथायोग्य वरतनां। अयुक्त जो ज्यादा विषय चाहताहै वा पापसैं बचावो और या शरीरकों आवश्यक कर्मताकरनांहीं योग्यहै, उनकों नैं करै तो पापका भागी होताहै। क्योंकि जीवात्मा दुःख पाताहै और आवश्य कर्म तो इन इन्द्रियोंकों भी करनें पडतेहैं, परन्तु उन कर्मों-

कों ये मलीनतासैं करतेहैं, मलीन पानी पीतेहैं, जो इनका कथन पूर्व कहआये वे सब कर्म मलीनतासैं और क्लेशतासैं करतेहैं सो इन कर्मोंका येंही फलहै कि दुःख पातेहैं, केवल झूंठा अहंकार करिके आपेको अहिंसक मानतेहैं,बडे गरूरमैं रहतेहैं और मनुष्योंकों पापी समझतेहैं, परन्तु ये निज जीवकों दुःख देनैंवाले आत्मघाती बहुत बडे पापी हैं। हे प्यारा ! जो श्वेताम्बर अरिहन्तनैं उपदेश कह्याहै वाका तात्पर्यकों भूलके स्थूलकों दुःख देनेके कर्मोंमैं लगरहेहैं सो ये श्वेताम्बरी नहीहैं जो या शरीर नाशवांनपर श्वेत वस्त्र पंहिरतेहैं, ये वस्त्र तो चाहे श्वेत पहिरो, चाहे पीतपहिरो, ये तो शरीर और वस्त्र दोनूं नाशवान् मलीनहैं। आरिहन्त महाबीर तो मालिन बृत्तियोंकों हतन करिके बिशद स्वच्छ शान्त जो श्वेताम्बर निर्बाणपद है ताकों धारण करतेहैं, तासैं दिगम्बरी और श्वेताम्बरी हैं। ऐसे जे अरिहन्त श्वेताम्बरी महाराजहैं उन्होंनैं ऐसा उपदेश आदिपुराणादिकमैं दियाहै कि ये जों शरीर स्थूल नाशवान् मरणस्थानहै याके नाशवान् भोग कर्मनके संग जीव जाताहै सोई जीवका मरनां है और आत्मज्ञानकौं जीव धारण करताहै येही जीवका जीवनांहै। सो हे प्यारा ! या पुद्गलके संग अजुक्त कर्मनसें जानां यही जीव मारनैंका पाप हो ताहै। क्योंकि इसके संग लोलुपतासैं अजुक्त कर्मनसैं जाना यही निज

जीवका मारनाहै, सो निज जीवकौं वचावै यानें लोलुपता-
सैं याके संगमैं नें जावै और आत्मज्ञानका साधन करै यही
निज जीवका वचानाहै। सो हे प्यारा! अष्टांगयोगका साधन
करै अर्थात् यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्या
हार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८, यम नियम कहा
ज्यादा विषयनके कर्मनमैं नैं उरझै, शरीरकी जरूरतके मा-
फिक बरतै, इतनां कि जामैं शरीरकौं क्लेश नैं होवै यही यम
नियम हैं और यम इनकाभी नामहै शौच १, ब्रह्मचर्य २,
अहिंसा ३, आर्जवता ४, अचौर्यता ५, ये पांचहैं और नियम
येहैं सत्य १, धैर्य २, जप ३, तप ४, सन्तोष ५, ये पांचहैं। इनकौं
धारणकर षट् अंगनका अभ्यास करिके जीवात्माकों परमा
त्मामैं लयकरै सो ये तीन शरीरहैं। स्थूल १, सूक्ष्म २, कारण
३, सो आसन प्रत्याहारके साधनसैं स्थूलकी वृत्तिनकों तो
सूक्ष्ममैं लय करै और सूक्ष्मकौं प्राणायाम धारणा ध्यान केव-
लसैं कारणमैं लय करै, जैसैं जाग्रत् १, स्वप्न २, सुषुप्ति ३, तीन
अवस्था हैं। जाग्रत् तो स्थूलसम्बन्धी, स्वप्न सूक्ष्म सम्बन्धी,
सुषुप्ति कारण संबन्धी है, सो तीनों अवस्था तुरीयास्वरूप
जो अरिहन्तकी समाधिहै तामैं लय होजातीहैं अर्थात् जाग्र-
तमैं प्राणायाम धारणा ध्यानसैं सुषुप्ति होनां सोई तुरीया
समाधिहै। वहां अनहद बाजे वजतेहैं और अनन्त सिद्धी,
अनन्त दर्शन, अनन्त विलास, मोक्षसिलास्वरूप, सुमेरु जो

पीठका अस्थिहै ताके ऊपर दशवां द्वारके भीतर अरिहन्तका स्थान है, वहासैं परे निर्वीज समाधि सिद्धनका स्थान जाकों स्थानभी नहीं कह्याजाय ऐसा अकह, अपार, अवाच्य, अरूप, अनाम है ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनामंगलसंवादे आसुरीदैवीप्रकृतिश्रावकधर्मदिगम्बरीश्वेताम्बरीव्याख्यानवर्णनो नामाष्टमप्रकाशः ॥ ८ ॥

अनाम उवाच।

हे प्यारा! ये च्यार सम्प्रदायवाले आचार्यैंनैंभी दो अधिकारकी सीढीनका ज्यादा उपदेश दियाहै और लोहेकी छापनकों अग्निमैं लाल करिके बहुतसे मनुष्यनके स्थूल शरीरकों वृथा दागतेहैं वे महीनान क्लेशका नरक भोगतेहैं और एक विष्णुकी उपासनामैं च्यार भेद करदिये और ये च्यारूंही परमेश्वरसैं अपना दासभाव रखतेहैं। परन्तु दासतो घरमैंसैं निकालभी दियाजाताहै पुत्र नहीं निकालाजाता। सो तुम तो ऐसाभाव रक्खो कि हम परमेश्वरके पुत्रहैं, क्योंकि वो सबका पिताहै, प्रेम बधानेके वास्तै परस्पर एकका एक सेवक बनों और जब सम्प्रदाई आचार्योंका उपदेस मूर्तिपूजाका जगत्मैं बहुत बढगया तब योगमार्गका उपदेश नहींरह्या। जब परमेश्वरके सगुण

अवतारोंनें अवधूतसंज्ञामैं प्रगट होके योगमार्गका उपदेश भाषावाणीमैं प्रगटकिया. कवीर,नानक, दादू, रज्जब, सुन्दरदास, गरीवदास, चरणदास, लालदास, रैदास, सत्यनामी,परनामी आदि इन्होंनें अपने वचनविलासमैं प्रथम अधिकारकी सीढीकों न्यून दिखाके योगमार्गकी महिमा करी और उन्होंनें नहीचाहा कि, हमारा कोई जगत्मैं पंथ चले, वल्कि भेषकेसी वचनसें ताडना दीहै, क्योंकि ये तो कारक अवतार नहींथे अवधूतथे, निरइच्छा निर्वाणथे, परन्तु इनके पश्चात् और लोग इनके नामके ऊपर भेषधारी होगये और आपसमैं कहनेंलगे कि,हम फलानेंपंथीहैं। सो ऐसेंही सबका भेष चलगया और गृहस्थीलोग इनकी सेवा करनेंलगे उन महापुरुषोंनें पंथ नहीं चलाये,नैं किसीकों वाह्यव्योहार करिके चेलाकिया; ये तो उनके नामपै आपही पंथ खड़े हो गये वे महात्मा पुरुष तो अचाह ब्रह्मानन्दमैं मग्नथे, अपनें वचनोंमें योगमार्गका उपदेश की सैंन देतेथे, सो जोग तो किसी विरलेनैं धारण किया सो संसारमैं गुप्तता सैं रहे और भेषोंके लसकर होगये सो छुड्याणीवाले गरीबदास अपणी वाणीमैं कहतेहैं।

दोहा-गरीबभेषोंके लसकरफिरैं, वाणीचोरकठोर ॥
सतगुरुधामनपरसही,चौरासीकेढोर ॥ १ ॥

अथ दयानन्दसरस्वतीका व्याख्यान वर्णन.

मंगल उवाच ।

हे स्वामी! हालमैं एक आर्यसमाजमत और प्रगट हुवाहै उनका एक दयानन्दसरस्वती नाम करिके आचार्य हुवाहै, उसनैं सबकी निन्दा करीहै, किसीकों सच्चा नहीं बताया सब धर्म, मजहब, मत, पंथ, मार्ग झूठे बताये कि, ये सब पोपहैं और मैं सच्चाहूं, सो इस मतमैंभी बहुतसे वर्णाश्रमी होगयेहैं। वे सबधर्मनकों पोप समझतेहैं, सो इनका व्याख्यान कृपाकरिकै वर्णन करो।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! ये दयानन्दसरस्वती नाम करिके जो था सो बाह्यविद्याका पढाहुवा था यानैं संस्कृत विद्यामैं प्राचीन जो वेद शास्त्र हैं उनके पढनेमैं ज्यादा श्रम किया और पढके मनन किया। उस विद्याका याकों अभिमान होगया सो तरुण अवस्थामैं पहिलैं गृहस्थ धर्मतो साधा नहीं और विनां गृहस्थके वानप्रस्थ नहींहोता और वानप्रस्थ विनां संन्यास नहींहोता, ये तो अधिकार प्रतिअधिकार शरीरकी अवस्थाके साथ हैं। ये पहिलैहीं संन्यासी होगया, जैसैं विनासमय वृक्ष नहीं फलता, चाहै जितना जल सीचैं ऐसैंहीं शान्त संन्यासभी समय पाके प्राप्त होताहै। बाजे बाजे मनुष्य अज्ञानतासैं कहतेहैं कि ये पिछले जन्ममैं

गृहस्थाश्रम वानप्रस्थ करिपाये। इस जन्ममैं संन्यास किया है सो ये कहनां उनका अयोग्यहै ये धर्मतो शरीरकी अवस्थाके साथ बांधेगयेहैं, सो तरुण अवस्थामैं तो गृहस्थाश्रम करनां योग्यहै। हां पिछले पापकारिके या अयुक्त क्रियमाणके कर्मनसैं विवाह नैं होसकै तो वे पुरुष भ्रष्टाश्रमी कहलातेहैं। देखो योगवासिष्ठमैं प्रथम प्रकरणमैं चौदहसर्गके अन्तमैं लिखाहै कि, जैसैं आकाशमैं वनहोनां असंभवहै, एसैंही यौवनअवस्थामैं वैराग्य विचार शान्ती सन्तोष होनां आश्चर्यहै। इति। और जे तमाम ऊमर ब्रह्मचर्यमैंही रहतेहैं वे नैष्टिक ब्रह्मचारीकहलातेहैं और ब्रह्मचर्यसैं संन्यास नहीं होसक्ता, क्योंकि संन्यासनाम त्यागकाहै विना-ग्रहणकिये क्या त्यागै और ये दयानन्द शास्त्रनमैं कुछ वेदविचारमैं और पढेहुये मनुष्यनमैं ज्यादा वाचाल था, क्यौंकि याका मनन अच्छा था इसी सबबसैं और जो पंडित जिनका मनन कम था वे यासैं चर्चा करनेमैं दब जातेथे। जब तो रजोगुणी लोगोनैं इसका बडा आदर किया। तब तो याकों बाह्यविद्याका बडा अहंकार होगया। जहां तहां राजस्थानोंमैं विचरनेंलगा और चर्चा करनें लगा। सो बहुतसे पढेहुये मनुष्य यासैं दबगये, क्योंकि याका मनन अच्छाथा सो हे प्यारा! स्वरूपकी प्राप्तीमैं चार अधिकार पहिलैं कहेगये हैं श्रवण १ मनन २ निदिध्यास ३ साक्षात्कार ४ सो या दयानन्दके दो अधिकार तो अच्छे होगये

श्रवण १ और मनन २ आगे दो अधिकारपै याकी गम्य नहीं हुई,वे पूरे सच्चेगुरू योगसिद्ध मिलैं जब प्राप्त होतेहैं सो या दयानन्दनैं बाह्यविद्याका घमण्डसैं उनका खोजनहीं किया इस हेतुसैं ये अल्पअधिकारी बडेअधिकारसैं अजांन रहग-या। सो हे प्यारा! सो निदिध्यास और साक्षात्कार ये दो अधिकार योगसिद्ध सच्चागुरुकी सेवासैं प्राप्त होतेहैं।

अथ शारीरिक, आत्मिकअर्थनका निर्णय वर्णन।

हे प्यारा! वेदशास्त्रपुराण आदि जो ऋषि मुनियोंनैंकहे हैं उनके दोअर्थ होतेहैं शारीरिक और आत्मिक सो शारीरिक अर्थतो पढेहुये पण्डितआदि लगादेतेहैं, परंतु आत्मिक अर्थ तो योगसिद्ध महापुरुषोंकोही मालूम होताहै,सो भागवत मैं वेदव्यास मुनिनैं दशमस्कंधमैं बडी गूढतासैं वर्णन कियाहै अर्थात् शान्तरसकौं शृंगाररसमैं वर्णन किया सो ये गूढता योगीकी योगीही जानताहै,इन बिचारे देहाध्यासी शारीरि-कोंको कैसैं मालूम होवे? देखो श्रीकृष्णनैं जिससमय रास कियाथा वा समयकी दशवर्षकी अवस्था वर्णन करीहै और राधारानीकी सातवर्षकी कहीहै तो विचार करो उस उमर-मैं शारीरिक विषय कहां उदय होतेहैं और ये पण्डित यालीलाकों शारीरिक मानके अर्थ करतेहैं। जो यों कहो कि पीछे वे तरुण होजातेहैं सो बात कहनां अनुचितहै, छल

करनां तो असुरनका कामहै और विचार करिके देखो तो घट २ मैं ईश्वरकी शक्तीही सब भोगविलास करतीहै। जो यों कहो कि श्रीकृष्ण छल, चोर, जार कर्म करनैंवाले अवतार थे सोभी कहनां अयोग्यहै। ईश्वर होके खोटा कर्म करै तो और कौंन अच्छा करैगा। जो यों कहो कि "समर्थकों नहिं दोष गुसांई। रवि शशि जल पावककी नांई।" सोभी कहनां नहीं सम्भवै। रवि, शशि, जल, पावक, परमेश्वरकी रचना हैं उनकों क्या सामर्थ्यहै ये तो आपही कलंकितहैं। पुरांणनसैंही लिखाहै कि चंद्रमांमैं गौतममुनिके शापसैं कालापन है और राहु केतु क्रांतिहीन करतेहैं। जलमैं काई दुर्गंधताका शाप लगाहै। अग्निमैं धूंवां उठनेका शापहै और समर्थ होके नीचकर्म करै तो क्या असमर्थ श्रेष्ठ करैंगे। और गीतामैं कृष्णचंद्रनैं कह्याहै कि जो मैं विधिवत् कर्म नहीं करूं तो क्या मैं प्रजाकों भ्रष्ट करनें आयाहूं और जो वडे कर्म करतेहैं सोई छोटे करतेहैं। हे अर्जुन! मोको कर्मकरिके कहा लैनोंहै तोभी प्रजानिमित्त कर्त्ताहूं। जो वडे आचर्ण करतेहैं सोई छोटे करतेहैं। सो कृष्ण तो महायोगेश्वर परब्रह्मस्वरूप हैं। राधानाम प्रेमाभक्तिकाहै, गोपीनाम शुद्ध श्रुतिनका है, कामदेवका नाम कंसहै, वृंदावन नाम मस्तकका है, सो आत्मिक अर्थनकों आत्मिकही जानतेहैं। ये बाह्य पण्डित कृष्णमैं शारीरिक भाव करिकै अर्थ करतेहैं सो येभी व्यभिचारी होगये और

श्रोता विशेष होगये और स्त्री सुण २ के डूबहीगई यह अर्थ समझके संसारमैं बडा अनुचित कर्म बढगया । फागुणके महीनेमैं सब वृजके रहनेवाले जमींदारभी आपसमैं अनुचित वचन बोलतेहैं और कामक्रीडामैं डूबजातेहैं और दशमस्कन्धका पण्डित शारीरिक अर्थ कर २ के कामदेवके ध्यानमैं रत होजातेहैं और स्त्री पुरुष ईश्वरकों कामी समझ के कामरूप होजातेहैं और इन अर्थनकों सुण २ के वडे प्रसन्न होतेहैं, क्योंकि इनके मतलबका कथनहै सो हे प्यारा! वेदव्यास मुनिनैं तो यह विचार करिके शान्त रसकों श्रृंगाररसमैं कह्याथा कि कामदेवके ध्यानमैं स्त्री पुरुषनको ज्यादा संयमनहीं करना पडताहै। कामक्रीड़ामैं तो सहजमैंही रत होजातेहैं ऐसा विचार करिके ईश्वरकों महारसिक बणाके शान्तरसकों श्रृंगाररसमैं वर्णन कियाथा कथा को सुणके संसारी मनुष्य ईश्वरके प्रेममैं मग्न होजावैंगे सो इनका कल्याण तो थोडेनका हुवा जो ईश्वरके प्रेममैं मग्न होगये और बिगड़ बहुतगये सो कहतेहैं कि "गडवा-घडतैं होगई भेर । कहा कहूं राजासों फेर"॥ सो हे प्यारा! जासो तो रामचंद्रकी कथानमैं मरजाद हैं वाको सणके लोग मरजादमैं रहतेहैं, जैसे वहते पांणीके पाल बांधदीनी ऐसी कथाहै। एक स्त्री रखनी वडे छोटेका अधिकार मरजादपूर्वक कथन कियाहै कथा तो दशमकी अतिगूढ अतिउत्तम आनन्द विलास आत्मारामका वर्णन कियाहै परन्तु

शान्तरसकों शृंगाररसमें कहदिया सो वासमय ईश्वरकी ऐसीही मरजी हुई कि आपेकों लीलाकरिकें प्रसिद्ध करों। सो हे प्यारा! अवतारोंनें स्थूल देहमें सूक्ष्म देहसें सब लीला करीहैं इन भेदनको योगीराज जानतेहैं जगत् उनकों स्थूल समझके भक्ति करतेहैं, सो ऐसा करना मुनासिबहै, ऐसी-भक्ती करतें २ असल तत्त्वकों भी पाजायँगे जे बाहरकीभी भक्ति नहीं करतेहैं वे पशूहैं बडी भक्तिके लायक नहीं छोटी करते नहीं वे दोनूसें हीन हैं। सो ऐसी जो महागूढ कविता योगिराजनकी है सो या दयानन्दके समझमें नहीं आई। क्योंकि ऐसी गूढता आत्मिकलोग जानसक्तेहैं ये दयानन्द शारीरिक था और इसने वेदमें और पुराणनमें पृथक्ता समझके कह्या कि ये पुराण सब झूठेहैं. क्योंकि याकी पुराणनके गम्भीर आशयनतक गम्य नहीं पहुंची, इसकी श्रवण मननतकही गम्य थी निदिध्यास और साक्षात्कार रहगया सो पढनेवालों की सब पंडिताई मननतक है जाका मनन विशेषहै वोही सब पण्डितोंमें शिरोमणि कहलाताहै और निदिध्यास साक्षात्कार तो सच्चे गुरु नरहरि सगुणस्वरूप महायोगी मिलैंगे वे कृपा करेंगे जब जानैंगे उनकी कृपासे निदिध्यास और साक्षात्कार होजावैगा तब आत्मिक अर्थनका तात्पर्य प्रगट होवेगा इस हेतुसें दयानन्दकों गूढ अर्थनका तात्पर्य नहीं मालूम हुवा और इसका पण्डितोसैं और सब धर्म मजहबीयोंमें विरोध होगया

क्योंकि इसने सबको झूठे बताये जव दयानन्दने वेदनको मुख्य रखकर उनके अर्थ अपनी वुद्धिके अनुसार करिके सत्यार्थप्रकाश नाम ग्रंथ वनाया और वामैं बहुतसी आज्ञा मतचलानेकी वर्णन करी और कह्या कि मंत्र बोल २ के अग्निमैं नित्य हवन कियाकरो ये वेदका मुख्य धर्महै। याके करनेसैं अग्नि और देवता तृप्त होतेहैं और आकाशका पवन शुद्ध होताहै। हे प्यारा! विचार करो कि इनके तुच्छ हवनसैं अग्नि और देवता कैसे तृप्त होवैंगे और ऐसा कहना कि हवनसैं आकाशका पवन शुद्ध होताहै ये पोप उपदेशहै, ये तो ब्रह्माण्डकी सुगंध दुर्गंधसैं सदा मिश्रित रहताहै और देखो संपूर्ण पृथ्वीमैं चूल्हे भट्टीन करिके लाखों मणि चिकनाई रोजीना अग्निमैं हवन होतीहै वासैंभी अग्नि तृप्ति नहीं होता और मंत्रनके पढणैंसैं देवता हवी लैनेंकों आतेहैं इस वातकी क्या प्रत्यक्षताहै। फकत तुम्हारे मनका संकल्पहै कुछ सवूत नहीं और तुम अपना घृत थोडा या घना वृथा अग्निमैं क्यों जलातेहो? जासैं तो वा घृतसैं भोजन वनाके श्रेष्ठ पुरुषोंकों जिमादियाकरो, उनके शरीरके देवता तृप्त होके तुमकों आशीर्वाद देवैंगे और उपदेश देंगे जव तुम्हारा कल्याण होवेगा। हे प्यारा! वेदोमैं वहुतसे रोचक वचनों करिके पोपकर्म कहेहैं यानें मिथ्या कहेहैं सो दयानन्दकों मालूम नहीं हुये।

प्रश्न—हे परमप्रकाशी क्या वेदोमैंभी मिथ्या कथन है ? ।

उत्तर—हे प्यारा ईश्वरस्वरूप महापुरुषोंका कथन कोईभी मिथ्या नहीं परन्तु परमेश्वरकी दो शक्तिहैं सत्य, असत्य, ऐसा लिखाहै। "सदसच्चाहमर्जुन" सो क्या वेद, क्या पुराण, क्या शास्त्र, किताबें, ग्रंथ, मनुष्योंके उपदेशके निमित्त सब सांच झूठके संबन्धसैंही रचेगयेहैं और आगेको जे रचैंगे वेभी इनही के संबन्धसैंही रचैंगे वे सब रोचक, भयानक, यथार्थ, तीन शब्दों करिके हैं सो तीनों शब्दोंमैं यथार्थ जो सत्यहै तामैं स्थिर करनेंके अर्थ रोचक भयानक शब्द कहेजातेहैं और सब सृष्टिभी सत्य असत्य करिके प्रगटहैं, देखो देहादिक असत्यहैं परन्तु जबतक बनरहेहैं तबतक सत्यसे प्रतीत होतेहैं, सदेव सर्वशरीर चराचरोंमैंसैं नाश होतेहैं ये असत्यता है प्रगट होतेहैं ये सत्यताहै और कहतेहैं कि वेदोंके सब ग्रंथोंमैं प्रमाण दियेजातेहैं, वेदोंमैं किसीका प्रमाण नहींहै । हे प्यारा ! ऐसीही तो रैतकिताब मूसा पैगम्बरकी कहीहुईहै वामैंभी किसीका प्रमाण नहीं दियाहै, वाहीका प्रमाण सब किताब जबूर, अंजील, कुरानमैं दियेहैं और चारवाक आचार्यके कहेहुये शास्त्रोमैंभी किसी का प्रमाण नहींहै ।

प्रश्न—हे महाप्रभो! वेद पुराणोंमैं कह्याहै और दयानन्दनैं सत्यार्थप्रकाश ग्रंथमैं कह्याहै कि वेद और सृष्टि ईश्वरनैं रचेहैं वेद सृष्टिका कर्ता ईश्वरहै ।

उत्तर—हे प्यारा! वो जो कुछहै सो अवाच्य आश्चर्यहै वो नैंतो रचैहै नैं बिगाड़ैहै यह चराचर सृष्टि अनादिकालसैं स्वतःसिद्ध प्रगट होतीहै और याहीमैंसैंविनाश होतारहताहै प्रवाह करिके सदा नित्यहै और जैसा कुछ याका स्वतः सिद्ध समय (काल) नियम उत्पत्ति नाशका है वैसाही बना-रहताहै बदलता नहीं और जे बदलनेवालेहैं वे बदलतेभी हैं। जैसैं जीवात्माकों कर्मोंके फल नरक स्वर्ग सुख दुःख हैं और लोक परलोकोंमैं आनेजानेका कथन महापुरुषोंनैं अपने वेदरूपी ग्रंथोंमैं वर्णन कियेहैं वे सव छोटे बडे ब्रह्मा-ण्डमैं स्वतःसिद्ध मरजादके अनुसार होतेहैं। ये सब कुछ दृष्टिगोचर अगोचरहैं इसका परमेश्वर कर्त्ता, हर्त्ता, भोक्ता नहीं, उसके प्रभावसैं सबकुछ स्वतःसिद्ध होरह्याहै जैसैं देहमैं चैतन्यको कुछ करना नहीं पड़ताहै सप्तधातु स्वतःबनतेहैं और जीना, मरना, स्वतःसिद्ध है॥ उस चैतन्यके सकाशसैं देहका संग पाके देहाध्यासी अहंकारहै सो अज्ञानदशासैं देहके कर्मोंका कर्त्ता भोक्ता बनरह्याहै और याके संग दुःख सुख पाताहै सो कर्त्ता भोक्ताका अभिमान देहाध्यासी अहंकारको है और अहंकार स्वतःसिद्ध अपनी सामर्थ्यके अनुसार पृथ्वीकी वस्तूनसैं और तत्त्वनके संयोगसैं अचम्भेकी नई २ रचना प्रगट करताहै सो कर्ता कहो तो याको कहो, परन्तु जाके प्रभावसैं चैतन्यहैं वो कर्ता भोक्ता नहीं वाके प्रभावसैं सवकुछ स्वतःसिद्ध होर

ह्याहै और जे वेद और चराचर सृष्टिको ईश्वरकी रचीहुई बतातेहैं उनसैं पूछो कि जब ये रचेगये तब क्या तुम उसवक्त मौजूद थे इसकी क्या सबूतहै ? ये तुम्हारा कहना मिथ्याहै और सत्यार्थप्रकाश ग्रंथमैं शंका करीहै कि ईश्वरके क्या मुखहै जासैं वेद रचे उसका दयानन्दनैं समाधान कियाहै कि क्या ईश्वर बिना मुखनहीं रचसक्ताहै याने रचसक्ताहै, तो विचारो कि जो ईश्वर विना देह वेद और चराचर सृष्टि रचताहै तो वाके वेदोंको सब पृथ्वीके मनुष्योंको ग्रहण करना योग्यथा फकत भरतखंडमैंही थोडेसे मनुष्योनैं कैसे ग्रहण किया क्या ईश्वरमैं ऐसी सामर्थ्य नहींहैं कि जो वाकी कहीहुई विद्याको ग्रहण नहीं करै. क्या उसके रचेहुये मनुष्य वासै प्रबल होगये अगर ईश्वरके कहेहुए वेद होते तो सब पृथ्वीमैं इनका प्रचार होता और सब पढते और आज्ञा मानते और वेदोंकी कोई निन्दा न करनेपाता और उसमैं निन्दा करनेके लायक कथनभी नहीं होता, सा बुद्ध अवतार और चार्वाक आचार्यनै वेदोंकी निन्दा करीहै और ईश्वर अपनी ईश्वरता प्रगट करनेके अर्थ ऐसा करता कि वेद सब पृथ्वीके मनुष्योंके हृदयमैं स्वतःही प्रकाश होजाते किसी मनुष्यसै नैं पढते अथवा वर्षदिनमैं एकदफै तो देवतानकी मारफत ये हुक्म पहुँचाया जाता कि सब पृथ्वीके मनुष्य अपने २ स्थानोंमैं

बैठजावो ईश्वर तुम्हैं वेद सुनावैगा और ईश्वर आकाश वाणीसैं सबको वेदोंका अर्थ समझाता और वो वाणी ऐसी गंभीर होती कि सब पृथ्वीके अन्त सिवानेंलों पहुंचती। तब ईश्वर जो वेदोंका कर्त्ताहै ताकी ईश्वरता कर्तापनेंकी प्रगट होती। अब हम कैसैं निश्चय करै कि ईश्वर सबका कर्त्ताहै क्योंकि कोई रीतका कर्त्तापना प्रत्यक्षमैं नहीं दीखता, जो तुम कहो कि अब कलियुगहै जासैं ऐसा व्योहार ईश्वर नहीं वरतता तो तुम अब कलियुगमैं वेद पुराण ग्रंथोंका क्या जिकर करतेहो अपने अन्याय कपट कलियुगका फल भोगो और जो ईश्वर चराचर सृष्टिका कर्ताहै और सब सृष्टिमैं मनुष्यदेह सबसैं अधिक श्रेष्ठ रचीहै तो मालूम हुवा कि कर्त्ता ईश्वरमैं दुष्टताभीहै कि मनुष्यदेह उत्तमकों दुःख देनेके वास्ते दुष्ट देहभी रचीहै। जैसैं साप वीछू कछले मक्खी मच्छर खटमल ज्यूं चीचडी आदि बहुतसे विष धारी जीव रचे। ये ईश्वरनैं वैर किया अगर अच्छे पुरुषोंकों उनका विष बाधा नहींकरता जो वेद धर्मोंको नहीं ग्रहण करतेहैं उनको बाधाकरता तोभी न्यायकर्तापना समझाजाता या कोई आकाशमैं आके आज्ञा उसकी तरफसैं करता बुरेनकों सजा देता वेदधर्मकों धारणकरनेवाले श्रेष्ठजनोंकों सुख ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी मिलती तो कर्त्तापना ईश्वरका मालूम होता सो किसी बातकी कर्त्तापनेंकी प्रत्यक्षता नहीं

फकत तुमही जबानसैं और पोथियोंसैं कर्त्तापना जारी करतेहो प्रत्यक्षतामैं कुछ नहीं दीखता सो ये कहना तुम्हारा कि ईश्वर वेद और सृष्टिका कर्त्ताहै सो मिथ्याहै। जो हम ईश्वरकों कर्त्तामानैं तो भोक्ताभी मानाजायगा और जो भोक्ताहुवा तो विकारवान् हुवा और सृष्टि दुःखदाईभी रचीहै यासैं दुष्टताभी उसमैं पाईगई, हे प्यारा! परमेश्वर कर्ता नहीं अनादिकालसैं स्वतः सिद्ध वाके प्रभावसैं मरजादके अनुसार सबकुछ होरह्याहै और हे प्यारा! वडा ब्रह्माण्डमैं नैं कोई सतयुगहै नैं द्वापर त्रेता कलियुगहै। ये कथन मनुष्यदेहरूप छोटा ब्रह्माण्डका है मनुष्योंके गुण वृत्तियोंके नाम च्यारयुगहैं जो बडा ब्रह्माण्डमैं कलियुग होता तो देखो अब वर्तमानकालमैं महापुरुष हरिभक्त प्रगट नहीं होते सो वहुतसे प्रगट हुयेहैं। कबीर, नानक, दादू, छुड्यानीवाले, गरीबदास, लालदास, चरणदास आदि वहुतसे हुयेहैं। और अब गुप्त प्रगटतासैं मौजूद हैं और होतेही चले जायँगे, श्रेष्ठ जनोंके कपटरूपी कलियुग नहींहै वे अपनी शुद्ध सतोगुणके साथ सतयुगमैं रहतेहैं। हे भ्रमनाशक! वेद पुराण शास्त्रोंमैं ऐसा कह्याहै कि, ईश्वर सबको रचताहै। सो येभी तो आपनेही कहेहैं और अब आप परमेश्वरको अकरता बतातेहो याका व्याख्यान अच्छीतरहसे कृपाकरिके कहो॥

उत्तर—हे प्यारा ! वेदपुराण शास्त्रोंमें जो कह्याहै वो छो ब्रह्माण्डका कथनहै तुमनें वाको बडेका समझरक्खाहै। जब ये मनुष्यशरीर उत्पन्न होताहै तब जीवात्माके प्रभावसै स्थूलशरीरके भीतर सूक्ष्मशरीर गुण इन्द्रियोंका संग पाताहै तब प्रपंचरूपी जगत् उत्पन्नहोताहै या मनुष्यदेहके भीतर वृत्तियांरूप सब सृष्टि उपजतीहै वाको योगी योग बलसैं सब गुण इन्द्रियोंका संयम करिके अपनी जीवात्माको परमात्मामें लय करताहै तब भीतरका सब जगत् नाश होजाताहै। योगी परम सुषुप्तिमें लय होजाताहै जब बाकी प्रपंच व्योहाररूपी सृष्टि लय होजातीहै परन्तु जीवात्माकी सुषुप्तिमें तो श्वास चलतारहताहै और योगीरूपी जो परम सुषुप्ति समाधिहै वामें श्वास नहीं चलता ऐसें ईश्वरस्वरूप योगी छोटे ब्रह्माण्डकी सृष्टिका नाश करनेवाला है। पश्चात् स्वतः उत्थानदशाकों महायोगी प्राप्त होताहै तब वासे सब सृष्टि छोटा ब्रह्माण्डमें उत्पन्न होतीहै इसहेतुसैं ईश्वरस्वरूप योगी सृष्टिकी उत्पत्ती विनाश करनेवालाहै तुम उस कथनको बडा ब्रह्माण्डका समझतेहो। हे प्यारा ! या बडा ब्रह्माण्डका हाल कौन कहसकताहै? क्योंकि मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं कि याको देखसकै। योगी योग-बलसै देहीरूपी छोटा ब्रह्माण्डमैं लोक परलोक अ र सब देहके अध ऊर्द्धके स्थानोंको देखकर कथन करताहैसो छोटा

ब्रह्माण्डका है या बडाब्रह्माण्डकी स्वतः सिद्ध रचनाको कोईभी नहीं देखसकता। चाहै अवताररूप योगीहो चाहै अयोगीहो परन्तु ये निश्चय करके जानो जो रचना छोटा ब्रह्माण्डमैं है सोई बडामैंहे ऐसे ईश्वरस्वरूप योगी वेद जो अपने स्वरूपका भेदकथन करताहे और छोटा ब्रह्माण्डकी सृष्टिको उत्पन्न और नाश करताहे इसीहेतुसे वेद और जगत् सृष्टिका करता ईश्वर कह्यागयाहे। हे प्यारा! या बडा ब्रह्माण्डका कर्ता हरता कोईनहींहे ये तो आदि अन्तसैं रहित सदैवसे जैसा स्वतःसिद्ध प्रगटहे ऐसा हमेशासे है तुम विचार नहीं करतेहो पहले गीतामैं कह्यागयाहे ॥

श्लोक २ गीताका अध्याय १५ ।

न रूपमस्त्येहतथोपलभ्यते नान्तोन चादिर्न च संप्रतिष्ठा॥
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढे न छित्वा ॥ १ ॥

अध्याय ५ श्लोक १४ ।

न कर्तृत्वं न कर्म्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ॥
न कर्म फलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ इति ॥

हे प्यारा! तुम तो वासै स्वतः सिद्ध सबकुछ प्रगट समझके उसको ऐसा समझो कि वो करता अकरता दोनूंहे। अकरता तो ऐसै कि वो कुछ नहीं करता, करता ऐसैहे कि वाके प्रभावसै सबकुछ स्वतः सिद्ध प्रगट होरह्याहे। ऐसै करता, अकरता, वाकौं

दोनों समझो ये सिद्धान्त सबसै श्रेष्ठहै और हे प्यारा! बाहिरकी विद्याके पढनेसैं शास्त्रोंके अंगोंसैं वाकिफ होजातेहैं और जो उनमैं गूढतत्त्वका कथनहैं वाको नहीं जानसक्ते वो योगाभ्याससैं अनुभव होताहै। बाहिरकी विद्या पढनेवालोंको फकत कहनेकी शक्ति बढजातीहै वे बाहिरके पंडित विद्वान्हैं। हे प्यारा! आलिम फाजिल होजाय तो क्या जबतक आमिल नहीं होता तबतक तत्त्वकों नहीं जानता और जानै बाहिरकी विद्या नहींपढी फकत अक्षरदीपकाही पढाहुवाहै तथा नैं पढाहै ऐसा पुरुषभी सत्पुरुषोंका संग पाजावै और उनकी सेवा चाकरी करै और अरजविनती करके परमेश्वरके मिलनेका मार्ग पूछै तो वे याको योगाभ्यासका उपदेश देतेहैं जब ये वा अभ्यासका साधन करतारहै जब योगसिद्धीकी प्राप्ति होय तब याको ऐसी सामर्थ्य होजातीहै कि नये वेद रचलेताहै। हे प्यारा! भीतर की ब्रह्मविद्या योग ध्यानसैं प्राप्त होतीहै। जिनकों प्राप्त होतीहै वे परमविद्वान पंडितहैं और हे प्यारा! या दयानन्दनैं अपने ग्रंथमैं पुराने ग्रंथोंका अर्थ बदलदिया सो व्याकरणमैं ऐसीही पोलहै, शब्दोंके अर्थ कईरीतिसैं लगादेतेहैं। दयानन्दनैं दूसरेनके कहेहुये ग्रंथोंके शब्दोंकों रद्द किये तब उनके हेतु क्रोधसैं भरे हुये कुवचन नीच मनुष्यों की तरह बहोतसे खोटेवाक्य बोलेहैं यासैं मालूमहुवा कि

ये उत्तम पुरुष नहीं था कुछ पढगया तो क्या ? और बडा अनर्थ तो याने ये किया कि ऐसे खोटे वचनोंको अपने ग्रंथमैंभी लिखदिये उन शब्दोंको याके मतके मनुष्य वांचतेहैं तब उनकीभी क्रोधसैं और अहंकारसैं भरीहुई बुद्धि होजातीहै। दूसरे मनुष्योंसे वचनवाद करतेहैं तब इनकोंभी क्रोध आजाताहै और बाजे २ फौजदारी कर बैठतेहैं उसकी सजा मसीके सेवकौंसे पातेहैं और इनका क्रोधरूपी सर्पकी थोथरीको मसीके सेवक दंडसे कुचलतेहैं। देखो या आर्यदेशको सब देशोंसे श्रेष्ठ बतातेहैं और अपने धर्मकर्मोंको सबके धर्मोंसे अधिक मानतेहैं परन्तु जिन देशोंको ये बुरे कहतेहैं वहांकेही मनुष्य इनके देशका राज्य करतेहैं और उनके कर्म देखो तो इनके कर्मोंको देखतैं मलिनसे दीखतेहैं। पशु पक्षियोंकाही आहार करतेहैं और श्वपचसैंभी सब काम लेतेहैं, कुछ परहेज नहीं करते। और यहांके मनुष्य इनके किंकर तावेदार होके गुजर करतेहैं और ये राज्यलक्ष्मीको पाके सबतरहका सुख विलसतेहैं। और इनकी ऐसी तीव्रबुद्धि है कि कलोंकी अनेक रचना रचके सब प्रजाकों अनेक प्रकारका आराम देतेहैं सो तुम सब हाल इनके जानतेहीहो। ज्यादा क्या कहैं और या दयानन्दनैं बहुतसे ग्रंथ झूठे पोप बताये और वेद सच्चे बताये ये याकों मालूम नहीं हुवा कि वेदव्यास मुनीनैं वेदनकाही सब तात्पर्य पुराणनमैं

राजा और शूरवीर गिरि,वृक्ष, नदी, पशु, पक्षी आदि नाम धरके कथन कियाहै सो या दयानन्दनैं सब धर्म, मजहव, मत, पंथ, ऋषि,मुनि,वर्णाश्रम और जो महापुरुष नानक, कवीर, दादू आदि हुयेहैं इन सबनकों झूठे बताये और इनके कहेहुये पुराणग्रंथनकों पोप कथा वताई यानें झूंठी कथाहैं सो इसका दोष नहीं क्योंकि ये आप झूंठा था, कोई सच्चागुरू योगसिद्ध यानें नहीं खोजा और नैं इसको ईश्वकी भक्ती थी, नैं योगीथा, केवल अहंकारी, वाह्य वातोंनीं वृथा गालबजानेवाला था और जब यानें पुराणनकी गूढता नहींपाई तो वेदनकी कैसैं पावे वेद तो परोक्षवाद हैं कहा अर्थ कुछ औरहे उसके छिपानेकूं कह्या कुछ और जाय ताकों परोक्षवाद कहतेहैं सो ये दयानन्द तो वाहिरके पण्डितोंमैं बुद्धिवान् होरह्याथा। जैसैं अन्धनमैं एकाक्षी जैसैं कोई दिल्लीका हालकी किताव पढके और वाका मनन करिके उसका सव हाल कथन करे और दिल्ली आंखनसैं नहीं देखी तो जानैं आँखनसैं देखीहे वाके सामनें वाके कहनेकी चतुराई नहीं चलती ऐसैंही वेदशास्त्रनके पढनेवालेकी महापुरुष योगीके सामनें चतुराई नहीं चलती सो या दयानन्दनैं अपने कथनमें नैंतो भक्ति वर्णन करीहे, नैं योगमार्गका कुछ साधन वर्णनकिया, नैं कोई सात्विकी आचरणका उपदेश वर्णन किया, फक्त कुछ वेदमंत्रनके वुद्ध्यानुसार अर्थ करदियेहें और अपने

मतवालेनका नाम धराहै । आर्यसमाजी यानें चतुराईसे कहनेंवाले कुछ प्रेमभक्ति ज्ञानजोगका जिकरभी नहीं, क्योंकि इनवातनमैं याकी प्रीति नहींथी, ये तो बाह्यविद्यावान् बातूंनी था और विनासमय संन्यासका धारण करनेंवाला मनसुखी वादी था, ऐसेही याके वचन माननें वाले अहंकारी कोमलतासैं रहित बहुतनसे विरोध करनें वाले केवलवातूनी झूठा वाद विवाद करनेवाले आपेकों बडे बुद्धिवान् समझनेवाले और हरएक बातमैं सबकौं पोप,कहनेंवाले सो ये महापोपके पोपहैं ये इनका सिद्धांतहै कि,जीव कदाचित ब्रह्म नहींहोसक्ता तो विचार करनां चाहिये कि क्या वृक्षसैं बीज नहींहोताहै कि पालासैं पानी नहींहोताहै और ऋग्वेदमैं ऐसैं कह्याहै ।"प्रज्ञानमानन्दब्रह्मः" और यजुर्वेदमैं कह्याहै॥अहंब्रह्मास्मि सर्वंखल्विदंब्रह्म नेहनानास्तिकिंचन"॥ और सामवेदमैं ऐसैं कह्याहै । 'तत्त्वमसि' तत्‌कहिये समुद्र त्वं कहिये बिंदु असिपद पानी दोनूंनमैं है वो तूहीहै और अथर्वण वेदमैं ऐसा कह्याहै "अयंआत्माब्रह्म" और जलकी लहर जलमैं समाती है, घटाकाश मठाकाश सब महदाकाशमैंही हैं वास्तव सब महदाकाशहीहै जैसैं सुवर्णसैं भूषण होते हैं परिणाममैं सब सुवर्णहीहैं सो हे प्यारा! ये सब सिद्धान्त पढनसें,कहनेंसें, प्रत्यक्ष नहीं होवैंगे। अष्टांगयोग जो मेरे मिलनेका मार्गहै वाकी सिद्धतासैं अनुभव होवैंगे समाधिदशामैं सबसैं भिन्न, सर्वातीत,

अकह, अवाच्य, अनुभव होवैगा और उत्थानदशामैं अन्वयकाहिये सबसै मिलाहुवा सबका धारक अनुभव होवैगा विना योगसिद्ध हुये वचनसैं ब्रह्म आपेकौं माननां सो वाचक ब्रह्मज्ञानी कहलातेहैं सो दयानन्दका ये सिद्धान्त कि जीव ब्रह्म नहीं होसक्ता सो मिथ्याहै योगके साधनसैं जीव ब्रह्म होजाताहै। जैसैं सुवर्णमेंसैं टाका नष्ट होनेसैं केवल कुन्दन होजाताहै ऐसैंही योगमार्गकी ब्रह्माग्निसैं जीवत्वरूप टाका नष्ट होनेसैं ब्रह्म होजाताहै याने उत्थानदशामैं महायोगीको सबकुछ ब्रह्मही अनुभव होताहै सो या दयानन्दकी जितनी समझथी उतनी कही ये योगी नहीं था जासैं सबकुछ मालूम होवै और ये आर्यसमाजी सबसैं झूठा वादविवाद करते फिरैहैं सो हे प्यारा ! वादीके विरुद्धार्थसैं चुपरहनां सो निग्रहस्थानहै परमेश्वरके जनकौं वादविवादसैं क्या प्रयोजन है अपनी जिह्वाकौं वशमैं राखै सो ये दयानन्दके मतके अपने मतमें लानेकी बडी कोशिश कररहेहैं सो हे प्यारा ! ये मिथ्यामत चलाहै ये महा पोपके पोपहैं इनको सब पोपही भासताहै, ये मैनें जैसा हाल दखाहै ऐसा बयान कियाहै यामैं निन्दास्तुति नहींहै, निन्दानाम वाकाहै कि मीठाको, कडवा कहनां और स्तुति नाम वाकाहै कि कडवांको मीठा कहनां ये तो यथार्थ जैसाहै तैसा कह्याहै ॥ इति ॥

अथ राधास्वामीके मतका तात्पर्य वर्णनम्।

अनाम उवाच ॥

हे प्यारा! राधास्वामी पूरे सन्त हुयेहैं जैसै कवीर, नानक, दादू, गरीबदास, आदि थे राधास्वामीनैं अपनी वाणीविलासमैं सबसैं ऊंचेस्थानपर पहुंचनेवाला आपकों लिखाहै और कह्याहै कि कवीर, नानक, दादू आदि सत्यलोक तक पहुँचेहैं आगे नहीं गये ये बचन उन्होंनैं अपनी महिमाके वास्ते कहादियाहै। देखो जो झूठको छोडके सत्यको पहुंचगये फिर सत्यसै आगे क्याहै सत्यसैं आगे तो विशेष समाधिमैं लयहोना है सो महायोगी परमसन्त आपही ज्यादा लय होजातेहैं। जा अवस्थाको अलख, अगम्य, अपार, अवाच्य, अनाम, कहतेहैं। सो तो सत्यमैं ज्यादा लय होनाहै परंतु राधा स्वामीनैं सेवकोंके मनके फेरनेके वास्ते और अपनी तरफ लगानेंके वास्ते अपनें बडेपनकी महिमा वर्णन करदीनीहै, इन सब महापुरुष परमसन्तोंका एक स्थानहै ये मार्ग ऐसाहै कि याकी तरफ सच्चे गुरुसैं मिलकर चलताहै और जाकौं परमेश्वरके मिलनेंका विरह प्रेम ज्यादा बढताहै वाकों अभ्यासमैं आनन्द आजाताहै वो तो सबतरह मरके अमर होजाताहै, उरै नहीं रहता, या योगमार्गका आनन्दही ऐसाहै कि उसमैं गलताही चलाजाताहै वाकी कुछ नहीं रहता। जाके परमेश्वरके मिलनेका विरह कम

उठताहै वाका कई जन्ममें उद्धार होताहै सो हे प्यारा! राधास्वामीनें अपनें सेवकोंको शब्द योगमार्ग नकली ध्यान बताया और अष्टांगयोगको अपने वचनोंसें रद्दकिया परन्तु यानें तो अष्टांगही सिद्धकियाथा क्योंकि अष्टांग सबका मूलहै जो तुमकों या कहनेंमें संदेह होय तो राधास्वामीकी छन्दबद्ध पुस्तक देखो उसमें जहां तहां अष्टांग योगकी सैंन दीहै और राधास्वामीनें सैंन वैनसें कह्या कि सुरतकों भ्रकुटीमें ठैराके कानोंकों अंगुलीसें बन्धकर शिरका शब्दके साथ सुरतकों उर्द्ध चढावो हे प्यारा! सुरत इस शब्दके संग नहीं चढैगी कुछ अल्पकालको ठैरजावैगी ये तो कुंभक पवनके संग चढैगी क्योंकि ये प्राणके संग फैली हुई है और प्राण सुरत एकहैं जहां प्राणहै वहां येभीहैं जब आसन प्राणायांमसें प्राणाप्राण मिलकर उर्द्धको गवन होवैगा तब मूलाधारसें कुम्भकके बलसें सुरत चढती जावैगी, षट्चक्रनकों छेदके सप्तम भृकुटीमें जाके ठैरैगी वहा सरत निरत करिके ओंकार ज्योतिस्वरूप सहस्रकलानसंयुक्तके दर्शन होतेहैं यहांतकही महायोगीकों अति कठिनता होतीहै आगे प्रेमके जोर सद्गुरुकी भक्तिके प्रभावसें कुम्भक करिके गंगा जमुना सरस्वती पश्चिममें ब्रह्म रंध्रकेपास एक होतीहैं वो त्रिकुटीस्थानहैं आगेका हाल सुणाचाहो तो इसही पुस्तकका सप्तम प्रकाश पढो। हे प्यारा! योग कईजन्मके साधनसें सिद्ध होताहै। कैवारनें

कह्याहै "तनथिर मनथिर पवनथिर, सुरत निरत थिरहोय। कहैं कवीर ता पलककों, कल्प न पहुँचे कोय"। हे प्यारा! राधास्वामीकों पन्थ चलानेकी इच्छा हुई तब विचारकिया कि पूरे योगका तो अभ्यासी पूरासंस्कारी होताहै और ये सब सतसंगी अल्प अधिकारीहैं सो इनको गुरुभक्तिके साथ नकली शब्द योगमार्गका उपदेश करो जासों इनकी कुछ सुरत इकट्ठी होवै और पवित्रतावढै सो उसने अपनी पुस्तकोंमैं फकत नकली ध्यानकाही उपदेश कथन किया है और राधास्वामीके पीछे जो सतसंगियोंके गुरू बणे सो रजोगुणमैं डूबे मान बडाई धन पूजनेकी आसामैं फँसेहुये राधास्वामीके तत्त्वसैं हीन रहे क्योंकि पूरे परमपुरुष गुणातीत अवस्थामैं स्थिर होके समदृष्टीसैं चराचरको देखतेहैं पूजते पूजाते नहीं और सेवकलोग उसगुरुके स्थूलकी उच्छिष्ट प्रसादी मानके देखादेखी खानेलगे सो ये तो नाशवान् स्थूलकी नाशवान् प्रसादीहै, गुरूकी प्रसादी तो उनके कहे हुये उपदेशके शब्दहैं जो कोई इनको श्रवण रूप मुखके द्वारा धारण करतेहैं उनकी भूँख प्यास मिटजातीहै। हे प्यारा! राधास्वामीके सेवक उसका कथन कियाहुवा नकली शब्द योगका साधन करतेहैं सो देखो "वचन हजूरी वक्तसतसंगकी पुस्तकके दफा सातमैं लिखाहै कि, परचा लेनेवाला कोई भक्त होवै तो परचा मिलै,, इस कदर भक्ती किसीकी नहींहै जो परचा देवैं ये जो तुम

कररहेहो ये नकलहै सो चिन्ता की वात नहींहै अवके ऐसी-ही मौजहै, ऐसेहीं सबकौं त्यारैंगे, सो हे राधास्वामीके सेवकहो तुम वक्तका पूरा सद्गुरु खोजो और खुलासह उपदेशसार वचनमैं दफा ५२ की और ५३ की देखो तुम्ह चेतकरानेंकों क्या लिखाहै सो विचारो। शब्दयोगका नकली ध्यान करनेसैं सब ऊमरवाले बाल, तरुण, वृद्धौंको कुछ ज्यादा खतरा नहींहै। मनकी कुछ चंचलता मिटजातीहै। जो इस अभ्यासकौं करतारहेगा और उसका गुरु परमेश्वरमैं ज्यादा प्रेम बढजावैगा तो वक्तके सच्चे पूरे गुरूसैं मिलके असली तत्त्वकोभी पहुँचजावैंगा सो ये सब सेवक राधास्वामीके धन्यहैं। भला ये नकली शब्द योग-मार्गमैं तो लगेहैं, कानोंमैं अंगुली या ठीटी रखनैंसैं शब्द सुनतेहैं,असली शब्द प्राणायामके प्रभावसैं सब आपही खु; लजातेहैं, उनका व्याख्यान मैंनैं नो अधिकार करिके पांचवां प्रकाशसैं लेके सातवाँ प्रकाशतक वर्णन कियाहै। हे प्यारा! बाह्य कर्म उपासना तपज्ञानोंसै ये शब्दयोगका ध्यान राधा-स्वामीका उपदेश कियाहुवा श्रेष्ठहै।

अथ महोम्मद मजहबका व्याख्यान वर्णनम्।

मंगल उवाच।

हे कृपानिधान! महोम्मदके मजहबमैं जो महोम्मदकी उम्मतमैंहैं इनकाभी कुछ बयान वर्णन करो।

अनाम उवाच ।

शेर "बनामें आंकि वो नामे नदारद। बहरनामे कि ख्वानी सर्वरारद" शुरू करताहूं नाम उसका। कि वो कोई नाम नैं रक्खे। साथ जिसनामके जपै तू ॥ सो जाहर होवै। हे प्यारा! ये मजहब इसदेशका नहींहै येतो अरबदेश काहै। यवन बादशाहनकी प्रबलतासैं यहां फैलगयाहै। यहांके मनुष्य जबर्दस्ती तरवारके जोरसैं इस मजहबमैं करलियेहैं सो यहां जो या मजहबमैं हैं सो सब वर्णाश्रमी ह और इस मजहबमैं एक किताबहै जिसका नाम कुरान शरीफहै सो महोम्मद नबीकी बनाईहुईहै ।

प्रश्न—हे महाराज! ये तो कहतेहैं कि खुदाके कलाम हैं खुदाकी आयत आसमांनसैं उतरीहैं सोई कुरांनहै ।

उत्तर—हां प्यारा! सब कुछ उसीकी तरफसैं है वोही सबमैं सबकुछ कररह्याहै, देखो तुम्हारे दिलकोंभी तो रोशनी वोही देरह्याहै, वो तुमकों भीतरसैं कुछ नहीं कहै तो तुम बाहर कुछ नहीं करसक्ते हो तुम्हारे भीतर वो भीतरले आसमांनसैं सबकुछ मदद देताहै जब तुम बाहर कर्म करतेहो सो ये आयत तो सबके दिलकों हरवक्त उतरती रहतीहैं। ये इन्सानका जिस्म जो पडदाहै इसमैं च्यारदरजोंपर होकर खुदाकी तरफसैं कलाम आतेहैं। सो लिखाहै। कि खुदा पडदेसैं बातैं करताहै सो जाकी रुह आलादर्जेकी बन्दगी करिकें उसमैं जामिली वो पाकरूह पाकका नूर हो गई उसके कहेहुये कलाम खुदाकेही गिनेंजातेहैं। क्योंकि

उसकी रूह खुदामें जामिली सो कलाम च्यारदर्जोंपर होकर आते हैं सो सुणो। अव्वल तो कलाम लतीफनूरानी लवालवसें भराहुवा मामूरहै १, दूसरा कलाम लतीफरूहानी उसमें कुछ कहनेंकी सुरसरी उठतीहै २, तीसरा कलाम दरम्यांनी जो जिगरमें कईवजेसें खयाल कियाजाताहै ३, चौथा हाजरकलांमी जो जबानसें बाहर निकलताहै और सबकोई सुनतेहैं ४, जो कामिल्मुर्शिद उसमें लयहोके जो कुछ कहतेहैं सो उसीके कलामहैं। वेही नबी रसूलहैं और तुम गौरकरिके देखो क्या खुदाके जिस्म हैं कि मुह है कि जबानहै जिससे कलाम कहता है। खुदा तो बेशवह, बेनमूद, बेचून, बेसखुन है। नैं जिसके जिस्महै, नैं रंगहै, नैं रूपहै, नैं हलकाहै, नैं भारीहै, नैं कही बैठाहै, नैं मकान है, वो तो लाहै, बेसखुन है, उसमें कहनां, सुणनां, आनां, जानां, कुछ नहीं बनता और जो है तो सबकुछ वोहीहै सिवाय उसके कोई और नहीं सबकुछ आपही होके जहान बनरह्या है। सबसें बडा ये इन्सान बनाया है इबादत करनेके वास्ते और उसकी कुदरतकों जाननेके वास्ते सो कोई कोई सबसें बडी बन्दगी चौथेदरजे की करिके उसमें अपनी रूहकों लय करताहै, वो पाकरूह उस पाकमें मिलजातीहै। उसमें मिलकर पीछे तनज्जुल यानें उतार होताहै। जब सब हाल कहताहै और नीचले

दरजेवालोंको दरजे बदरजे उसकी बन्दगी इबादत बताता है सो उसके कहेहुये कलाम खुदाकेही मानेजातेहैं नजीर अरबीकी आयत इजात अम्मुल फकर फहुअल्लाहो।जिसवक्त तमाम होतेहैं।दरजात फकरके ऊंचे दरजे पहुचा फिर वोही अल्लाहै और मन्सूर शमशतबरेज जाहिरहैं और लिखाहै कि खुदासैं बात पडदेसैं करी सो नैं तो खुदाका कुछ नमूनाहै, नैं मकान है, नैं पडदाहै पडदानाम जिस्मकाहै इस जिस्ममैं ही उससैं बातें करीहैं। जिस्मआदमका सबसैं बडाहै। आदमकों अपनें नूरसैं बनाया यानें अपना नूर जो सब कुदरतहै सो इसके जिस्ममैं सब कुदरत रखदीनी और फरिश्तेनको कही कि आदमकों सिजदा करो सो सबनैं सिजदा किया। एक अजाजील फरिश्तेनैं नहीं किया सो रांदःगया उसनैं हुक्म नहींमानां सो ईबलीस शैतान करादिया जो हुक्म नहीं मानताहै सोई फिराऊंन शैतानहै। सब मज़हब उसकीतरफसैंहै सबका एकही मतलबहै परन्तु वो पाकक्वामिल कमाल "मुर्शिदविनां भिलैं"ये हाल रोसन नहीं होता बिनां उनके मिलैं ये शैतांनकी भैकावटमैं रहताहै और जो असल बातहै सो इस्के दिल्मै रोशन नहीं होती। देखो सबकुछ हलाल होगया परन्तु बदजानवर हलाल नहीं हुवा सो बदजानवर कौनहै। वोहै जिसकी गरदन उसके कलामरूपी छुरीके नीचे नहीं कटी। उसका कलामहै सोई छुरीहै। जिसनैं उसको नैं माना वोही बद-

जानवरहै और सवके वास्तैं उसका येही कलामहै कि तुम नेक चालचलनसैं रहो, मुझकों खोजो और नेकीकरो। नेकी नाम उसकाहै कि सव रूह तुमकारिके सुखपावैं।इन्सान इन्सानकों अन्याय,दगाबाजीसैं दुःख नैं देवैं,इन्सानकों तकलीफ दैंनां ये सवसैं ज्यादा कसूर है। मेरा बन्दा बेगरूर, रहमेदिल कमतरीन होताहै। आला दरजाकी वन्दगी करनेंवाला मोकों बहुत प्याराहै और मेरी इवादत कामिल मुर्शिदसैं मिलके करो। येही कलाम उसका सव मजहवोंमैं है। मुसलमानीं करानैंसैं मुसलमांन होताहै याने शिश्नके अंग्रकी त्वचा काटनां सो अविरहामके वक्तसैंहैं। अविरहाम पैगम्बरके इजहाक हुवाथा अव्वल खतनः करानेका नमूनां इजहाकसैं जारीहुवा। अविरहामसैं पहिलैं आदमतक किसीनैं खतनः नहीं करायाथा। क्या खतनः करानैंसैंही मुसलमान होताहै? येतो नाहक इन्सानोंकों तकलीफ देनाहै मुसलमान नाम उसकाहै जो इमानपर कायम रहै सो इमानतो ये शैतान कामदेव जो नफ्सहै सो बिगाडताहै, इसी सववसैं थे पैगम्बरोंनैं खतनः करानेका एक नमूनाकी सैंन दीहै, क्या सैंनदीहै कि शिश्नकी खाल काटो तो इमानपर कायम रहसकोगे यानैं खालके मजेसैं दूर होवो। जिसका दिल यामजामैं गिरफतारहै वो इमानसैं खारिज होजाता है। क्या इसका मजा खुदाकी तरफसैं फिराके अपनें मजेमैं दिलकौं लगालेताहै। इस कामदेवके मजेमैं आके

इन्सान एक बीबीकों छोडताहै दूसरीकों ग्रहण करताहै, वो विचारी उसको बददुवा देतीहै और ये इस मजेमैं आके ऐसा गफलतमैं होजाताहै कि जवान२ नई २ खूबसूरत औरतोकों ताकता फिरैहै और बहुतसा बद, लूच्चा,झूंठा, जालसाजी, छिदला, हांसी, ठट्ठा, खिल्लीवाजी करनेंवाला शैतानका गुलाम होजाताहै सो ये खालका मजा उस खालकसैं अलग करदेताहै सो इस खालकों काटनां क्या दिलसै इस मजेकों दूरकरनां येही खालका काटनाहै और खुदाकी तरफ दिल लगांना सोई मुसलमानहै,इमाननाम खुदाकाहै उससैं दिलसैं महोव्वत करनी,उसके कलामोंकों मानना सोई मुसलमांनहै,सो उसका हुक्म ये है कि एक बीबी व्यभिचारसें बचनेंकों राखैं और कहीं अपनी रूहकों नैं डुलावै क्योंकि जो ज्यादा डुलाताहै वोभी तो सबर नहीं पाता। ज्यादा २ बेसबरा होताहै सो ये तो शैतान कामदेवकी आगहै,जितनां सेवैगा तितनीं ज्यादा होवैगी सो इस आगकों बुझानेके वास्ते एक औरतकों शादी (निकाः)करिके राखै और इन्सान जिस्म पाके खुदाका खोफमानैं और उसका खोज करै कोई कामिल मुर्शिद गृहस्थीहो चाहै फुकराहो जिस मजहबमैं मिलै उनहींसैं महोव्वत करिके खुदाकी राह पूछै और सबसैं ज्यादा खुदासैं मुहव्वत करै गरूर गुस्सा,कुफर, बे सबरी, हरामखोरी, बदकलामी, शैतानीके सब काम छोडके अपनें जिस्मसैं महनत करके खाय दूसरेकी वस्तुकों नैत कै

और रात दिन खुदाकी वन्दगीके इश्कमैं रहै मजाजी इश्कको छोडके हकीकी इश्कमैं अपनैं दिलकों डुवावै वोही सच्चा मुसलमांनहै और सब नामके मुसलमांनहैं वे तेरवी सदीमैं पैदा हुयेहैं कुरांनमैं तेरहसदी क्या तेंरहसैं वरसका हाल कह्याहै आगेका हाल बयान नहीं किया।आगें नजदीक कयामत समझीगई इस सबबसैं कुछ हाल नहीं कह्या, इसविचारसैं ऐसा मालूम हुवा कि महोम्मदी मज़हव तेरह सदीतकहींहै आगेये मज़हव नहीं रहा क्योंकि मज़हव की मयाद पूरी होगई आगे रस्ता नहीं चला। चौदवी सदीमें इक्कीसवर्ष वीतगये और आदम जबसैं पैदाहुवा तबसैं तोरेत जो मूसापैगम्बरकी कितावहै वाके हिसावसैं अजतक ५९०७ वर्ष होतेहैं। सन् ईसवी १९०३ तक सम्वत् १९६० तक होतेहैं और वर्णाश्रमी धर्मवालेनके ग्रंथोंमैं ऐसा लिखाहै कि कईलाख वर्ष हुये। जब रामचंद्रजीका अवतार हुवाथा और कृष्ण अवतारके ५००४ वर्षहुयेहैं सम्वत् १९६० तक और रामचंद्रजीसैं पहिलैं सतयुगमैं दत्तात्रेय, ऋषभदेव, कपिलमुनि वामनजी अवतार आदि वतातेहैं सो हे प्यारा। तोरेतकितावके हिसावसैं तो पृथ्वीकी रचना अव्वलसैं हुई उसकों५९०७ वर्ष हुये और वर्णाश्रमियोंके हिसावसैं वहुत होते हैं अव नैंजानैं कौन सच्चाहै सो: तुम अपने दिलमैं विचार करलो और शैतानतो आदमके वक्तसैंहीं वहकाता चलाआयाहै, आदमको खुदानैं पैदा करिकै अदन जो व-

हिश्तहे ताकी वाडीमैं रक्खा और आदम बहुतसा नींद-
मैं सोगया जब उसकी पसलीसैं हव्वाकौं पैदाकरी और
दोनूंनको हुक्मदिया कि इस वाडीमैं जो पेड बीचांबी
चहै उसका फल नहीं खानां और शैतान जो
इवलीसस्यांप है वानैं हव्वाकों वहकादीनी कि तुम
इस वाडीके वीचमें जो पेडहै वाका फल खावो,तव हव्वानैं
कहा खानेंकी इजाजत नहीं शैतान बोला इसके खानेमैं
मजा बहुतहै जब तुम खावोगे तो तुम्हारी आंखैं खुलजा-
वैगी। तब हव्वाके दिलमैं आई तो खानेका इरादा किया
आदमसैं कह्या आदमनैं कहना मानलिया दोनूंननैं फल
खाया और ईश्वरकी आवाज आई और इनकों जिस्मका
ज्ञान हुवा तो आपेकों नंगा समझके छिपे । तब खुदानैं
इनको अदनकी वाडीसें अलगकिया और शापित करादिये
सो हे प्यारा! वो वीचका फल खानेका मज़ा यहीहै कि जो
मरदऔरत मिलकर जिस्मके बीचमें जो स्थानहै उसका मजा
लेतेहैं वोही बीचका फल खानाहै। जिस्मके बीचमें शिश्न
योनिहै इसका फल जो मजा भोगताहै सो वहिश्तसैं खारिज
होताहै और जब मूसानैं सीनेके पहाडपर ईश्वरके दर्शन पाये
तब इसरायेली जो जियारत करनेकों आयेथे उन्होंसैं
मूसानैं यों कह्या कितुम तीनदिन पहिले अपनैं वस्त्र धोके साफ
रक्खो औरतकी मलिनतासैं बचो तो तुमको ईश्वरसैं भेट

होवैगी। जो इन्सान इस मज़ासैं बचैगा सो उस मजाकों पावैगा और जो इसकों भोगैगा सो उसके लायक नै होगा। सो बीचका मज़ा खालकाहै जो उसको दिलसैं काटैगा वोही ईमान पर कायम होगा और जो नहीं काटेगा वो खारिज होगा निजात नहीं पावैगा और जो इमानपर कायम है वो चाहै जा मजहबमैं हो चाहैं जो जातहो वोही मुसलमांनहै क्या इमानपर कायमहै उसकी खाल कटगई क्या जिस्मानीं नजर नहींरही रूहांनी नूंरानीहोगई जिसकों वर्णाश्रमी दिव्यदृष्टि कहतेहैं और जिस्मानीकों चर्मदृष्टि कहतेहैं। देखो नरमादी जोहैं सो जिस्मानी बीचका फल खालका मजामैं आके गफलतसैं कौनसा बुराकाम नहीं करते हैं। जोनैं करनेंके काम हैं सो सब करते हैं। हे प्यारा! ऐसा न समझनां कि बिलकुल सब ऊमर औरतसैं परेरहैं खुदासैं मिलनेके च्यार दरजे हैं। शरीयत १, हकीकत २, तरीकत ३, मारफत ४, अब शरीयतका हाल सुनो, जबसैं थे इन्सान पैदा होतेहैं तब लडकपनसैं अपनें मजहबकी किताब पढें और अपनें घरानेका इल्म सीखें और जो वक्तका इल्महो उसकोंभी सीखें पीछे अपने मजहबके माफिक सब काम करिके जवानी आवै जब निकाह अपनें मजहबकी औरतके साथ पढें। मेहनत करिके खाना सोई हलालका खानाहै, हरामखोरी करिके खाना सोई मुरदार

है, बिस्मिल्लाह कहके जानवरोंका गला काटतेहैं उसकों हलाल कहतेहैं हलाल तो इसका नामहै कि उसकों चारा चराना, पानी पिलाना, झाडना, फटकारना, उसकी खिद्मतकरना, जब वो दूध देवै उसकों खावै वोही हलालका खांनांहै और तमतो उसका गला काटके मुरदार करदेतेहो और जब गला काटते हो तब ये कलाम कहतेहो कि "बिस्मिल्लाह अलरहमान् अलरहीम्" क्या शुरू करताहूं अल्लाहके नामसैं वो रहमान रहीम हैं तो गौर करो वो तो रहमान् रहीमहै और तुम ये क्या करते हो? रहमान् रहीमके नामपै गला काटते हो और गौर करो कि उसके नामसैं शुरूकरना नेककामोकाहै जिसवक्त उसकी बन्दगीकरो उसवक्त ये कलाम बोलो जासे निजात पावो और ये गला काटनां तो जबांनका सवाद (जायका) जिस्मकी ताकत वढानेके वास्ते काम कियाहै सो मेहनत करिके खानां सोई हलालका खानाहै और, शरीयतवाला इन्सान अहल् इसलाम होवै क्या अपने धर्ममैं कायम रहै कुफर नैं बोले ज्यादा गुस्सा नैं करै, किसीसैं गरूर नैं करै, सबरसैं रहै, वदकलाम नैं बोलै, रहमदिल रहै, किसीसैं दंगाबाजी जालसाजी नैं करै, व्याज नैं लेवै और कोई नशेके आधीन नैं होवैं, किसीसैं वैर नकरै। कुल इन्सानोंसैं प्यार मोहब्बत राखै चाहै अपने मजहबका हो या दूसरेका हो किसीकों अन्यायसैं दुःख नैं देवैं वनै तो सबकेसाथ

नेकी करै। खुदाका खोफ मानैं। जो कुछ करताहै सो वोही करताहै, आपेकौं कर्ता नैं समझै और अपनें मजहबमैं लानेकेवास्ते किसीसैं दगावाजी जवरदस्ती नैंकरै और जो खुसीसे आवै उसकों राह वतावैं सिवाय अपनी औरतके औरपै अपना इमांन नैं खोवै, पांचवक्तकी नमाज पढै, तीसदिनका रोजा राखै सो हे प्यारा! गौरकरिंके देखो शरीयतकी बहुत हलकी वन्दगीहै। पाचवक्तकी नमाज़मैं इन्सानका थोडासा वक्त लियागया है और विनती करके जिस्मसैं सिजदा कराईहै और रोजानमैं दिनकौं नैं खाय तो रातकों खानां वतायाहै। इस वन्दगीमैं कुछ ज्यादा तकलीफ नहीं शरियतसैं ज्यादा मुश्किल हकीकतकी वन्दगीहै, उससैं ज्यादा मुश्किल तरीकतकीहै और सवसैं ज्यादा मारफतकी वन्दगीहै सो शरैइन्सान् नेककाम करिकेभी आपेकों गुन्हगार समझके खुदासैं माफी मांगै किसी इन्सानकी हांसी ठट्ठा मसख-री नैं करै गरीवी नरमांईसैं रहे। उसकी इवादतसैं ज्यादा मोहोव्वत करै। नेकलोगोंसैं मोहोव्वत राखै, वद आदमीकी सोहोवत नैं करे, उसके वन्दोंसैं मिलता रहे और कोई काम ऐसा नैंकरै जो किसीका नुकसान होवै और वो वुराक-है, सव काम नेकीके करै, वदीकी निगाहस भी नैंझाके और सिवाय खुदाके और किसीको नैं मानैं दिलसैं तो क्या मानैं शिरसैंभी सिजदा नैं करै, वो निराकारहै किसीका

आकार बनाके नैंमानें और जो सिवाय खुदाके औरकों मा-
नतेहैं वे वे शरैहैं। जैसैं बहुतसे इन्सान कवर या आलाकों
सैंयद मांनके पूजतेहैं, पाणींसैं नह्वा फूल बतासे चढातेहैं,
लोवांनकी धूंनी देतेहैं, नकारा बजाके डोंडी पीटतेहैं। तो
देखो खुदाकी मसजिदमैं तो नकारा बजाके ऐसी खुसी
नहींमनांते जैसी सैयदकी मनांतेहैं; और फकीर सैयदकों
पुजवाके बडे राजी होतेहैं और उसकी झूंठ बोलके करा-
मात जतातेहैं। और ये नहीं कहतेहैं कि खुदाके सिवाय
तुम किसीकों मत पूजो उन्होंनैं अपनां रोजगार समझ-
लिया और बहुतसे तावीजबनाके धूंनी देतेहैं अपने डंडन-
पर बांधतेहैं और बच्चेनका गला भरदेतैंहैं। देखो खुदानैं
जिस्म एकबूंद पांनीके कतरेका बनांयाहै और भीतर पेटकी
आगसैं बचाके नांपैदसैं पैदाकिया उसका ऐतकाद छोडके
यकीन तावीजपर लाये और अपनें बाप दादानकी कबर
पूजतेहैं और बहुतसे ताजिया बनातेहैं और गरूरमैं आके
दंगा कियाचाहातेहैं और बहुतसे फकीर स्यानपत करतेहैं,
गंडा तावीज बनाके पाखोंसैं बच्चेनके झाडा देतेहैं और
पचवीर पीरख्वाजे मदार पुजातेहैं तो गौरकरो खुदाकेसि-
वाय कितनैं आकार बनांके पूजे और उसका यकीन
छोडकर ऐतकाद इनपर लाये ये सब पूजना माननां
शरहसैं बाहरहैं शैतांनकी बहकावटमैं आगये सो हे

प्यारा ! ये शरीयतका बयांन मैनें थोडासा तेरे समझानेंके वास्ते किया है ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाम मंगलसम्वादे चारसम्प्रदाय दयानन्द राधास्वामी महोम्मदकी उम्मतकी शरीयतका व्याख्यान वर्णनो नाम नवमप्रकाशः॥ ९ ॥

मंगल उवाच ।

हे सर्वप्रकाशी ! ऊपर जो आपनें बयांनकिया कि ये शैतांनकी भैंकावटमैं आगये सो शैतान कौंनहै । किसनैं पैदाकियाहै और क्या इसकी शैतानीहै सो आप इसका हाल कृपाकरिके बयांन करो ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! जिसको मन कहतेंहैं, दिलकहतेंहैं, नफस कहते हैं, ये सब नाम रूह जो जीवात्माहै ताकीलहरके हैं॥ जब ये दिल जो मनहै सो नेककाम करताहै तबतो ये खुदाकी तरफहै क्या खुदाकाहै और जब यही दिल जिस्मांनी दुनियांके मजेमैं आके गफलतसैं शरैसै बाहिर होके नाजायज काम करतांहै।वोही शैतांनहै, क्योंकि हुक्म नहींमाना फिरांऊनमुनकिरकाफिरहै क्या शैतानकी औलादहै शैतांनकी औलाद बहुतहैं और खुदाकी औलाद उसका हुक्म माननेवाले थोडेहैं जो शैतानकी औलादहैं वे छोटी उमरसैंही बुरे ऐ-

माल आजावके काम करते हैं होसहो वै जबहीसैं गुन्हगारीके काम करतेहैं। मरदसैं मरद लज्जाके काम करतेहैं और बाजे २ तो औरतकासा हाल बनाते हैं। और बाजे इसी ऐबमैं डूबजातेहैं। बडे २ घरानेके बच्चोंको ऐब सिखातेहैं॥ और खतनेवाले इस ऐबमैं ज्यादा फँसतेहैं॥ एकदुनियां दिखानैंको शरैके काम नमाजवगैरह पढतेरहतेहैं और बहुतसैं लडकपनसैंही झूठ ज्यादा बोलते हैं। और बहुत अचपलेहोतेहैं रस्तेचलतैं जांनवरोंकौं टोले या गिलोलसैं मारके वासैं बेरहम खेलकरके फैंकदेतेहैं और बहुतसे इन्सान बेरहम होके जांनवरोंको बहुत सतातेहैं। और कहतेहैं कि सबचीज दुनियामैं खुदानैं हमारे वास्ते बनाईहैं सो तो ठीकहै परन्तु ये गौर नहींकरते कि तू बेरहम होके खुदाकी बनाईहुई चीजोंकों बेमतलब क्यूं बिगाडताहै उसकी कुदरत कों देख २ के उसका शुकर क्योंनहीं मनाता और तूं खुश होके ये नहीं सोचता कि तुझसैं खुदानैं कैसा प्यार किया और तू उसकी कुदरतके खेलमैं लगगया और उसकौं भूलगया जिस्मानी मजाजी इश्कमैं फसके हकीकीकों भूलगया तेरी बराबर कौन गुन्हगार है। तुझकों सवदरजेकी बन्दगी करनेके वास्तै पैदा किया है कि, चारदरजेकी बन्दगी तू करिके अपने आपेकी कुर्बानी कर शरीयत, हकीकत, तरीक़त, मारफत, ये चारदरजेकी बन्दगी करनी चाहिये तू फकत नमाज पढकरही गरूर करताहै कि, मैं

बहुत बडी बन्दगी करताहूं ये तो बहुत हलकी बन्दगी है जैसैं बच्चेनकों अलिफ बे तें सिखाते हैं। आलिमफाजिलतो कोई २ बहुत मेहनतसैं होताहै सो तू किसीकों दुःख मतदे एक दिन तेरी जानभी गुद्दीकी राह निकासी जावेगी। जो तू जीवतैंही अपनीं जानको कामिल मुर्शिदसैं मिलके गुद्दीकीराह निकालले तो वे गुन्हा पाक होजावैगा, हक्को पहुंचैगा हे प्यारा ! जे शैतानी इन्सान् हैं वे रंडीबाज होते हैं। एक बीबीको छोडके दूसरी तीसरी घरमैं घालतेंहैं। पडोसीकी और इन्सानोंकी बहन बेटी ताकतेहैं, वहकाके लेजाते हैं, दगाबाजीसे धन कुमातेहैं, गुस्सा बहुत रखते हैं, बडे बदकलाम बोलतेहैं। और ऐंठ अकड़ गरूरमें ग़रक़ रहतेहैं, कपडे पहरके बहुत इतरातेहैं, महदी मिस्सी सुर्मा लगाके आंख मटकातेहैं और अपने गरूरमें किसी इन्सांन को इन्सांन नहीं समझते। दूसरे मजहबीकी बिगडी हुई औरतकों घरमें घाललेतेहैं और सबके साथ दग़ाबाजी करते हैं,जबरनदूसरेका ईमान बिगाड़ते हैं,झूंठ जालसाजीका बल रखतेहैं। और मोहोब्बत आपसमैं शैतांनसैं शैतांन रखतेहैं और भलोंके वैरी, दूसरेको चिड़ानां, ठट्टामसखरी, तनज, चबावकी बातैं करना ये ऐब उनमें ज्यादा होतेहैं और अतर पट्टोंमैं तेल लगाके पांन चाबके ताजसैं फूल रखके पगड़ी टेढी बांधके मरोडसैं बडे लहजेसैं खव्वे मटकाके चलते हैं और दूसरे मजहबीसैं चलाके छेड करतेहैं, जुल्म करतेहैं।

काफिर आपहैं औरोंकों काफिर कहतेहैं और दूसरेकों अपने मज़हवमैं लानेंके वास्ते बहुतसी जालसाजी दगा-बाज़ी करतेहैं, इसहीकों नेककाम समझतेहैं और कहते हैं, कि ऐसा करनेका हमकों खुदाका हुक्महै। भला गोरकरके देखो क्या खुदा बुरेकाम करनेंकों हुक्म इन्सानकों देवैगा तो खुदा पोच ठैरा जो तुमसैं दगाबाजीसैं अपनां काम कराताहै खुदातो सबका मालिक सबका पैदा करनेंवाला सबके दिलकों नचानेंवाला जो चाहै सोई करसके वो तो हाज़र नाज़रहै। जो उसकी येहीमरजी होवै कि सब जिहांनके इन्सान महोम्मदकी उम्मतमैं होजावैं तो कौंन रोक-सक्ताहै उसीवक्त एकलहमेमैं ऐसाही होजावैगा देखो इन्सां-नोंमैं जो राजा होते हैं वे अपनें कानूनका हुक्म जारी करते हैं तो उन्होंके राज्यमैं सब इन्सान मानलेतेहैं और वैसाही वरततेहैं। जो हुक्म नहीं मांनतेहैं वे हुक्म अदूलीकी सज़ां पातेहैं तो खुदातो सबसैं बडा है जो चाहै सोईकरै, एकदम सबके दिलकों मोडसक्ताहै क्योंकि वो दिलका मालिकहै। जो उसकों एकही मजहव जारीकरनां होवै और सब मज़हव रद्द खारिज करनां होवै तो जहांनमैं नैं कोई दूसरे मजहवकी किताबरहै नैं मजहबरहै, जिसकों चाहै वोही रहै। सो ऐसा कहनां कि हमकों जालसाजी दगाबाज़ी जबरदस्तीसैं मज़हबमैं लानेके वास्ते खुदाका हुक्महै ये बात कहनां नाजायज़है बहुत बडा गुन्हाहै। हां अपनी राजीसैं

इन्सांन दूसरा मज़हब मैं आवै तो जो नेकलोग होतेहैं सो परखतेहैं कि ये अपनांही मज़हब छोडताहे तो ऐसे बेइमानका क्या भरोसाहे । देखो सब मज़हब खुदाकी तरफसैं हैं जो दगाबाजी जबर्दस्तीसैं हैं वो शैतांनी है, खुदा तो पाकहे । अपनें बन्दोकों पाककाम करनेंका हुक्म देताहे जो उससैं डरतेहैं और अपनां जो मजहबहे उसहीमैं उसकी बन्दगी करतेहैं, सबके साथ नेककाम करते हैं । सूधेचाल चलनसैं वे ग़रूर सच्चे इमानदार सबरदार रहमदिल कमतरीन गरीबीहालमैं एक बीबीपै इमान रखनेवाले महनत करिके खानेवाले दग़ाबाज़ी जालसाज़ी की सोहबतसैं परहेंज करनेंवाले शैतानोंकी मंडलीसैं अलग रहनेवाले खुदाकी बन्दगी चारूंदरजेकी करनेवाले सबतरहके लुचपनसैं अलग रहनेवाले खुदाके वन्दे होतहैं सो थोडेहैं। और शैतांनकी तो मन्डली जमाअतकी जमाअत बहुतसी जहांनमैंहैं सो हे प्यारा!खुदाकी तरफसैं जो नबीरसूलआचार्य अवतार प्रगट होतेहैं सो रजमा करामातकेसाथ आतेहैं।उनके कलाम अच्छी नसीहत, अच्छे उपदेश नेकचालके होतेहैं। इसलोकके परलोकके सुख देनेंवाले हैं सो इन्सान सब राजी खुसीकेसाथ कबूल करतेहैं और जो कुछ शैतांनकी तरफसैं होता है सो दग़ावाज़ी छलसैं दवागतसैं जवरदस्तीसैं इन्सानोंकी मारफत होताहे वे बहुतसे उसमें जमा होनेंसें जबर्दस्तीभी मोका पाके राज्यकेबलसैं करतेहैं और मेरा बन्दा सब

मजहबोंमैं होताहै वो मेरी इबादतके जोर कामिल मुर्शिदके जरियेसैं हक्कपर पहुंच जाताहै पीछे किसी मजहबका पाबंद नहीं रहता। पक्षपातमैं अलग होजाताहै रब्बुल् आल्मीन मैं लय होजाताहै, और देखो सब जहान मजाज़ी इश्कमैं डूबरह्या है, हकीकीमैं कोई होताहै सो हे प्यारा! ये बाहिरके शरैई लोगोंको ये मेरा कह्याहुआ आलिम रूहांनी आलादरजेकी नसीहत उपदेश नैं सुणांना क्योंकि वे इनकलामोंके मतलबकौं तो समझेगे नहीं तुमसैं दुश्मनी करैंगे और बुराई करैंगे हे प्यारा! मैंनैं तुमकौं अवलदरजह शरैका हाल और शैतांनी हाल थोडासा बयांन करके सुनायाहै। जहानमैं थोड़ेहैं जो इन बातौंपर गौर करते हैं ज़र जोरू ज़मीनमैं सब उलझे हुयेहैं। अब दूसरा दरजा हकीकतका सुनौं॥

अनाम उवाच।

हे प्यारा! जो खुदाका खोफ मानतेहैं वे जहांनमैं नेककाम करतेहैं शरैके पावन्द होतेहैं और दिलमैं सोचतेहैं कि ऐसा काम करनाचाहिये जिसमैं खुदा राजी होवैं और मैं जो नमाजवगेरे की बन्दगी कररह्याहूं यही खुदाके मिलने का रस्ताहै या कोई और इससैं ज्यादा बन्दगीहै जिसके करनेंसैं खुदा मिलै और ये जहांनमैं उसीकी रोशनी है। आफताव महताव तारे उसकी कुदरतसैं चमक रहेहैं उसके

हुक्ममैं रहतेहैं पवन पानी सब उसीके कहेमैंहैं उसके हुक्मविना पत्ता नहींहलै। ऐसा वो करीमका दिरमावूदहै और मेरे जिस्मको पानीके कतरेसैं बनांयाहै इस जहानमैं नापैदसैं पैदा मुझको कियाहै मेरे जिस्ममैं उसहीकी रोशनी सब काम देतीहै ऐसा वो खालिक कहांरहताहै। और वो कैसाहै उसका हाल मैं कैसे पाऊं और वो कैसै मिलै ऐसा हकीकतवाला बन्दा जिगरमैं सोचविचार करताहै दुनियांसैं उसकी कम मोहब्वत होजातीहै। खुदाका ज्यादा यकीन आजाताहै, रात दिन उसके इश्कमें लगारहताहै और शरैमैंही नेकीके साथ बनारहताहै और खुदाके रस्तेकी बहुतसी किताबोंकों खोजता रहताहै आलिम फाजिल होजाताहै। और जहानमैं गुप्ततासैं हलीमहोके रहताहै अपनी बडाई नहींचाहता खलकतकोंफांनी समझताहै। और खुदाके हकीकी इश्कमैं आके हरएक मज़हबकी कितावैं पढ २ के उसका खोज लगाता है।सब किताबनमैं कामिल मुर्शिदकी ज्यादा इज्जत पाई और विना कामिल मुर्शिदके खुदाका खुदरस्ता नहीं मिलता। हकीकतवाले ऐसैं दिलमैं विचार करतेहैं वे कामिल मुर्शिदसैं मिलना चाहते हैं उनके दिलमैं खुदाका इश्क बढजाताहै। जहाँतहाँ सव मज़हवके इन्सानोंसैं साधु फकीरोंसैं मिलते हैं और कामिल मुर्शिदकों खोजतेहैं ये हकीकतवालोंका हालहै। हे प्यारा! मैं आलिमफाजिलोंको नहीं पाताहूं क्योंकि वे इल्मके गरूरमैं

आके कलामोंकी अकलमन्दीमैं फसतेहैं। मैंतो आमिलको मिलताहूं अब तीसरादरजा तरीकतका बयांन सुणो। हकीकतवालेपै खुदा महरवांन होताहै जब इन्सान कामिलमुर्शिद होकर मिलताहै जब ये मुर्शिद हवीवको देखकर फिदा होजाताहै और दिल्सैं उनके कदमोंकों सिजदा करताहै। उनकी तन मन धनसैं खिदमत करताहै। और नरमांई दीनताके साथ उनसैं अर्ज करताहै खुदासैं मिलनेकी राह और तरीका पूछताहै जब वे महरवांन होकर इसकों सब भेद बतातेहैं। तब इसका शरैकावन्दन् दिलसैं टूटजाताहै और वाहिरसैं वनांरहताहै और जवांनी इसकी ऐसे नेककामोंमैंही ढलजातीहै। जब इसकों मुर्शिदकामिल्की महरवांनीसैं वडे दरजेकी इवादत बन्दगी खुदाकी मिलतीहै। जिसकों योगमार्ग कहतेहैं उसकी कसरतपै आमिल्होताहै जब इसके दिलकी आंख खुलजाती हैं और रूहांनी पाकलतीफ रोशनी होतीहै और जो याका दिल शैतांनी काम करताथा सो सब नजर आजातेहैं। और इसके शैतांनी काम बहुत कम होजातेहैं सुलतांन उलूअजकारकी नसीहत दिल्मैं कायम होजातीहै। उसके दिल्मैं हकीकी इश्क बढजाताहै। जब वो शरैमैं रहकेही खुदाकी आलादरजेकी बन्दगी छिपीहुई करताहै। जो मुर्शिद सुलूतांन उलूअजकार कामिलकी बताईहुई है। वो सबसैं अलग होकर नमाज पढताहै। सो कैसी नमाज

है। खांनां, पीनां, जितनां हज़म होसकै इतनां खाताहै। बडे सुभेही फरागत जाके जिस्मसैं पाक होके नरम बिछो-नां करिके गर्मी वर्षामैं हवाकी जगै मैंदानमैं सबसैं अलग गोशैतनहाई यानैं एकान्तमैं ऐसी बेठकसैं वैठे कि नींचेके दोनूं दरवाजे बन्द होजावैं और पहिलैं कामिलमुर्शिदकों दिलमैं देखै क्या उनका ध्यान करै वो आदमस्वरूप खुदाहै नज़ीर मोलवीरूमकी मोलवीरूम कहतेहैं। चूंकि करदीजात मुर्शिदराक़वूल हम खूदा दरजातसे आदम हम रसूल॥१॥ मुर्शिदकीजातमैं खुदा और पैग़म्बर दोनूं आगये। ये उपदे-श तरीकतवालोंकोहै। और अपनी निगाहकों बीनींकी अनीपर जमावे और अपने दमकों देखाकरै। और दिल्सैं दिल्कों देखाकरै कि दिल क्या करताहै कि सकाममैं उलझा हुवाहै। उसमैंसैं रोकके बीनीकी अनींपर जमावे थोड़ेही अरसमैं वीनींशमांकी बराबर दीखतीहै। आप परवांनां होके उसकी अनीपर जमजावे और कबी २ हब्सदम होके अन्दरकी तरफ दिल्की आंखसैं जिसकों निजमननूरी कहते हैं उससैं जिस्मके भीतरका हाल निगाह करै। और जब हब्सदमके जोरसैं अर्शकीतरफ ऊपरको हवा चलती है तब पहले तबक़की रोशनीका हाल देखैहे। वहां च्यार फिरश्ते रहतेहैं पीछे दूसरे तवक़की रोशनीका हाल देखताहै वहां छः फरिश्ते रहतेहैं। तीसरेका जादेखैं वहां आठ फरिश्ते रहतेहैं इस तवक़के आसमांनसैं सब जहांन

परवरिश पाताहै उसके बाद चौथै तवक्का आसमानमैं बारह फरिश्ते रहतेहैं और इस तवक्की रोशनी वहार देखनेवालेकों मालूम होवैगी और अर्शसे आवाज़ आनेलगतीहैं, उस आवाजसैं दिलूमसरूर क्या खुश होके मस्त होजाताहै। फिर वहांकी हालत देखकर दिलमैं कामिलमुर्शिदकों सिज्दा करके उनके कदमोंकों चूमताहै। बाद पांचवै तवकमैं दाखिल होताहै वहां सब रूह हाजिर होतीहैं। इस आसमांनमैं सोलहफरिश्ते रहतेहैं, आगै चढनां वहुत मुश्किलहै यहांकी रूहतरीक़तवाले वन्देंका दम् और दिल्कों फाड़देतीहैं। लेकिन् तरीक़त्तवाला वन्दा शग़्लिन्सीरा होके क्या अनहदका उसीलासैं छठे तवकमैं पहुंचताहै। वहां स्या सपेद कमलोंकी क्यारी देखताहै इस आसमांनमैं हवाका वडा जोर रहताहै हज़ारों फरिश्ते फिरतेहैं। वहुत वडा चमन गुलज़ारहै और यहां पहुंचनेवाला वडा मसरूर क्या मस्त होजाताहै और उसके जिस्मांनी नफसांनी गिलाफ वहुतसे दूर होजातेहैं। और इस मुक़ामपर कोई दिन आराम करताहै तरीक़तकी वन्दगीसैं छठेतवक्के फलक्तक पहुंचताहै। यहांतक सिफलीके दरजे रहे यहांसे आगे उलबीके हैं। अब चौथादर्जा मार्फतका हाल सुनो हे प्यारा! तरीकतवाला वन्दा मुर्शिदकामिलसैं जिगरमैं वहुतसी वीनती करताहै और मुर्शिद जिगरके भीतर सुरतरूप होकर मौजूद रहतेहैं उनके कलामकी मदतसैं

आगैं चढताहै और कलामकी छुरीके नीचे आके अपनी गरदन कटाताहै वहां सब हलाल होजाताहै और अपना मांस आप खाताहै उसकौं इश्ककी आगसैं हिम्मतकी हांडीमैं पकाताहै उसका मारफतवाला खानां खाताहै वहां इसकी जिस्मांनी खाल कटजातीहै। जब कामिल मुसल्मांन होजाताहै और हकीकी इश्कमैं मामूर होजाताहै। पीछे कामिल मुर्शिदकी महरबांनीसैं हवापै बैठके शगूलकी मदतसैं क्या अनहदकी मदतसैं आगैं चलताहै और दोनूं चश्मोंकों अवरूहके दरम्यांनमैं भीतरकी तरफ जोडताहै। बाहिरसैं मींचलेताहै वहां तिलपर ठैराताहै और सुरत निरत एक करताहै तब सांतवी तबकमैं दाखिल होताहै। यहां इसके जिस्मांनी नफसांनी गिलाफ दूर होजातेहैं यानें स्थूल सूक्ष्मसैं निर्विकार होजाताहै।आकारकी उपासनां यहांसैं नीचे २ रही यहांपर निराकारकी होजातीहै वहां खुदा खुद निरंजन,निराकार,ज्योतिस्वरूपका दीदार होताहै और पडदेसैं वातैं होतीहैं और आसमांनमैं अजब चमन गुलजार पचरंग नूर वर्षताहै। यहां अनहदका वडा शोर होताहै और आवहयातके होज भरेहैं वे गिनती आफताव महताव झलक रहेहैं। औलिया पैगम्बर फारिश्ते वे शुमार जहां हाजिर खडेहैं और झींनीं अवाजौंमैं सप्तस्वरोंसैं ऊंची वेशुमार पाकपरी- हूर गाना गातीहैं। जवरूत,नांसूत, मलकूतसैं परे ये लाहू- तका मुकाम है इसको चौथादर्जा मारफतका कहतेहैं। जो

इस मुकाम तक पुहुंचतेहैं उनकी पाकरूह उस पाकमैं मिल-जातीहै उनके जो कलामहैं वे खुदाके कलामहैं उन्हींमैं होके खुदा वोलताहै वे खुदाके सगुणस्वरूप आदमहैं और खुदाके नैंतो जिस्महैं, नैं जबानहैं, नैं नमूनाहैं, नैं रंगहैं, नैं रूपहैं, न मकानहैं वो तो वेशवह वेचून वेसखुन हैरत २ वे कलामहैं इस सातवै तवकतक पैगम्बर कुतव औलिया नवीरसूल फुकरा मार्फतवाले पहुंचतेहैं। उनकी रुह मगजमैं पहुंचजाती हैं जिसको सहस्रदलकमल कहतेहैं। उस हालतकों मुसल-मान कहतेहैं कि, मुरदेको आहिस्ते २ लेचलो इसकी रूहको जो मगजमैंहै हलनेसैं तकलीफ पहुँचतीहै सो ये मारफतवालोंकी सैंन दीहैं जो रूह हवसदम्सैं दिमागमै पहुँचतीहै उसका वयानहै और गौर करिकै देखो जो मुर्देके दिमांगमैं रूह होती तो उसके चहरेका नूर नहीं बिगड़ता और वो सिडता नहीं और उसके जिसमकी खूबसूरती बिगडती नहीं। सो इनकों इन वातनकी मालूम नहीं ये इसी मुरदेपर खयाल करतेहैं वो कामिल मारफत वाला रब्बी जिन्दाही मुरदाहै और मुर्दाही जिन्दाहै अव मारफतसैं आगैं चार मुकाम औरहैं तिनका बयांन सुणौं। हे प्यारा! मारफतसैं आगैं चार मुकाम औरहैं वहा परमसन्त कामिल फुकरा जातेहैं अव्वल मुकाम तो मुसल्लिसी क्या बहुत लंबाचौडा पच्छिम वंकनालहै वहां अनहदकी बाद-लकीसी गरज घनघोर होरहीहै, अष्टपहर आवाज होतीहै

और अल्लाहू २ शब्द होताहै थानैं सोहं २ ये मुकाम पाक-
लतीफरूहानी और दूसरा मुकाम ब्रह्मरन्ध्र जिसको
त्रिकुटी दशवांद्वार कहतेहैं। शून्य मैंदानहै जहां बहुतसी
नफीरी बांसुरी बजतीहै और बहुतसे चमन् गुल्क्यारी खिली
हैं और नाज़नीरूंहै जहां केल करतीहैं और तीसरा मुकाम
गाढा अन्धकारमैं पडकर गुफामैं होके बेशुमार सैल
देखताहुवा हक्कमैं पहुँचताहै जिसको सत्य कहतेहैं वहांका
हाल क्या बयान करूं जो पहुँचकर देखैगा सो जानैगा।
इस मुकामपै पडदेसैं वेपडदे होजाताहै,ऊपर नीचेंसैं पडदा
फटजाता है वहाँ झींणीं आवाजोंसैं बीणा वजरहींहै और
सब रचनां नूरकींहै। आवहयातके झिरनें झिररहेहैं
और जहां जवाहरातका मेह वर्षरहाहै यहांका पहुंचाहुवा
चौथा आलादरजा जिसकों दरजासुकांमभी नहीं कह्याजा-
ता सवका अन्तमैं सहज चलाजाताहै, वहांका हाल कहनें
सुणनेंमैं नहीं आता म्हसूस गैरम्हसूस क्या आकार निरा-
कार दोनूंनका अनुभव श्रुतीकों नहीं रहता, खुदमैंखुद
मिलजातीहै वहां पालागलके पानी होजाताहै। जिसकों
वेशवह, वेचून, वेनमूद,वेसखुन सवका अंत कहतेहैं। नैं जहां
गामहै, नैं ठांमहै, नैं मुकांमहै,नैं नामहै,नैं अनामहै, हैरत
वेकलामहै। सो हे प्यारा! मैंने तेरेवास्तैं इन सव मुकांमोंका
हाल वहुत कम करिके बयांन कियाहै। ज्यादा कह्याजाय
तो ग्रंथ वहुत वडा होजावै तुझैइश्क पैदाकरनेंकों थोडासा

कहदियाहै। जब तूं जावैगा तब सब देखलेगा, थोडेहैं जो इन मुकांमोपर आतेहैं क्यौंकि शैतांन जो खाखीमनहै सो किसीकों आनें नहीं देता जिस्मांनी मजामैं सबकों फसाके अपनां गुलाम करलेताहै परन्तु मेरेबन्दे बडे जबरदस्तहैं इसके शिरपर पांव रखके आतेहैं औरजे बन्दे भोलीभावनासैं मेरी इबादत करतेहैं वे मोकौं बहुत प्यारेहैं। जैसैं इन्सान् छोटे बच्चोंकों बहुत प्यार करतेहैं मैं उनसैं ऐसैं प्यार करताहूं॥

अथ यसूमसीके मजहबका व्याख्यान वर्णनम्।

मंगल उवाच।

हेजगत्पति घणनामी! यसूमसीके मजहबकाभी हाल कृपाकरिके वर्णन करो॥

अनाम उवाच।

हेप्यारा यसूमसी यहुदी देशमैं यहुदीयोंमैंसैं प्रगट हुवाहै सो अतिउत्तम श्रेष्ठ शुद्ध सतोगुणमय अवतार हुवाहै उसकी कहीहुई अंजीलनामकरिकै किताबहै ये मजहब अँग्रेजलोगोंके राज्य होनेसैं इस वर्णाश्रमदेशमैं आयाहै सो यशूका उपदेश श्रेष्ठहै इसके उपदेशमैं सतोगुण प्रधानहै और प्रकृति शुद्धरखनां प्रयोजनहै। देखो सब मजहबोंमैं अपने २ मजहबकी खैंच रक्खीहै और विरोधके वचन उपदेशकिये हैं यानें सबधर्मी मजहबीयोंनें ये लिखाहै कि जो तुरा

अपनें मज़हबकी निन्दा करते सुनों। तब सामर्थ्य हो तो दण्ड देवो असामर्थ्य हो तो सुणों मत चले जावो और यीशुमसीनें क्या उपदेशकियाहै कि, जो मेरी निन्दा करताहै वो शैतानकी भैकावटसैं करताहै तुम उसका सामनां मतकरो। शैतानके साथ शैतान मतहोवो बनैं तो उसैं कोमल वचनसैं सीक्षाद्यों नहींतो वैरीसा मत समझो। और परमेश्वरसैं उसकेवास्तैं प्रार्थना करो कि उसैं बुद्धि बख्शैं तो इस वचनकों गौर करके बिचारो कैसा विरोध दूर किया और तामसताका खोज नहीं रक्खा । और क्षमा जमादीनी कैसा कल्याणका वचनहै और कह्या है कि जो तुमसैं विरोध करैं,बुरा वचन कहैं,तुमकों स्राप देवैं, तो तुम उनके बदलेमैं आशिर्वाद देवो और उनसैं कोमलताके वचनोंसैं, बोलो वैरीसे मत समझो। जो तू किसीका अपराध क्षमा करैगा तो तेरा पिता परमेश्वर तेरा अपराध क्षमा करैगा तो देखो कैसा शान्तका उपदेशहै । शैतानकों अन्तःकरणमैं जगैही नहीं देता सो हे प्यारा! पूर्व मैंनैं तुमकों नौ अधिकारकी सीढीका उपदेश वर्णन किया है उनमैं तीसरे अधिकारकी सीढ़ीका जो उपदेशहै सोई उपदेश मसीनैं अपने सेवकोंको वर्णन कियाहै । दो अधिकार मूर्तिपूजाके छोडदिये उनकी न्यूनता दिखाईहै उन दोनूंका सार इस तीसरामैं आजाताहै क्योंकि इसमैं वृत्तियां शुद्ध रखनेंका उपदेशहै।जो तीसरा नैं सधै तो वे दोनूं निष्फल

बेगार हैं और तीसरा- अधिकारी या लोक परलोकका फल पाताहै यानें बिना अन्तःकरण शुद्धहुये सब कर्म वृथाहैं सबसैं श्रेष्ठ वृत्तिनका शुद्ध होनांहै ॥

प्रश्न ॥ हे महाराज ये क्रिश्चियांन बहुत हिंसा करतेहैं पशूपाक्षियोंकाही आहार करतेहैं ॥

उत्तर ॥ हे प्यारा ये ईश्वरका धन्यवाद करके शुद्ध मानके खातेहैं और जो पुरुष कर्मनकरिके जीवहिंसासैं बचै परंतु स्वभावका दुष्टहोवै, अजोग दुर्वचनोंका कहनेवाला और क्रोधी ईर्षाछलछिद्रवाला दम्भी होवै यानें जाका अन्तः करण मलीन है शुद्ध नहींहै और वो निरामिष भोजन करताहै तोभी ऊंची दशाकों नहीं प्राप्तहोता और जो उसकी कुलामनाय देशकी रितिसै आमिष आहारीभीहै और मन वचन कारिके सतोगुणके गुण धारण करताहै तो थोड़ेही कालमैं उसको ऊंची दशाकी भक्ति प्राप्तहोवैगी और ऐसा पुरुष सब रीतिसैं कोईकालमैं अतिश्रेष्ठ होजा-वैगा देखो या जीवकी जड़संज्ञा और चैतन्यसंज्ञा दो हैं सो परस्पर जीवोंके आहारमैं होतीहैं और जीवकी ऐसी शक्तिहै कि चैतन्यसैं जड़ होजाताहै और जड़सैं चैतन्य होताहै जैसैं पेडसैं बीज जडसंज्ञा होताहै और बीज़ोंमें चैतन्य जंगम जानवर पड़जातेहैं और बहुतसे देश ऐसेहैं कि उनमैं चैतन्य सृष्टि जीवोंकी विशेष करिके उदय होतीहैं और

वहांके मनुष्य वाकों नैंखाँय तो नष्ट होजावैं सो वो उनहींके आहारकों पैदा होतीहै और वहांके नवी अवतारभी ऐसाही उपदेश करतेहैं जाकरिके आरोग्यतासैं परमेश्वरकी सेवा करैं और यीशुमसीका उपदेशमैं तो ऐसा बयांनहै कि जिसमैं नैतो आमिष खानेंकी इजाजतहै नैं मनाहैं वल्कि गुप्ततासे मना हैं ऐसा लिखाहै कि जो कसाईकी दुकांनपै बिकै सो खावो धर्मबोधके कारण कुछ पूछोमत क्यौंकि पृथ्वी और उसकी भरपूरी प्रभूकीहै सो मदिराका विशेष पीना, और व्यभिचार झूंठ कपट क्रोधका तो बिल्कुल मनाहै ये बडा दयालू हुवाहै। लिखाहै कि मैं तुम्हैं आत्मिक दान दियाचहताहूं तो क्या तुम्हरा शारीरिक काटू क्या तुमकौं मैं आत्माका बोधरूप ज्ञानका सुख दियाचाहताहूं तो क्या तुह्मारा शरीरका सुख उपदेशकारिके दूर करूं सो उसकी ये दयाहै कि शरीरकाभी सब सुख बनारहै और इनका कल्याण होवै या दया कारिके उसनें प्रकृतिका शुद्ध रखनेका उपदेश किया यानें स्वभाव क्रोध छल रहित सतोगुणी होवै सोई सार उपदेशहै सो अंजीलमैं संक्षेपतासैं सार उपदेश कह्याहै। और वर्णाश्रमी ग्रंथोंमैं परमेश्वरके धर्मका मन वच काया कारिके विशेषतासैं उपदेश कह्याहै और परमेश्वरकी महिमा और मार्गका ज्यादा कथन किया है और वडी गुप्तता वर्णन करीहै। परन्तु पीछे, पढेहुये मनुष्य मन्द अधिकारीयोंनैं वाक्यछल कारिकेअल्पबुद्धिकी

काव्यमैं मतमतांतर उपासनाकी खैंचातांनी करिके छाछ बहुत बढादीनी जासों वो असलबात छिपगईसो या भेदकों तत्ववेत्ता जानतेहैं और हे प्यारा परमेश्वरके श्रेष्ठ पुरुष योगसिद्ध अवतार या वर्णाश्रम देशमैं बहुतसैं प्रगट हुयेहैं और हैं और होतेही चलेजायँगे और देशौंमैं कम होतेहैं औरदेशौंके मनुष्य बाहरी पृथ्वीकी वस्तु खोजनेंमैं ज्यादा चतुरहैं संसारी व्योहारमैं हुसियारहैं परन्तु परमेश्वरकी तरफका खोज कम करतेहैं इसी सबबसैं ये देश श्रेष्ठ लिखा-गयाहै परन्तु हालमैं हिन्दू मुसलमांनोंको देखतें ईसाई मतके धारण करनेवाले अंग्रेजलोग राज्यलक्ष्मीकों पाके एक स्त्रीके साथ कैसे श्रेष्ठ स्वभावसैं रहतेहैं ये मसीके उपदेशका प्रतापहै। राज्यलक्ष्मीको पाके कितनें सूधे सरल अभिमान अहंकार रहित क्षमावान् सत्यवक्ता दयालुहैं परन्तु पहिलैं के अंग्रेजोंकों देखतैं अब हालकेनमैं कुछ विकार बढगया हैं वे हाकिमी पाके गरूरमैं आके गुस्सा बहुत रखतेहैं, जिस्मके सुखाभिलाषी विषयभोगोमैं बडे आसक्तिहैं, अपने मातेद सेवकौंको अन्यायसैं हरएक बातकी तकलीफ देतेहैं, क्षमा दया कोमलता नहीं रखते, जैसा मसीनैं उपदेश दियाहै उन आज्ञानको कम धारण करतेहैं सो लिखाहै कि अन्तसैं बहुतनका प्रेम ठंडा होजावैगा और ऐसाभी लिखा-है कि ज्यों २ वो अन्तका दिन नजदीक आवै त्यौं २ ज्यादा प्रेम करो और हालमैंभी बहुतसे पादरी या हाकि-

मलोग सूधे सरल कोमलमिजाजसैं रहतेहैं परन्तु जो झीनां उपदेश अंजीलमैं योगमार्गकाहै वो इनकी निगाहमैं नहीं आया। वो बिनामिलैं सच्चे सद्गुरु कामिल मुर्शिदके निगाह नहीं आता वेही पवित्रात्माहैं और बाइबिलमैं लिखाहै कि मेरे वचनोंपर छापहै क्या ढकेहुयेहैं परन्तु नष्ट होनेवालोंकों ढकेहैं सो प्यारा हो पवित्रात्मा जो वक्तका कामिल मुर्शिद देह धारण करिके मसीस्वरूप रक्खीहै। वासैं जब मेल होवैगा और उनकी सेवा सत्संग करोगे और उनके वचन ग्रहण करोगे जब तुम्हारे दिलकी आंख खुलैंगी तब सब गुप्त हाल प्रगट होवैंगे। हे मंगलप्यारा! जब तुझकों मेरे इश्कके मार्गसैं भीड़ पड़ीथी और मैं देह-स्थूलरूपसैं तुझसैं अलग हुवाथा जब मैंनैं वचनरूप यीशु मसी ख्रीष्टको तेरेपास भेजाथा।

मंगल उवाच।

हां स्वामी जब आप देहछोडके विदेह होके मेरे भीतर वास करतेथे जब मोकों अज्ञान जो मन शैतांनहैं वानैं आपके विश्वाससैं डिगा दियाथा। और जब मैंनैं आपके योगमार्गमैं शारीरिक क्लेश पाया तब शब्द स्वरूप यीशु मेरेपास आया उन्होंनैं अपनें शब्दसैं मुझको मार्गके दुःखोंके भेद सब दीनें जो मैं मार्गमैं दुःख पारह्याथा। जिनकाभी हाल मालूम हुवा और जो आगें चलनेंसैं दुःख होवैंगे उन-

काभी हाल पाया जब मैं शब्दस्वरूप यीशुकेसाथ आगेकों चढताही चलागया और आपसैं जामिला उसवक्त परमेश्वरके इश्कके क्लेशोंमें शब्दरूप यीशुनै मेरी बडी सहाय करी ये आपका बडा अनुग्रह हुवा नहीं तो अज्ञानरूप मन शैतांननैं कष्टोंके सबवसैंगिरादियाथा लेकिन् सहायकता होगई और आपेकों आपकी प्राप्तिहुई जो हमारा जीवन आत्मिक होवे तो चलनभी होना चाहिये ॥

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! इस अंजीलसैं मेरे योगमार्गका कथनहै और जो मार्गसैं क्लेश होतेहैं सो ज्यादा बयांन कियेहैं और यीशुमसीनैं अपनें सेवकोकों शारीरिक बोझ नहीं दिये मन जो शैतानहै उसके खोटे स्वभावोंसें बचायेहैं और दूध पिलाया है कडवा भोजन नहीं खिलाया सो लिखाहै कि इतने समयमैं चाहिये था कि तुमलोग उपदेशक होते परन्तु अवभी आवश्यक होताहै कि परमेश्वरके धर्मोपदेशके मूलसूत्रोंको कोई तुमलोगोंको फिरके सिखावे और तुम्हें दूध पिलावे कि कड़वा भोजन खिलावे क्योंकि हरेक जो दूध पीयाकरताहै सो धर्मके वचनोंमैं अप्रवीणहै क्योंकि वो बच्चाहैं परन्तु कड़वा भोजन सियानेंलोगोंकों है कि अभ्यास करनेसैं वे भले और बुरेका विचार करनेंकों चैतन्यके निपुणहुयेहैं। सो हे प्यारा! इन दूध पीनेवालोंमैंसैंही

कोईज्यादा दूध पीके जवान होजावैगा तो कडवा भोजन जो योगाभ्यासहै उसकोंभी ग्रहण करैगा सो हे प्यारे! अंग्रेज ईसाईहो तुम बाहिरकी बस्तु खोजनेमैं बडे चतुरहो परन्तु मसीका गुप्तज्ञान जो बूझनेसैं बाहिरहैं उसका तुम ज्यादा खोज नहीं करते सो लिखाहै कि जो वस्तु तुम देखतेहो उसपै क्या मन लगातेहोवौ, जो नहीं दीखतीहैं उसपै मन लगावो, जहा मसी पिताकी दहंनीओर बैठाहै उस अदेख भूमिमैं विश्वाससैं चलो और सारे मन बुद्धि प्राणसैं प्यार करौ और तू जगत कौं प्राप्त करै और अपना प्राण खोवे तो प्राणके बदलेमैं परमेश्वरको क्या देगा ? सो लिखाहै कि जो मसीके लोगहैं उन्होंनें शरीरकौं उसके स्वभाव और कामनाऔंसमेंत क्रूसपर माराहै और लिखाहै कि पिता मुझे इसलिये प्यार करताहै कि मैं अपना प्राण देताहूं कि मैं उसे फेर लेऊं कोई मनुष्य उसको मुझसैं नहीं लेता परन्तु मैं आपसैं देताहूं उसैं दैनैंकौं मुझे अधिकारहै और उसैं फेरलैनेको मुझैं अधिकारहै सो हे प्यारा! हो यीशु अपनां प्राण देताहै और लेताहै और ये सैंन वो आपेसैं देताहै और कोईलेतानही सो तुम क्यौं नहीं लेते अपने सिर सीधेकरो, अपनी आंख उठावो, तुम्हारे छुटकारेका समय आयाहै च्यार पवनोंकों बन्धकरो और ऐसी प्रार्थनां करो कि तुम्हारे शरीरके पसीनेके समान लोहू निकले हमारा पलभरका हलकासा क्लेश वडीभारी महि-

माकों प्राप्त करताहै, प्रेमरूप जलका वपतिस्मा लेके अग्निका वपतिस्मा लेवो जासैं पवित्रात्मा प्रगट होवै मनकी आँखसैं भीतरकी वस्तु खोजो अपनां क्रूस उठांय खोपरीके स्थानको चलो जो प्राणदेवैगा सो बचावैगा और जो बचावैगा सो खोवैगा तू अपने भोजनसैं प्रभुका कार्य मत बिगाडै, बहुत सोये अब नींदसैं जागनेका वक्तहै, निस्तारका समय अवहै, ग्रहणकरनेंका समय अबहै, अपनें शरीरकों परमेश्वरके अर्पणकरो जासो उत्तम बलिदान होवै, हमारा तम्बूसा घर जो पृथ्वीपर है उजड़जावै तो स्वर्गमें अविनाशी घर तैयार है, इसमें हम आहैं खैंचतेहैं अपनां स्वर्गीय घर पहिनलैनेकों जीसैं चाहतेहैं, जबलों हम इस तम्बूमें हैं बोजसैं दबेहैं, आहैं खैंचतेहैं तोभी नहीं चाहते कि उतारै परंतु उसपर पहरायेजावैं जासैं मृताई जीवनसैं निगल लीजाय, हमतो इसीके लियैं तैयार कियेगयेहैं सो परमेश्वरहै, जबलों हम देहमैं हैं तबलों प्रभूसैं वियोगीहैं और लिखाहै कि उस बातका अग्र सोचो जो जगत्कों और परमेश्वरकों प्यारी लगै, मैं अपनें क्लेशोंमैं आनन्दके मारे उझलाही जाताहूं, हमारी बाहरी मनुष्यता बिगडतीहै तो भींतरकी तो नई होतीजातीहै, हम वेसुधहैं, ये परमेश्वरके लिये हैं, सुधमें तुह्मारे लियेहैं, हम कुछ नहीं रखते परंतु बहुतनकों धनी करनेवाले हैं, मैं दुर्बलहूं जब वलवानूहूं क्योंकि दुर्बलतामें मेरा

बल सिद्ध ठेरताहै, मेरेलिये सब ठीकहैं परन्तु मैं किसीके आधीन नैं होऊं, मेरा मन मुझे किसीबातमैं दोष नहींदेता तोभी मैं इससैं निर्दोष नहींहूं अपनें मोती सूकरोंके सामनें मत फैंको क्यौंकि वे रोधैंगे, अपनें पवित्र भोजन कुत्तोंकों मत देवो क्यौंकि वे उलटे काटखावैंगे, देखो धोईहुई सूकरी दल २ कौं जातीहै तुमनैं उजालेसैं अंधेरेकों ज्यादा प्यारकिया जबतक जगतसैं और जगतकी वस्तूंसैं ज्यादाप्यार करतेहो तबतक मेरेयोग्यनहीं मेरे पीछेआयाचाहो तो अपनीं इच्छाकों मारो और अपनां नित्यप्रति क्रूस उठावो और माता,पिता, भाई, स्त्री, बालक, अपनें प्राणसैंभी जो वैर नहींकरै तो मेरा शिष्य नहीं होसक्ता, जहां मैंहूं वहां मेरा सेवकभी होगा, कोई चाहे जो दशामैं हो परन्तु प्रभूमैंहो ईश्वर किसीकी बाहरी दशा नहीं देखता, भींतर हृदयको जांचताहै, प्रभूकाहै सो प्रभूकी बात खोजताहै, संसारकाहै सो संसारसैं प्यार करताहै, सब जीवात्मा एकसे नहींहैं परखो प्रभूकी तरफसैं हैं कि शैतांनकी तरफसैं है, जो वचनकी शिक्षा देतेहैं वे दूनें आदरके योग्य हैं, जो तुह्मे आत्मिक पदार्थोंमैं शामिल करै तुम उनकौं शारीरिकौंमैं शामिल करो क्योंकि तुम्हारे पास शारीरिक हैं, क्या उनके सुन्दर पांवहैं जो शान्तका मंगलसमाचार सुनातेहैं तुम ऐसेनकों परखो अपना धन स्वर्गकों पहुंचावो, जहां तुह्मारा धन वहा तुह्मारा मन होगा। मनुष्य दोस्वामीकी सेवा नहीं करसक्ता

एकसैं प्रीत करैगा दूसरेसैं वैर करैगा जो धनकों चाहताहै सो धनीका नहीं और जो धनीका है सो धनका नहीं और व्यभिचारी जो है सो अपनें शरीरका वैरी होताहै और लिखाहै कि अबभी मेरी बहुतसी बात कहनेंकौंहैं परन्तु तुम अब उनकों सह नहीं सक्तेहो जब वह सच्चाईका आत्मा आवैगा तब वह सारी सच्चाईका मार्ग बतावैगा क्योंकि वह अपनी नैं कहेगा परन्तु जो कुछ वह सुनैंगा सो बोलैगा और जो आनेवाला है सो तुह्मे बतावैगा वो मेरी महिमा प्रकाश करैगा क्योंकि वो मेरी बातोसैं पावैगा सो हे प्यारा! हो ! वो सच्चाईका आत्मा कामिल सच्चा सद्गुरु वक्तका है उनके विनामिलैं मसीका जो गुप्त ज्ञानहै और गुप्त मार्गहै सो नहीं प्राप्त होता, और लिखाहै कि परमेश्वरकी भक्ताईका बडाभेदहै, परमेश्वर शरीरमैं प्रगट हुवा, आत्मसैं सत्य ठैरायागया, स्वर्गदूतोंकों दिखाई दिया, अन्तदेशीयोंमें प्रचारकियागया, जगतनैं निश्वासकिया, ऐश्वर्यकों वह ऊपर उठायागया और लिखाहै कि व्यवस्थासैं कुछ सिद्ध नहींहुवा पर आसानैं प्रवेशकिया उसके द्वारा हम परमेश्वरके समीप पहुंचतेहैं और लिखाहै कि जो यीशुके द्वारासैं परमेश्वरके पास आतेहैं, उन्हैं वो संपूर्णतालों वचानैंकौ शक्तिमान है क्योंकि वो सदा जीताहै और यीशुमसी कल्ह और आज सदाकाल एकसाहै सो हे ईसाई प्याराहो ! जो यीशुमसी सदाकाल एकसा जीताहै सो

सच्चा सद्गुरु वक्तका रव्वी कामिलमुर्शिद है वो जगतमैं हमेसां देह धारण करिके गुप्त या प्रगट फकीरीहालमैं या गृहस्थमैं मौजूद रहताहै, उससैं तुम्हारी भेटहोवैगी जब परमेश्वरके पास जावोगे जो तुम योंकहो कि हम मरेंगे जब जावैंगे सो बात नहीं ऐसा लिखाहै कि तुमसैं सच कहताहूं, यदि मनुष्य जलसैं और आत्मासैं उत्पन्न नैं होवै तो वह परमेश्वरके राज्यमैं प्रवेश नहीं करसक्ता सो तुम परमेश्वरसैं प्रेम करौ, और जो सच्चासद्गुरु मसीरूपं मनुष्य होकर मौजूदहैं वासों मिलो वो परमेश्वर और जगतके बीच एक मनुष्य विचवईहै । सो यीशुरूप सद्गुरु परमसन्त महापुरुषहैं सो हे ईसाईहो ! तुम्हारे जिसमके भीतर सात ज्योतिहैं जिन्हौंमैं वो फिरताहै वाकों तुम खोजो और सन्तोंकी संकेतके भागी होजावो जो तुम किसीपै दया करोगे तो तुमपैभी कीजावैगी सो हे प्यारे ईसाईहो ! तुम अच्छे चालचलनसैं रहतेहो परन्तु तुम जो कामिल सच्चा सत्गुरू रव्वीहै उसकों नहीं खोजते ये तुमलोगोंमैं वडी भूल और हरज है, वक्तके सच्चे मुर्शिदके विनामिलैं परमेश्वरके पास जीतैंजी नहीं जासक्ते उनसैं मिलकर जो गुप्तमार्ग योगका परमेश्वरके मिलनेका है सो पावोगे परन्तु थोडे हैं जिन्हौंका ईश्वरसैं ज्यादा प्रेमहै और मैं तेरे सब अपराध क्षमा करदूंगा परन्तु पवित्रात्माकों वुरा कहैगा सो माफ नहीं कियाजायगा, नैं पृथ्वीमैं नैं स्वर्गमैं कोई भला कर-

नें हारा नहीं, कोई खोजी नहीं, सब भूले भटके हैं, सबकेसब निकम्मेहैं, धन्यहैं वे जो आज्ञानकों पालन करतेहैं। हे प्यारा ! या अंजीलमैं च्यार मंगलसमाचारहैं उनमैं उपदेशहैं और महिमाहैं और कुछ थोडासा वेदान्तहैं और योगमार्ग गुप्ततासैं हैं और जितनी पत्री पौलसकीसैं आदि लेके हैं उन सबनमें नीत प्रेमभक्ति सात्त्वकीचलन और योगमार्गकी गुप्ततासै सैंन हैं और प्रकाश वचनोमैं योगसिद्ध मार्गका वर्णन कियाहै ये वाईबिल गूढहै आशय जाका ऐसी अतिउत्तम किताबहै जब तुम वक्तके सच्चा रव्वीसैं मिलोगे तब याकी गूढता पावोगे, वो जो सच्चा सद्गुरु रव्वी है सब उत्तमनाम उसीके हैं, कहीं यीशुमसी खीष्टकरिके कह्याहै, कहीं मल्किसदिकनाम कह्याहै, कहीं हनूंकनाम कह्याहै, कहीं पैगम्बर नवीरसूल,औलिया गोसकुतवकरिके कहेहैं, कहीं पवित्रात्मा सत्यका आत्मा ऋषी मुनी अवतार अनेककिताबोंमैं अनेक नामकरिके बयान किया है, सब किताब जो परमेश्वरकी तरफसैं हैं सबका मतलब एकहीहै,परन्तु जब सच्चे सद्गुरुसैं मिलोगे जब ये वात जानोंगे इतनें कोईसाही मजहबकी शरैमैं बंधेई रहोगे और मुनासिबहै कि जबतक वे नैं मिलैं तबतक अपने मजहबकी शरैमैं रहै उनसैं मेल होजावे तव उनकी आज्ञानुकूल रहै हे प्यारेहो ! जीतैंजी परमेश्वरसैं मिलो इस मनुष्य जन्मका यही फलहै कि परमेश्वरकी प्राप्ति

होवै और हे प्यारा ! या अंजील किताबकी गूढबातोंका बयान खोलनां मैंने मुनासब नहीं समझा जब पवित्रात्मा, सत्यका आत्मा, वक्तका सद्गुरुसैं मिलोगे और उनकी खिदमति निष्कपट प्रेमसैं करोगे और उनकी आज्ञानुकूल रहोगे, उनका बताया योगमार्गका अभ्यास करोगे तब सब गुप्तता प्रगट होजावैगी थोडेहैं सौ उसकों पातेहैं हे यीशुमसीके सेवकहो ! तुम धन्यहो जो उसकी आज्ञानका पालन करतेहो और वो तुमसैं दूर नहींहै ऐसा लिखाहै कि मैं शरीर करिके दूरहूं परन्तु आत्मा करिकेतो पासहूं आमीन पितापरमेश्वरकी कृपा कुशल बनी रहै आमीन ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाममंगलसम्वादे शैतान्काहकीकततरीकतमारफतकेसिवायच्यारमुकाम्कायीशुमसीकेमजहबकाव्याख्यानवर्णनो नाम दशमप्रकाश १०

मंगल उवाच ।

दोहा—नामनाम सबकोऊ कहै, नाम न जानैं कोय।
नाम विहूनां नामहै, नहचैहीमैं जोय ॥

हे जगजीवनघणनांमी सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र दोंहैं कि एकहैं और वेदान्तशास्त्र, मन्त्रशास्त्र, मीमांसाशास्त्र, तर्कशास्त्र, जाकों न्यायशास्त्रभी कहतेहैं और धर्मशास्त्र, ज्योति-

षशास्त्र, संगीतशास्त्र वैद्यकशास्त्र जाकों आयुर्वेदभी कहतेहैं और कर्मकाण्ड इन सबनका व्याख्यान कृपाकरिके वर्णन करो ॥

अनाम उवाच ।

हे सुरुचे ! सबका वर्णन करताहूं सावधान होके श्रवण करो हे प्यारा ! सांख्यशास्त्रमें तत्त्वनका वर्णन कियाहै सो केई महायोगियोंनें तो च्यारतत्त्वका शरीर मानाहै, किसीनें पांचका, कोईनें सातका, नोका, किसीनें पँदरह सतरहका, किसीनें तेईस चौबीसका, किसीनें पचीस अट्ठाईसका मानाहै सो हे प्यारा!शब्द,स्पर्श, रूप,रस, गंध ये पांच तन्मात्राहैं। पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश ये पांच तत्त्वहैं श्रवण, त्वचा, नेत्र, रसना,नासिका, ये पांच ज्ञानेन्द्रियहैं , वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ, ये पांच कर्मेन्द्रिय हैं।मन बुद्धि, चित्त, अहंकार,ये च्यार अन्तःकरण है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ये च्यार उपविकारहैं । रज, तम, सत्त येतीन गुणहैं । सब मिलके इकतीस होतेहैं और महत्तत्त्व प्रकृति पुरुष जाको जीवात्मा कहतेहैं ये चौंतीस हुये और पैंतीसवां वो सत्तास्वरूप परमात्मा जामें ये सब प्रकास होरहेहैं वो अवाच्य अनाम हैं। सो हे प्यारा ! ये सांख्यका हिसाब योगकी सिद्धताके समय योगीकों सब प्रत्यक्ष होजाताहै, जब की जिज्ञासु सद्गुरूका संग पाके उनके उपदेशसें

योगमार्ग होके अपनी आत्माको परमात्मामैं लय करताहै याहीका नाम योगहै सो योगीनेही स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीरोंके सब तत्त्व निर्णय कियेहैं सो हे प्यारा ! सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र दोनोंहीं एकहींहैं जैसैं वैद्यकग्रंथसैं कोई रस बणानेकी क्रिया पढले और वाके गुण दोषभी याद करले और क्रिया करिके किसी गुरुसों रस बनानां नहीं सीखा और वरतावमैं नहीं लाया तो केवल वचनसैं कथन करिके कहनां सो वृथाहै, ऐसैंही योगमार्ग सिद्ध हुये-विनां सांख्यका कथनमात्र वृथाहै जब योगाभ्याससैं योगी अजर अमर निर्वाणपदकों प्राप्त होताहै तब सब गुप्तस्थान प्रगट होजातेहैं और स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों शरीरोंकों देखताहै । स्थूलके सब स्थान देखके सूक्ष्मके सब स्थान देखताहै । इन दोनूं शरीरनकी वृत्ति गुणनकों कारणमैं लय करताहै । इसीका नाम सांख्यज्ञान है योगसैं-हीं सांख्यज्ञान होताहै और सांख्यसैं योग होताहै । जैसैं सद्गुरु वचनकी सैंन करिके योगमार्ग बतातेहैं, वा वचनके बलसैं अदेख भूमिनकों जाताहै सो सद्गुरुके वचन ज्ञान जो सांख्यहै ताकरिके योग सिद्ध हुवा, याहीप्रकार गी-तामैं कह्योहै ।

श्लोक ॥ यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ॥
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ इति ॥

सो योगी जो परमपुरुष विद्वान् पण्डितहैं सो सब भेद जानतेहैं, अयोगी केवल वचनविलासका आनन्द करलो तत्त्वकों नहीं पहुंचता योगाभ्याससैंही पांचौं तत्त्वनसैं और गुण वृत्तिनसैं अलग होताहै जब सब तत्त्वनका ज्ञान आपही होजाताहै और जो पहिलैं वचन करिकै ज्ञानहैं सोभी योगाभ्याससैंही सिद्ध होवैगा क्योंकि विचारसै कर्म सिद्ध होताहै और कर्मसैं विचार सिद्ध होताहै जबतक योगाभ्यास करिके निवृत्ति जो समाधिदशाहै वो सिद्ध नहीं होती तबतक गुण वृत्तिनमैंही फसा रहताहै सो सांख्ययोग दो नहीं एकहीहै योगियोनैंही सांख्यका कथन कियाहै और हे प्यारा ! गीतामैंभी मैंनैं योगकोही श्रेष्ठ कह्याहै ।

श्लोक ॥ तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः ॥
कर्मिभ्यश्चाऽधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ इति ॥

सो योगके आठ अंगहैं यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८, और ग्यारह विक्षेपशक्तिहैं आलस्य १, व्याधि २, प्रमाद ३, संशय ४, दौर्मनस्य ५, काहा अनेक गुण वृत्तिन करिकें रोंधागया मन अश्रद्धा ६, चित्तअनवस्थित ७, भ्रम ८, भ्रान्ती ९, त्रिविधक्लेश १०, काहा अधिभूत, अधिदैव, अध्यात्म और अजोगविषयका लोलुपता ११, इन ग्यारह विक्षेपसैं अभ्यासके समय सावधान रहै।

अथ वेदान्तशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

हे प्यारा! वेदान्तनामभी सांख्यकाही है क्योंकि माया ब्रह्मका जो विचारहै सोई वेदान्तहै सो मायाकों अनित्य कहके ब्रह्मकों नित्य कह्या याहीका नाम वेदान्तहै और ब्रह्महीकों माया कह्या कहा सब दृश्यमात्र ब्रह्मका स्वरूपहै और दृश्यमात्र सबका अत्यन्त अभाव कह्या जहा सब दृश्यका अभाव होताहै सो ब्रह्महै। हे प्यारा! ये सब सिद्धान्त योगकरिकेही सिद्ध होतेहैं विना योग सिद्ध हुयें तत्त्वका वेत्ता नहीं होता केवल वचनसैं ब्रह्म बनतेहैं वे वाचक ब्रह्मज्ञानीं हैं। क्षर, अक्षर, निहअक्षर, ये तीनहैं। क्षरनाम शरीरकाहै, अक्षरनाम तुरीये प्रकाशकाहै और निहअक्षर तुरीयातीतका नामहै और मायामैं शामिल और मायासैं अलग ये दोनूं योगकरिकेही सिद्ध होतेहैं। योगी समाधि दशामैं सबैसैं अलगहै उत्थानदशामैं सबसैं शामिलहै वेदान्तशास्त्र जो है सो योगीकी सिद्धअवस्थाका रहस्यहै जब योगीका योगकर्म सिद्ध होगया तब समाधि दशाकों प्राप्तभया वहाँ एकोहं कलनाहूं नहींरही सर्वातीत अवाच्यपदकों प्राप्त होगया।वहां अत्यन्त दृश्यका अभाव होजाताहै और जब योगी उत्थानदशाकों प्राप्त भया तब वाहीसत्तास्वरूपसैं शरीररूप ब्रह्माण्डको धारण किया तब योगी दृश्यमात्रकों अपनाही स्वरूप देखताहै सो उसका देखना

और शुद्ध सतो गुणका वर्ताव जोहै और योगीका अन्तःकरणका विचार जोहै वाहीका नाम वेदान्तहै क्यौंकि योगी समाधि उत्थान दोनूंनका ज्ञाता होताहैसबका अन्तरसमाधिदशाहै और सबमैं शामिल उत्थानदशा है सो महायोगीकी कोईकालम उत्थान समाधि एक होजातीहैं । जैसैं वालक खेलता २ सुषुप्तिमैं सोजाताहै ऐसें जानों सो परमयोगीकी निरहंकार बालवत् क्रीड़ा गुणातीत पदकी रहजातीहै जबतक जीवात्माके अज्ञानका आवरण छारह्याहै तबतक जीवसंज्ञा है और जब योगाभ्याससैं आवरण दूर होता है तब ज्ञानस्वरूप ईश्वरहै और परमेश्वर वोहै जो सबकुछ गुप्त प्रगटहै । हे प्यारा कुछकालमैं योगंकी सिद्धतासैं आपेमैं स्वयंही ज्ञान होजाताहै सो गीतामैंभी मैंनैं ऐसे ही कह्याहै ॥

श्लोक ॥ न हिज्ञानेनसदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धिकालेनात्मानाविंदाति ॥ इति ॥

प्रश्न ॥ हे महाप्रभु ये वाचक ब्रह्मज्ञानी यों कहतेहैं कि केवल सद्‌शास्त्रनके विचार मनन ज्ञानके अभ्यास करनेसैं निर्वासना होताहै, योग समाधिसैं निर्वासना नहीं होता जैसैं एक बहुरूपियानैं राजा रिझानेके वास्ते समाधि लगाना साधा जब उसकी समाधि लगगई तब राजा वाकी महिमा सुणकर दर्शन करनेको आया जब वाकी समाधि जगी तब

बहुरूपियाकी बोली बोलके राजाके सामनें क्रीडा करनेंलगा सो जा वासनां करिके वो समाधिमें लय हुवाथा सोई प्रगट होगई सो योग समाधि करिके वासनां नष्ट नहीं होती सद्शास्त्रनके ज्ञान विचारके अभ्याससें नष्ट होतीहै सो हे स्वामी ! या दृष्टान्तका तात्पर्य कृपाकरिके कहो ।

उत्तर ॥ हे प्यारा ! ऐसा वचन कहना अनुचितहै ये अज्ञानी आत्मज्ञानसें रहित बाह्यविद्या पढके शास्त्र ग्रंथनके वचन सीखके वाचक ज्ञानियोंनें अपनी सिद्धताके वास्ते दृष्टान्त बनांलियाहै । हे प्यारा ! समाधि दशामें वासनां कहां रहती हैं रज तमकी भोगवासना तो समाधिसें पहिलैंही सात्त्विक गुणकी वृद्धितामें नाश होजातीहैं और प्राणायाम जब सिद्ध होताहै तब वासना नष्ट होतीहैं और वांसनां जब नष्ट होवैगी तब प्राणायाम सिद्ध होवैगा प्राणायामके प्रभावसें योगी गुणातीत प्रकाश स्वरूप तुरीया है और तुरीयातीतका नाम समाधिहै, तुरीया जो प्रकाशरूप अनन्तसिद्धि करिके प्रकाशित ब्रह्मानंद है ताके बीचमें योगी मग्न होजाताहै । और तुरीयातीत जो समाधिहै वहांतो एकोहंकलनांहूं नहीं रहती यानें आपाभी नहींहैं, सर्वातीतपद जो अवाच्य है सो है । हे प्यारा! येदृष्टान्त तो नकली समाधिवाले दम्भतासें छल करिके पाखंड रोपलेतेंहैं उनकाहै, सो जैसे

ये नकली वाचक ज्ञानी वचनकरिकै ब्रह्म बननेंवाले हैं ऐसाही इन्होंनें दृष्टान्त दियाहै क्यौंकि इनकी बुद्धिमैं गूढ आशय प्रगट नहीं होतेहैं ये वेदान्तके वचन सीखके वैखरीके द्वारा ब्रह्म बनतेहैं ब्रह्मतो तब होवैगा जब योगाभ्यास करिकै ब्रह्मरन्ध्रके पार जावैगा, षट्चक्रनमैं तो जीवरूपहीहैं, वेदान्त शास्त्र जोहैं तामैं योगीकी उत्थानदशा जो जाग्रतहै वाकी रहस्यका वर्णन योगीनैंही कह्याहै ये वाचकज्ञानी विना साधन संजमके वचनसैं ब्रह्म बनके मायाके रस भोगनेंमैं लोलुप हैं। रजोगुणियोंके रिझानेवाले आलसी शरीरके पालनेंवाले रस खाखाके शरीरकी चमक दमक दिखातेहैं परंन्तु बहुतसे मनुष्य बाह्य कर्मी तपस्वीनसैं ये श्रेष्ठहैं जे सद्शास्त्रनके विचार करनेवाले ॥ शुद्ध आचरण रखतेहैं और जैसैं बहुतसी उपासनाहै ऐसैं ही येभी एक उपासनाहै जो आपेकौं ब्रह्म मानतेहैं सो वसिष्ठादि कई ऋषिमुनियोंनैं इसका कथन कियाहै। और हे प्यारा! कलियुग जो कपटहै तामैं वेदमार्ग नष्ट होजाताहै यानैं सबकौं वेधनेवाला जो मार्गहै सोई वेदमार्गहै। सो प्रथम तो वेदकी आदिमैं जो आज्ञा वर्णन करीहैं उनकौं धारण करैं और शुभकर्मनसैं अशुभकर्मनकौं वेधै यानें त्यागै पश्चात् वेदके मध्यमैं जो आज्ञा कहीहैं तिनकौं धारण करै और शुभकर्मन करिके अन्तःकरणकी शुद्धीके अर्थ उपासना ईश्वर सद्गुरुकी धारण करै उपरांत वेदके

अन्तमैं जो आज्ञा वर्णन करीहैं उनका नाम वेदान्तहै अर्थात् वेदके अन्तमैं जो है सोई वेदान्तहै जब शुभकर्मनके प्रभावसैं शुद्ध अन्तःकरणसैं ईश्वर सद्गुरुकी उपासनाके बलसैं योग जो प्राणायाम धारणा ध्यानके प्रभावसैं चारूं तत्त्वनकों और अन्तःकरणकी सब वृत्तिनकों वेधके यानें छेदके पंचवांतत्त्व जो खं ब्रह्महै तामैं महायोगी लय होताहै जिसकों शून्यसमाधि कहतेहैं वहां राज्ययोग सिद्ध होताहै तापीछे महायोगी परमसमाधिमैं लय होजाताहै जाकों महाशून्य,परमाकाश,अवाच्य, अनाम, कहतेहैं सो वेदके अन्तमैं जो कथन है ताहीका नाम वेदान्तहै। ये मनमुखी मनुष्य पाहिलै वेदके आदि मध्यमैं जो आज्ञाहैं तिनकोंतो धारण नहीं करते और वेदके अन्तमैं जो वेदान्त योगीकी सिद्ध अवस्थाका ज्ञानहै ताकौं पढके वेदान्ती कहलातेहैं ऐसे वाचक ज्ञानी शुभकर्म शुद्धवृत्तीनसैं हीन होतेहैं और उनके मलिन आचरण बनेहीं रहतेहैं और बहुतसे तरुण अवस्थामैं बाह्य वैराग्यकों धारण करिकै मनमुखी ब्रह्म बनेफिरतेहैं सो हे प्यारा! ऐसे पाखंडी वेदमार्गसैं विपरीत भये और संसारी मनुष्य इनके संगमैं शुभकर्म शुभ आचरणोंसैं हीन होके आपेकों कल्पित ब्रह्म मानके पाप करनेसैं अभय होगये और सूमता धारण करके धन स्त्रीनके गुलाम,शिश्नोदरके दास,

अभिमानी, दयाहीन होगये सो हे प्यारा! तुलसीदासनैंभी ऐसे पुरुषोंके मामलेमैं कह्याहै ॥

दोहा—ब्रह्मज्ञान विन नार नर, कहैं न दूसर बात ।
कौडीलागे लोभ लल, करैं विप्र गुरु घात ॥इति॥

अथ मंत्रशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम् ।

हे प्यारा! मन्त्रशास्त्र जो हैं सो भी एक योगाभ्यासका मार्गहै आसनपै एकान्त बैठके प्रयोग अनुष्ठान करैं कहा मंत्र जप २ के मनकी वृत्तिनकों रोकनेंकी जुक्त है सो जप चारप्रकारसैं होताहै मुखसैं, श्वाससैं, मनसैं, श्रुतिसैं, सो वर्णात्मक जप तो मुखसैं मन श्वाससैं होताहै और ध्वन्यात्मक श्रुतीसैं होताहै जो मुखसैं जप करतेहैं वे मनुष्य हैं और जो श्वास मनसैं करतेहैं वे देवताहैं और जो शब्दमैं श्रुति लगाके ज्योतिसैं लय रहतेहैं वे हंसस्वरूप हैं, सो मंत्रशास्त्री योगी अनुष्ठान करिके जगत्के अनुचित विषयजालसैं मनका उच्चाटन करताहै पीछे नासाग्रध्यान-के बलसैं स्थंभन करताहै कहा स्थिर करता है और मनकों वशीकरण करताहै शब्दयोग करिके मोहन करताहै और प्राणायामकी अग्निमैं पापपुरुषका मरण करताहै और भूमि जो अन्तःकरणहै ताको शुद्ध करिके प्राणप्रतिष्ठा करताहै अर्थात् प्राणायाम करिके भीतर—जो षट्चक्रहैं सो भैरवी चक्रहैं उनहीका नाम त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण, अष्ट-

द्वादश, षोडशकोंण आदि नाम जन्त्रहैं और महाशक्ति जो तुरीयाप्रदीपहै सो सबका बीजस्वरूपहै वो कोई चक्रमैं तो क्लीं शब्द बीजहै, कोईमैं ओं शब्द कारिके बीजहै, किसी मैं ह्रीं शब्द बीजहै, किसी चक्रजंत्रमैं सोहं शब्द बीजहै, कोई चक्रमैं हूं २ शब्द बीजहै और सबका महाबीज वो महा प्रकाशस्वरूप तुरीयाशक्ति है और जो वामैं लयरहताहै सो शिव महेश्वर महायोगी है और वोही तुरीय स्वरूप ब्रह्महै सो शक्ति नाम कारिके तो स्त्रीवाचक है बल नाम कारिके नपुंसकवाचक है और पराक्रम नाम कारिके पुल्लिंगवाचक है त्रिधा वचन कारिके एकही स्वरूपहै और वाहर जो मंत्रनकारिके सिद्धि होतीहैं सो याका विश्वास कारिके होतीहैं। जैसा याका विश्वासहै ऐसा वो सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् पूरण कर्ता है॥

अथ मीमांसा शास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

हे प्यारा! मीमांसा शास्त्रमैं यज्ञकर्म प्रधान प्रयोजनहै सो सब कर्मनकी सिद्धिके अर्थ है विनां यज्ञ यालोक परलोकका कोई कार्य सिद्ध नहीं होता सब कर्मनके आदिमैं यज्ञही प्रधानहैं सो यज्ञका कथन मैंनें पूर्व तीसरे प्रकाशमैं वर्णन किया है और सब यज्ञनमें लघु और सबनमें मुख्य जो यज्ञहै सो सुण, योगी जो ब्राह्मण है सो नित्य यज्ञ करनेकी जो अग्निहै ताय भुजनें न देवै सो नित्य यज्ञ करनेकी

कौनसी अग्निहै, ये जो नाभिपै जठरा होकर विराजैहै सोईहै सो इसका भुजनां कहाहै अजुक्त भोजनसैं मन्दाग्नि होजातीहै सो जुक्त भोजन करै जासों ये अग्नि जगीहुई रहै यासौंहीं योग सिद्ध होताहै ऋग्वेदमैं ऐंसे लिखाहै "यज्ञोभवनस्यनाभी" इति। सो नाभियज्ञवेदीमैं नित्य भोजन करना येही हव्य आहुती हैं और या बाहरकी अग्निमैं जो सव विश्वका काष्ठ अन्न फल रस हवन होजाय तोभीं ये तृप्त नहीं होता क्योंकि तेजतत्वसैं पृथ्वी जलकी उत्पत्ति है सो तेज दोनोंकों भस्म करनेवाला है। इति॥

अथ न्यायतर्कशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

न्यायशास्त्र जो है सो केवल वाक्यविलासहै याके कथनमैं नैं तो कोई सश्रमहै, नैं अभ्यासहै, नैं भक्तिहै, नैं आत्मिकज्ञानहै, केवल वचनका वादानुवाद है। हे प्यारा! चारूं आश्रमोंकों साधताहुवा योगाभ्यास कारिके अपनी आत्माकों परमात्मामैं लय करे याहीका नाम न्यायहै। और यह कार्य मनकी चंचलतासैं नैं होसके और चौरासीकी अनेक योनियोंमैं जीवात्मा क्लेश पावै याहीका नाम अन्यायहै सब उपाधी त्यागकै अपनें स्वरूपमैं स्थित होना याहीका नाम न्यायहै। और नैयायिक कहतेहैं कि सृष्टि तत्त्वोंके सूक्ष्म प्रमाणोंसैं उपजती है, प्रलयमैं स्थूलतत्त्व प्रलय होतेहैं सो ये कहनां इनका ठीक नहीं परमाणुतो

दो तत्त्वनके होतेहैं पृथ्वीके अरु जलके, अग्नि अरु वायुके क्या परमाणुहैं एक अनुमानताहै कि ज्यादाहै कमतीहै और अग्निकाभी परमाणु पृथ्वीके संग अनुभव होताहै और वायु आकाशके तो कुछ परमाणुही नहीं और आकाशका तो कहनांही कहा वोतो निराकारहै और ये यों कहतेहैं कि प्रलयमें स्थूलतत्त्व नाश होतेहैं सो वात नहीं प्रलय महाप्रलयमैं स्थूल सूक्ष्म सव कारणमैं लय होजातेहैं प्रलय महाप्रलयमैं इतना भेदहै कि प्रलयमैं स्वयंभू औजूँ जाग आताहै महाप्रलयमैं लय होजाताहै जागने सोनेसैं रहित होजाताहै सो हे प्यारा! मैंनें तुमकों पहलैही कहदियाहै कि ये न्यायतर्कशास्त्र फक्त वचनविनोदके अर्थहै इसके पढनेवाले श्वानकपाली वातूनी हैं इसीका नाम न्यायहै जामैं परमेश्वरकी प्राप्ति होवै और स्मृतिभी ऐसें कहतीहैं "सर्वेषामपि चैतेषामात्मज्ञानं परं स्मृतम्" इति सर्वज्ञानोमैं आत्मज्ञानसैं परे और कोई श्रेष्ठ नहींहैं सो योग करिकै सिद्ध है॥

अथ धर्मशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

हेप्यारा! धर्मशास्त्र जोहै सो प्रवृत्ति निवृत्तिके अर्थ है सो इसजगह याका व्याख्यान वर्णन नहीं किया क्योंकि चौथे प्रकाशमैं चारवर्ण चारआश्रमनके धर्म वर्णन कियेहैं और वारहवा प्रकाशमैं राजानकों नरनारीनकों धर्म

कर्मकी शिक्षा वर्णनकिजावैगीं और हे प्यारा! सब धर्मनमैं श्रेष्ठ सबका सार धर्म कहताहूं सो श्रवण करो । सब धर्मनमैं मुख्य धर्म येहैं कि माता पिता गुरुकों प्रसन्न रखनां यानें इनकी आज्ञानुकूल रहनां पितासैं दशगुणां अधिक माताका अधिकारहे और आज्ञा पिताकी मानना योग्यहै और माता पिता दोनूनसैं अनन्तगुणा गुरूका अधिकारहै क्योंकि माता पिता तो स्वार्थी हैं अपनां कर्म सिखाके भवसागरमें फसातेहैं और गुरू पर मार्थीहैं जीवात्माकों सब उपाधीनसैं सुलझाके निजरूपकों प्राप्त करतेहैं इनतीनोकां प्रसन्न रखनां ये सब धर्मनका मूलहे और सत्य वचन बोलना येभी परम धर्महे ऐसा लिखाहे कि " नाहि सत्यात्परोधर्मः" इति। झूंठ बोलनेंसैं परे और कोई पाप नहींहे ऐसा कह्याहै "नानृतात् पातकंपरमइति"।सब प्राणीमात्रसैं निर्वैर रहनां, भूखे प्यासेपै दया करनां, कोमल वचन सत्यताके साथ बोलना, अपने उद्यमके कर्म करके अच्छे श्रेष्ठ जनोंका संग करनां, परमेश्वरका भजन करनां, येही परमधर्महे। इति ॥

अथ ज्योतिःशास्त्रका व्याख्यानवर्णनम् ।

हे प्यारा ! ज्योतिषशास्त्र जो है ताय योगीही जानतेहैं, क्यौंकि चंद्रमा सूर्य जोहैं सो कालकी सूचनां करनेवाले हैं कहा बारहमास छः ऋतुनकी सूचना कराते हैं, छः ऋतु येहैं फाल्गुन अर्धसैं लेके वैशाख अर्धतक वसन्तऋतु १

और वैशाख अर्धसें आषाढ अर्धतक ग्रीष्महै २, और आषाढ अर्धसैं अर्धभाद्रपदतक वर्षाऋतु ३, और अर्ध भाद्रपदसैं अर्ध कार्तिक तक शरदऋतु है ४, और कार्तिक अर्धसैं पौष अर्धतक हिमहै ५, और अर्ध पौषसैं फाल्गुन अर्धतक शिशिर ऋतुहै ६,सो सब ऋतु चंद्र सूर्य करिकै हैं, चंद्र सूर्यसैं योगीका बहुतसा काम पडताहै,सूर्यमैं अग्नितत्त्व विशेषहै, जलतत्त्व न्यूनहै और चंद्रमामैं जलतत्त्व अधिकहै, अग्नितत्त्व न्यूनहै, सूर्य एक वर्षसैं उत्तर दक्षिण फिरताहै,चंद्रमा एकमासमैंही फिरजाताहै और तारे कमावेशी करिके फिरतेहैं इनकी चाल ऋषिलोगोंनैं ग्रहलाघव ग्रंथमैं बांधीहै सो गणित तो सत्यहै ग्रहनकी फलस्तुति ठीक नहींहै, इन चंद्र सूर्यमैं रोशनी तुरीयाज्योतिस्वरूपकी है और बोधरूप जाग्रत सूर्यहै और स्वप्नरूप निशा चंद्रमा है और बारहराशि, नो ग्रह, सत्ताईस नक्षत्र हैं सो ये सब दिशारूप हैं, इनके गुण दोषके फल योगी जानतेहैं, दश इन्द्रिय मन बुद्धि इनकी जे वृत्तियांहैं तेई राशिहैं और महाशक्तिसैं तीनशक्ति जो हुई रज, तम, सत, सो परस्पर तिनान्तिनो होगई सोई नो ग्रह हैं, इन नोनमैं तीन तो पापिष्ठग्रह हैं और तीन नींचहै । तीन उच्चहैं,पीछे प्रकृतिके प्रभावसैं नो त्रिधारूप होके सत्ताईस होगये इनहीका नाम सत्ताईस नक्षत्रहैं सो ये सब ॐ जो प्रकाशरूप तुरीयाहैं ताका प्रभाव है यही यज्ञोपवीत सत्ताईसतारनकं

योगी जो ब्राह्मणहैं सो धारण करतेहैं ॐ जो ब्रह्मगाँठहै तासैं सबका अग्र मिल रह्याहै सो योगी ज्योतिषीहैं जो संजम करिके श्रुतिका ज्योति सा रूप भया तामैं स्थित हैं, वहांसैं भूत भविष्यत् वर्तमानकाल सब ग्रह नक्षत्रनकों देखते रहतेहैं जे ग्रह कारजकौं बिगाड़तेहैं उनको लय करते रहतेहैं और इनकी सैल करतेहैं कौतुकीहैं सो योगी जो ज्योतिरूप होके ज्योतिषीहैं वो सब दिशा ग्रहनका वेत्ता होताहै और सब दिशानका गुण दोषनकों निवर्त करता रहताहै वोही सच्चा ज्योतिषीहै ॥

प्रश्न ॥ हे महाराज ! ये सूर्य कहां छिपजाताहै ?

उत्तर॥ हे प्यारा ! ज्योतिही अपनां अंशको खैंच लेतीहैं, देखो तुम्हारे शरीरके भीतर जब चैतन्य जाग्रत अवस्थामैं अन्तवाहक होजाताहै तब सब जाग्रतकी सृष्टिशून्य होजातीहैं और जाग्रत् स्वप्न दोनूं सुषुप्तिमैं लय होजातेहैं; पुनः जाग्रत् अवस्था होतीहैं तब चैतन्यरूप सूर्य उदय होताहै और पृथ्वी जो देहहै वाका संग पातैंही सर्वत्र प्रकाश फैलजाताहै यानैं जाग्रत् अवस्थाके सबकर्मनकी वृत्ति उदय होजातीहैं ये गूढताके वचन तबहीं तुम जानोंगे जब योगाभ्यास करिके आपेमैं सबकुछ देखोंगे, पहिलैं ये बात समझमैं नहीं आती जैसैं विवाहकरीहुईकी बात कारी नहीं जानैं क्योंकि बिवाहकरीहुईका आशय वचनमैं नहीं आसके तो कारी कैसैं जानैं प्रासीसैं साक्षात्कार होताहै।

अथ संगीतशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम्।

हे प्यारा! संगीत शास्त्र शारीरिक विषयानंदकों और आत्मिक प्रेम भजनानन्दकों उभयकों उपजानेंवाला है सो आत्मिक जनौंको तो आत्मिक गानांहीं योग्यहे और आत्मिक गानांही श्रवण करनां योग्यहै, संगीतशास्त्रमें सातस्वर तीनग्रांम होतेहैं। सो सातस्वर इक्कीस होजातेहैं, सात चढेहुये उदात्त ,सात उतरेहुये अनुदात्त, सात बराबर मध्यमभावके और सात स्वर येहैं,सा रे ग म प ध नी पीछे चढीहुई सा स्वरसें उतर आतेहैं, सा नी ध प म ग रे सा और सा स्वर नाभिसें अलापा जाताहे १, रे नासिकासें २, ग कपोलसें ३, म हृदयसें ४, प गलासें ५, ध कपाल सें ६,नी तालूसें ७, इन्हीं सातस्वर तीनग्रामोंसें छः राग और तीस रागनी गाईजातीहैं, छः रागनके नाम सुणौं राग भैरव शिवस्वरूप है गानेंसें कोलू चलताहे १, राग हिन्डोल ब्रह्मास्वरूप है गानेंसें हिंडोला हलताहे २, राग मालकोश विष्णुस्वरूप है गानेसें सूकावन हरा होजाताहै ३, श्रीराग चंद्रमांस्वरूप हैं गानेंसें शान्ति उपजैहैं ४, राग दीपक भानुका स्वरूपहे गानेसें दीपक जलतेहैं ५, मेघ राग इन्द्रका स्वरूप है गानेसें मेह वर्षताहै६,और एक २ रागकी पांच २ रागनी हैं भैरव रागकी पांच रागनींनके नाम येहै भैरवी १, गुर्जरी २, टोडी ३, रामकली ४, वड़ाड़ी ५, राग

हिन्डोलकी रागनी येहैं वसन्ती १, पंचमी २, हिन्डोली ३, ललित ४, मालश्री ५, मालकोश रागकी रागनी येहैं बागेस्वरी १, कुकव २, पर्य्यंक ३, शोभनी ४, खंमावती ५, श्रीरागकी रागनी येह मालवी १, वावणी २, गौरी ३, पूर्वी ४, गौराश्री ५, दीपक रागकी रागनी येहैं प्रदीपका १, धनाश्री २, जयतश्री ३, पलासिका ४, नाटिका ५। मेघरागकी रागनी येहैं मलारी १; सोरठ २, सारंग ३, बडहंसिका ४, मध्यमा ५, राग रागनीनके तीन अंग हैं। अंश, न्यास, ग्रह, अंश रागका जीवहै, तानके अन्तमैं विश्राम न्यासहै,प्रारम्भहै सो ग्रह कहलाता है और देशान्तरकी ध्वनि जो हैं उनकेभी नाम धरालियेहैं जैसैं देश, मांड, झंजोटी, काफी, आदि जानों और नृत्य दोप्रकारका है तान्डव, लास्य; तान्डव पुरुषनृत्य होताहै, लास्य स्त्रीनृत्य है, ताल पांचहैं चौताला १, तिताला २, धीमांतिताला ३, आडातिताला ४, इकताला ५। बाजा साडेतीन हैं फूंकसैं, तारसैं, खालसैं, आधेमैं मजीरा, झांज, घूँघरू, आदि जानों। इति।

अथ वैद्यकशास्त्रका व्याख्यानवर्णनम्।

हे प्यारा! वैद्यकशास्त्र जो आयुर्वेद कहलाताहै सो जोगीके अरु भोगीके दोनूंनके काम आताहै, शरीरकी आरोग्यताके निमित्त दोनूंनकों सेवन करणा होताहै,शरीर

के आरोग्यविना जोग भोग दोनूं नहीं होते और योगी तो संजमसैंही सब क्लेश दूर करतेहैं, रोग दोप्रकारका है शारीरिक और मानसिक शरीरोंमैं जो रोग उदय होतेहैं सो उभय विकार करिके होतेहैं एक तौ ब्रह्माण्डकी विपरीत ऋतु होनेसैं शुद्धतत्त्व बिगड़ जातेहैं अशुद्ध तत्त्वनके विकारसैं अनेक प्रकारके रोग पैदा होके च्यार प्रकारकी सृष्टिनमैंसैं कोई २ कौं ज्यादा क्लेश होजाताहै तथा बहुतसी नाश होजातीहै, दसरें शरीरके तत्त्व विपरीत व्यौहारसैं। और दशवेगनके रोकनेसैं कहा भूख,प्यास,मल,मूत्र,छींक, जँभाई, वमन, नींद, हुचकी, अपानवायु, इनके रोकनेसैं अनेक रोग पैदा होतेहैं ये तो शारीरिक रोगहैं और जो मानसिक रोगहैं सो मनकरके उदय होतेहैं भयसैं, शोकसैं, गिलानिसैं, वे मानसिक कहलातेहैं, शारीरिक रोगोंसैं मानसिक रोग प्रबल हैं, शारीरिक औषधीनसैं दूर होतेहैं मानसिक अभय करनेंसैं दूर होतेहैं और कथा कीर्तन,पुण्य, जप,उत्सव, आदि, उपचारोंसैं जासैं मनकी गिलानी जाती रहै तासैं दूर होतेहैं,राजा प्रजामैं अधर्म वढनेंसैं अनेक उपद्रव प्रगट होतेहैं वैद्यक विद्या श्रेष्ठ जगतमैं मानकी दैनेवालीहै, या विद्यावालेका जगतमैं सर्वत्र आदर होताहै और या विद्याका धारण करनेंवाला विद्यामैं निपुण, दयालु, निर्लोभी, निर्वैर, प्रियवचन बोलनेंवाला, कृपालु, यथालाभ सन्तुष्ट होवै जैसा मनुष्य देखै ऐसी विचार

करिके औषधि देनैंवाला होवै और संजमी हरिभक्त उदार होवै ये वैद्य डाक्टरनकें गुण हैं और जे क्रोधी, अतिलोभी, द्वेषभाव रखनवाले, आलसी, विचारहीन, निर्दई असंजमी,अभक्त,दीर्घसूत्री होवैं ये वैद्य,डाक्टरनके अवगुण हैं और रोगीकों चाहिये कि जब वैद्यकों प्रथम नाडी दिखावै तब श्रद्धासहित भेट देवै और वैद्यकों रक्षकरूप समझके विश्वाससैं औषधि सेवन करै और वैद्यभी रोगीसैं पुत्रवत् स्नेह राखैं वैद्यकशास्त्र जोहै सो कल्याणरूप है। हे वैद्य हकीम डाक्टर हो! तुम इलाज शारीरिक जिस्मांनी करतेहो परन्तु मानसिक नफसानी इलाज सच्चे सद्गुरुवैद्य कामिल मुर्शिद डाक्टर तवीवसैं होवैगा,देखो जीवात्मा रूह के अन्तःकरण जिगरमैं बहुतसे रोग भरेहुये हैं चिन्तारूपी कोढमैं कामरूप खाजकी खुजली नहीं मिटतीहैं, ज्यौं २ खुजाई जावै त्यौं२ज्यादा होतीहै, क्रोध इर्षारूप दाहमैं आठपहर जलताही रहताहै,लोभरूप खांसी श्वास क्षईमैं बडा क्लेश पाताहै मोहरूप जुकाम नजला निकलताही नहीं वनांही रहताहै दुवध्यारूपी दाद फैलताही जाताहै तृष्णारूपी जलंधर बढताही चलाजाताहै फिकर आमवातनैं सबचेष्टा विगाड दीनीहैं शिश्नोदरके कर्मकी हडफूटनी जुरी हरवक्त वनीहीं रहतीहैं अभिमान मदान्धकी गफलतसैं वेहोश होरह्याहै। हुकूमत धनमदके चक्र आतेहैं

सोगका सन्निपातमैं सुस्त रहताहैं इन्द्रियनके भोगनमैं दिवाना बावला होरह्याहै, अज्ञानताका मोतियाबिन्द वढ-गया जातैं भलाबुरा नहीं सूजता सो इन रोगनके परवा-रका कहांतक वर्णन कियाजावे ये मनुष्य तो मानसिक नफसांनी रोगोंसैं अत्यन्त रोगी बेमारहैं, इन रोगोंके मेट-नेवाले सच्चेगुरू वैद्य कामिलमुर्शिद तवीबहैं, वे इनका इलाज करैंगे जब तू आपेकौं रोगी मरीज समझके उनके पास जावैगा और अपना हितरूप हाथ दिखावैगा । तो वे तेरेऊपर कृपाकरिके हितरूप हाथको ग्रहण करिके त्रिदोष देखैंगे और नित्यानित्यका विचाररूपी गोली जुलाबकी देवैंगे संजमके अनुपानके साथ सन्तोषरूपी खिचड़ी खुलाके सबतरहसैं हलका करदेंगे पीछे भक्तियोगका अभ्यासकी मात्रा देके तेरी दुर्बलता मेटैंगे और ज्ञानरूप अंजन मन बुद्धिरूपी नेत्रनमैं लगावैंगे। तब तेरे मोतिया-बिन्द आदि सब रोगनका परवार नाश होजावैगा जब तू आरोग्य चंगा होवैगा ॥ इति ॥

अथ कर्मकाण्डशास्त्रका व्याख्यान वर्णनम् ।

हे प्यारा ! कर्मकाण्ड शास्त्र जो है सो प्रेतजूंण मेटनके अर्थ है सो महायोगी तो जीतेंजी सब कर्म क्रिया अति उत्तम असली करलेताहै सद्गुरुकी कृपासैं निज वोधके प्रभावसैं जब ये संसारके विषयभोगनकी तरफसैं मरताहै

कहा अरुचि होताहै जब दशगात्र जो दशों इंद्रिय हैं क्योंकि गात्रनाम इंद्रियनकाही हैं । सोगात्र जो शरीर दशों इंद्रियन करिके हैं। सोई दशगात्र हैं सो योगी दशों इंद्रियनका प्रेरक जो मनहैं । तामैं दशों इंद्रियनकी वृत्तिनको मिलाताहै और मन जो ग्यारवां इंद्रियनसहित है ताको वारवीं जो बोधकी धारण करनें वाली बुद्धिहै तामैं मिलाताहै। येही दशगात्र एकादश द्वादश कर्म हैं, पश्चात् बुद्धिकों परमात्मामैं लय करताहै तब वाकी गति होजातीहै अर्थात् गति जो चालहै सो लय होजातीहै और बाहर जो क्रिया कर्म करनेकी वेद पुराण नमैं कहीहै सो लौकिक व्यौहारके अर्थ रोचक भयानक शब्दोंकरिके नकली हैं और इस मुर्देका तो बाह्य अग्निमैं स्थूल हवन होताहै और पुत्र दशवां द्वार फोडताहै क्योंकि वाके शरीरका बल वीर्य सब ऊमरका अधोगतिकोंजाताहै वा वीर्यसैं पुत्र उत्पन्न हुयेहैं और योगीका वीर्य गृहस्थाश्रममैं यथायोग्य दान देके उर्द्धगतिकों गमन करता है वा बल करिके बोधरूप पुत्र प्राणायामसैं ब्रह्माग्निमैं उभयतनस्थूल अरु सूक्ष्मका हवन करताहै और योगमार्ग करिके दशवां द्वारकों खोलताहै जाका नामब्रह्मरंध्रहै तामैं प्रदीप जो तुरीया ज्योति है वामैं द्वादश अंगनसहित लय होजाताहै सो योगी संन्यासी महापुरुषोंका अंतमैं बाह्यकर्म

करनां उचित नहीं वे तो जीवनमुक्त हैं और देह सहित विदेहहैं, उनकी गति वेही जानते हैं और जाकौ वे जनांदे वैजान और उनकों अन्तमैं देह छोडनेंका कुछ शोच फिकर नहींहैं स्वतः सिद्ध समय पाके चाहे जहां छूटजावैं क्यौंकि वे तो जीवतैंही दोनूं देहनसैं अलग हैं ब्रह्मानन्दमैं मग्न निर्वाण पदमैं स्थितहैं। हे प्यारा! देहके जन्म मरणतो योगी अयोगीके एकसेही हैं देह प्राण एकसीही चेष्टा करते हैं परमेश्वरने ऐसाही कायदा रखाहै परन्तु अयोगी जब तक जीवै तबतक देहादि शुभाशुभ वृत्तिनमैंही फसा रहताहै अन्तमैं जा वृत्तिका याकों संग रहै वाके साथ कारणरूप प्रकृतिमैं मिलके उन्हीं संस्कारोंके लियें जन्मांतर पाताहै और योगी कई जन्ममैं सिद्ध योगकों प्राप्त होताहै जब उनके शरीरका अन्त आजाताहै । तब शरीर प्राण स्वतःचाहे जैसी चेष्टा करो वेतो अपने निजरूपमैं लीन होजातेहैं। सो वे क्या जीतैं क्या मरतैं निजरूपहीमैं लीन रहतेहैं ॥ इति ॥

अथ च्यारप्रकारके भक्तनका वर्णन ।

मंगल उवाच ।

हे दीनवन्धु आपके भक्त संसारमैं कै प्रकारके होतहै सो कृपा करिके कहो ॥

अनाम उवाच।

हे प्यारा च्यारप्रकारके होतेहैं दुःख निवारणके वास्ते जो भक्ति करतेहैं वे आर्त कहलातेहैं १, अपना अर्थ सिद्ध करनेंवाले अर्थार्थी नाम करिके हैं २, और जे मेरे कहेहुये वेद शास्त्र महापुरुषनके ग्रन्थपुराण हैं उनकी आज्ञानुकूल रहते हैं वे जिज्ञासू कहलातेहैं उनके अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, च्यारूंही सिद्धहोतेहैं ३, और जे वेदशास्त्रनके वेत्ता ज्ञांनवांन हैं और सब आज्ञानकों धारण करनेंवाले मेरे भक्तहैं। वे विद्यावांन ज्ञानी भक्तहैं ४, और सब ज्ञानीनमैं ज्ञानी वेहैं जे योगमार्ग करिके जीवात्माकों परमात्मामैं लय करतेहैं वे मेरेही स्वरूप हैं क्योंकि उनकी आत्मा मोमैं लय होगई और जे मनुष्य कैसाही उपराम पाके मेरे सरणैं होते हैं उनका मैं भवदुःख निवारण करताहूं मेरा भक्तका नाश कदाचित् नहीं अनेकजन्मनकी सिद्धी करके मोहीमैं मिलजा तेहैं मेरा जनकों कोईभी गंजन नहीं करसकैहै भूत,प्रेत, पिशाच, जक्ष,ग्रह आदि कोईभी नहीं सता सकैहैं जैसैं राजाका प्याराकी सब ओदहदार खातर करतेहैं ऐसें जानों और संसारमैं जितनें भेषधारीहैं वे सब सद्गुरुकी फोजहैं इनसैंभी जगत्का कल्याण होताहै और धर्मका पालन होताहै इनके द्वारा मेरी कथा कीर्तन वाक्यविलास ज्ञान-चरचा होतीहैं और वहुतसे जनौंका कल्याण होताहै और

इन भेषधारियोंमैंही सब अधिकारके पुरुष होतेहैं। हे प्यारा! संसारमैं जो अजोग कर्मभोग वर्त्ततेहैं वे असाधू कहलातेहैं और जे ब्रह्मचर्य अथवा गृहस्थाश्रममैं जुक्त कर्म भोगनके साथ तन मन प्राण मेरे मिलनैंके अर्थ साधतेहैं वे साधूहैं और जे वानप्रस्थ अवस्था पाके भोगनसैं अरुचि होके योगमार्गके अभ्यासमैं विशेष आरूढ होतेहैं वे हंसरूप सन्त हैं और जे चौथा आश्रम पाके तनमनसैं संन्यास होके योगमार्गसैं जीवात्माकों परमात्मामैं लय करतेहैं वे परमहंस परमसन्त महायोगेश्वर मेरेही स्वरूप हैं वे परम-योगी याही भेषमैं अभेष होके निरपेक्ष गुप्तस्वरूप होकर रहतेहैं सो प्रवृत्ति निवृत्ति सब भेषनके शहनशाः महाचक्र-वर्ती परमभूप हैं जब उनकी मौज होतीहै तब प्रगट होतेहैं या कोई अत्यन्त प्रेमीजनके निमित्त प्रगट होतेहैं वेही मेरे सगुणस्वरूप नित्य अवतार हैं

अथ परमेश्वर कर्ताहै कि अकर्ता ताका निर्णय वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे स्वामी! श्रावक मतवाले तो यों दृश्यरूप ब्रह्माण्डका कोई कर्ता नहीं बतातेहैं कहतेहैं कि सब सृष्टि स्वतःसिद्ध आदि अन्तसैं रहित सदासैं ऐसीहीहै और बहुतसे मजहब यहुदी महोम्मदी ईसाई कर्ता मुख्य रखतेहैं और वर्णाश्र-

मी धर्मवाले परमेश्वरकों कर्ता अकर्ता दोनूं रीतिसैं मान तेहैं सो इनका तात्पर्य कृपाकरिके वर्णन करो।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! परमेश्वरकी अपार महिमांहै जो कोई जाभाव नासैं मानताहै वैसाही दरसैहै जैसे दर्पनमैं अपनेमुखकी चेष्टा करै वैसीही दरशैहै ये श्रावक धर्मवाले यों कहतेहैं कि शुभाशुभ जो जीव कर्म कर्ताहै ताका फल जीवही भोगताहै और जीवही भुगाताहै कर्ता भोगता जीवहीहै तो इन लोगोंनैं जीवही कर्ता मानाहै जीवही खोटे कर्मनके संग दुःख पाताहै जीवही उत्तम कर्मनके संग सुख पाताहै। और जीवही सब कर्मनकों त्यागके योगमार्गहोके अपनें निज स्वरूपकों प्राप्त होताहै तब अरिहन्त दशा है और जीवही समाधि सिद्धमैं सिद्धस्वरूपहै और कोई दूसरा कर्ता नहीं जो कर्ता होता तो अनुचित कर्म नहीं करनें देता और अपने धर्म मजहबकी रक्षा करता विगडनैं नहीं देता सो कर्ता कोई नहीं सबकुछ स्वतः सिद्ध है सो इनका येभी कहनां ठीकहै परन्तु जो अकर्ता मानांजाय तो देखो सष्टि कैंसी चतुराईसैं उत्पन्न होतीहैं और कैसी रचनासैं सुंदर चित्र विचित्र रक्षासहित उदय होतीहै मनुष्य सबसैं सुन्दर और श्रेष्ठ बनायाहै देखो नेत्रनके ऊपर भौं रक्खीहै कि पसीनांका पाणी नै आवें और पलक बनांईहैं कि धूल तुनका नैं जावैं

पलकिनकी त्वचा माणिकेको हरसमय स्वच्छ रखतीहै और जलकी आवश्यक्ता होय जब निर्मल द्रवताहै दांत होट नासिका श्रवण आदि सब अंग कैसे सुडौलसैं रक्षासहित बनेहैं। और जहां शीत ज्यादाहै वहांके जीवधारीनके रोम बडे २ कियेहैं। और जावतासहित सब सृष्टि उपजतीहै सो कर्त्ता कहनांभी ठीक है और वर्णाश्रमी धर्मवाले कर्ता अकर्ता दोनूं करिके मांनतेहैं । ये सिद्धान्त अतिश्रेष्ठ है क्यौंकि जो कर्ताकरिकै मानांजाय तो भोक्ताभी मानांजायगा और जो भोक्ता हुवा तो विकारवांन हुवा तो निरविकार कैसें कह्याजायगा जिसकों पाक कहतेहैं वो तो नांपाक हुवा और जो वो कर्ताहैं तो गुनहगार कोई नहीहैं जो वह चाहताहै सो करवावताहै और जो अकर्ता कहो तो सब कुछ वाहीसैं होताहैं सो वो कर्ता अकर्ता दोनूंहै जैसे रेलके अंजनकी छोटीसी एक कलसैं अनेक कल बडे उद्वेगकौं प्राप्त होतीहैं और जैसैं एक सूर्यका प्रतिबिंब जो तेज करिके धूप है, धूपका प्रतिबिंब काचमैं, काचका जलमैं जलका हलताहुवा प्रतिबिंब भीतपर, उसका मनुष्यकी दृष्टिमैं बोध होताहै । सो जैसें एकसूर्यकी अनेक झलक झलक रहीहै और सूर्यकों कुछ प्रयोजन नहींहै उसका प्रभावही ऐसाहै ऐसैंही वो सत्तास्वरूप जो अवाच्यहै वाकी झलक तुरीयापें और तुरीयाकी सुषुप्तिमैं, सुषुप्तिकी स्वप्नसैं, स्वप्नकी जाग्रतमें

जाग्रत्की इंद्रिय अन्तःकरणके संजोगसैं अनेककर्म प्रपंचके व्योहार स्थूलके साथ होतेहैं वो जो अवाच्य सत्ताहै वाके प्रकाससैं सब कुछ होरह्याहै और वो कर्ता, अकर्ता निरुपाधि, निर्विकार, अचल, अद्वैत, अपार, अकथनीय, अनाम हैं। सो हे प्यारा वो कर्ताभी है अकर्ताभी हैं जैसैं आकाशतत्त्व सब चराचर सृष्टिकौं धारण करताहै और जामैं ये सब खेल होरह्या है और आप निरुपाधि निर्विकारहै ऐसें कर्ता अकर्ता दोनूं जानों॥

अथ मनुष्यनकौं बोधके हेतु उपदेश वर्णनम्।

मंगल उवाच।

हे दीनबन्धो! ये मनुष्य आपके प्रेमसै विमुख होकै अनेक जन्मोंसैं अज्ञानदशामैं सो रहेहैं सो इनकों जाग्रत् करानें निमित्त उपदेश वर्णन करो।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! ये मनुष्य प्रभुकी महिमाकौं नहीं जानते देखो परमेश्वरनें इनके शरीर एक बिन्दुकी बूंदसैं कैसी रचना रचके माके उदरमैं सब अंग बनांयेहैं और जठराग्निसैं रक्षा करीं और बाहर जब आये जाके पहिलैसैंहीं इनके आहारके लियें दूध उत्पन्न करदिया पीछे भोजन करनेंकों दांत बनांदिये और चढनेंकौं घोड़ा ऊंट हाथी आदि अनेक सवारी दीनी परंतु पांवनकी बराबर कोई सवारी नहीं और हाथनकी बराबर कोई भृत्य नहीं और

कानोंकी बराबर कोई खबर देनेंवाले नहीं और नेत्रनकी बराबर कोई रोशनी नहीं सो परमेश्वरनें सबकों दियेहैं और परमेश्वरनें मनुष्य शरीर चौरासीलाख देहनसैं अति श्रेष्ठ आपके मिलनेका निजमन्दिर बनाया और याहीमैं आप सब ऐश्वर्यसहित विराजमांन हैं सो ये मनुष्य इंद्रियनके भोगनकी लोलुपताकरिके ऐसे स्वामीकों भूलगये बाल्यावस्था तो अज्ञानतासैं हँस खेलमैं खोई और जब तरुण भये तब स्त्रीके भोग विलासमैं अचेत होगये स्त्रीका भोगही परम सुख दृष्टि आया सो ये मनुष्य तरुणअवस्थामैं मदनके सुखाभिलाषमैं अन्धहोजातेहैं । यहविचार नहींकरते कि ये आनन्द तो सब जूंणनमैं है मनुष्योंसैंभी ज्यादा बहुतसे जीव विषय भोगतेहैं देखो बहुतसी हिरणीनमैं एक हिरण रहताहै और बहुतसी बकरीनमैं एक बकरा रहताहै और भोग करनेंकी उनकों इतनीं बडी सामर्थ्य दीनीहै, कि रातदिन मदान्ध होके पुकाराही करतेहैं । सो हे मनुष्यहो! तुमारा भोग तो पशुनकी बराबरभी नहीं और स्पर्शका आनन्द सबके वास्ते एक साही हैं जो तम यो कहो कि हमतो फूलनकी शैयापर अत्तर लगाके दम्पति सोतेहैं सो एस तो बहुतसे मक्खी कीड़े, फूलनके बीचमैं सोतेहैं और जब तुम्हारी अपानवायु गवन करतीहै तब पुष्प शयाका सुख भ्रष्ट होजाताहै और जो तुम यों कहो कि हम शिरदार धनवांन् साहूकार राजा हैं हम बहुतसे षट्रस

नके अनेकभातिकै व्यंजन खातेहैं तो देखो अनेकभांतिके व्यंजनोंमैं स्वाद नहींहै अरु हैभी परन्तु स्वाद तो शुद्ध जठराग्निमैं है जो जठराग्निशुद्ध नहींहोय तो सब व्यंजन निरस लगतेहैं और जो शुद्ध तीव्र होवै तो लूखी रोटी वेजड़कीमैं ऐसा स्वाद आवै तैसा व्यंजनोंमैंभी नहीं आवै और जे धनवान् राजा होके शिश्नोदरका ज्यादा भोग भोगतेहैं सो ज्यादा भोगनेंसैं भी तो अन्तःकरण तृप्त नहीं होता भोगनकी तृष्णामैं कंगालही रहतेहैं और जे मजदूर मजूरी करिके स्त्री भोगतेहैं वेभी भोगनसैं कंगालही रहतेहैं सो क्या राजा क्या रंक भोगनकी तृष्णामैं दोनूंहीं कंगाल हैं। सो हे प्यारा! ये मनुष्य शरीर कामदेवकेही भोग भोगनेंकौं नहीं है रामदेवकाभी ब्रह्मानन्द खोजनां चाहिये मनुष्य शरीर जो सत, तत,(जत) सुमरन, नेकी करने, नाम लेनेंके वास्ते है केवल शिश्नोदरके भोगनकों नहींहै, देखो कामअंध दुरासधहै, क्रोध बहरा दाहकहै; लोभ निर्लज्ज नीचहै मोह बावला वेहोशहै, और जे मनुष्य देह पाके भोगनमैंही आसक्तहैं और ईश्वरसैं नैंतो प्रीति करतेहैं नैं डरतेहैं वे मनुष्य नहीं महा पशु हैं धिक्कारहै ऐसे मनुष्यनकौं जो मनुष्य जन्म पाके परमेश्वरसैं प्रीत नहीं करते नैं डरते हैं ऐसे विमुखनको मैं बाहिरका अन्धकारमैं डालताहूं जहां काम क्रोधकी आगमैं रातदिन कड़वाहटके साथ ज... और दांत पीसते हैं और रोतेहैं कसाईकेसे ...

जैसैं बकरा काम मदान्ध होताहै। पीछे कसाई वाका नाश करताहै ऐसैंहीं जे हारिसैं विमुख हैं इनकोंभी कालकसाई अचानक आके नाश करताहै। और सब धन धाम राज्य खजाना कुल कुटम्ब छोडके चले जातेहैं जा देहीकों मल २ के धोता पूछता था अतर फूलेल लगाके शृंगार करता था सोभी लारै नहीं चली निरजीव देहका जंगलमैं वास होजाताहै। और थोडी देरमैंही राख होगई हवासैं वोभी उडगई कहीं खोज नहीं रह्या ये तो ये जानताथा कि इस हवेली, चौंवारा,बारहदरी, कमरा, कोठी, महलमैं रहूंगा ये तो थोडेसे दिनमैंही नांच कूदके न जानैं कहा चलागया ये सब मकांन इसके धरेही रहेसो हे प्यारा!ये काल वली किसी कोंभी नहीं छोडता न राजाकों न रंककों न पीरकों न फकीर कों न रसूलकों न पैगम्बरकों न देवकों न दानवकों न अवतारकों सब देहधारिनका नाश करताहै। जो तू ऐसा शत्रूसैं उबरा चाहै तो सन्तसमागम कर उनकी सेवा कर उनकी कृपासैं जब तू भक्ति सहित योगमार्गमैं अपनां मरनां जीवतैंहीं देखलेगा कि ये मरनां हैं यांतैं प्राण गवन करैंगे जब तोकों औजूं मरनां नहीं पडेगा तैनैं तो जीवतैंहीं अपनां मरनां देखलिया और तू जीवतैंहीं परमेश्वर अजर अमरसैं लय होगया सो वाहीका स्वरूप होगया यही मनुष्य जन्मका फल है और सब पशूनकी तरह विषयनके संग गफलतमैं मरतेहैं सो ऐसैं तो अनन्त जीव मरतेहैं।

मनुष्य जन्मका लाभ नहीं हुवा 'और जो तू बहुत कालतक' जीया बडी ऊमरपाई। और अपने धर्मका परमेश्वरके मार्गका खोज नहीं किया जासैं जीवात्माका कल्याण होता और तू या गृहस्थाश्रमके फन्देमैं आके अनेक आसानकी फासीनमैं हरिसैं विमुख होकर ज्यादा जीया तो क्या जीया ऐसें तों कौवा स्यांप क्या बहुत नहीं जीतेहैं। "ऐसा तेरा ज्यादा जीना निष्फल है और कुटुम्बके मोहमैं आके अनेक क्लेश पाताहै"। सो हे अज्ञानी नर! तू मनुष्य जन्म पाके परमेश्वरका मार्ग क्यौंनहीं खोजता अब वृद्धपणामैं भी रातदिन धन भोगनके संगमैं वृथा अजोग क्यौं पचता है घणा पसारा वधानेंकी तृष्णा तो को हैरान करतीहै। कार्यनिमित्तका पसारामैं सन्तोष करिके एकान्त बैठके हे मित्र अबतो परमेश्वरसैं लो लगाके ध्यानकर जासौं कुछ जन्म! सुधरे।

अथ लक्ष्मीके उभयस्वरूपका वर्णन।

अनाम उवाच।

हे प्यारा! लक्ष्मीके दो स्वरूप होतेहैं दाहक और शान्त सो पापीनके घरमैं तो उसका नाश करनेंकों बढती हैं। वे अन्यायसौं उसकौं संचय करतेहैं और बहुतसे मनुष्यनसैं छल करिके दुःख देके लेतेहैं और रात दिन उनकों जक नहीं पडती उसके बधानेके फिकरसैं फँसके क्लेश

पातेहैं। सबसैं विरोध करतेहैं और शुभ मार्गमैं खरच नहीं करते कछ विषयदण्डकी मान बडाईमैं खरच करते हैं वाके चक्रमैं पच २ के क्लेश पातेहैं शान्ति नहीं पाते उसहीके आसरे जहरी स्याँपरूप होके मनुष्य जन्मकी ऊमर खोतेहैं और अन्तमैं सब छोडके चलेजातेहैं सो ये लक्ष्मी जे हरिसैं विमुखहैं उन पापीनकों अग्निसमान है और जे हरिजनहैं उनकों शान्तरूपहै विनापरीश्रम सहजके कर्मनसैंही बहुतसी होजातीहैं वासैं सबतरहका आराम पाके संतुष्ट होतेहैं और आप भोगतेहैं और शुभमार्गमैं लगातेहैं साधु सन्त श्रेष्ठजनोंकी सेवा करतेहैं और लक्ष्मीका आसरा पाके निर्विघ्न मेरा सुमरन करतेहैं और मेरे मार्गका खोज करतेहैं संतोष दयाके साथ सत्संगमैं मेरे गुणानुवाद सुणतेहैं सुणातेहैं और श्रद्धासहित दान पुण्य करतेहैं और मेरी भक्तियोगमैं तत्पर होतेहैं उन जनोंको लक्ष्मी शान्तरूप मोक्ष करनैंवाली हैं।

अथजगत्मैं च्यार कथाहैं तिनका वर्णन करतेहैं।

हे प्यारा! जगत्मैं च्यार कथाहैं अपकथा १, परकथा२, राज्यकथा ३,हरिकथा ४,सो तीन कथानमैं तो सब मनुष्य उलझ रहेहैं वृथा अपनां काल खोतेहैं अपकथा तो येहैं अपनीं बडाई करतेहैं मैनैं ऐसैं किया, वहागया, वो लाया

वहदिया, वहलिया १, पर कथा वोहै वानैं क्याकिया, वो ऐसाहै, वो भलाहै, वो बुराहै, वाकी क्या बातहै २, और राज्यकथा वोहै जामैं राजाके घरका जिकर कियाजाय वो राजा ऐसाहै,यह राजा ऐसाहै,याके हाथी घोड़ा बाग महाल वहुतहैं वाके रांनी वहुतहैं, वामैं ऐगुणहैं, यामैं ये अवगुणहैं ३और चौथी हरिकथा हैं वो हरिजन करतेहैं आज कथा ऐसी सुनी, क्या अच्छी बची और आपसमैं कथा वाचतेहैं, चरचा करतेहैं, प्रसन्न होतेहैं, भजन गातेहैं सो चौथी कथा वहुत थोडेजन करतेहैं और तीन कथानमैं सब नरनारी मलीन होतेहैं वृथा काल खोतेहैं जो प्रेमीजन हैं सो सन्तत सुमरण करतेहैं हरवक्त लौ लगाये रहतेहैं ।

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनामसंगलसम्वादे सर्वशास्त्रनका च्यारप्रकारके भक्तनका कर्त्ता अकर्त्ताका वोधके हेतु उपदेशका व्याख्यानवर्णनो नाम एकादशःप्रकाशः ॥ ११ ॥

अथ जगत्की मूर्खताका वर्णनम् ।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा ! या जगतनैं किसीकोंभी अच्छा नहीं कह्या ये गुणकों छोडके अवगुण गहताहै देखो रामचंद्रके राज्यमैं एक धोवी था। वानैं अपनी स्त्रीकों पीटके घरमैंसैं निकाल

दीनीं वो दूसरा धोबीके घरमैं दो च्यार दिन रही वाकों और स्त्री समझाके वाके घर लाई तब वांका पतिनैं कही मैं इसकों नहीं रहनेंदूंगा ये तो दूसरेके घरमैं रह आईहै क्या जगे २ रामचंद्रजी हैं जो वे सीताजीकों ले आये और वो बहुत दिनतक रावणके घरमैं रही मैं ऐसा बरताव नहीं वरतूंगा जब ये चरचा रामचंद्रजीतक पहुँची तब रामचंद्रजीनैं सीताकों वनोवास दिया और ऐसेंही श्रीकृष्णचंद्रके जदुवंशियोंनें मणिकी चोरी लगादी सो ये कथा प्रसिद्ध है। जगतमैं सब जानतें हैं।

अथ च्यारप्रकारके मनुष्यजगत्मैं हैं तिनका वर्णन।

हे प्यारा! जगत्सैं च्यार प्रकारके मनुष्य हैं उत्तम १, मध्यम २, कनिष्ठ ३, चौथा जात रूप हीनहै ४, उत्तम पुरुष वो कहलाताहै जो अपना अर्थ छोडके दूसरेका कार्य सिद्ध करै १, मध्यम पुरुष वो है जो अपना कार्यभी सिद्ध करै और दूसरेकाभी करदे २, कनिष्ठ वोहै जो अपनांही कार्य सिद्ध करै दूसरेका बिगाडै ३, और चौथा जातरूपहीन महाकनिष्ठ वोहै जाके अपनेभी कुछ कार्य सिद्ध नहीं होते और दूसरेका बिगाडता है ऐसें पुरुषसैं संभाषण करनांभी योग्य नहीं अतिनीच महादुष्ट हैं।

अथ राजानकों शिक्षावर्णनम् ।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा! ये मनुष्यशरीर जोहै सो सबसैं श्रेष्ठ धर्मक्षेत्र कर्मक्षेत्र इसीका नाम है परमेश्वरनैं मनुष्य शरीरदिया जब सबकुछ देदिया बाकी कुछ नहीं रक्खा चौदहभुवन साराब्रह्माण्ड त्रिलोकीका राज्य देदिया इतना बडा राज्य छोडके जो बाहिरका राज्य चाहताहै सो मन्दबुद्धि अज्ञानीहै इस शरीरका राज्य जब होवैगा तब सांचे सद्गुरु महायोगी परमसन्त कामिल मुर्शिद वक्तके शहनशाः मिलैंगे और उनकी सेवा तन, मन, धनसैं करोगो उनकी कृपादृष्टिसैं देहरूपी ब्रह्माण्डका राज्य पावोगे और ये बाहिरके राजा जे इंद्रियनके वशीभूत हैं सो एक २ इंद्रियनके विषयजालमैं फसके विनामोत मारेजातेहैं यानैं अकालमोत पातेहैं और इन बाहिरके राजालोगोंका इतनाबडा प्रताप है कि जो ये धर्मनीतिसैं राज्य करैं तो कलियुगमें सतयुग होजाय और राजा नाम उसीकाहै जाका सब हुकम् मानै और जा धर्म मजहबमैं राजा होताहै वो धर्म मजहब प्रबल रहताहै राजामैं शुभगुण श्रेष्ठ आचरण होनेंसैं सब प्रजा सुखपातीहै अवगुण होनेंसैं दुःख पातीहै खोटे पुरुषनके संगसैं राजाका स्वभाव बिगड जाताहै और श्रेष्ठ संगसैं सुधरताहै जो राजा अपनी प्रजाकों धर्म नीति न्याय कारि

के पालन करताहै सुख देताहै वाका राज्य कदाचित् नहीं बिगडैगा और जो अन्याय करिकें दुःख देताहै उसका राज्य कोईकालमैं नष्ट होजावैगा और राजाकौं चाहिये कि जे अपने राज्यमैं श्रेष्ठपुरुष हैं धर्मशीलके धारण करनेंवाले विद्यावान् चतुर अजोग्य लोभसैं व्यभिच्यारसैं राहित शुद्ध आचरणके रखनेवाले जगत्मैं जिनके श्रेष्ठ कर्मोंकी कीर्ति फैलीहुई होय ऐसे पुरुषनसैं हरेक बातकी सला लेनीं चाहिये और ऐसेही पुरुषनकों अध्यक्ष यानैं हाकिम करना योग्य है और वे हाकिमी पाके साधु असाधुनकों परखके क्षोभरहित होके न्याय करैंगे और फुरसत पाके सन्तनका संग परमेश्वरका सुमिरण दयाकेसाथ करैंगे वेही राज्यरूपी उत्तम गतिकौं पावैंगे और जे अजोग लोभी अन्याई कामी क्रोधी मलिन हैं आचरण जिनके दयाहीन छलसैं धनके कुमानेवाले व्यभिचारी जगतमैं जिनकी अपकीर्ति होरही है और वे विद्यावान् चतुर वडे कुलकेभी हैं तौभी ऐसेनकों अध्यक्ष करनां योग्य नहीं ऐसे पुरुपनकों हाकम करनेंसैं यह लोक परलोक राजाके दोनूं नष्ट होतेहैं और राजा च्यारूं नीतनकौं धारण करिकें राज्य करै साम१, दान२, दण्ड३, भेद४, साम कहा महिमा करदेनी, दान कहा धन देनां२, भेद कहा आपसमैं फूट करादेनीं३, दण्ड कहा सजादैंनी४, सो दण्ड तीनप्रकारका है दृष्टि१, वचन२, ताडना३, उत्तम पुरुपनकौं राजाकी कुदृष्टिकी

सजा मोतकी बराबर है मध्यम पुरुषनकौं वचनकी ताडना दैंनीं कनिष्ठ जो नींचहैं उनकों पिटवानां योग्यहै सो राजाकों चाहिये कि जैसी सजाकै लायक पुरुष हो ऐसी दैंनी उत्तमकौ नीच सजा नैं दैनीं और नींचकौं उत्तम न देनीं और राजा आलस्य छोडके प्रजाका नित्यप्रति न्याय करता रहै ये प्रथम धर्म हैं और राजाकों चाहिये कि जे अपनें राज्यमैं श्रेष्ठजन और साधु सन्त हैं उनकी सेवा करै और जे परम सन्त तत्त्ववेत्ता जिनके सहजके वचन प्रकाशमय योगसिद्ध महापुरुष होवै उनकी सेवा सतसंग करै उनके संगसैं राजाका वडा कल्याण होताहै क्यौंकि राजाकी बुद्धि विषयनके संगसैं कुण्ठित होतीहै सो ऐसे पुरुषनके संगसैं बुद्धि तीव्र धारवाली होजातीहै जो कार्य बुद्धिवानींसे होसकै तो तरवार नैं चलावै क्यौंकि तरवारचलानेसें (बुद्धिरूपी) तरवार श्रेष्ठहैं ये जो बाहिरके राजा बादशाहहैं सो आत्मज्ञानविना अति कंगाल इंद्रियनके पीटेहुये । विषयनसैं ग्रसित परमेश्वरसैं विमुखहैं और जे परमसन्त महायोगी महाभूप शहनशा- भीतरका राज्य करतेहैं उनका संग ये बाहरके राजा बादशाह पावैं तो वे कृपा करिकैं इनकों भीतरकी थोडीसी जागीर बखसैं वाके प्रतापसैं इनकी बुद्धि विचारमैं बलवान् होजातीहै वा बुद्धिके बलसैं ये बाहिरका राज्य अतिश्रेष्ठ

तासैं करतेहैं और जो वे भीतरका जाकों राज्य देवैं तो वाकों पाके वाहिरका राज्य जो सब पृथ्वीका भी होवै । सोभी तुच्छ मालूम होताहै और वासैं गिलानीं आजाती हैं जैसैं ध्रुव, प्रह्लादादि, गोपीचंद, भरथरी, बलखबुखाराका बादशाह आदि बहुतसे राजा राज्य छोडके ब्रह्मानंदमैं मग्न होगये अजर अमर निर्वाण पदकौं प्राप्त हुये ।

अथ च्यारनकों परमेश्वरकी प्राप्तिहोना कठिनहै तिनका वर्णनम् ।

अनाम उवाच

हे प्यारा! इन च्यारनकों परमेश्वरकी प्राप्ति होनां कठिनहै राजा १, स्त्री २, पण्डित ३, मूर्ख ४, सो राजा तो भोगनमैं लोलुप होजातेहैं परमेश्वरको नहीं खोजते और स्त्री भोगस्थान है याकों अपनें श्रृंगारसैंही फुरसत नहीं होती और उत्तम संग मिलना कठिनहै और पण्डित विद्याके अभिमांनसैं अन्ध होजातेहैं किसी महात्माका संग नहीं करते और चौथा जो मूर्खहै वाकों विवेक होना कठिन है और जो इन च्यारनको ईश्वरकी प्राप्तिका ज्ञान होजावे तो राजा, पण्डित, स्त्री, इनका प्रताप बाहिर बडा अधिक फैलै क्यौंकि ये बाहिरके व्यौहारोंमैं बडे प्रबल हैं और हे प्यारा! जो राजा होकर कृपण होताहै और अपनें धर्म मजहबसैं वाकिफ नहीं होता तो वाका बहुत बडा

अकल्याण है राजा होके ब्राह्मण पण्डित होके त्यागी होके ये श्रेष्ठ आचरणकों धारण नैं करै तो इनका जन्म निष्फल है क्यौंकि सामर्थ होके हीन होतेहैं सो राजसी लोगोंकों चाहिये कि सात्विकी पुरुषोंकी सेवा सत्संग करैं जासों उनकी राजस शुद्ध बनीं रहैं और परमेश्वरका मार्ग नैं रुके क्योंकि सतोगुण तो गुणातीत जो तुरीयाहै ताकेसंगसैं शुद्ध रहतीहै और रजोगुणका संग पाके मलिन होतीहै और रजोगुण सतो गुणके संगसैं शुद्ध रहतीहै और तमोगुण रजोगुणसे शुद्ध रहतीहै केवल तमोगुण अज्ञान क्लेश दुःख कों लिये हैं और ये सब गुण न्यूनाधिक करिके आपसमैं मिलेहुये हैं। हे प्यारा !जो राजा भोगनमैं अन्ध होजावै और श्रेष्ठ जन वाके राज्यमैं क्लेश पावै तो वा राजाका बडा अकल्याण होताहै और जो मनुष्य धन पाके श्रेष्ठ जनोंकी सेवा करतेहैं उनके बहुतसे कष्ट निवारण होतेहैं सूलीकीसजा कांटेपर टल जातीहै और जो दान देवै तो सुकचके कंजूस-पनैंसैं नैं देवै दिल खोलके दानदेतो दानका फल पाताहै हे प्यारा ! देश काल पात्र विचारके दान देवैं, देश कहा शुद्ध पवित्र लोगोंके पास रहनेवाला होवै अथवा एकांत पवित्र भूमिमैं तपके हेतु रहनेवाला होवै काल कहा जा समयमें आवश्यक वस्तु विना पीड़ित होवै जैसैं क्षुधा आतुरकों भोजन और पात्र कहा हरि गुरु भक्त धर्मनीतिका

धारण करनेंवाला विवेक विचारमैं निपुण शास्त्रोंका ज्ञाता होवै तथा चारों आश्रमोंको साधनेंवाला योगाभ्यासी होवै ऐसे पुरुषनकी सबतरह सेवा करनी चाहिये और अन्न जलकी दया तो प्राणीमात्रपर करनीं योग्य है और जे सन्तनसैं प्रीति करतेहैं वे मनुष्य जन्मका फल पातेहैं और जे धन ऐश्वर्यकों पाके शुभ कर्म नहीं करते परमेश्वरका खोज नहीं करते सन्त महात्मा श्रेष्ठजनोंकी सेवा नहीं करते और काम भोग कृपणतामैं आसक्त हैं वे मनुष्य देह पाकेभी श्वान सूकरवतहैं और जे पण्डित आलिम फाजिल होके अधर्म गुन्हां करतेहैं वे विशेष दण्डके भागी होतेहैं

अथ सबनरनारीनकों जो आचरण करनां योग्यहैं सो वर्णन करतेहैं ॥

अनाम उवाच

सबसैं निर्वैर रहनां झूंठ कपट क्रोध व्यभिचारसैं बचनां अपनें पडोसीसे वैर नैंकरनां उसकी कोई वस्तु नैं तकणी माता पिताकी गुरुकी आज्ञानुकूल रहनां सेवा करनां शुद्धतासैं धन कुमानां अभिमांन कृपणतासैं रहित होनां और मरमछेदनेंवाला किसीकों कड़वा वचन नैं बोलनां क्योंकि तरवारका घाव भरियाताहै । परन्तु कड़वे वचनका घाव नहीं भरता इस वास्ते कोमल वचन मधुरतासैं बोलनां सबका आदर करनां किसीकी हांसी ठट्ठा मसखरी नहीं कर-

ना बडोंका अदब कायदा रखनां राजा गुरू सन्त महात्मा वैद्य देव इनके पास खालीहातसैं न जाना पत्र पुष्प नैवेद्य आदि भेट करना भूखे प्यासेपै दया करना अच्छेका संग करना परमेश्वरकी कथा श्रवण करनी सन्त महात्मांनका सत्संग करनां परमेश्वरके नामका सुमरन करनां ॥ अपने वक्तके कामका आलस्य नहीं करनां बुरेका सामनां नहीं करनां सब शुभ आचरणोंको धारण करनां ये सब शुभगुण चाहे जा धर्म मजहबमैं हो सब नरनारीनकों धारण करनां योग्य हैं और स्त्री अपनें पतिकी आज्ञानुकूल रहै पढै लिखै तो स्त्रीसैं स्त्री पढै लिखै तथा भ्राता पिता पतिसै पढै शिक्षा इनकीमैं रहै स्त्रीनके संगमैं हरिकथा श्रवण करै बांचै शुभगुण धारण करै चपलता छोडै सौम्यतासै संजमके साथ सुकची रहै कुटिला जारणी नैं होवै अपनें घरका काम सब अच्छीतरहसै करै और किसीकी झूठी बात नैं करै नैं सुणैं अपनें बाल बच्चोंसैं कोमल वचनोंसै बोलै किसीसैं इर्षा नैं करैं पाडोसिणसैं लडाई नैं राखै सासू सुसरकी सेवा करै यथायोग्य सबका आदर करै अपनें कुटम्बकी स्त्रियोंसैं प्रीति राखै वैरभाव किसीसैं नैं राखै अपनें पुत्रकी भऊकों बेटीका भावसैं वरतैं वापै ज्यादा हुकूमत नैं चलावै ईर्षा नैं करै कुछ उजाड होजाय तो क्षमा करै कडवा वचन नैं बोलै आठ पहर अपनां क्रोधी स्वभाव नैं राखै और अतिथिनकी सेवा अन्न जलसैं करती रहैं

अपनें पतिका बतायाहुवा मार्गमें परमेश्वरका भजन करै और पुरुष अपनी एक स्त्रीपैही नीति राखै व्यभिचारसैं बचै माता पिता बालबच्चे पाडोसी सबकों यथायोग्य वरतै पुत्र सोलै वर्षका होजावै जब कठोर वचनभी नैं कहै मित्रभावसैं समझावै अपनी स्त्रीकों या लोक परलोककी शिक्षा देता रहै सबसे मित्र भावसैं कोमल वचन बोलै दुःखमैं घबरावै नहीं सुख संपतिमैं क्षमा धारण करै अपनी मरजादसैं ज्यादा आपकों नैं समझै आपसैं दूसरेका भला देखै सबका आदर करै दया राखै हरिकथा सुणै वाचै विचारै शुभगुण धारण करै और कृतघ्नी नैं होवै दूसरेनैं अपनें साथ नेकी करी ताकों नैं भूलै कोई नशेके आधीन नैं होवै वे मेलमै नैं मिलै जगतकों और परमेश्वरकों जो बात अच्छी लगै ताका अग्र सोचै अपनां वक्त हांसी ठट्ठामैं खराब नैं खोवै गुरूकी सेवा सत्संग करै अपने उद्यमके कर्मनसैं फुरसत पाके परमेश्वरका भजन गुप्ततासैं करै दान पुण्य परमेश्वरके निमित्त फलवांछा छोडके देवै जसमैं रुचि राखै सब व्योहार अपनां शुद्धतासैं वरतै ॥ ये श्रेष्ठ गुण पुरुषनके भूषणहैं और जे पुरुष परमेश्वरके निमित्त तन मन प्राणका संजम करतेंहैं और अजोग भोगनका त्याग करतेहैं उनके मन इंद्रियां जो पहिलें शत्रु थे सो मित्र होजातेहैं उनके सब भोग पीछे दिव्य होजातेहैं पश्चात् वे दिव्य भोगनकौं भोक्तेहुये परमेश्वरकी

भक्तियोग करिके तद्रूप होजाते हैं कहा योगाभ्यास करिके अपना जीवात्माको परमात्मामैं लय करतेहैं वे पुरुष या लोक परलोक दोनूंनके भोग भोक्तेहैं जिनके च्यारूं आश्रम शुद्ध होतेहैं वे समाधिसिद्ध महायोगी परमपुरुष सब प्राणी मात्रके सुखदुःख अपनेंसम देखके सबसैं मित्रभाव करिके सबकों सुखी चाहतेहैं और समदर्शी हैं सबकों ब्रह्मभाव करिके देखतेहैं ऐसे महापुरुष कर्म नहीं करैं तो दोषकेभागी नहीं होते और जो करैं तो कुछ अधिकता नहीं। वे पाप पुण्यसैं रहित हैं उनकी समाधि उत्थान एक होजातीहै जीवनमुक्ति देहसहित विदेहहैं बालवत् निरहंकार लीला करतेहैं ये रहस्य योगसमाधि सिद्ध महापुरुषोंकी होतीहै वाचक ज्ञानियोंकी नहीं होती।

अथ जे मनुष्य दम्भी झूठे जती बनतेहैं तिनका वर्णन।

मंगल उवाच।

हे महाप्रभू! बहुतसे भेषधारी कामदेवके मारनेके अर्थ केईतो शिश्न काटतेहै, केई शिश्नकी खालमैं कडी पहिरातेहैं, केई शिश्नके बल देदेके उसकी नस मारतेहैं, केई गांजा चरस पीके कामदेव मारतेहैं सो इनका हाल कृपाकरिके वर्णन करो।

अनाम उवाच ।

हे प्यारा ! ये सब दम्भी पाखंडी हैं शिश्नके काटनेसैं नस मारनेसैं क्लीव यानें नामर्द होजातेहैं और ज्यादा जती रहनेसैं भी क्लीब होजातेहैं, कामदेव तो मनसैं प्रगट होताहै इसहेतुसैं याका नाम मनोज है और ये मनका मथन करताहै तासैं मन्मथ नाम है और जो गांजा चरस पीके कहतेहैं कि हम याकों पीके कामदेव मारतेहैं सो झूंठेहैं जो कामकों जगानेंवाली जीभ है वासैं तो अनेक रस खातेहैं और सुलफा पीके कामदेव मारतेहैं तो कामदेव बडा पोच ठैरा जो चरस पीनेसैं मरजायगा महादेवनें तो सब विश्वका जहर पिया जबभी कामदेव नहीं मरा मोहनी स्वरूपकों देखके भगेडोले और ये सुलफा पीके काम मारतेहैं देखो बहुतसे गृहस्थीलोग पीतेहैं और जहां ये चरस पैदा होताहै वहां तो सर्दीके सबबसैं सबही पीतेहैं कोई २ नहीं पीता होगा सो ये कहनां इनका झूंठाहै कि चरस गांजा पीके कामदेव मारतेहैं ये तो दुर्व्यसन हैं खोटी सोहबतका फल है और हे प्यारा ! जो किशोर अवस्थामैं भेप लेके जबहींसें जितेन्द्री रहतेहैं बल वीर्य शरीरमैं बधातेहैं और वा बलकों पाके आसन प्राणायामके कर्म नहीं साधते तो उनका बल वीर्य वृथाहै नैं गृहस्थाश्रमके काममैं आया नैं परमेश्वरके काम आया रोकनेंका वृथा अहंकार करतेहैं

सनातन मार्गकों छोडके कुमार्गमैं चलतेहैं तरुण अवस्थामें तो गृहस्थाश्रम धर्ममैं यथायोग्य अपनी स्त्रीकों वीर्यदांन देके पीछे जितेंद्रीय रहके अपनें बल वीर्यसैं सद्गुरुकी आज्ञा लेके आसन प्राणायाम योगके अंगनका साधन करै सोई अतिश्रेष्ठ जती हैं लालदास महापुरुष कहतेहैं "बगलमें रोटी संगसैंनार लालदास जब रह करार" सो हे प्यारा जब ये शिश्नोदरकी आग शान्त रहै तब भजनमैं मन लगताहै और कामदेव तो अष्टप्रकारसैं व्यापताहै ।

दोहा—नारी सुमरन श्रवण पुनि, दृष्टि भाषणा सोय ।
गुह्यआरता हास्यरत, बहुर स्पर्शै कोय ॥ १ ॥

सो हे प्यारा ! कामदेव तो दुरासाध्य है ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, गुण इंद्रिय आदि जबतक स्थूल शरीरहै । तबतक बनेंही रहतेहैं नाश नहीं होते परन्तु ये सुमरण भजनके प्रतापसैं शान्त रहतेहैं और योगकी सिद्ध अवस्थामैं तो सबश्रुतीसहित लय होजातेहैं वो अकहपदहै जबतक योगमार्गसैं ब्रह्मानन्द प्रगट नहीं होवै तबतक अभिलाषा भोगनकी मरे जबतक बनींही रहतीहैं गीतामैंभी मैंने ऐसा कह्याहै ।

श्लोक—विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्ज्यं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ इति ॥

अर्थ–आहारकरिके रहित जो प्राणीहैं, तिनके बाहिरके विषय निवर्त होजातेहैं परन्तु विषयनकी अभिलाषा अर्थात् वासना बनी रहतीहै नष्ट नहीं होती विषयनके रसकी वासना परमेश्वरकी प्राप्तिसैं निवर्त होतीहैं अन्न जल छोडनैसैं नहीं होती सो हे प्यारा ! जगततो विषयानन्दमैं मग्नहैं हरिजन भजनानन्दमैं मग्नहैं जीवन्मुक्त ब्रह्मानन्दमैं मग्नहैं विषयानन्द अल्पहै भजनानन्द विशेषहै ब्रह्मानन्द नित्य सदा एकरस हैं सो हे प्यारा ! ये मन आनन्दमैंहीं रहताहै विषयानन्द जब छूटैहै तब ब्रह्मानन्द प्राप्त होजाताहै विषयानन्दसैं मन तृप्त नहीं होता जो राजा होके भी मनवांछित भोग भोगे तोभी ये मन तृप्त नहींहोता भोगनकी वासनामैं कंगालही रहताहै क्योंकि ये मन अपनां ब्रह्मानन्दसैं बिछटाहुवाहै अनित्य शरीरके भोगनमैं कैसैं तृप्त होवै ये तो ब्रह्मानन्द जो नित्यस्वरूप है तामैं तृप्त होवैगा जैसैं कोई चक्रवर्ती महाभूपका पुत्र अपनें अधिकारसैं नष्ट होगयाहै और वाकौं एकगामकी विस्वेदारी मिलै तो वासैं वो कैसैं सन्तुष्ट होवै वो तो अपनी महिमाके स्थानकों पाके तृप्त होवैगा ऐसैं जानो ।

प्रश्न ॥ हे स्वामिन् बाजे २ मनुष्य शब्दकों जड बतानेहैं । याका व्याख्यान कृपाकरिके कहो ।

उत्तर–हेप्यारा ! जडतो कोई वस्तु नहींहैं क्योंकि जड वो कहलाताहै जोबदलाव नहीं खाताहै सो सब वस्तु बदलाव

खातीहैं इसहेतुसैं जड़ कोईभी नहीं हां जड़संज्ञा तो है यानैं जड़सीदिखाई देवे और जड नहींहे और शब्दकों जड कहना तो महामूर्खताहै शब्दकातो परमचैतन्य ओंकारस्वरूप सब सृष्टिकों रचनेवाला सबकी आदिमें है परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी ये याके स्थानहैं और शब्दसैंही वेद शास्त्र पुराण अनेक ग्रंथ कर्माकर्म धर्माधर्म गुरु शिष्य उपदेश आदि राजानके राज्यके हेतु न्यायके कानून सब जगत्का व्योहार कहना सुणना सब याहीसे होतेहैं और हरेक जगे कथानके प्रसंगनमें वर्णनहै कि परमेश्वरकी आकाशवाणीसैं अवतारआदि प्रगट हुयेहैं और सांख्यशास्त्रमें ऐसा कथनहै कि प्रथम परमेश्वरका ये शब्द हुवा कि मैं एकहूं वहुत होजाऊं और शब्दसैंही मायाब्रह्मका कथनहै और जड़ चैतन्यताका येही निर्णय करताहै शब्द सबसैं आदि परमचैतन्य प्रगट परमेश्वरस्वरूप है और जासैं शब्द प्रगट भया वो चैतन्यका चैतन्य शब्दातीत है जे शब्दकों जड़ बतातेहैं वे महामूर्खहैं ।

अथ संक्षेपतासैं महापुरुष भक्तनकी नामावली वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे हरिजनप्यारामित्रहो ! परमेश्वरके पहिलैं वहुतसे भक्त ब्रह्मऋषी, देवऋषी, राजऋषी, हुयेहैं । उनका व्याख्यान पुरांणनमैं वेदव्यासजीनैं वर्णन कियाहै सनक, सनन्दन,

सनातन, सनतकुमार, शिव, वशिष्ठ, विश्वामित्र, नारद, वाल्मीक, भुशुण्डी, अंगिरा, पुलह, पुलस्त, भारद्वाज, भृगु, गौतम, च्यवन, वामदेव, देवल, कपिल, पारासर, पुंडरीक, दधीचि, व्यास, अगस्त्य, अत्री, अष्टावक्र, जडभरत, मार्कंडेय, जमदग्नि, शुकदेव, शुक्राचार्य, शुक, शौनक, अम्बरीष, भागीरथ, भीष्म, रुक्मांगद, प्रह्लाद, ध्रू, हनूमांन, विभीषणं, हरिश्चंद्र, मोरध्वज, राजा नल, बलि, गजेंद्र, अंगद, उद्धव, अर्जुन, विदुर, व्याध, गीध, अजामेल द्रौपदी, शबरी, और मैंगावती, मीरां, कर्मा, गनिका गोरख, गोपीचंद, भरथरी, सजनां, सेनां, नामदेव, नरसी, काल्हू, कूबा, धन्ना, घाटमरंका, वंकासेऊ, सम्मन, सुलतान, मनसूर, शमशतबरेज, वाजीद, फरीद, हेतम, कबीर, नानक, दादू, पीया, लालदास, रैदास, धर्मदास, सूरदास, तुलसीदास, गरीबदास, चरणदास, सुंदरदास, रजब, राधास्वामी, परनामी, आदि जिनके वारपारनहीं अनन्तहैं पहिलेंहुये अबहैं और होवैंगे उनकों मेरी वारंवार अहर्निशि प्रणाम है। हे प्यारे हो! ये तीन महापुरुष परम संत महायोगेश्वर अब हालमें प्रगट हुयेहैं गरीबदासजी छुडाणी वाले, कक्करमहाराज और वेनामी महाराज।

अथ कक्कर महाराजका जीवन चरित्र वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे प्यारे मित्रहो ! कक्करनाम बलवान शरीरकाहै। महाराज गरीबदासजी हरियाणामैं छुड्याणीग्राममैं प्रगट हुये वा ग्रामके पास मिलकपुरग्रामहै वाके कक्कर महाराज लंबरदार थे उनका गंगाराम नाम था वासमय यवन बादशाहनका राज्य था राज्यका बन्दोबस्त इनका ठीक नहींथा लूट खोस बहुतसी होतीथी सो गंगारामजी धाडेतीनमैं नामजादीक थे सो येभी तीस चालीस सवारनके संग धाड़ा मारते थे और गरीबनकों नहीं सताते थे धनवानोंका घर लूटतेथे और हरिकी भक्तिका अंकुर इनके हृदयमैं जभीसैं था ब्राह्मण साधु सन्तकी सेवा करतेथे। एकरोज अपने ग्रामकी थडीमैं बैठेथे जब वसन्तऋतुमैं कुछ मेह वर्षनैं लगा वासमय गुप्त भेससैं महापुरुष एक धौलीचादर ओढैं पावनमैं पगरखी पहिरैंहुये वर्षादेखके इनकी थड़ीकी चोलालीनमैं भीतके सहारे जाके खड़े होगये उनकों गंगारामजीनैं भीतर बुलाये परन्तु वे कुछ नैबोले और भीतर नहीं गये बाहिर चौलालीनमैंही खडेरहे। थोडी देरके बाद मेहकी बूंद ठैरगई तब वे महापुरुष चलेगये और जो गंगारामजीके पास मनुष्य बैठेथे सो भी चलेगये उस समय

एकमुहूर्त दिन था जब गंगारामजीके मनमैं विचार हुवा कि ये मनुष्य कौनथा जाकों हमनैं भीतर बुलाया और वो नहीं आया कोई भेदी मनुष्य तो नहीं था तब गंगाराम थडीसैं बाहिर आके ग्वालियानसैं पूछा कि हे बच्चेहो एक मनुष्य गौरबर्णका सपेद पछेवडा ओडे तुमनैं देखाथा? जब उन ग्वालीयाननैं कहा हां हमनैं देखाहै जोडपै पच-वीरनका चौतरापै बैठेहैं तब गंगारामजीभी उतीकों चले-गये जाके देखैं तो चादरकों चौलड़ा करिकै वाके ऊपर आसन जमाकै बैठेहैं जब इन्होंनैं सन्त समझके ढोकदीनी और हाथ जोड़कै अर्ज करी कि महाराज जैसी रसोई फरमावैं ऐसी हाजर करैं पक्की कच्ची या सीधा सामान जब उन्होंने कहा सामान लावो तब गंगारामजी झटपट घरकों गये जाके आटा गुड़ घृत लिया च्यार छाणा बगलमैं दीया और चुपकेसं रस्तेमैंसैं अग्नि लेके महाप्रभू दीनदयालके पास गये उन्होंनैं अगोछामैं आटा लिया और जोड़केपास सिल धोके आटा ओसनां उसीमैं गुड घृत गेरालिये गंगा-रामजीनैं जमीन साफ करिकैं छिडका देकै छांणा फोडके जगरा लगादिया आंच गेरदीनीं और महाराज कृपानि-धांनसै अर्ज करी कि स्वामी मैंभी भोजन करि आऊं जब उन्हौनैं कह्या हां तब गंगारामजी घर जाके भोजन करिके महाराजकेपास वापिस आये वे महापुरुषभी भोजन करिके आसनपर बैठेथे गंगारामजीभी ढोक दके बैठगये तीन

घंटा बैठेरहे आपसमैं बोला चाली नहीं हुई चांदनी शुरू वैशाखकी खिली हुईथी जब गंगारामजीनैं विनयपूर्वक दीन वचनोंसैं हाथ जोडकर अर्ज करी कि महाप्रभू मुझकों परमेश्वरके मिलनेंका मार्ग बतावो तव परमसन्त थोडी देरके वाद बोले कि हम एकचीज मँगावैं तुम लावोगे जब गंगारामजी वोले हां स्वामी जो मेरेपास होवैगी और उपाय-सै मिलैगी तो मैं जरूर लाऊंगा उन्होंनैं कह्या एक तरवार वाड़ (साण) लगीहुई तैयार होवै सो लावो तव गंगाराम-जीनै कह्या जो हुकुम और ये घरकों आये रस्तेमैं इन्होंने विचारकिया कि मैंनैं तो इनसैं परमेश्वरका मार्ग पूछाथा और इन्होंनैं तरवार क्यों मँगाई क्या ये मेरा शिरकाटैंगे कोई भेदी दुश्मन तो नहीहैं पीछे मनमैं विचार किया कि परमेश्वरके नामके ऊपर जो ये तेरा शिरभी काटै तो कुछ चिन्ताकी वात नहीं क्योंकि धनके निमित्त धाडेमैं मरनेसैं ये मरनां अच्छाहै क्यौंकि परमेश्वरके निमित्त हैं सो ये निश्चय करिके घरजाके अपनी तरवार लेके चुपकेसे चले आये और तरवार महा-योगेश्वरके सामनैंरखदीनी जबउन्होंनें कह्या इसकों म्यानसैं वाहर करो तव गंगारामजीनैं बीडा खोलकर नंगीकर महा राजकी तरफ मूंठ करिके धरदीनी वा समय शुरू वैसाखकी अर्द्ध रात्रीकी चांदनी शिरपर खिली हुई थी जब महाप्रभू नैं उनके अन्तःकरणकी परीक्षा करिके पूरी दृढता

देखकै योगमार्गका उपदेश किया आसन प्राणायाम ध्यानका भेद बताया और कह्या कि या मार्ग होके धीरजता और गुप्तताके साथ अपनें आपेकों आप मारले कोई क्लेश रस्तेमैं होय तो वाकों संजमसैं निवारण करिके अभ्यासमैं लगाईरहनां और सब काम काज घरके संसारकेसैं अलग होकै अपने ग्राममैं एकान्त स्थानमैं निवास करनां और वाहिरका कुछ स्वांग नैं बनानां सबसैं हिलामिला रहनां परन्तु घरका कुछ काम न करनां इसी अभ्यासके साधनमैं लगा रहनां युक्त आहार विहारके साथ जीवतैंहीं अपने मरनेकी सैल देखनां कुम्भकसैं श्वासका उर्द्धगवनको देखताहुवा क्लेशोंकों शान्त संजमसैं करताहुवा सहज २ धीरजताके साथ अपने मरणकों देखना जो मार्गमैं आनन्द क्लेश होवै सो अपने दिलमैं गुप्त रखनां जब तुम निजस्थानको जा पहुंचोगे कहा कुम्भकमैं शान्त सुषुप्ति होजावैगी और थोडा बहुत कालका प्रमाण कुछ श्रुतीकों नैं रहैगा आपेमैं गरगाप होजावैगा जब सब कुछ गुप्त प्रगट रोशन होवैगा लगनमैं लगाही रहनां छोडनां नहीं मरजानां जासो मरनें जीनैंका सब हाल मालूम होजावै और तू वोही होजावैगा जो कुछ है। ये उपदेश देके पीछैं गंगारामजीकों शीखदीनी और कह्या कि अपनी तलवार लेतेजावो जब गंगारामनैं घर जाकै विश्राम किया और प्रातःकाल अपनें बेटे भाईयोंसैं कह्या कि हे भाईहो!

तुम हमारी बात सुनों जितनां तुमसैं घरका काम होसकै उतनां करो हमारै भरोसैं कोई काम मत करो हम तुम्हारा कुछभी काम नहीं करैंगे ये कहके अपनी च्यारपाई विस्तर लेके ग्राममैं मंदिरके नीचै कोटड़ीथी वामैं डेरा जा लगाया वा समय गंगारामजीकी ऊमर पचासवरसकी थी और वे महापुरुष फिर तीसरेदिन जोडपर आये तब ग्वालयाननैं आके गावमैं कही जब गंगारामनैं सुणी तब रात्रिकों उन-केपास गये जब महापरुषनैं इनकी और दृढता करदीनी तापीछै वे महापुरुषोत्तम शरीर करिके नहीं मिले और गंगाराम उस कोटरीमैं अभ्यास करतेरहे और एकांत जंग-लमैं भी चलेजातेथे परन्तु स्थान कोटरी छप्परमैंही रक्खा और घरसैं दोनूं वक्त रसोई आजातीथी पाणीकी जेगड़ घरकी स्त्री आदि भरजातीथी उसी साधनमैं उसी जगै बाईसवर्ष रहे परमशान्त निर्वाण समाधि सिद्ध हुई पीछै घरसैं उठके उत्तरदिशाकी बारहवर्ष सैलकरी बाद गदरकी साल सम्बत् १९१४का मैंब्रजकी तरफ आये कोसीकसवामैं गोमतीके पास टीवापै रहे वहां मकांन कच्चे बनगये सो वहा गुप्ततासैं रहतेरहे एकसमय पांच सात नशेबाज इनके पास आये उनमैंसैं एकनै पूछा कि बाबाजी आपका क्या नाम है तब इन्होंनै कहा प्रभू क्या बतावैं जब नशेबाजोंनैं कहा नामतो सबका होताहै आप क्यों नहीं बतावै

तव महाराजनै कह्या कि हे प्रभू पहिलै तो गंगाराम कहवो करैहा पीछै चित्तभंगभी कहनेंलगे और वावलाभी कहतेथे अब आपकी मरजी होय सो कहो उन नशेबाजोमैंसैं एक बोला कि इनका नाम कक्कड़रक्खो क्योंकि ये लंबे चौड़े बडे जबर आदमी हैं सो इनका शरीर गौरवर्ण लम्बाथा और शरीरमैं अस्थि वहुत भारीथे बडा बलवांन् शरीर था नैं मोटे थे नैं दुवलेथे। इति।

अथ महायोगेश्वर परमसन्त वेनामीजीका जीवन चरित्र वर्णनम्।

दोहा—ब्रह्महिके हम बालके, ब्रह्म हमारी जात।
　　ब्रह्महिसों उत्पन्नहैं, ब्रह्महिमांहिं समात॥

वेनामीजी महाप्रभू कोसी कस्बाके लम्बरदार थे रणजीत इनका नाम था ये बडे चतुर प्रवीण थे ओड़पासके गांवनमैं नामीथे परमेश्वरकी भक्तिका इनकों प्रेमथा मंदिरमैं कथा श्रवण किया करतेथे ब्राह्मण साधूनकी सेवा करतेथे और ओड़पासके बहुतसे गाँवनका पंचायती फैसला करतेथे घरके आसूदे थे एक ब्राह्मणसैं नो अध्याय गीता को पढेथे वासैं महामंत्रका उपदेश लिया गुरु मानके सेवा करतेथे जव उस ब्राह्मणनैं कह्या इस महामन्त्रका तुमसैं होसकै इतना नित्य जप कियाकरो तुम्हारे सव काम सिद्ध होवैंगे तव रणजीतजीका महामन्त्रमैं प्रेम वढगया पहरके

तडके उठके शरीरका सवखटका स्नानआदि करकें जवही सैं महामन्त्रका जप करतेथे दिनके दोपहरतक एकलक्ष नाम नित्यप्रति लेतेथे और इनकी ब्राह्मणोंमैं वहुत प्रीति थी उनसव यात्रा पर्वनमैं श्रद्धासहित भोजन करातेथे और साधु सन्तनकी सेवा करते थे एकसमय निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य वैष्णवनके साथ साहूकारनके गुरू साहूकारनके वुलायेहुये कोसीमैं आये जव किसी महाजनके साथ रणजीतजीनैंभी झाँकी कीनीं तव इनकों मनसें प्रेम उपजा कि मैंभी इनका शिष्य होके उपदेश लेऊं। वे साहूकारनके गुरू सखीभावमैं रहतेथे उनसैं रणजीतजीनैं किसी साहूकारकी मारफत अपना हाल जारी कराया तव उन्होंनैं उनकी श्रेष्ठकीर्ति सुनकर शिष्य करनेंकी हामल भरलीनी जव रणजीतजीनैं इनकी मण्डलीकों रसोई जिमाई और श्रद्धासहित भेट करी तव उस सखीभाववैष्णवनैं इनसैं इनके सुमरणका हाल पूछा कै मांनसीपूजन श्रीकृष्ण राधाराणीका सखीनसहित उपदेश किया और वे कुछकाल रहके चलेगये पीछे रणजीतजी वैसैही पूर्ववत् पहरके तड़के उठ स्नान करिके एकान्त स्थानमैं मानसी पूजनका भीतर अन्तःकरणमैं अभ्यास करने लगे जव थोडेही कालमैं इनकी ऐसी प्रीति वढगई कि रस्तेमैं नेत्रनके आगे राधाकृष्णकी मूर्ति दीखनेलगी तव तो मनमें ये वडे मग्न हुये

और मनहीमनमैं बडा आनन्द मान्या और या हालमैं बडे प्रसन्न रहनेलगे और गानविद्यामें लय होके, बडे ऊंचे स्वरोसैं भजन गातेथे और मनमैं विचार करतेथे कि। ये जो मोकों दिनमैं आंखनके आगे भगवानकी झांकी होतीहै। ये बात मेरे मनकी कौनसे कहूं कोई प्रेमी मनुष्य मिलै अथवा उपदेश देनेंहारे गुरूमहाराजा मिलैं उनसैं अपनें मनका हाल कहूं कोई दिनके बाद एक आदमी बोला कि भगतजी एक महात्मा गोमतीके पास रहतेहैं उनकी तुमनें झांकी कीहैं कि नहीं जब रणजीतजी बोले हमनें तो नहीं कीनीं अब करैंगे तब रणजीतजी कक्कड़ महाराजके पास गये और दण्डवत् करिके नैवेद्य निवेदन किया और पास बैठगये झांकी करिके बडे प्रसन्न हुये कि महायोगेश्वर कक्कड महाराज नेत्र मीचैं अति धीरज परमशान्तस्वरूप स्थिर बैठे देखे पीछे कक्कड़महाराजनैं रणजीतजीके हाथसैं कुछ थोड़ासा नैवेद कहा मिठाई लेके भोजन किया बाकीकी और मनुष्यनकों बांटीगई पीछे रणजीतजीके मनमें विचार हुआ कि इनसैं अपनें मनका हाल कहनां योग्यहै क्योंकि ये अतिधीरजवांन शान्तस्वरूप हैं जब एकान्त समय पाके हाथ जोडके अपनें मानसी ध्यानका हाल महाराजके सामनैं वर्णन किया कि महाप्रभू मैं मानसी ध्यान किया करताहूं सो हे स्वामी मोकों श्रीकृष्णकी दिनमैंभी कईदफैं आंखनके आगे झांकी

होतीहैं तब महाराजनैं इनके वचन सुनकर कह्या कि तेरेही मनकी भावनाहै इत्तनी कहके चुप होगये जब रणजीतजीनैं मनमैं विचार किया कि मैंतो यामैं मग्न होरह्याहूं इनकै तो कुछ भावैंभी नहीं तब रणजीतजी कक्कड़ महाराजकी सेवा चाकरी करनेलगे मोका पाके अर्ज करी कि हे स्वामी! परमेश्वरका मार्ग मोकों कृपाकरिके बतावो जब उन्होंनें योगमार्गके अभ्यास करनेका उपदेश दिया तब रणजीतजी युक्त व्योहारोंके साथ महाराजके पास और एकान्त स्थानोंमैं आसन प्राणायाम धारणा ध्यानका अभ्यास करते रहे और महाराजका संग करतेरहे । अपनी शुद्ध वृत्तिनसैं शुद्ध व्योहार वर्ततेरहे सो पहिला मांनसी ध्यानके साधनसै मनपैतो सवार थेही वर्ष ग्यारेक साधन किया पीछे ध्यानमैं ज्यादा वृत्ति खिचगई और शरीरकी ऊमर पचास वर्षकी होगईथी सम्वत् १९१९ का था तब महाराज कक्कडके स्थानमैंही शुरू मगसिरके महीनेमैं सिद्धासन लगाके रातदिन अभ्यासमैं वहांई रहनेंलगे ऐसैंहीं डेडमहीना होगया जब योग सिद्ध हुवा तब कक्कड़ महापुरुषनैं हुक्म सैंनबैनसैं दिया कि अब मौजहै जब रणजीतजी रण जीतके वहांसैं उठके श्मशानमैं तिवाराकी कोटडीमैं जा निवासकिया वो तिवारा जंगलमैं एकान्त था तब लोगोंनैं कह्या ये तो बावला होगया रोटी पाणीकी सेवा घरसैंहीं होतीथी पीछे कोंसीसैं तीन कोस उरैधेगांवहै वहां आरहे जंगलमैं ग्वालियानमैं खेला

करतेथे पीछे सम्वत् १९२१ के श्रावणके महनिमैं अलवर शहरमैं पधारे जब मुज मंगलकों दीदार हुवा तब शरीरकी ऊमर् वीसवर्षकी थी सो सब निजहाल पूर्व चौथाप्रकाशमें कह्याहै और मैंनैं महाराज दोनूंनसे समैं पाके अरज करीथी जब उन्होंनैं निज मुखपंकजसैं सब हाल अपनां पिछला वर्णन किया सोई मैंनैं तुम्हारेवास्तैं वर्णन कियाहै पहिलें अलवरमैं वेनामीजी महाराज आये तब विष्णुदत्त पण्डितके पिताकी छतरी बगीचामैं निवास किया जो मदारघाटीके नीचेंहैं जब सत्‌संगीयोंनैं उनसैं उनका नाम पूछा तब वे बोले कि हे प्यारेहो ! नाशवान् शरीरका क्या नाम बतावैं कोईभी नाम नहीं जब एकनैं कह्या येतो वेनाम हैं तवहीसैं महाराजका नाम वेनामी प्रसिद्ध होगया पीछे १९२५ की सालमैं श्रावणके महीनेमैं भक्तनकी प्रार्थनांसैं भूरासिद्धके वारेमैं पधारे श्रावणके महीनेंसें माघका महीनांतक तो अलवरमैं निवास करतेथे और फागणशुरूसैं आषाढ़ सुदीतक व्रजमैं डडोला लालपुरग्रांमके पास है तहां रहतेथे सम्वत् १९२९ का श्रावणसुदी तीजकों महाराज वेनामीजीनैं देह छोडी पीछै सत्‌संगीजन कक्कडमहाराजकों कोसीसों अलवर भूरासिद्धमैं लाये सम्वत् १९३० के श्रावणके महीनेंमैं आये सात महीना कक्कडमहाराजका शरीर रह्या फागणसुदी चौदश शिवरात्रीकों कक्कडमहाराजनैं देह छोडी ।

अथ शिक्षा उपदेश सबसज्जनोंकों वर्णनम् ।

मंगल उवाच ।

हे प्यारा मित्रहो ! या जीवात्माका सगा कोईभी नहीं केवल ईश्वर सद्गुरु साधुसन्त हैं सिवाय इनके और सब डुबानेंवाले हैं पहिलें सन्त होगये उनके कहेहुये ग्रंथ वचनविलास पढते सुणते रहो और जो हालमैं वक्तके सच्चे सतगुरु महायोगी निरपक्ष ज्ञान विज्ञान सहित जिनके सहजके बचन विलास प्रकाशरूप अन्तःकरणमैं प्रवेश करनेवाले भरम अज्ञानके छेदनेंवाले ऐसे जहाँ प्रगट होवैं तहां जाके सेवा सतसंग करिके अपनें निज बोधका कार्य सिद्ध करो उनके सामनें अपनी बुद्धिकी चतुराई पेस मतकरो प्रेमसैं उनकी रहस्य देखो और किसीसैं वादविवाद मतकरो परमेश्वरके जनोंकों झगडा करनां नहीं चाहिये वाद विवादसैं बचै गुरूकी सेवाकरै गुरूनाम बडेकाहै और जो सब तरह बडा होय सो सद्गुरु कहलाताहै अभ्यंतर ब्रह्मविद्यावान होय शीलवान ज्ञानवांन ध्यानवांन योगसमाधिमैं सिद्ध होय सो सद्गुरुहै शिष्यकों चाहिये कि बडे दरजेका गुरुकों खोजै उनका सतसंग सेवा करिके अपनें परलोकका कार्य सिद्ध करै । हे मित्रहो ! जब अनेक जन्मोंका शुभकर्मनका फल उदय होवैगा और परमेश्वरकी प्रेमभक्तिका विरह बहुत बढजावैगा तब सब गुरुनसों पीछै सद्गुरु नरहरि-

स्वरूप सर्वगुण संपन्न योगसिद्ध महापुरुष परमसन्त मिलैंगे जब सब कार्य सिद्ध होवैंगे छोटे अधिकारके गुरूनकी सेवा सत्संगसैं कोई २ शिष्यका अन्तःकरण शुद्ध होजावैगा तापीछे सद्गुरुका संग पाके रंग मजीठी चढैगा। देखो धुपेहुये वस्त्रपैं रंग चढताहै जो मैलसे भराहै उसपै नहीं चढता वामैं तो मैलका रंग चढरह्याहै जैसैं जमीनकों पहिलै किसान जोत देदेके वाकी सब आंट-खूंटडी निकालकर नरम करलेताहै तापीछे समय पाके बीज बोताहै वो बीज बडी प्रबलतासैं उदय होताहै ऐसैंहीं अपनें अन्तःकरणकी पहिलैं शुभकर्मन करिके शुद्धी करै तापीछे सद्गुरुका संग पाके परमेश्वरका प्रेम बढताहै जब सद्गुरुके वचनोंकी सैंन समझताहै। हे प्याराहो! ज्ञान-रूप वचनकों सब सुण २ के चलेजातेहैं शब्दका भेद पाना हरेक मनुष्योंका काम नहींहै कोई उत्तम संस्कारी शूरवीर ग्रहण करैगा जो सच्चे पूरे गुरूका प्रियपुत्र है वो शब्दका गूढ तात्पर्यकों पहुंचैगा महापुरुष योगी उजाला स्वरूप हैं अन्धेरेके लोग उजालेके पास नहीं जाते क्योंकि उजालेमैं उनके कर्म प्रगट होजावैं जासे उनके पास हरेक पुरुष नहीं जाते और जे जावैं तो उनके मन उच्चाटन होजातेहैं ठैर नहीं सक्के और जिनके उत्तम संस्कारहैं परमेश्वरके खोजीहैं बैठे रहतेहैं और जे छोटे अधिकारीभी संग करतेहैं वे बहुतसे मनुष्योंसैं श्रेष्ठ हैं जैसैं जो पाषाण जलमैं रहताहै

वो शीतलहै बेसक वाके भीतर जल प्रवेश नहीं करता तोभी जें वाहिरीकी घामसैं तपतेहैं उनसैं श्रेष्ठ हैं ऐसेंही मन्द संस्कारीभी सद्गुरुका संग पाके वहुतसी वाहरकी खोटी वृतिनसैं शान्त रहते हैं और थोड़ेही कालमैं उनके उत्तम संस्कार होजाते हैं ऐसे मनुष्योंका या जन्ममैं उद्धार नहीं होय तो वे सच्चे संगके प्रभावसैं श्रेष्ठ कलमैं मनुष्य जन्महीं पातेरहतेहैं अनेक जन्मनकी सिद्धि करिके अन्तका जन्ममैं च्यारूं आश्रम सिद्ध प्रेमभक्ति करिके होवैंगे जव योगमार्ग होके परमेश्वरसै मिलैंगे। और महापुरुष योगि-योंको वडी सामर्थ्य होतीहै अति छोटे अधिकारीकों जो कुछभी लायक नहींहैं और उनकी शरणागति जाय आज्ञा-नुकूल रहै। तो वो थोड़ेही कालमैं वडा अधिकारी होजा-ताहै उनकी कृपासैं योगमार्ग सिद्ध होवैगा जव परमेश्वरसैं मिलकर परमेश्वरका स्वरूप होजावैगा सो सव सजनोंकों चाहिये जे जन वर्णाश्रमीहैं श्रावक मतके धारण करनेवाले हैं और श्वेताम्बरी ढूडिया हैं। च्यारूं सम्प्रदायवाले जंगम, जोगी, संन्यासी, गुसाईं, सब पंथी भेषधारी हैं और जितने मजहवी, यहुदी, ईसाई, महोम्मदी, सव ऊंच नीच जनोंको पहिलैं गुरुमुखी होके अपने धर्म मजहबमैं रहके सच्चे सद्गुरू वक्तके महाभूप शहनशा, कामिलमुर्शिद, सत्यका आत्मा, पवित्रात्माका खोजैं ये सवकों योग्यहैं उनके विना मिलें परमेश्वरकी

खुदाकी गाडकी प्राप्ती नहीं होवैगी उनके मिलनेंसैंही निजरूपकी प्राप्ती होवेगी सत्य है हक है आमीन सबका सार उसका नाम लैनाहै ।

अथ ग्रन्थ सुणांनेकी तथा नैंसुणानैंकी आज्ञा वर्णनम् ।

यह सर्वशिरोमणिसिद्धान्तसार ग्रन्थ अतिउत्तम सबका सार है परमश्रुतीका कह्याहुवा परमवेदहै यामैं योगमार्गका विषय है सद्गुरुकी महिमा प्रयोजनहै जेजन प्रेमप्रीतसैं मन-संजम करिकै पढैंगे श्रवण करैंगे तिनके सब कार्य सिद्ध होवैंगे और परमबोध हृदयमैं उदय होवैगा और जे सद्गुरुका संग पाके साधन करैंगे सो निजस्वरूपकों प्राप्त होवैंगे। यह शास्त्र जो भक्तिहीन होय। नगुरा मनमुखी होय जाकी परमेश्वरमैं प्रीत नैं होय मूर्ख अज्ञानी होय पक्षपातका वादानुवादी होय तिनकों श्रवण नहीं करना ऐसे जन सुणकर भड़क जावैंगे और निन्दा करैंगे और जे गुरू भक्त होयँ श्रेष्ठ जनोंके सतसंगी होयँ। परमेश्वरके भक्त योगमार्गमैं श्रद्धावान् होयँ शास्त्रोंके ज्ञाता पक्षतासैं रहित होंय सार असारका विचार करनैंवाले होयँ तिनको प्रेम प्रीतसैं श्रवण करावो सुणनैंवाले सुणानैंवाले दोनूँन-का सबतरहसैं कल्याण और सदा आनन्दमंगल होवैगो हे प्याराहो ! ये उपदेश याद रखनेके लायक हैं कि मनुष्य-

परमेश्वरका अनन्य भक्ति होके आप अपनेमैं सर्वसमय धीरताको लीयँ प्रसन्न रहै ।

दो०—सम्वत् विक्रम नरेशका, गुन्नीसैं लखसाठ ।
चैत्र शुक्ल पूरणभया, आनंदमंगलठाठ ॥ १ ॥

इति श्रीसर्वशिरोमणिसिद्धान्तसारतत्त्वनिरूपणयोगशास्त्रे अनाम-मंगलसम्वादे च्यारप्रकारके मनुष्यराजानकों नरनारीनकों शिक्षा महापुरुषोंकी नामावली कक्कड़महाराजका जीवनचरित्र वेनामी महाराजका जीवनचरित्र वर्णनो नाम द्वादशप्रकाशः ॥ १२ ॥

श्लोक—मंगलं भगवानविष्णुर्मंगलं गरुड़ध्वजः ।
मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः ॥ १ ॥

इतिश्रीआनंदमंगलचतुर्थाश्रमीकृतसर्व-
शिरोमणिसिद्धान्तसारसम्पूर्णम् ॥

शुभम् आनन्दमंगलं भवतु मितीमहासुदी १० संवत् १९

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पण्डित मङ्गलराम खैरातिराम—
मोहल्ला दाऊदपुरियान—
शहर अलवर—राजपूताना ।

दूसरा पता—पण्डित शिवनारायणशर्मा—
स्टेशनमास्टर—कुचामनरोड़—
मारवाड़ ।

